पुस्तक के यशस्वी लेखक पं. भोजराज द्विवेदी

दैवज्ञ शिरोमणि पं. भोजराज द्विवेदी ज्योतिष, मन्त्र-तन्त्र व आध्यात्म विद्या के जाने माने लेखक, लब्ध प्रतिष्ठित पत्रकार व भविष्यवक्ता हैं। एम.ए. संस्कृत दर्शन प्रथम श्रेणी में रहकर सर्वोच्च अंक लिये तथा सम्प्रति जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर में ही वराहमिहिर ज्योतिष को लेकर शोधकार्य कर रहे हैं। ज्योतिष विषय को लेकर "अज्ञात-दर्शन" नामक एक समाचार-पत्र का सम्पादन गत 17 वर्षों से कर रहे हैं। ज्योतिष में आपको ढेरों मानपत्र, अनेकों स्वर्ण पदक प्राप्त हो चुके हैं तथा कई नागरिक अभिनन्दन हो चुके हैं। आपको केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री माखनलाल फोतेदार द्वारा डॉक्टर ऑफ ऐस्ट्रोलोजी की उपाधि मिल चुकी है तथा पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह द्वारा अंग वस्त्र, मुकुट एवं स्वर्ण पदक भी प्रदान किया गया। आप देश-विदेशों के अनेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की अध्यक्षता भी कर चुके हैं तथा सिंगापुर, हांगकांग, अबुधापी, दुबई, शारजाह एवं अनेक मुस्लिम राष्ट्रों की भी यात्रा कर चुके हैं। ज्योतिष विषय को लेकर पचास से अधिक रेडियोवार्ता, एक हजार लेख व डेढ़ हजार से अधिक भविष्यवाणियां प्रकाशित होकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

ज्योतिष क्षेत्र में आपने दर्जनों स्तरीय पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से एक यह दुर्लभ पुस्तक आपके हाथों में है।

ISBN 81-7182-315-7

डायमंड पाकेट बुक्स 100/-

SAMEER SERIES

अनुभूत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र और टोटके

पं. भोजराज द्विवेदी

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,Nadi,odisha

अनुभूत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र और टोटके

PRACTICAL & RARE WORK UPON YANTRA-MANTRA-TANTRA AND OCCULT SCIENCES

अनुभूत

यंत्र-मंत्र-तंत्र

और टोटके

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

डायमण्ड पॉकेट बुक्स में ज्योतिष, कर्मकाण्ड, यंत्र, मंत्र, तंत्र व वास्तु विद्या की अनुपम पुस्तकें

डा. भोजराज द्विवेदी		पं. राधाकृष्ण श्रीमाली	
रेमेडियल वास्तु (बिना तोड़ फोड़ के वास्तु)	150.00	लाल किताब	100.00
सम्पूर्ण वास्तु शास्त्र (नये आवरण में)	100.00	लाल किताब के टोटके	100.00
कमर्शियल वास्तु	120.00	वृहद हस्त रेखा	40.00
पर्यावरण वास्तु	120.00	ज्योतिष और लाटरी	20.00
वृहद हस्त रेखा	100.00	ज्योतिष और रत्न	30.00
हिप्नोटिज़्म	50.00	अंक ज्योतिष	30.00
तंत्र शक्ति और साधना	50.00	भृगु संहिता	60.00
मंत्र शक्ति और साधना	50.00	नक्षत्र विज्ञान	30.00
यंत्र शक्ति और साधना	50.00	तंत्र रहस्य	30.00
सस्वर रुद्राभिषेक प्रयोग	60.00	प्रश्न ज्योतिष	30.00
अनुभूत यंत्र मंत्र तंत्र और टोटके	100.00	तंत्र शक्ति	30.00
ज्योतिष और धनयोग	40.00	स्वप्न ज्योतिष	30.00
ज्योतिष में भवन, वाहन और कीर्ति योग	40.00	भारतीय ज्योतिष	30.00
ज्योतिष और राजयोग	40.00	मंत्र शक्ति से रोग निवारण	30.00
ज्योतिष और विवाह योग	40.00	मंत्र शक्ति से कामना सिद्धि	30.00
ज्योतिष और संतान योग	40.00	ग्रहगोचर (ग्रह और फलादेश)	30.00
ज्योतिष और आयुष्य योग	40.00	दशाफल दर्पण	30.00
ज्योतिष और रोग विचार	40.00	शरीर सर्वांग लक्षण	30.00
कालसर्प योग	100.00	तंत्र शक्ति साधना और सैक्स	30.00
यज्ञ कुण्ड मण्डप सिद्धि	100.00	रमल विज्ञान	30.00
महालक्ष्मी पूजा व दीपोत्सव	25.00	यंत्र सिद्धि	30.00
नाम बदलिये भाग्य बदलिये	100.00	ज्योतिष सीखिये	30.00
अंत्येष्टि कर्म पद्धति	60.00	स्तोत्र शक्ति	30.00
षट पंचाशिका (प्रश्न विज्ञान)	60.00		

डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि.

X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज़-2, नई दिल्ली-110 020

पुस्तक V.P.P. से मंगाने के लिये 10/- की Postal Stamps आर्डर के साथ अवश्य भेजें।
कोई भी तीन पुस्तकें मंगवाने पर डाक व्यय फ्री। डाक व्यय प्रति पुस्तक 5/-

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

अनुभूत
यंत्र-मंत्र-तंत्र
और टोटके

डॉ॰ भोजराज द्विवेदी एम.ए. संस्कृत (दर्शन)
पी. एच. डी. (ज्योतिष)
प्राच्यविद्या महामहोपाध्याय
ज्योतिष शिरोमणि, ज्योतिष सम्राट, लब्ध स्वर्णपदक

अध्यक्ष
इन्टरनेशनल वास्तु ऐसोसियेशन
प्रथम 'बी' रोड, गोलबिल्डिंग के पीछे
सरदारपुरा, जोधपुर (राज॰)

डायमंड पॉकेट बुक्स

ISBN 81-7182-315-7

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :
डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया-2,
नयी दिल्ली-110020
फोन : 011-6841033, 6822803, 6822804
फैक्स : 011-6925020
E-mail : mverma@nde. vsnl. net. in

संस्करण : 2000

मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

स्पेशल इफेक्टस : प्रिंटलाइन कम्पयूटर्स, फोन : 3263922

ANUBHUT YANTRA MANTRA TANTRA AUR TOTKE
BHOJRAJ DWIVEDI

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

अनुक्रमणिका

* दुर्गासप्तशती के चमत्कारी एवं अनुभूत तांत्रिक प्रयोग

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

* रामचरित-मानस के सिद्ध चमत्कारी-मन्त्र

*** चमत्कारी मुस्लिम-मन्त्र—**

*** कुछ दुर्लभ जैन-मन्त्र-**

*** यन्त्र—**

*** कुछ चमत्कारिक मुस्लिम-यन्त्र—**

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

पूज्य नानाजी

तन्त्र व मन्त्रशास्त्र के प्रखर ज्ञाता,
'प्रताप संग्रह' के रचयिता,
श्रीमालीकुलकमल दिवाकर,
ब्रह्मलीन तपोमूर्ति

वकील श्री प्रतापचन्द जी दवे

की पावन स्मृति में सादर समर्पित

मन्त्र : चैतन्य शब्दपुञ्ज

शब्दो नित्यः आकाशगुणत्वात्

अर्थात् शब्द नित्य है, आकाश (आश्रय) गुण के कारण। शब्द कभी मरता नहीं, मिटता नहीं, समाप्त नहीं होता, इसमें विकृति नहीं आती, यह तो शाश्वत है, अजर है, अमर है। आज के वैज्ञानिक महर्षि जैमिनि की इस बात को मानने के लिए बाध्य हैं। रेडियो किरणों व बेतार के आविष्कारक मार्कोनी ने शायद महर्षि की इस बात को जड़ से पकड़ा होगा और उसी के माध्यम से *हम हजारों मील दूर उच्चारित शब्द को ज्यों का त्यों (As it is) सुनते हैं, तत्काल सुन सकते हैं, तथा वर्षों बाद भी सुन सकते हैं। इससे प्रमाणित है कि शब्द कभी विकृत नहीं होते, कभी मरते नहीं।* आकाश में प्रसारित ईथर किरणों के माध्यम से शब्द प्रतिपल वितरित होते रहते हैं।

न्याय दर्शन के विद्वान् 'शब्द' को प्रमाण मानते हैं। परन्तु कौन-से शब्द ? साधारण बोलचाल के शब्द नहीं, कौतुकवश, आनन्दवश किया गया वाक्य-विन्यास नहीं, दैनिक बोलचाल की भाषा नहीं! न्यायदर्शनकार कहते हैं—**आप्तवाक्यं शब्दः** अर्थात् आप्तजनों के मुख से निःसृत वचन ही प्रमाण हैं। अब प्रश्न उठता है, आप्त कौन? आप्त वाक्य की व्याख्या बड़ी लम्बी-चौड़ी है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है—आकांक्षा, योग्यता और सान्निध्य से युक्त पदों का समूह वाक्य कहलाता है और ये वाक्य लौकिक व वैदिक भेद से दो प्रकार के माने गये हैं। वैदिक वाक्य को ईश्वरीय वाणी के रूप में मानकर उसे शब्द प्रमाण के अन्तर्गत स्वीकार किया है। यथा—**वैदिकमीश्वरोक्तत्वात् सर्वमेव प्रमाणम्**, और ये ही वैदिक वाक्य वेदों में मन्त्र रूप से मुखरित हुए हैं। फलतः मन्त्र स्वयं अपने आप में प्रमाण है। मन्त्र शाश्वत है, अजर है, अमर है। इस बात को किसी और ढंग से प्रमाणित करने की अलग से आवश्यकता नहीं रह जाती।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

मन्त्र क्या हैं? मन्त्र किसे कहते हैं और मन्त्र का स्वरूप कैसा होता है?

मन्त्र+अच् निर्मित मन्त्रः शब्द का अर्थ होता है किसी भी देवता को सम्बोधित

किया गया वैदिक सूक्त या प्रार्थनापरक वेद मन्त्र[1]। यही कारण है कि वेद से इतर प्रयुक्त आप्तवाक्यों, जैसे (श्रीमद्भगवद्गीता इत्यादि) को मन्त्र नहीं कहा जाता। प्रार्थना-परक यजुस् जो कि किसी देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो, यथा (ॐ नमः शिवाय) इत्यादि भी मन्त्रों की संख्या में आते हैं। कालान्तर में अनेक प्रकार के तान्त्रिक श्लोक जो कि विशिष्ट देवता को उद्देश्य करके बोले गये तथा विशेष चमत्कारिक शक्ति से सम्पन्न होने से, वे श्लोक भी मन्त्र कहलाने लगे।

शाक्त और तान्त्रिक सम्प्रदायों में प्रयुक्त अनेक सूक्ष्म और रहस्यमय शब्दखण्डों और अक्षरों को यथा—**'ऐं ह्रीं क्लीं'** को भी 'मंत्र' कहते हैं तथा विश्वास किया जाता है कि इन बीज मन्त्रों से महान् शक्तियां और सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

वेदों में मन्त्र को सर्वोच्च सत्ता एवं उन्हें ब्रह्म के समान माना है। आचार्य आपस्तम्ब कहते हैं **मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्**।

शबर स्वामी अपने भाष्य में लिखते हैं—मन्त्र-वैशिष्ट्य क्या है? जो शब्द-राशि अलौकिक अर्थ प्रतीत कराती हो, जो नियत स्वर तथा वर्ण क्रम वैशिष्ट्य से युक्त हो और जिसे गुरुमुख से सुनने के पश्चात् शिष्य उच्चारण करता हो वे शब्दसमूह ही मन्त्र की श्रेणी में आते हैं।

मन्त्र की शक्ति व स्वरूप की व्याख्या करने पर यह कहा जा सकता है कि मन्त्र नाशरहित हैं, मन्त्र नित्य हैं, विभु हैं, सर्व व्यापक हैं, सूक्ष्म-से-सूक्ष्म हैं और सब भूतों की योनि हैं। जहां वाणी नहीं जा सकती, वहां मन्त्र जाते हैं।

मन्त्र के भीतर ऐसी गूढ़ शक्ति छिपी है जो वाणी से प्रकाशित नहीं की जा सकती अपितु उस शक्ति से वाणी स्वयं प्रकाशित होती है। मन्त्रशक्ति अनुभवगम्य है, जिसे कोई चर्मचक्षुओं द्वारा नहीं देख सकता वरन् इसकी सहायता से चर्मचक्षु दीप्तिमान होकर त्रिकालदर्शी हो जाते हैं। मन्त्र आप्त वाक्यजन्य होते हुए भी इसकी शक्ति निर्वचनीय व शब्दातीत है।

कालान्तर में चुरादि धातुओं की तरह मंत्रयते, कभी-कभी मंत्रयति तथा मंत्रित शब्द दैनिक प्रयोग में आने लगे, जो कि सलाह लेना, विचार करना, परामर्श लेना, सोच-विचारकर संकल्प करना, गुप्त मन्त्रणा करना इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होने लगे।

मन्त्र व ध्वनि-रहस्य

भारतीय ऋषियों ने मन्त्र के आरोह, अवरोह को ध्यान में रखते हुए उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि अनेक स्वरों के प्रयोग की व्यवस्थाएं दी हैं। मन्त्रों के मूल में एक लय है, विविध ध्वनियों के विविध-विविध उच्चारण-क्रम की विशिष्ट शैली है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

1. संस्कृत-हिन्दी कोश, पृ. 774

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि मन्त्रों का प्रभाव नहीं होता। ये वे ही लोग हैं जो कि पुस्तकों में लिखे मन्त्रों को पढ़कर प्रयोग में लाने की कोशिश करते हैं।

> *मन्त्र की मूल चेतन-शक्ति तो ध्वनि में निहित है और यह ध्वनि पुस्तक के निर्जीव पृष्ठ नहीं बता सकते। इसके लिए विद्वान् गुरु की आवश्यकता रहती है। कुछ लोगों की मानसिक वृत्तियां इतनी निम्नगामी हो चुकी हैं कि 'डिस्को डांस' एवं ऊल-जुलूल संगीत को सीखने के लिए नियमित रूप से क्लबों में जाने तथा महीनों तक बन्द कमरों में लगातार अभ्यास करने में भी नहीं हिचकिचाते परन्तु वैदिक मन्त्रों को सीखने के लिए गुरु के पास जाने में उन्हें बड़ी शर्म आती है।*
>
> *मन्त्रों की दिव्य आध्यात्मिक शक्ति को वे बेडरूम में सोते-सोते बिना प्रयास व परिश्रम के पुस्तकों के निर्जीव पृष्ठों में ढूंढ़ते रहते हैं। — डॉ. द्विवेदी*

अंग्रेजी की गुलामी, आधुनिक शिक्षा की चमक-दमक में पले शिखा व यज्ञोपवीत से घृणा करने वाले तथा ब्राह्मणों के प्रति उदासीन वृत्ति वाले, दिग्भ्रांत भारतीय युवक ही अनधिकृत रूप से मन्त्र विज्ञान के बारे में ज्यादा टीका-टिप्पणी करते हुए देखे गये हैं। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि यह विद्या ब्राह्मणों के पास पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चली आ रही है। अतः इस शक्ति का मूल स्रोत पकड़ने के लिए आपको मन्त्रज्ञ व कर्मकाण्डी ब्राह्मणों की शरण में जाना ही पड़ेगा।

आपने प्रायः कवि सम्मेलन देखा या सुना ही होगा। एक हास्य रस या करुण रस का कवि जिस कविता को बोलकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर हंसने व आंसू बहाने के लिए मजबूर कर देता है उसी कविता को आप पढ़ें तो शायद आप श्रोताओं को उतना प्रभावित नहीं कर पायेंगे। इसका मूल कारण उस कविता को एक विशिष्ट लय व शैली के साथ, अभ्यासपूर्वक बोलना है। जब तक आप अभ्यासपूर्वक कविता की शैली व लय को नहीं पकड़ पायेंगे तब तक आप द्वारा उच्चारित कविता श्रोताओं को प्रभावित नहीं कर पायेगी। यह एक लौकिक उदाहरण है परन्तु वैदिक मन्त्रों की स्वर-साधना के लिए हमें काफी अध्ययन, परिश्रम व अभ्यास करना पड़ेगा।

वैदिक ऋषि कहते हैं—जो वेदपाठी विद्वान् वेदों को पढ़कर उसके लय व अर्थ को नहीं जानता वह उस स्थाणु (गदहे) के समान है जो चन्दन के भार को ढोता हुआ भी उसके उपयोग से वंचित है। अर्थ को न जानकर पुस्तक पढ़ने वाला व्यक्ति केवल व्यर्थ ही श्रम करता है क्योंकि वह वेदवाणी को देखता हुआ भी नहीं देख पाता और इस पवित्र वाणी को सुनता हुआ भी (अर्थ-ग्रहण के अभाव में) नहीं सुनता। निरुक्तकार यास्क कहते हैं—''वैदिक मन्त्रों की उच्चारण शुद्धता उसके अर्थज्ञान पर निर्भर है तथा वेद में अर्थज्ञान का आधारस्तम्भ है—स्वरज्ञान।''

व्याकरणाचार्य पाणिनि कहते हैं—**"जिसे वैदिक स्वरों का ज्ञान नहीं, उसे संहिता (मंत्र) पाठ करने का कोई अधिकार नहीं।"**

महर्षि पाणिनि एक उदाहरण देते हुए बतलाते हैं—

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥

—पा. शि., श्लोक 52

इन्द्र के पराभव के लिए वृत्र द्वारा किये गए यज्ञ में 'इन्द्र-शत्रुवर्धस्वः' मन्त्र से आहुति दी जा रही थी। तत्पुरुष समास में उत्तरापद में उदात्त स्वर होना चाहिए था। जिसका अर्थ होता है—इन्द्र का शत्रु अर्थात् वृत्र बढ़े। इसके स्थान पर उच्चारण भेद से (पूर्व पद में उदात्त के कारण) यह शब्द बहुब्रीहि बन गया और इसका अर्थ हुआ 'इन्द्र बढ़ें'। स्वर की अशुद्धता के कारण अर्थ बिलकुल उलटा हो गया और वृत्र का नाश हो गया।

ध्वनि के उच्चारण-भेद मात्र से इतना अनर्थ हो जाना अपने-आपमें बहुत ही विचित्र बात है, बात कुछ समझ में नहीं आती। ध्वनि-विज्ञान के महत्त्व व प्रभाव की बात शायद यहीं तक समाप्त हो जाती परन्तु हम पाश्चात्य वैज्ञानिकों के आभारी हैं, जिन्होंने ध्वनि व उसके प्रभाव (Sound & it's effect) पर निरन्तर अध्ययन-अनुसंधान किये और आज दूसरी कक्षा से लेकर एम. ए. तक की विज्ञान की पुस्तकों में ध्वनि-ऊर्जा (Sound energy) के बारे में अध्याय मिलेंगे।

ध्वनि-तरंगों पर उन्होंने शोध किये और पाया कि ध्वनि का प्रभाव उसकी प्रबलता, कम्पन और आयाम पर निर्भर है। मनुष्य उन्हीं ध्वनि-तरंगों को सुन सकता है जिनकी आवृत्ति 20 तथा 20,000 (k/c) कम्पन प्रति सेकण्ड के बीच में है। 20 से कम तथा 20,000 से अधिक आवृत्ति तरंगों को हम नहीं सुन पाते। परन्तु अलग-अलग जाति के जानवरों की न्यूनतम तथा अधिकतम आवृत्तियाँ, जिनको वे सुन सकते हैं, भिन्न-भिन्न होती हैं।

वैज्ञानिकों को अध्ययन करने पर पता लगा है कि गाय-बैल, भेंड़, घोड़े, साँपों और यहां तक कि मछलियों आदि पशुओं व जीवधारियों को भूकम्प का पूर्वाभास इतना पहले से हो जाता है कि मनुष्य उनसे चेतावनी ले सकते हैं।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

गाय, बैल, भेंड़ व घोड़ों के बारे में उन्होंने अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि इन पशुओं में भूकम्प-तरंगों को सुनने की विशेष क्षमता होती है।

20,000 कम्पन्न प्रति सेकण्ड से अधिक आवृत्ति की ध्वनि **पराश्रव्य ध्वनि** (High Frequency) कहलाती है। यह ध्वनि मनुष्य को नहीं सुनाई पड़ती। कुछ पशुओं, जैसे—कुत्तों में पराश्रव्य कम्पनों को सुनने की क्षमता होती है। शायद इसलिए भारतीय शकुन-शास्त्रियों ने यह माना है कि कुत्ता एक विशिष्ट चौकन्ना रहने वाला प्राणी है, जिसे अदृश्य शक्तियों (भूत-प्रेत इत्यादि) एवं पराश्रव्य आवाजों का आभास तत्काल होता है, और यह भौंकने लगता है। मन्त्र व तन्त्र शास्त्र में 'मूंठ फेंकने' की प्रक्रिया का विस्तृत उल्लेख मिलता है। ऐसी मान्यता रही है कि मन्त्रों की शक्ति से उड़द के दाने मन्त्र के माध्यम से जागृत होकर एक विशेष प्रकार की ध्वनि करते हुए अभिलक्षित लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं, परन्तु यदि लक्षित व्यक्ति ने कवचादि से अपनी सुरक्षा का उपाय कर रखा है तो 'मूंठ' लौटकर चलाने वाले व्यक्ति को ही प्रताड़ित करती है। हो सकता है आज से कुछ वर्ष पहले ये बातें लोगों को कपोल-कल्पना ही लगती हों, परन्तु भौतिक विज्ञान के 'ध्वनि परावर्तन सिद्धान्तों' ने यह प्रमाणित कर दिया कि कम्पन्न के माध्यम से ध्वनि इच्छित लक्ष्य तक पहुंचती है तथा वहां पर प्राप्त अवरोध के कारण टकराकर वापस उद्गम स्थल पर पहुंच जाती है। वैज्ञानिक-अनुसंधानों से यह पता चला है कि चमगादड़ों में पराश्रव्य ध्वनि पैदा करने तथा उन्हें सुनने की अद्भुत क्षमता होती है।

चमगादड़ प्रायः अन्धा होता है, परन्तु जब वह उड़ान भरता है तो पंख फड़फड़ाकर (पराश्रव्य ध्वनि) उत्पन्न करके उड़ान भरता है। उसके मार्ग में किसी अवरोधक प्राणी या वस्तु के आ जाने पर ध्वनि-तरंगें उस प्राणी से टकराकर परावर्तित होकर उस चमगादड़ के पास पुनः पहुंच जाती हैं और इन्हीं ध्वनि-तरंगों के द्वारा चमगादड़ अपना गन्तव्य तय करता है। अब यह प्रमाणित हो चुका है कि परावर्तन ध्वनि-तरंगों व लहरों का एक सामान्य गुण है।

व्यावहारिक जीवन में 'पराश्रव्य ध्वनि' के बहुत उपयोग हैं। ढाली हुई धातु की चादरों के अन्दर दरारों का पता लगाने, कपड़ों, प्लेटों आदि को धोने, कठोर पदार्थों को काटने और एल्यूमिनियम आदि को जोड़ने के लिए 'पराश्रव्य ध्वनि' का उपयोग किया जाता है।

इतना ही नहीं, पराश्रव्य ध्वनि जीव-विज्ञान सम्बन्धी प्रभाव भी पैदा करती है। उदाहरण के लिए, ऐसी ध्वनि से प्रभावित अनाज में अंकुरण अधिक होता है, फलस्वरूप फ़सल अधिक होती है। वैज्ञानिक परीक्षणों से यह भी सिद्ध हुआ है कि पराश्रव्य ध्वनि से प्रभावित दूध काफी सपय तक खराब नहीं होता है। रूस जैसे वैज्ञानिक देश ने भी इस बारे में खोज की है तथा वहां के वैज्ञानिक गानिन ने एक विचित्र प्रयोग किया है।

एक रूसी वैज्ञानिक, गानिन ने घूमनेवाले एक ऐसे यंत्र का आविष्कार किया है जिसकी मद्धिम ध्वनि फसल को हानि पहुंचाने वाले जन्तुओं को डराकर उन्हें दूर रखती है।
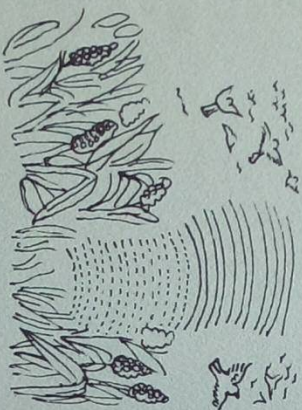
इटली भी इस दौड़ में पीछे नहीं रहा तथा उन्होंने पराश्रव्य ध्वनि पर आधारित एक ऐसे यन्त्र का आविष्कार किया है जिसकी आवाज़ से चूहे घर छोड़कर बाहर भागने को मजबूर हो जाते हैं।

एक इटालियन व्यापारिक संस्था द्वारा निर्मित बिजली से चलनेवाला एक ऐसा यंत्र है जिसकी विचित्र सीटी-समान आवाज चूहों आदि को पलक झपकते ही किसी भी इमारत से बाहर भगा सकती है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

जो शरीर के विज्ञान को जानते हैं, वे यह कहते हैं कि मनुष्य के मस्तिष्क का बहुत छोटा-सा हिस्सा सक्रिय है, शेष हिस्सा बिलकुल निष्क्रिय पड़ा हुआ है।

शल्य चिकित्सक अपने-आपको असमर्थ पा रहे हैं, इस निष्क्रिय हिस्से को सक्रिय करने के लिए। परन्तु योग का कहना है कि मस्तिष्क का यह सारा हिस्सा सक्रिय हो सकता है। उसकी यह मान्यता है कि कांस्य धातु से ताड़ित घंटा-नाद एवं शंख के तुमुल घोष द्वारा उत्पन्न ध्वनि-तरंगों के कम्पन व स्पन्दन से कभी-कभी ये मस्तिष्क नाड़ियाँ अचानक जागृत हो जाती हैं। योगियों का यह तर्क आधुनिक वैज्ञानिकों की खोज के लिए एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है।

*ध्वनिशास्त्रियों के प्रयास

आधुनिक ध्वनि यंत्रों की सहायता से शब्द-ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक प्रयास ध्वनि-शास्त्रियों ने किये हैं। संस्कृत व्याकरणाचार्यों ने 'स्फोट' के सिद्धान्त पर विशेष बल दिया है। उनके अनुसार 'स्फोट' द्वारा वाक् के जो चार प्रकार प्रकट होते हैं उनके नाम निर्देशित करते हुए, ऋग्वेद में बताया गया है कि अंतिम प्रकार ही मनुष्य को प्राप्त है और पहले तीन प्रकार के उच्चारण श्रवण के परे हैं। उनका निष्कर्ष है कि ये तीनों प्रकार की 'पराश्रव्य ध्वनियां' वायुमण्डल को भयंकर रूप से प्रभावित करती हैं।

मन्त्र-साधना के समय यह प्राचीन परम्परा रही है कि शुद्ध घृत का दीपक साधक के नेत्रों के सामने होना चाहिए। इसमें भी एक रहस्य है, शब्द मूलतः वायु-तत्त्व प्रधान होते हैं। इनको तेजोमय बनाने के लिए अग्नितत्त्व प्रधान दीपक की लौ के सामने शब्द उच्चारित किये जाते हैं। उसके ऊपर गुजरते हुए शब्द तेजोमय स्वरूप को धारण कर समस्त वायुमण्डल में फैल जाते हैं। 'पदार्थ-विज्ञान' के अनुसार मिट्टी में विधिवत् मिलाया गया अन्न शतगुणित हो जाता है, ठीक इसी प्रकार जल में मिलाया गया पदार्थ सहस्रगुणित और अग्नि में मिलाया गया पदार्थ लक्षगुणित हो जाता है। रत्ती भर हींग की छौंक से मोहल्ले भर में सुगन्ध फैल जाना, अग्नि-संसर्ग से पदार्थ की व्यापकता का स्पष्ट उदाहरण है। हवन में विधिपूर्वक आहुत द्रव्य-पदार्थ सूक्ष्म रूप में परिणत होकर वायुमण्डल के अणु-अणु में व्याप्त होकर, समस्त ब्रह्माण्ड को प्रभावित करते हैं। शायद यही कारण है कि हमारे ऋषियों ने यज्ञ की अग्नि के सामने उच्चारित मन्त्रों को ज्यादा शक्तिशाली माना है। इस प्रक्रिया के द्वारा ध्वनि-तरंगों को अधिक प्रभावशाली बनाकर इसमें प्रकाश-ऊर्जा का सम्मिश्रण करके मन्त्रों को अधिक शक्तिशाली, शीघ्र गामी व शीघ्रप्रभावी बनाया जाता है, जिससे मन्त्रों का प्रभाव अनन्तगुणित बढ़ जाता है। ध्वनि व प्रकाश का समन्वय कोई कपोल-कल्पना नहीं अपितु आधुनिक सभ्यता में बहुप्रचलित टेलीविजन (Vedio films) इत्यादि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

शब्द-ब्रह्म

बाइबिल में कहा गया है, 'आरम्भ में केवल शब्द था, शब्द ही ईश्वर के पास था, शब्द ही ईश्वर था।' संस्कृत वर्णमाला पर शब्द को लेकर विशिष्ट खोजें हुईं और पाया गया कि वर्षों के सम्यक् प्रयोग से कई प्रकार के रोगों की निवृत्ति हो जाती है। विदेशी वैज्ञानिकों की यह धारणा है कि वेदों के सारभूत शब्द ओंकार के सम्यक् उच्चारण से मानव के मस्तिष्क-रोग स्वतः ही निवृत्त हो जाते हैं। 'प्रणव' के पुनः-पुनः उच्चारण से मस्तिष्क का विकृत रुधिर शुद्ध होकर मस्तिष्क को स्वस्थ बना देता है। इसी प्रकार बीज मन्त्रों में जो 'ह्रां ह्रीं' आदि उच्चारित होते हैं, वे सब देखने में निरर्थक से आभासित होते हैं, किन्तु इनका सम्यक् उच्चारण विविध रोगों का प्रशामक सिद्ध हुआ है। इन संयुक्त बीज मंत्रों का उच्चारण जितनी बार किया जायेगा उतनी ही बार हृदय का संचालन तीव्रता के साथ होगा। रोगी का रुधिर शुद्ध होकर उसे शीघ्र आराम मिलता है। अनुनासिक वर्णों के सम्बन्ध में जो दीर्घोच्चारण तथा रेफा का उच्चारण किया गया है उसमें 'ह्राँ' इसका दीर्घोच्चारण मुख को खोलकर सब विकारों को दूर करता है। स्वरों के अन्तर्गत पाणिनि ने 'रङ्गों' के उच्चारण की परम विशेषता बतलायी है। रङ्ग वे होते हैं जिसमें अन्त्य वर्ण से पूर्व का अक्षर अनुनासिक रूप से रंजित होता है, यथा—'लोकां २ अकल्पयन्' इस प्रकार के उच्चारण हृदय प्रदेश से लेकर एक हाथ (24 अंगुल) ऊपर तक के समस्त रोगों को दूर करते हैं। भगवान् पाणिनि ने अपनी कृति 'अष्टाध्यायी' में कतिपय तात्कालिक रोगों के सूत्रों का निर्देश किया है, जिनका असर '**शब्द ब्रह्म**' (Sound therapy) के उपासकों पर नहीं होता। यथा—अतिसार 5/2/9, कुष्ठ 8/3/97, संज्वर—(संभवतः एक प्रकार का क्षय रोग) 3/2/142, स्पर्श (छूत की बीमारी) 3/3/16, हृदय रोग 6/3/51 इत्यादि। रोगों की निवृत्ति के लिए भारत के प्रमुख विद्या केन्द्र तक्षशिला विश्वविद्यालय में इस प्रकार के अनुसंधानात्मक अध्ययन को विशेष प्रोत्साहन दिया जाता रहा है। लन्दन में यूटा कॉलेज ऑफ मेडिसिन तथा न्यूयार्क में 'येशीवा विद्यालय' के 'अल्बर्ट आइंसटाइन कॉलेज ऑफ मेडीसिन' में ध्वनि-उच्चारण द्वारा रोगोपचार निमित्त रचनात्मक सफलताएं प्राप्त की हैं, तथा विदेशों में इस बारे में लगातार प्रयोग हो रहे हैं।

मन्त्र-चमत्कार

वर्णों व शब्दों के उच्चारण से चमत्कार की बात तो वैज्ञानिक स्वीकार कर ही चुके हैं। इसके साथ ही वे ये भी स्वीकारते हैं कि मन्त्र शक्तिशाली क्रियात्मक ध्वनि तरंगों का पुंज है। मन्त्र की तरंगें मस्तिष्क तथा ब्रह्माण्डीय वातावरण को प्रभावित करती हैं। जिस प्रकार निरन्तर वायुमण्डल में प्रवाहित होते हुए भी विद्युत चुम्बकीय

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

लहरें तथा रेडियो तरंगें हमें दिखलाई नहीं पड़तीं। ठीक उसी प्रकार से मन्त्रों के द्वारा उच्चारित ध्वनि-शक्तियां भी चर्म चक्षुओं से अग्राह्य हैं। मन्त्रों के चमत्कार के बारे में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई व जैन सभी धर्मग्रन्थों में अनेक चमत्कारिक किस्से छपे पड़े हैं, जिनको दोहराना कोई बुद्धिमानी नहीं होगी। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं, इसी उद्देश्य को लेकर प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है। पुस्तक आपके हाथ में है, प्राचीन है, अपूर्व है तथा पाण्डुलिपि के चित्र भी प्रयोग के साथ-साथ में दिये गये हैं। इनमें से किसी भी एक प्रयोग को समझ लें, सीख लें, हृदयंगम-कर लें, कठिनता के क्षणों में मुझसे सम्पर्क कर ले, फिर पूर्ण आत्मविश्वास व धैर्य के साथ अनुष्ठान प्रारम्भ करें। आप देखेंगे कि सफलता आपके द्वार खटखटा रही है, देरी सिर्फ आगे बढ़कर उसको अपनाने मात्र की है।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

अज्ञातदर्शन, प्रथम बी रोड
गोलबिल्डिंग के पीछे, सरदारपुरा
जोधपुर (राज.)
दूरभाष-३१८८३, फैक्स-६४९०९३
मोबाईल-९८२८१३१८८३

अक्षर ब्रह्म

अक्षरं परमं ब्रह्म सनातनमजं विभुम्।
वेदान्तेषु वदन्त्येकं चैतन्यं ज्योतिरीश्वरम्॥

—अग्निपुराण

अग्निपुराणकार ने अक्षर को परमब्रह्म बतलाया है। अग्नि-पुराणकार कहते हैं कि यह अक्षर-ब्रह्म सनातन, अजन्मा, सर्वव्यापक, चैतन्य तथा ज्योतिरूप ईश्वर है।

इसी प्रकार महाकवि दण्डी कहते हैं—

इदंमन्धस्तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥

—काव्यादर्श

अर्थात् यदि यह संसार 'शब्द' नामक ज्योति से आलोकित न होता तो समस्त त्रिलोकी गहन अन्धकार में विलीन हो जाती।

वैदिक मन्त्र व देवता

सम्पूर्ण वेद-मन्त्रों को तीन भागों में विभाजित किया गया है— (1) ऋक् (2) यजुष् और (3) साम। ऋक् का अर्थ है प्रार्थना अथवा स्तुति। यजुष् का अर्थ है यज्ञ-यागादि का विधान। साम का अर्थ है शान्ति अथवा मंगल स्थापित करने वाला गान। कालान्तर में इनका वर्गीकरण चार भागों में बांट दिया गया, जो चार वेदों के नाम से प्रसिद्ध हुए— ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। सत्य की खोज, दर्शन की निरन्तर परम्परा, धार्मिक व नीतिपरक वैदिक वाक्यों के अतिरिक्त लौकिक कृत्यों और अभिचारों (जादू-टोना आदि) से सम्बन्धित मन्त्रों का समावेश अथर्ववेद में कर दिया गया।

यह निर्विवाद रूप से प्रमाणित है कि 'ऋग्वेद' विश्व की सबसे प्राचीनतम पुस्तक है। यद्यपि ऋग्वेद के काल-निर्णय के बारे में विद्वानों में काफी मतभेद हैं, तथापि अधिकतर विद्वान् इसका काल ईसा पूर्व 2000 से 3000 वर्षों के मध्य मानते हैं। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार वेद अनादि, अनन्त, सर्वविभु, सर्वव्यापक, अप्रतिम, अजर, अमर तथा अपौरुषेय है। उनकी मान्यता के अनुसार, यह साहित्य किन्हीं मनुष्यों द्वारा रचित नहीं, अपितु मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने अपनी अन्तर्दृष्टि व अतीन्द्रिय ज्ञान के द्वारा मन्त्रों का श्रवण-रूप साक्षात्कार किया। यही कारण है कि वैदिक मन्त्रों को 'श्रुति' कहा जाता है। 'वेद' अनादि, शाश्वत व सनातन होने के कारण हिन्दू सनातन धर्म में, इसको ईश्वर की वाणी के रूप में प्रतिष्ठा देकर अन्तिम प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया है।

वैदिक देवता

वैदिककाल में देवता प्रकृति के अनेक स्वरूप शक्तियों के अधिपति के रूप में वर्णित हैं। प्रत्येक देवता की स्तुति के समय उस देवता को सर्वोपरि शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। वैदिककाल के व्यक्तियों का मन और बुद्धि दोनों निश्च्छल, सरल एवं कोमल थी। एक विशेषकाल में जो देवता ऋषि के मन और हृदय को भक्ति एवं श्रद्धा से आंदोलित करता था, वही उस समय सबसे उच्चतम देवता के रूप में पूजित हो जाता। वेदों में परमशक्तिशाली देवता भी अन्य देवताओं पर निर्भर हैं अथवा उसके अधीन हैं ऐसे अनेक प्रसंग वरुण और सूर्य, इन्द्र और विष्णु,

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

अग्नि और मरुत को लेकर मिलते हैं। वस्तुतः वेदों में दिखलाई देने वाला बहुदेववाद अन्त में चलकर एकेश्वरवाद की स्थापना करता है। वेदों में प्रचलित सूक्तों के अनुसार वैदिक देवताओं की स्वतन्त्र स्थिति एवं स्वतन्त्र शक्ति का मूल्यांकन इस प्रकार से किया जा सकता है।

अग्नि वैदिक आर्यों का सर्वाधिक लोकप्रिय व पवित्र देवता है। अकेले ऋग्वेद में लगभग दो सौ सम्पूर्ण सूक्तों में 'अग्नि' का वर्णन मिलता है। अग्नि का यज्ञ के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह यज्ञ में हवि को स्वयं ग्रहण तो करता है साथ ही यज्ञ-भाग अन्य देवताओं को भी पहुँचाता है। अग्नि उपासकों का महान् उपकारक है तथा यह प्रकाश रूप में तीनों लोकों में व्याप्त है। परम पराक्रमी एवं प्रतापी देवता के रूप में **विष्णु** का वर्णन ऋग्वेद के पाँच सूक्तों में मिलता है। यह निर्बलों, गायों व गर्भ का रक्षक होने के कारण सृष्टि के पालनकर्ता के रूप में वर्णित है तथा विपत्तिकाल में यह इन्द्र की सहायता करता है। **इन्द्र** वैदिक आर्यों का प्रमुखतम राष्ट्रीय देवता है। ऋग्वेद का चतुर्थांश 'इन्द्र' की स्तुति से भरा पड़ा है। इन्द्र प्रमुखतः यज्ञ का रक्षक एवं युद्ध का देवता है। इसका प्रधान शस्त्र वज्र है तथा सोमपान का बड़ा शौकीन है। अपने स्तुति कर्ताओं पर आयी हुई विपत्तियों का नाश करने के लिए यह असुरों से लड़ता है, अवर्षण होने पर मेघों पर प्रहार कर, उन्हें वर्षा के लिए मजबूर करता है। कुछ विद्वानों ने आकाश में चमकती हुई विद्युत को ही इस शक्तिशाली देवता का वज्र माना है। इन्द्र की स्तुति हेतु प्रयुक्त कुछ मन्त्रों के विशिष्ट हवनात्मक प्रयोग से इन्द्र वर्षा करता है तथा इन्द्र की मदद से शत्रुओं पर विजय मिलती है। **वरुण** धन को देने वाला प्रमुख देवता है, यह मृत्यु-पाश से मनुष्य को मुक्त करता है तथा इसकी कृपा से व्यक्ति त्रिकालज्ञ हो जाता है। **रुद्र** पाप व श्रापनाशक देवता है। यह औषधापति है इसकी कृपा से मनुष्य आरोग्य व अभयता को प्राप्त करता है। इसी प्रकार **सवित्, उषस्, पूषन्, प्रजापति** व **सोम** प्रमुख वैदिक देवता के रूप में वर्णित हैं।

ये सभी देवता प्रायः स्तुतियों से प्रसन्न होते हैं। यज्ञ में उत्तम हवि व समिधाओं के डालने से ये तृप्त होते हैं तथा अपनी स्तुतिगाताओं की सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। वेद के प्रत्येक मन्त्र का ऋषि, छन्द व देवता होता है तथा उसका विनियोग भी होता है। वेद की ही भाँति वैदिक मन्त्र सनातन सत्य, अजर, अमर, सर्वविभु व सर्वशक्तिमान है। इसके बारे में ज्यादा कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। प्रायः वैदिक मन्त्रों की दुहाई देने वाले बहुत-से लोग मिल जायेंगे परन्तु कौन-से मन्त्र कहाँ, किस काम में आते हैं, यह बात बहुत कम लोग जानते हैं। विश्व के आद्य ग्रन्थ, भारतीय धर्म के कमनीय कल्पद्रुम, आर्य संस्कृति के प्राणदाता वेद के रूप तथा रहस्य, स्वरूप तथा सिद्धान्त का ज्ञान भारतीय संस्कृति के उपासकों के लिए नितान्त आवश्यक है परन्तु दुःख की बात है कि वेदों के गूढ़ अनुशीलन

की बात तो दूर रही उनके साथ सामान्य परिचय भी अधिकतर भारतीय लोगों को नहीं है। इतना ही नहीं, भारतीय संस्कृति की दुहाई देने वाले संस्कृत शिक्षा-दीक्षा से मण्डित पण्डितजन भी वेद से बहुत कम परिचय रखते हैं। आधुनिक प्रचार-तन्त्र ने 'वेद' को एक वर्ग-विशेष के साथ चिपकाकर रख दिया है परन्तु सच तो यह है कि अधिकतर ब्राह्मण वर्ग तोते की तरह रटे-रटाये वेद मन्त्रों को बोलते हैं। वेदमन्त्रों के अर्थगाम्भीर्य व प्रयोजनीयता पर चर्चा करते ही उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लग जाती हैं। अज्ञान अपनी पराकाष्ठा का अतिक्रमण कर रहा है फिर भी ब्राह्मण वर्ग गहरी निद्रा में सोया पड़ा है। इस दिशा में वेदों की अमूल्य निधि को व्यावहारिक प्रयोग (Practical Use) हेतु प्रकाशित करने का मेरा यह लघु प्रयास है। चूंकि हमारा परिवार पिछली नौ पीढ़ियों से कर्मकाण्डी श्रीमाली ब्राह्मणों के गुरुकुल के रूप में प्रतिष्ठित रहा है अतः कर्मकाण्ड व तन्त्रविद्या के प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ व उनके रचनात्मक प्रयोग हमारे पास सुरक्षित हैं, जिनको पहली बार इस पुस्तक के माध्यम से आप क्रमवार देख पायेंगे।

ऋग्वेद

(मण्डल 10, सूक्त 191, मन्त्र संख्या 10552)

1. हस्तस्पर्श से रोग दूर करना–

ऋषि-वसिष्ठ, देवता-विश्वेदवाः

हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी।
अनामयित्नुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि॥

—ऋ० *10/137/7*

अर्थ—वाणी को प्रथम प्रेरित करने वाली मेरी जिह्वा है। उन निरोगिता करने वाले, दश अंगुलीरूपी शाखा वाले दोनों हाथों से, तुमको मैं स्पर्श करता हूँ। इससे तुम्हारा रोग दूर होगा और तुम्हारा आरोग्य बढ़ेगा।

विधि—प्रथम अपनी वाणी से रोगी को निरोगिता की सूचना देनी चाहिए, पश्चात् मन्त्र बोलते हुए दोनों हाथों की अंगुलियों से रोगी को स्पर्श करना और जहां रोग होगा, वहाँ से रोग दूर करने के समान स्पर्शात्मक व्यवहार करना। इस तरह हस्तस्पर्श करने मात्र से रोग दूर हो जाता है तथा व्यक्ति-विशेष आरोग्यता को प्राप्त होता है। रोग दूर करने की यह प्रक्रिया **'वसिष्ठ-विद्या'** कहलाती है। आजकल यह प्रक्रिया 'Rekhi' के रूप में ज्यादा प्रचलित हो चुकी है।

2. विष-बाधा को दूर करना–

ऋषि-वसिष्ठः, देवता-मैत्रावरुणौः, छन्दः-त्रिष्टुप्।

आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं कुलाययद् विश्वयन्मा न आगन्।
अजकावं दुदृशीकं तिरो दधे मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः॥

—ऋ० 7/50/1

अर्थ—हे मित्र और वरुण! यहां मेरी सुरक्षा करो। गुप्त स्थान में रहने वाला अथवा फैलने वाला विष हमारे पास न आवे। रोग और दृष्टिहीनता, हमसे दूर हो। सर्व पांव के (कष्ट देने वाले) शब्द से मुझे न जाने। सांप (एवं अन्य विषधर) मुझ से दूर रहें।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

3. पशु स्वस्थ रहे व घर निरोग हो—

ऋषिवशिष्ठः, देवता-वास्तोष्पतिः, छन्द-त्रिष्टुप्।

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

—ऋ० 7/54/1

अर्थ—हे वास्तोष्पते! तुम हमें अपना समझो, आप हमारे घर को निरोग करें, जो धन हम तुम्हारे पास से मांगेंगे कृपा कर वह हमें दे दो और हमारे द्विपाद और चतुष्पाद (पशुओं) का कल्याण ही, वे सब रोगरहित हों, हृष्ट-पुष्ट हों।

4. उत्तम धन प्राप्ति के लिए—

ऋषिवसिष्ठ, देवता-इन्द्र, छन्द-त्रिष्टुप्।

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्व आ तु प्र याहि हरिवस्तदोकाः।
पिबा त्वऽस्य सुषुतस्य चारोर्ददो मघानि मघवन्नियानः॥

—ऋ० 7/29/1

अर्थ—हे इन्द्र! तुम्हारे लिए यह सोमरस निकालते हैं। हे उत्तम घोड़े के रथ को जोतने वाले इन्द्र! उस स्थान पर तुम सत्वर आओ। इस उत्तम सुन्दर रस का पान करो। हे धनवान् (इन्द्र)! उपासना करने वाले हमको धन प्रदान करो।

विधि—मधु किंवा रसयुक्त समिधाओं का घृत से हवन करें।

5. सन्तान व धन प्राप्ति के लिए—

ऋषिवसिष्ठः, देवता-विश्वेदेवाः, छन्द-त्रिष्टुप्।

वासयसीय वेधसस्त्वं नः कदा न इन्द्र वचसो बुबोधः।
अस्तं तात्या धिया रयिं सुवीरं पृक्षो नो अर्वा न्युहीत वाजी॥

—ऋ० 7/37/6

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

अर्थ—हे इन्द्र! तुम तुम्हारा वचत कब समझोगे? कब हमारी प्रार्थना सुनोगे?

तुम हमारे निवास हेतु सुप्रबन्ध करने वाले हो। तुम्हारा बलवान घोड़ा हमारी विस्तृत वाणी से प्रेरित होकर उत्तम, वीर, पुत्रयुक्त धन को तथा अन्न को हमारे घर के लिए लाऐ।

6. शत्रुनाश व धन के लिए—

ऋषिवसिष्ठ, देवता-इन्द्र, छन्द-त्रिष्टुप्।

नि दुर्ग इन्द्र श्नथिह्यमित्रानभि ये नो मर्तासो अमन्ति।
आरे तं शंसं कृणुहि निनित्सोरा नो भर संभरणं वसूनाम्॥

—ऋ० 7/25/2

अर्थ—हे इन्द्र! युद्ध में जो शत्रु के मानव वीर हमारे सन्मुख खड़े रहकर, हमारा पराभव करना चाहते हैं, उन शत्रुओं का नाश कर तथा निंदा करने वाले शत्रु के उस प्रलाप को दूर कर और हमारे पास (सभी प्रकार के) धनों को भरपूर ले आओ।

7. राक्षस व डायन का नाश करने हेतु—

ऋषिवसिष्ठः, देवता-पृथिव्यन्तरिक्षे, छन्द-जगती।

मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावतामपोच्छतु मिथुना या किमीदिना।
पृथिवी नः पार्थिवात् पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात् पात्वस्मान् ॥१॥

इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन् त्सूर्यमुच्चरन्तम् ॥२॥

—ऋ० 7/104/23-24

अर्थ—राक्षस हमें विनष्ट न करें, यातना देने वालों के स्त्री-पुरुषों के जोड़े हमसे दूर रहें। जो घातक हैं, वे भी दूर हों। पृथिवी पार्थिव पाप से हमें बचावे। अन्तरिक्ष आकाश में होने वाले पाप से हमें बचावे। हे इन्द्र! पुरुष राक्षस का नाश करो और कपट से हिंसा करने वाली दुष्टा स्त्री राक्षसी (डायन) का भी नाश करो। दूसरों को मारना ही जिनका खेल (दुष्ट स्वभाव) है, वे राक्षस गला कट जाने पर विनष्ट हों (अर्थात् पुनर्जीवित न हों), वे उदय होने वाले सूर्य को न देख सकें। अर्थात् सूर्य के उदय होने के पूर्व ही वे दुष्ट मर जायें।

(नोट—इस मन्त्र का प्रयोग मध्यरात्रि या ब्रह्ममुहूर्त में किया जाता है।)

8. देवताओं से मित्रता साधने का मन्त्र—

ऋषि-गृत्समद, देवता-ब्रह्मणस्पतिः, छन्द-त्रिष्टुप्।

त्वया वयमुत्तमं धीमहे वयो बृहस्पते पप्रिणा सस्निना युजा।
या नो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत प्र सुशंसा मतिभिस्तारिषीमहि।

— *ऋ० 2/23/10*

अर्थ—हे बृहस्पति! इच्छाओं को पूरा करने वाली तथा प्रचुर धनवाली तुम्हारी मित्रता के द्वारा, हम श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करें। हमें दबाने की इच्छावाला (कोई) दुष्ट-बुद्धि हमारे ऊपर मालिक न बने। सुन्दर प्रार्थना वाले हम लोग स्तुतियों के द्वारा समृद्ध होवें।

9. धनधान्य व यशवर्द्धक मन्त्र—

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः ॥१॥

अर्थ—हे लक्ष्मीदेवी! मानसिक संकल्प, वाणी की सत्यता, पशुओं—गोमहिष्यादिको के रूप (दुग्ध, दधि, नवनीत) आदि की अधिकता को एवं अन्नादिकों यव ब्राहिधान, गौधूम, चणक (आदि) के रूपों (भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य) को प्राप्त करना। श्री (लक्ष्मी) और यश (कीर्ति) मुझ में अर्थात् मेरे घर में वास करें, मैं धनवान् एवं कीर्तिमान् हो जाऊँ।

10. स्थाई लक्ष्मी (बरकत) के लिए—

तामहमावह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीं।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥ १ ॥

अर्थ—हे अग्निदेव! मेरे घर में उस लक्ष्मी को बुलाओ जो अनपगामिनी (चिरः स्थाई) हो, अर्थात् मुझे न छोड़े, जिस लक्ष्मी के आने पर मैं सोना, उत्तम यश और दास-दासियों, घोड़े (वाहन), नौकर-चाकर एवं पुत्रों तथा पौत्रों को भी प्राप्त करूं। अर्थात् ऐसी स्थाई लक्ष्मी मेरे घर में निरंतर रूप से रहे।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

विशेष—उपर्युक्त दोनों मन्त्र प्रसिद्ध 'श्रीसूक्त' की ऋचायें हैं। अपने सन्मुख

अग्निदेव को प्रज्वलित कर, गोघृत या बिल्व समिधाओं से इन (15) ऋचाओं के अन्त में 'स्वाहा' पद उच्चारण करके नित्य हवन करने पर शीघ्र ही उत्तम फल की प्राप्ति होती है। जिस व्यक्ति के घर में रुपयों की बरकत नहीं होती, हर वक्त जेब खाली रहती है, कर्जा रहता है तथा मांगने वाले तंग करते हैं उसके लिए ये मन्त्र रामबाण व अमृत तुल्य, औषध स्वरूप हैं। यदि विद्वान् व्यक्ति सम्पूर्ण श्रीसूक्त की 15 आवृत्ति का नित्य हवनात्मक प्रयोग करे तो वह अखण्ड कीर्ति व विपुल यश को शीघ्र प्राप्त करता है, इसमें सन्देह नहीं।

यजुर्वेद

(कुल अध्याय 40, मंत्र संख्या, 3988)

1. नेत्ररोग-नाशक मन्त्र—

ऋषि-प्रजापति, देवता-अंजन, छन्द-भूरिक्त्रिष्टुप्।

महीनाम्पयोसिव्वर्च्चोदाऽअसिव्वर्च्चो मे देहि।
व्वृत्रस्यकनीनकासि श्च्चक्षुर्द्दाऽअसिचक्षुर्म्मे देहि॥

—अ. 4/का. 3/मं. 2

अर्थ—हे (त्रिककुत्) अंजन! तुम वृत्रासुर की काली पुतली-रूप हो, चक्षु इन्द्रिय के उत्कर्ष साधन में समर्थ हो, इस कारण मेरे निमित्त चक्षु इन्द्रिय को उत्कृष्टता प्रदान करो।

मन्त्र मीमांसा—त्रिककुत् नाम पर्वत श्रेणी से उत्पन्न हुए अंजन को 'त्रिककुत्' कहते हैं। इस समय इसको ऐन्द्रजाद्रि अथवा 'सातपुड' पर्वत कहते हैं। वृत्र शब्द से घुमण्डल आवरण करता है और चक्षुमध्यस्थ कृष्णबिन्दु को कनीनिका कहते हैं। त्रिककुत् पर्वत के तीन उच्च शिखर हैं, मेघवृन्द चलते समय उससे छिन्न-भिन्न हो गिर जाते हैं। उनसे ही यह अंजन उत्पन्न होता है, इसी कारण कृष्णवर्ण वृत्ररूप मेघ की कनीनिका का वर्णन किया है और यही वैद्यक शास्त्र में नेत्र-रोग की प्रधान औषधि कही गई है।

विधि—यजमान किसी भी सोमवार तक नित्य गौ का मक्खन सेवन करे तथा प्रस्तुत मन्त्र को बोलते हुए त्रिककुत् पर्वत के अंजन को (अभाव में दूसरे अंजन को) दाहिनी आंख में दो बार और बाईं आंख में तीन बार लगावे, ऐसा करने से हर प्रकार की नेत्र-पीड़ा व नेत्र-रोग दूर होकर चक्षु उत्कृष्टता को प्राप्त होते हैं।

2. शीघ्र वर्षा हेतु प्रभावशाली मन्त्र—

ऋषि-वत्स, देवता-महेन्द्र, छन्द-आर्षीगायत्री।

महाँ२ इन्द्रोयऽओजसापर्ज्जन्योव्वृष्टिमाँ२ऽइव।
Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha
स्तोमैर्व्वत्सस्यव्वावृधे।
उपयामगृहीतोसिमहेन्द्राय त्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्त्वा॥ १॥

—अ. 7/का. 40/मं. 3

अर्थ—जो महाप्रभावशाली इन्द्र, तेज से महान् वर्षा वाले मेघ के समान वसनशील वा वत्सस्थानीय यजमान के स्तुतियों से वृद्धि को प्राप्त होता है। हे ग्रह! (महेन्द्र ग्रह) तुम उपयाम में गृहीत हो। हमें जल दो।

अथवा

ऋषि-गौतमः, देवता-कूर्मः, छन्द-पंक्तिः।

अपाङ्गम्भन्त्सीदमा त्त्वासूर्य्योभिताप्प्सीन्माग्निर्व्वैश्शवा नरः।
अच्छिन्नपत्राःप्रजाऽअनुवीक्षस्वानुत्वादिव्व्या वृष्टिः सचताम्॥ १॥

—अ. 13/का. 30/मं. 1

अर्थ—हे कूर्म! गम्भीर जल में तुम्हारा वास है, वहां सूर्य का ताप प्रवेश नहीं कर सकता और विश्वास है कि अग्नि भी वहां प्रवेश नहीं कर सकती। आज इस स्थान में उपविष्ट हो, तुम्हारे सन्मुख स्थित अनूनअंग यह प्रजावर्ग तुमको (श्रेष्ठ वृष्टि होगी इसी फल भोग की आशा से) निरन्तर अवलोकन करता है, इस कार्य के फल से वर्षा हो और वह वर्षा तुम्हारे पूर्ण सुख का कारण हो, इसी आशय से तुम समय व्यतीत करो और जल बरसाओ।

3. सर्वरोगोपशामक मृत्युभयनिवारक मंत्र—

ऋषि-वसिष्ठ, देवता-रुद्र, छन्द-त्रिष्टुप्।

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृर्त्योर्म्मुक्षीय मामृतात्॥१॥

—अ.3/का. 60/मं.1

अर्थ—दिव्यगन्ध से युक्त, मर्त्यधर्महीन उभयलोक के फलदाता, धन धान्यादि से पुष्टि बढ़ाने वाले, त्रिनेत्रधारी शिवशंकर का हम पूजन करते हैं। वह रुद्र हमको मृत्यु-अपमृत्यु व संसार के जन्म-मरण के पाश से छुड़ावें। जिस प्रकार अपने बन्धन से पका हुआ ककड़ी का फल बेल के पाश से छूट जाता है, उसी प्रकार शिव की कृपा से मैं, जन्म-मरण-बन्धन से चिरमुक्त होकर अमरत्व के फल को प्राप्त करूं।

विशेष—यह प्रसिद्ध 'महामृत्युंजय' मन्त्र है। इसको विधिपूर्वक शिवपूजन के साथ जपने से अपमृत्यु के भय का निवारण होता है। इसमें सन्देह नहीं कि इ[illegible] मंत्र के प्रभाव से प्राणी के कर्मबंधन-रूपी पाश कट जाते हैं तथा वह पुनः संस[illegible] में कर्मों का फल भोगने नहीं आता।

4. सुन्दर पति की प्राप्ति के लिए—

ऋषि-वसिष्ठ, देवता-रुद्र, छन्द-त्रिष्टुप्।

त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्।
उर्व्वारुकमिवबन्धना दितो मुक्षीय मामुतः ॥ १ ॥

—अ. 3/का. 60/मं. 2

अर्थ—जो (स्त्रियां) सम्पूर्ण गुण-सम्पन्न सुन्दर पति को प्राप्त करना चाहती हैं वे दिव्य यश सौरभपूर्ण धर्माधर्म के ज्ञाता त्रिनेत्रधारी शिव का पूजन करती हैं जैसे ककड़ी का फल बेल के बन्धन से पक जाने पर छूट जाता है, उसी प्रकार माता-पिता, भ्रातृ वर्ग वा इनके गोत्र से छूटकर विवाह उपरान्त (वे स्त्रियां) पति के प्रासाद में सुखपूर्वक निवास करें।

5. अभिचार (कामण) निकालने का मंत्र—

ऋषि-दीर्घतमा, देवता-लिंगोक्ता, छन्द-गायत्री।

रक्षोहणंव्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तव्वलगमुत्किरामि,
यम्मेनिष्ट्टयोयममात्त्योनिचखानेद महन्तं व्वलगमुत्किरामि,
यम्मेसमानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि,
यम्मेसबन्धुर्य्यमसबन्धुर्न्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि,
यम्मेसजातो यमसजातो निचखानोत्क्कृत्याङ्किरामि ॥ १ ॥

—अ. 5/क. 23/मं. 5

अर्थ—यज्ञविघ्नकारी राक्षसों की विनाशक तथा कृत्यानाशक (भूमि में गाड़े हुए अस्थि, केश, नख इत्यादि अभिचार पदार्थों की नाशक) विष्णु देव यज्ञ स्वरूप वाली यह पृथिवी यज्ञ की वेदी है (इतना मन्त्र कहकर अभीष्ट स्थान पर अग्निकोण के गर्त से मृतिका निकालें)।

अत्यन्त संघातरूप से चाण्डाल आदि अथवा घर के कृत्यज्ञाता, अमात्य-मंत्री या मेरे सम्बन्धी ने किसी निमित्त से क्रोधित होकर, जो अभिचार के निमित्त (अस्थिकेशादि) मेरे अनिष्ट के निमित्त पृथिवी के नीचे गाड़े है, मैं उस अभिचार को उनके सहित निकालता हूँ (इस मन्त्र से नैऋत्यकोण में अवट से मृत्तिका निकाल कर फेंके)।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

धन में, कुलशीलादि और मान-सम्मान इत्यादि से (मुझसे समानता रखने वाले) न्यूनाधिक (व्यक्ति) ने मेरी अहित चेष्टा से यदि कोई अभिचार स्थापित किया हो

तो मैं इस उत्खात के सहित उसको भी उत्किरण करता हूँ अर्थात् निकाल कर फेंकता हूँ (इस मन्त्र से वायुकोण की मृत्तिका निकाल फेकें)।

मातुलादि समान कुल के सम्बन्धी ने अथवा असम्बन्धी ने जो मेरे निमित्त अहित (पूर्ववत्) किया है, उसको मैं निकाल फेंकता हूँ (इस मन्त्र से ईशानकोण के गर्त की मृत्तिका निकाल फेंके)।

समान जन्म (यमल) या समवयस्क भ्राता आदि ने न्यूनातिरेक अवस्था के कारण जो (कोई) उपचार (कामण इत्यादि) किया हो, उसको मैं इस खनन के द्वारा निकाल फेंकता हूँ शत्रुगण शून्य मनोरथ हों (इतना कहकर चारों स्थानों से यथाक्रम मृत्तिका निकाल डालें)।

मन्त्र मीमांसा—अर्वाचीन काल में एक समय राक्षस इन्द्र से हार गये तब उन्होंने मारणादि अभिचार (कामण) वगैरह भूमि में गाड़े तब इन्द्र के पीड़ित होने से यज्ञ करके गर्त में से देवताओं ने अस्थिकेशादि निकाले, जिससे राक्षसगणों का मनोरथ विफल हो गया जिसके वध के निमित्त जो कृत्य किया गया हो उसको आच्छादन करने वाले वलगों को बाहुमात्र नीचे खोदकर निकालें।

''तान्बाहुमात्रान्खनेद्'' इति श्रुते *(श. 3/5/4/9)* अर्थात् पूर्वकाल में असुरों के गाड़े अभिचार एक हाथ खोदने से पाये गये इस कारण तब से एक हाथ पर्यन्त पृथिवी खोदने की परम्परा कर्मकाण्ड प्रक्रिया में चली आ रही है। इस भूखनन प्रक्रिया में मन्त्रों द्वारा काष्ठनिर्मित कुदाल को ही ग्रहण किया जाता है तथा खोदने के पूर्व यूपअवट के समान चार गर्तों को चिह्नित किया जाता है। वैदिक भाषा में इस कुदाल को 'अभ्रि' कहते हैं। इस अभ्रि को खननोन्मुख करके, दृढ़ मुष्टि से दायें हाथ में धारण किया जाता है फिर अग्नि कोण से प्रारम्भ करके चार कोण अग्नि, नैऋत्य, वायव्य और ईशान में चार अवट (गर्त) खनन के निमित्त परिलेखन करें। यह अवट प्रदेश मात्र (अंगूठे से कनिष्ठिका पर्यन्त, बालिश्त भर) वर्तुलाकार निर्माण करें, तत्पश्चात् मन्त्रों को बोलते हुए खनन करके मिट्टी या अभिचार को निकाल फेंकें। यही वैदिक विधान है।

6. औषधि-उपचार के लिए—

ऋषि-प्रजापति, देवता-रुद्र, छन्द-आर्यनुष्टुप्।

याते रुद्रशिवातनूः शिवाव्विश्श्वाहाभेषजी।
शिवारुतस्यभेषजीतयानोमृडजीवसे॥

—अ. 16/का. 49

अर्थ—हे रुद्र! (शंकर) आपके (शिवा) शान्त व कल्याणकारी औषधरूप स्वरूप को नमस्कार है। आप शरीर व्याधि की समीचीन औषधिरूप शक्ति हैं, उस शक्ति से हमारे जीवन को सुखी करो।

विशेष—रुद्र औषधापति होने के कारण प्रत्येक औषध में संचारित जीवनशक्ति के सृजक हैं, अतः जिस व्यक्ति या रोगी पर दवा ने अपना काम करना (असर बताना) बन्द कर दिया हो वह जातक प्रस्तुत मन्त्र को 11 बार उच्चारित कर दवा को मन्त्रपूत करके सेवन करे, इससे व्यक्ति को शीघ्र लाभ मिलता है। यह प्रयोग अनेक बार अनुभूत है।

7. द्वेषी व ईर्ष्यालु व्यक्तियों के नाश हेतु—

ऋषि-परमेष्ठी प्रजापति, देवता-रुद्र, छन्द-धृति।

नमोस्तुरुद्द्रेब्भ्यो येदिवियेषांव्वर्षमिषवः। तेब्भ्योदश-प्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्च्चनोद्वेष्ट्टित-मेषाञ्जम्भेदध्मः॥ १॥

—अ. 16/का. 64/मं. 3

अर्थ—जो रुद्र द्युलोक में विद्यमान है, जिन रुद्रों के वृष्टि ही बाण हैं, उन रुद्रों के निमित्त नमस्कार है, उन रुद्रों के निमित्त पूर्व दिशा में दश अंगुली होकर अर्थात् हाथ जोड़कर, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर में हाथ जोड़कर प्रार्थनापूर्वक नमस्कार करता हूँ। वे रुद्र हमारी रक्षा करें, वे हमको सुखी करें। हे रुद्र! जिससे हम द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है उसको हम इन रुद्रों के दाढ़ में स्थापित करते हैं अर्थात् कालस्वरूप रुद्र स्वयं उनका भक्षण करे।

विशेष—यह तीन कण्डिका वाले मन्त्र 'प्रत्यवरोह संज्ञा वाले' कहलाते हैं। इसमें क्रमशः द्युलोक, अन्तरिक्ष व पृथिवी में व्याप्त रुद्रों से प्रार्थना की गई है कि स्तुतिकर्ता से ईर्ष्या-द्वेष रखने वाले लोग स्वतः ही नष्ट हो जायें। इन मन्त्रों के निरन्तर प्रयोग से जातक 'अजातशत्रु' बन जाता है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

8. शत्रु-सेना को नष्ट करने हेतु—

ऋषि-प्रतिरथ, देवता-मरुत, छन्द-निच्यृदाषीत्रिष्टुप्।

असौयासेनामरुतः परेषामब्भ्यैति न ओजसास्प्पर्द्धमाना। तांगूहत तमसापव्व्रतेनयथामीऽअन्योऽअन्यन्नजानन्॥

—अ. 17/का. 47

अर्थ—हे मरुतो! यह शत्रुओं की सेना हमारे बल से स्पर्धा करती हुई, हमारे सन्मुख आ खड़ी हुई है। इस सेना को कर्मरहित अन्धकार से इस प्रकार आच्छादित करो, जिससे इस शत्रुसेना के लोग आपस में अपनों को नहीं पहचानते हुए, परस्पर अस्त्र चलाकर नष्ट हो जायें।

विशेष—भारी मात्रा में शत्रु-समूह को प्राकृतिक प्रकोप द्वारा नष्ट करने हेतु यह प्रसिद्ध 'रुद्राष्टाध्यायी' का सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है, जिसमें अकेले 'न' की आवृत्ति 12 बार हुई है।

9. परिवार की प्राणरक्षा व सामूहिक समृद्धि के लिए—

ऋषि-प्रजापति, देवता-रुद्र, छन्द-अनुष्टुप उष्णिक जगती।

अवत्त्यधनुष्ट्वः ठं सहस्राक्षशतेषुधे। निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवोनः सुमनाभव॥ १॥ नमस्त्तऽआयुधायानाततायधृष्ण्णवे। उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुभ्यान्तवधन्नवने॥ २॥ मानो महान्तमुत-मानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्। मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्त्तन्वारुद्द्ररीरिषः॥ ३॥

—अ. 16/का. 13-14-15/म. 3

अर्थ—हे सहस्रों तरकस वाले! सहस्रनेत्र रुद्र! तुम धनुष को ज्यारहित करके, बाणों के मुख भाल से निकालकर, हमारे लिए शान्त व शोभन चित्त वाले हो जाओ॥ १॥ हे रुद्र! आपके धनुष पर न चढ़ाये हुये बाण के निमित्त आपको नमस्कार है, आपके दोनों बाहुओं के निमित्त और शत्रु मारने में प्रगल्भ धनुष के निमित्त आपको नमस्कार है॥ २॥ हे रुद्र! हमारे वृद्ध गुरु-पितृव्यादि को मत मारो और हमारे बालक को मत मारो, हमारे तरुण को मत मारो, हमारे गर्भस्थ बालक को भी मत मारो, हमारे पिता को मत मारो, हमारी माता को मत मारो, हमारे प्यारे शरीर पुत्र-पौत्रादि को मत मारो और हमारे लिए सब प्रकार से कल्याणकारी हो जाओ॥ ३॥

अथर्ववेद

(कुल काण्ड 20, मन्त्र-संख्या 5977)

1. रोगोपशमनम्—

(सर्व प्रकार के रोग व घावों को दूर करने के लिए)

ऋषि-अथर्वा। देवता-पर्जन्यः (पृथिवी, इन्द्रः, चन्द्रमाश्च)। छन्द-अनुष्टुप् 3 त्रिपदा विराण्नामगायत्री।

विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं भूरिधायसम्।
विद्मो ष्वस्य मातरं पृथिवीं भूरिवर्पसम्॥ १॥
ज्याऽके परिणो नमाश्मानं तन्वंऽकृधि।
वीडुर्वरीयोऽरातीरप द्वेषांस्या कृधि॥ २॥
वृक्षं यद्गावः परिषस्वजाना अनुस्फुरं शरमर्चन्त्यृभुम्।
शरुमस्मद्यावय दिद्युमिन्द्र॥ ३॥
यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजनम्।
एवा रोगं चास्रावं चान्तस्तिष्ठतु मुञ्ज इत्॥ ४॥

—काण्ड 1/सूक्त 2/मन्त्रः 1

अर्थ—हे देवपति (पर्जन्य)! हमारे शरीरों को पत्थर जैसा सुदृढ़ और शक्ति सम्पन्न बनाओ। आपके बाणयुक्त धनुष की प्रत्यंचा हमारी ओर न झुके (दूसरों की ओर झुके)। हमारे शत्रुओं के द्वेषपूर्ण कर्मों को हमसे दूर रखो। उनका बल नष्ट करो॥ २॥ जिस प्रकार वट-वृक्ष की सघन छाया में गर्मी से पीड़ित गौयें शीघ्रता से शरण लेती हैं, उसी प्रकार शत्रु द्वारा पालन किये जाने वाले उसके वीरों द्वारा हम पर चलाये गए तीव्र बाणों को हमसे दूर हटाओ॥ ३॥ जिस प्रकार पृथ्वी और द्युलोक के बीच में तेज की स्थिति होती है उसी प्रकार रोग, स्राव और घावों को यह आपका शर दबाये रखे और हम रोगमुक्त हो जाएं।

2. नारी-सुखप्रसूति—

ऋषि-अथर्वा, देवता-पूषा, अर्यमा, वेधाः, दिशः,। छन्द-पंक्तिः 2 अनुष्टुप्, 3 चतुष्पदोष्णिगगर्भा ककुम्भत्यनुष्टुप्, 4-6 पथ्यापंक्तिः।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

वषट् ते पूषन्नस्मिन्त्सूतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः।
सिस्रतां नार्यतप्रजाता वि पर्वाणि जिहतां सूतवा उ॥ १॥
चतस्रो दिवः प्रदिश्चतस्रो भूम्या उत।
देवा गर्भं समैरयन् तं व्यूर्णुन्तु सूतवे॥ २॥
सूषा व्यूर्णोतु वि योनिं हापयामसि।
श्रथया सूषणे त्वमव त्वं बिष्कले सृज॥ ३॥
नेव मांसे न पीवसि नेव मज्जस्वाहतम्।
अवैतु पृश्नि शेवलं शुने जराय्वत्तवेऽव जरायु पद्यताम्॥ ४॥
वि ते भिनद्मि मेहनं वि योनिं वि गवीनिके।
वि मातरं च पुत्रं च वि कुमारं जरायुणाव जरायु पद्यताम्॥ ५॥
यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः।
एवां त्वं दशमास्य साकं जरायुणा पताव जरायु पद्यताम्॥ ६॥

—का. 1/अ. 2/सू 11

अर्थ—हे पूषादेव! आपकी कृपा से यह स्त्री सुखपूर्वक सन्तान पैदा करे और कष्ट से बचे, प्रसव काल में इसके अङ्ग पीड़ित न हों॥ १॥ स्वर्ग एवं भूलोक की श्रेष्ठ दिशाओं के अधिष्ठाता दिग्देवता और इन्द्रादि देवताओं ने पहले गर्भ को बनाया था, अब ये सभी देवता इस समय इस गर्भ के बाहर निकालने के लिए इसे आच्छादन से युक्त करें॥ २॥ हे पूषा देवता! गर्भ को जरायु से युक्त करो, हम भी सुख से प्रसव होने के लिए गर्भ के मार्ग को खोलते हैं। हे प्रसवकाल के सहायक देवता! तुम भी प्रसन्न होकर गर्भिणी के अङ्गों को ढीला करो, मूर्ति मारुत देव! आप गर्भ का मुँह नीचे की ओर करके उसे प्रेरित करो॥ ३॥ हे प्रसव करने वाली स्त्री! इस जरायु से तू पुष्ट नहीं हो सकती, इस जरायु का सम्बन्ध तो मज्जा, मांस, चर्बी आदि किसी भी धातु से नहीं, यह बाहर निकाल फेंकने योग्य है, अतः जल के ऊपर स्थित नरम सिंवार के समान शुभ्र जटायु कुत्ते के खाने के लिए नीचे गिर जावे॥ ४॥ हे गर्भवती स्त्री! मैं तेरे गर्भ निकलने के मार्ग को बच्चे के बाहर निकालने के लिए फैलाता हूँ और प्रतिबन्धक नाड़ियों को भी (मन्त्र-बल से) फैलाता हूँ,

माता, पुत्र को अलग-अलग करता हूँ, इसके साथ ही यह जरायु भी उदर से निकलकर नीचे को गिरे॥ ५॥ जिस प्रकार वायु और मन तीव्र गति से चलते हैं और जैसे आकाश में पक्षी शीघ्रता से बिना रोक-टोक के विचरण करते हैं उसी प्रकार हे दस मास गर्भस्थ शिशु! तू जरायु के साथ गर्भ से बाहर को आ तथा यह जरायु नीचे गिरे॥ ६॥

3. श्वेतकुष्ठनाशनम्

(सफेद दाग व कोढ़ को ठीक करने हेतु—)

ऋषि-अथर्वा। देवता-वनस्पतिः। छन्द-(असिक्तिः) अनुष्टुप्।

नक्तंजातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्नि च।
इद रजनि किलांस पलितं च यत्॥ १॥
किलासं च पलितं च निरितो नाशया पृषत्।
आ त्वा स्वो विशतां वर्णः परा शुक्लानि पातय॥ २॥
असितं ते प्रलयनमास्थानमसितं तव।
असिक्न्यस्योषधे निरितो नाशया पृषत्॥ ३॥
अस्थिजस्य किलासस्य तनूजस्य च यत्त्वचि।
दूष्या कृतस्य ब्रह्मणा लक्ष्मश्वेतमनीनशम्॥ ४॥

—*का. 1/अनु. 5/सू. 23*

अर्थ—हे हरिद्रा नामक औषधि! तू रात्रि में उत्पन्न हुई है और रोगग्रस्त पुरुष को आनन्द देने वाली रामभँगरा नामक औषधि! तथा कृष्ण वर्ण करने वाली इन्द्रवारुणि औषधि! असित वर्ण करने वाली नील औषधि! रात्रि में उत्पन्न हुई हरिद्रा आदि औषधियो! तुम इस कुष्ठ रोग से विकृत इस अङ्ग को अपने रङ्ग से रङ्ग दो, अर्थात् कुष्ठ को नाश करके अपना-सा रङ्ग इस अंग का बना दो॥ १॥ हे औषधि! तू श्रेष्ठ है, श्वेत कुष्ठ को इस शरीर से दूर कर दे, जिससे इस रोगी में पहले जैसी लालिमा प्रवेश करे, हे औषधि! तू श्वेत वर्ण को दूर हटा दे ताकि फिर यह इसे स्पर्श न करे॥ २॥ हे नील औषधि! तेरा उत्पन्न होने का स्थान काला होता है जिनके सम्पर्क में तू आती है उन्हें काला कर देती है, तू असित वर्ण वाली है, तेरा स्वभाव भी ऐसा ही है, इसीलिए तू लेपने आदि से कुष्ठ और धब्बे आदि रोगों को दूर कर दे॥ ३॥ अस्थियों में व्याप्त, हड्डी और त्वचा के बीच के मांस में स्थित तथा त्वचा पर स्थित कुष्ठ आदि का जो चिह्न है, उसे मन्त्र द्वारा मैंने नष्ट कर दिया है॥ ४॥

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

4. बालक को दीर्घायु प्रदान करने का मंत्र—

(बालक को आशीर्वाद देने हेतु)

ऋषि-अथर्वा। देवता-अग्नि., 2-3 बृहस्पतिः, 4-5 विश्वदेवाः। छन्द-त्रिष्टुप्, 4 अनुष्टुप्, 6 विराड्जगती।

आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने ।
घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रानभि रक्षातादिमम्॥ १॥

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।
बृहस्पतिः प्रायच्छद्वास एतत्सोमाय राज्ञे परिधातवा उ॥ २॥

परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्गृष्टीनामभिशस्तिपा उ ।
शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व॥ ३॥

एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः ।
कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम्॥ ४॥

यस्य ते वासः प्रथमवास्यं हरामस्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः ।
तं त्वां भ्रातरःसु वृधा वर्धमानमनु जायन्तां बहवः सुजातम्॥ ५॥

—*का. 2/अ 3/सू. 13*

अर्थ—हे अग्ने! तुम शतायु प्रदान करने वाले हो, तुम घृत के प्रतीक हो और घृत तुम्हारे अवयवों का आश्रयरूप है। इसलिए तुम मन्त्रपूत गोघृत को पीकर तृप्त होओ और पिता द्वारा पुत्र की रक्षा करने के समान इस बालक की रक्षा करते हुए (इसे) सौ वर्ष की आयु प्रदान करो॥ १॥ हे देवताओं! इस बालक को परिधान धारण कराओ, इसे तेजस्वी बनाओ और पूर्ण अवस्था वाला करो, इसे सौ वर्ष की आयु प्रदान करो, इन्द्रादि के स्वामी बृहस्पति ने सोम के लिए भी परिधान धारण कराया था॥ २॥ हे बालक! परिधान क्षेम के लिए धारण कराया है, तू इसके प्रभाव से गौओं को हिंसा के भय से बचाता हुआ उनका पोषण कर और पुत्र-पौत्रादि वाला होकर शतायुष्य हो। तू! समृद्धियुक्त ऐश्वर्य को प्राप्त कर॥ ३॥ हे बालक! अपने दक्षिण पाद द्वारा इस पाषाण पर चढ़ और इसी के समान दृढ़ तथा निरोग रह, विश्वदेवा तुझे शतायुष्य करें॥ ४॥ हे माणरक वक! तेरे पुराने उतारे हुए वस्त्र को हम ग्रहण करते हैं। तू समृद्धि से सुशोभित हो। तेरे जन्म के पश्चात् पशु, पुत्रादि से प्रवृद्ध होते हुये सुन्दर भाई उत्पन्न हों और सब देवता तेरे रक्षक हों॥ ५॥

विशेष—जिस परिवार के बच्चे छोटी आयु में ही अकारण गुजर जाते हों, उस परिवार के नवजात शिशु के प्रति ये मन्त्र सिर पर हाथ रख कर बोलें। अथवा इन मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित करके रक्षासूत्र या ताबीज उसके गले में बांधें। चांदी या शुद्ध तांबे का ताबीज बनावें। उसमें एक मूंग, एक उड़द, शेर का नाखून, रीछ का बाल व इस मन्त्रपूत यज्ञ की भस्म डालें, बच्चा निरोग व स्वस्थ रहेगा।

5. अभयप्राप्ति के मंत्र—

१ ऋषि- ६ ब्रह्मा, देवता-प्राणः, अपानः, आयुः, छन्द-त्रिपादगायत्री।

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ १॥
यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ २॥
यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ ३॥
यथा ब्रह्मं च क्षत्रं च न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ ४॥
यथा सत्यं चानृतं च न बिभीतो रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ ५॥
यथा भूतं च भव्यं च न बिभीतो रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ ६॥

—का. 2/अ. 3/सू. 15

अर्थ—देवाश्रय रूप आकाश और मनुष्याश्रय भूत पृथिवी यह दोनों लोक सबसे उपजीव्य हैं, अतः उपजीव्य को कोई नष्ट नहीं कर सकता। ऐसे ही हे प्राण! तू मरणशङ्का से रहित हो, इस मन्त्र-बल से आकाश, पृथिवी के समान चिरंजीवी हो॥ १॥ दिन और रात्रि न भयभीत होते हैं, न नष्ट होते हैं। हे प्राण! तू भी उन्हीं के समान मरण-शङ्का से रहित हो और इस मन्त्र के बल से चिरंजीवी हो॥ २॥ जैसे सूर्य-चन्द्र न तो भयभीत होते हैं, न नष्ट होते हैं, वैसे ही मेरे प्राण! तू भी किसी से मत डर और मृत्यु की आशङ्का छोड़ दे, तू भी सूर्य-चन्द्र के समान चिरंजीवी हो॥ ३॥ जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय जातियाँ न भयभीत होती हैं न नष्ट होती हैं, वैसे ही मेरे प्राण! तू मरण-शङ्का से रहित हो और ब्राह्मण क्षत्रिय जाति के समान चिरंजीवी हो॥ ४॥ जैसे सत्य-असत्य न किसी से डरते हैं, न नष्ट होते हैं, वैसे ही हे मेरे प्राण! तू

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

भी मत डर और नष्ट होने की चिन्ता मत कर, तू भी सत्यासत्य के समान चिरंजीवी हो॥ ५॥ जैसे भूत और भविष्य किसी से नहीं डरते, न नष्ट होते हैं, वैसे ही तू भी मृत्यु की शङ्का त्यागकर चिरकाल तक जीवित रह॥ ६॥

6. बलप्राप्ति निमित्त तेजस्वी मंत्र—

1-7 ऋषि-ब्रह्मा, देवता-ओज, प्राणः, अपानः, आयुः। (एकावसानम्) 1-6 एकपादासुरी त्रिष्टुप् 7 आसुरी उष्णिक्।

ओजोऽस्योजो मे दाः स्वाहा॥ १॥
सहोऽसि सहो मे दाः स्वाहा॥ २॥
बलमसि बलं मे दाः स्वाहा॥ ३॥
आयुरस्यायुर्मे दाः स्वाहा॥ ४॥
श्रोत्रमसि श्रोत्रं मे दाः स्वाहा॥ ५॥
चक्षुरसि चक्षुर्मे दाः स्वाहा॥ ६॥
परिपाणमसि परिपाणं मे दाः स्वाहा॥ ७॥

—का. 2/अ. 3/सू. 17

अर्थ—हे ओज! तू घृत के समान शारीरिक स्थित अष्टम् अवस्था है, तू मुझे ओज (तेजस्विता) प्रदान कर, मैं तुम्हारे लिए हवि देता हूँ॥ १॥ हे अग्ने! तुम शत्रुओं को तिरस्कृत करने में समर्थ हो, मैं तुम्हारे लिए हवि देता हूँ। मुझे तेज प्रदान करो॥ २॥ हे अग्ने! तुम बल हो, मुझे तेज प्रदान करो॥ ३॥ हे अग्ने! तुम आयु हो, मेरे जीवन के लिए सौ वर्ष की आयु प्रदान करने में समर्थ हो, मुझे तेज प्रदान करो॥ ४॥ हे अग्ने! तुम श्रोत हो, इसलिए मुझे सुनने की शक्ति प्रदान करो। (मैं) तुम्हारे निमित्त यह हवि देता हूँ॥ ५॥ हे अग्ने! तुम चक्षुरूप हो। अतः मेरे नेत्रों को दिव्यतेज प्रदान करो॥ ६॥ हे अग्ने! तुम सब का पालन करने वाले हो, अतः आयु भंग के कारणों से (हमको) बचाते हुए हमारा पालन करो, (मैं) तुम्हारे लिए यह हवि देता हूँ।

विशेष—ये मन्त्र प्रज्वलित यज्ञाग्नि के सामने बोलते हुए प्रथम मन्त्र से मुख, द्वितीय से भुजा, तृतीय से वृक्ष, चतुर्थ से हृदय, पंचम से कर्णेन्द्रि तथा षष्ठ से नेत्रों को अग्निताप से स्पर्श करे।

7. शत्रुनाशनम्

ऋषि-अथर्वा। देवता-अग्निः (एकावसानम्) 1-4 निचृद्विषमा गायत्री, भुरिग्विषमा।

अग्ने यत्ते तपस्तेन तं प्रति तप
यो ३ स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ॥ १ ॥
अग्ने यत्ते हरस्तेन तं प्रति हर
यो ३ स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ॥ २ ॥
अग्ने यत्तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च
यो ३ स्माद्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ॥ ३ ॥
अग्ने यत्ते शोचिस्तेनं तं प्रति शोच
यो ३ स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ॥ ४ ॥
अग्ने यत्ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु
यो ३ स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ॥ ५ ॥

—का. 2/अ. 4/सू. 19

अर्थ—हे अग्ने! तुममें जो संतापन शक्ति है, उसके सहित शत्रु को लक्ष्य कर दीप्त होओ, जो शत्रु हमारे विरुद्ध कृत्यादि कर्म करता है, उस विद्वेषी को पीड़ित करो ॥ १ ॥ हे अग्ने! हमसे द्वेष रखने वाले या जिससे हम द्वेष रखते हैं, उस शत्रु पर तुम अपने क्रोधरूप आयुध को चलाओ ॥ २ ॥ हे अग्ने! हमसे वैर करने वाले या जिससे हम वैर रखते हैं, उस शत्रु को अपने तेज से भस्म करो ॥ ३ ॥ अग्ने! हमसे ईर्ष्या करने वाले या जिससे हम द्वेष करते हैं, उन पर अपनी शोक देने वाली शक्ति को प्रयोग करो ॥ ४ ॥ हे अग्ने! हमारे द्वेषी शत्रुओं पर दबाने वाले जाज्वल्यमान तेज को फेंक कर उन्हें निस्तेज व बलहीन कर दो ॥ ५ ॥

8. गर्भाधानम्

1-13 ब्रह्मा। योनिगर्भः पृथिव्यादयो देवताः। अनुष्टुप्, 13 विराट्पुरस्ताद्वृहती।

पर्वतादिवो योनेरंगादंगात्समाभृतम्।
शेषो गर्भस्य रेतोधाः सरौ पर्णमिवा दधत् ॥ १ ॥
यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे।
एवा दधामि ते गर्भं तस्मै त्वामवसे हुवे ॥ २ ॥

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा ॥ ३ ॥
गर्भं ते मित्रावरुणौ गर्भं देवो बृहस्पतिः।
गर्भं त इन्द्राश्चाग्निश्च गर्भं धाता दधातु ते ॥ ४ ॥
विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणिं पिंशतु।
आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥ ५ ॥
यद्वेद राजा वरुणौ यद्वा देवी सरस्वती।
यदिन्द्रो वृत्रहा वेद तद्गर्भकरणं पिब ॥ ६ ॥
गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्।
गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो अग्ने गर्भमेह धाः ॥ ७ ॥
अधि स्कन्द वीरयस्व गर्भमा धेहि योन्याम्।
वृषासि वृष्ण्यावन्प्रजायै त्वा नयामसि ॥ ८ ॥
वि जिहीष्व बार्हत्सामे गर्भस्ते योनिमा शयाम्।
अदुष्टे देवाः पुत्रं सोमपा उभयाविनम् ॥ ९ ॥
धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः।
पुमासं पुत्रमा धेंहि दशमे मासि सूतवे ॥ १० ॥
त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः।
पुमासं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे ॥ ११ ॥
सवितः श्रेष्ठेन रूपेणावस्या नार्या गवीन्योः।
पुमासं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे ॥ १२ ॥
प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेणावस्या नार्या गवीन्योः।
पुमासं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे ॥ १३ ॥

—अर्थव. का./ 5/अ. 5/सू. 25

विशेष—उपर्युक्त मन्त्रों से खीर अभिमन्त्रित करके पुरुष व स्त्री दोनों 'देवप्रसाद' समझकर ग्रहण करें, फिर रतिक्रिया करें तो अधिक क्या कहें—बांझ के भी सन्तान हो जाती है। जिसके कन्यायें ही होती हैं उसके तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होगा। ध्यान रहे—स्त्री जिस दिन से रजस्वला होती है उस दिन से सोलह रात तक वह 'ऋतुमती' कहलाती है। इन सोलह रात्रियों में ही गर्भ रह सकता है, किन्तु बाद में गर्भाशय का मुख बन्द हो जाता है अतः पीछे गर्भ नहीं ठहरता। इन सोलह रात्रियों में पहली,

दूसरी व तीसरी रातें मैथुनार्थ वर्जित हैं और 13 वीं, 14 वीं व 15 वीं रात्रियों में भी मैथुन करना शास्त्रोक्त दृष्टि से मना है।

जिसकी इच्छा पुत्र प्राप्ति की हो वह 'ऋतुस्नान' के पश्चात् प्रथम रात्रि में ही अपनी भार्या के साथ रमण करें अथवा रजस्वला होने के दिन से 6ठी, 8वीं, 10वीं, 12वीं रात्रियां भी ग्राह्य है। जिसकी इच्छा पुत्री पैदा करने की हो वह 5,7 व 11वीं रात्रियों में गृहस्थ करे।

9. कृत्यापरिहणम् (कामण दूर करने का मन्त्र):—

1-12 शुक्रः, कृत्याप्रतिहणम्। अनुष्टुप्, 11 बृहतीगर्भा, 12 पथ्याबृहती।

यां ते चक्रु रामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्ये।
आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ १॥
यां ते चक्रुः कृकवाकावजे वा यां कुरीरिणिं।
अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ २॥
यां ते चक्रु रेकशफे पशूनामुभयादति।
गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ३॥
यां ते चक्रु रमूलायां वलगं वा नराच्याम्।
क्षेत्रे ते कृत्या यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ४॥
यां ते चक्रु गार्हपत्ये पूर्वाग्नावुत दुश्चितः।
शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ५॥
यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रु रधिदेवने।
अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ६॥
यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रु रिष्वायुधे।
दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ७॥
यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः श्मशाने वा निचख्नुः।
सद्मनि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ८॥
यां ते चक्रुः पुरुषास्थे अग्नौ संकसुके च याम्।
म्रोकं निर्दाहं क्रव्यादं पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ९॥
अपथेना जभारैणां तां पथेतः प्र हिण्मसि।
अधीरो मर्याधीरेभ्यः सं जभाराचित्या॥ १०॥

Shekh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुलिम्।
चकार भद्रमस्मभ्यमभगो भगवद्भ्यः॥ ११॥
कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेयऽम्।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तया॥ १२॥

—अथर्व. का. 5/अ. 6/मं. 31

अर्थ—अभिचार करने वाले ने अच्छे मिट्टी के पात्र में या धान, जौ, गेहूँ, उपवाक, तिल, कांगनी के मिश्रित धान्यों में अथवा कुक्कुटादि से कच्चे मांस में, हे कृत्ये! तुझे किया है। मैं तुझे अभिचार करने वाले पर ही वापस भेजता हूँ॥ १॥ हे कृत्ये! तुझे मुर्गे, बकरे या पेड़ पर किया है तो हम अभिचार करने वाले पर ही लौटाते हैं॥ २॥ हे कृत्ये! अभिचारकों ने तुझे एक खुर वाले अथवा दोनों दाँत वाले गधे पर किया है तो हम तुझे अभिचारक पर ही लौटाते हैं॥ ३॥ हे कृत्ये! यदि तुझे मनुष्यों से पूजित भक्ष्य पदार्थ में ढककर खेत में किया गया है तो तुझे अभिचारक पर ही लौटाते हैं॥ ४॥ हे कृत्ये! तुझे गार्हपत्याग्नि या यज्ञशाला में किया गया है तो तुझे अभिचारक पर लौटाते हैं॥५॥ हे कृत्ये! तुझे सभा में या जुए के पाशों में किया गया है तो अभिचारक पर ही लौटाते हैं॥ ६॥ सेना में बाण अथवा दुन्दुभि पर जिस कृत्या को किया है, उसे मैं अभिचारक पर ही लौटता हूँ॥ ७॥ जिस कृत्या को कुएँ में डालकर, श्मशान में गाड़ कर अथवा घर में किया है, उसे मैं वापिस करता हूँ। पुरुष की हड्डी पर या टिमटिमाती हुई अग्नि पर जिस कृत्या को किया है, उसे मांसभक्षी अभिचारक पर ही पुनः प्रेरित करता हूँ॥ ९॥ जिस अज्ञानी ने कृत्या को कुमार्ग से हम मर्यादित लोगों पर भेजा है, हम उसे उसी मार्ग से उसकी (भेजने वाले की) ओर प्रेरित करते हैं॥ १०॥ जो कृत्या द्वारा हमारी उँगली या पैर को नष्ट करना चाहता है, वह अपने इच्छित प्रयास में सफल न हो और हम भाग्यशालियों का वह अमंगल न कर सके॥ ११॥ भेद रखने वाले तथा छिपकर (गुप्त रूप से) कृत्या कर्म करने वाले को, इन्द्र अपने विशाल शस्त्र से नष्ट कर दे, अग्नि उसे अपनी ज्वालाओं से जला डाले॥ १२॥

10. शत्रुनाशनम्—

1-2 अथर्वा। ब्रह्मणस्पतिः, 2-3 सोमः। अनुष्टुप्।

योऽ३ स्मान्ब्रह्मणस्पतेऽदेवो अभिमन्यते।
सर्वं तं रन्धयासि मे यजमानाय सुन्वते॥ १॥
यो नः सोम सुशंसिनो दुःशंस आदिदेशति।

वज्रेणास्य मुखे जहि स संपिष्टो अपायति॥ २॥
यो नः सोमाभिदासति सनाभिर्यश्च निष्ट्यः।
अप तस्य बलं तिर महीव द्यौर्वधत्मना॥ ३॥

—का. 6/अ. 1/सू. 6

अर्थ—हे ब्रह्मणस्पते! देवताओं की भक्ति न करने वाला शत्रु यदि हमको वध योग्य माने तो उसे मेरे, सोम अभिषव करने वाले यजमान के वश में कर दो॥ १॥ हे सोम! जो बुरे विचार वाला शत्रु हमारे सुन्दर विचारों का तिरस्कार करे, तुम उसके मुख पर वज्र-प्रहार करो, जिससे वह छिन्न-भिन्न होकर भाग जाये। हे सोम! जो हमारा नाश करना चाहता है अथवा जो शत्रु हमको संतापित करता है तुम उसके बल को द्युलोक द्वारा अशनि से संहार करने के समान नष्ट कर दो।

11. अक्षिरोगभैषजम्—

1-3 शौनकः। चन्द्रमाः, मन्त्रोक्तदेवताः। अनुष्टुप्, 1 निचृत्त्रिपदा गायत्री, 3 बृहतीगर्भा कुकुम्मत्यपुष्टुप्, 4 त्रिपदा प्रतिष्ठा।

आवयो अनावयो रसस्त उग्र आवयो।
आ ते करम्भमद्मसि॥ १॥
विहल्हो नाम ते पिता मदावती नाम ते माता।
स हिन त्वमसि यस्त्वमात्मानमावयः॥ २॥
तौविलिकेऽवेलयावायमैलब ऐलयीत्।
बभ्रुश्च बभ्रु कर्णश्चापेहि निराल॥ ३॥
अलसालासि पूर्वा सिलाञ्जालास्युत्तरा।
नीलागलसाला॥ ४॥

—का. 6/अ. २/सू. 16

अर्थ—हे सरसो! तू रोग नष्ट करने के लिए खाया जाता है, तेरा तेल महान् बल वाला है। उस तेल में भूने हुये शाक को हम अभिमन्त्रित करके सेवन करते हैं॥ १॥ हे सरसों के शाक! तेरा पिता विहह्व और माता मदावती नाम की है। तू अपने पत्रादि शरीर को मनुष्यों के खाने के लिए देता है इसलिए माता-पिता के समान नहीं रहता॥ २॥ हे तौविलिक नाम्नी पिशाची! तू (अक्षी) रोग की कारणभूत है अतः हमारे रोग को पराजित कर लौटा दे। यह ऐलब नामक नेत्र-रोग दूर हो जाये। वभ्रु और बभ्रु करण और निराल नामक सभी प्रकार के नेत्ररोग इस पुरुष

Shaikh Abdul Gafar Mallikhanda, Niali,odisha

के शरीर से निकल कर भाग जायें॥ २॥ हे सस्यमञ्जरी! तेरा नाम अलसलसा है, प्रथम ग्रहण करने के कारण पूर्वा है। हे शलञ्जाला! तू अन्त में ग्रहण की जाती है इसलिए उत्तरा है। हे नीलागलसाला! तुझे इन दोनों के मध्य में ग्रहण किया जाता है। मेरे नेत्ररोग को दूर कर।

विशेष—उपर्युक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करते हुए सरसों के तेल में हरी पत्तियों (पालक, चनलिया, बथुआ, मटर इत्यादि) की सब्जी बनाई जाती है जिसके निरन्तर सेवन से नेत्ररोग दूर होते देखे गये हैं। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित गुलाबजल को प्रातः दोपहर व सायं तीनों समय, तीन-तीन बार छिटकने से भी कई नेत्र रोगियों को अभूतपूर्व लाभ हुआ है। यह परीक्षित है।

12. केशवर्द्धक अद्भुत मन्त्र—

1-3 उपरिबभ्रवः। शमी। जगती, 2 त्रिष्टुप् 3 चतुष्पाच्छंकुममत्यनुष्टुप्।

देवा इमं मधुना संयुतं यवं सरस्वत्यामधि मणावचर्कृषुः।
इन्द्र आसीत्सीरपतिः शतक्रतुः कोनाशा आसन्मरुतः सुदानवः॥ १॥
यस्ये मदोऽवकेशो विकेशो येनाभिहस्यं पुरुषं कृणोपि।
आरात्त्वदन्या वनानि वृक्षि त्वं शमि शतवल्शा विरोह॥ २॥
बृहत्पलाशे सुभगे वर्षवृद्ध ऋतावरि।
मातेव पुत्रेभ्यो मृड केशेभ्यः शमि॥ ३॥

—का. 6/अ. 3/सू. 30

अर्थ—मधुरसंयुक्त यव को देवताओं ने सरस्वती नदी के निकट मनुष्यों को दिया। उस समय धान्य उत्पन्न करने के लिए इन्द्र ने हल पकड़ा और सुन्दर दाने वाले मरुद्गण कृषक बने॥ १॥ हे शमी! तेरा मद केशोत्पादक और उनकी वृद्धि करने वाला होता है, उससे तू पुरुष को सर्वत्र हर्षयुक्त करती है। तू सैकड़ों शाखा वाली होकर वृद्धि को प्राप्त हो। मैं तुझे नहीं काटता, अन्य वृक्षों को काटता हूँ॥ २॥ हे सौभाग्य की कारणरूप, बिना प्रयत्न ही वर्षा जल से बढ़ने वाली बड़े-बड़े पत्तों वाले शमी! (पलाक्षवृक्ष) माता द्वारा पुत्रों को सुख देने के समान तू मेरे केशों के लिए सुखकारी हो॥ ३॥

विशेष—इस मन्त्र से सिर में लगाने वाले तेल को अभिमन्त्रित करके यदि लगाया जाये तो बाल का झड़ना व गंजापन दूर हो सकता है। केशों की अभिवृद्धि व पुष्टता के लिए इस मन्त्र का सृजन किया गया है। आधुनिक मेडिकल साइंस

ने 'गंजापन' (Alopecia) को एक दुस्साध्य बीमारी घोषित कर रखा है। इस मन्त्रानुसार प्रचलित आयुर्वेदिक केशतैलों में यदि यवाङ्कुर के रस व शमी-पत्र के रस को भी मिश्रित कर दिया जाये तो हो सकता है कोई निदान निकल आवे। इस विषय में जिज्ञासु विद्वानों को अवश्य अन्वेषण करना चाहिए।

13. शापनाशनम्—

१-३ अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः) चन्द्रमाः। अनुष्टुप्।

उप प्रागात्सहस्राक्षो युक्त्वा शपथो रथम्।
शप्तारमन्विच्छन्मम वृक इवाविमतो गृहम्॥ १॥
परि णो वृङ्धि शपथ ह्रदयन्निरिवा दहन्।
शप्तारमत्र नो जहि दिषो वृक्षमियाशनिः॥ २॥
यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात्।
शुने पेष्ट्रमिवावक्षामं तं प्रस्यस्यामि मृत्यवे॥ ३॥

—का. 6/अ. 4/सू. 37

अर्थ—शापक्रिया के कर्ता होते हुए भी सहस्राक्ष इन्द्र रथ सहित मेरे पास आवें और शाप देने वाले शत्रुओं को भेड़िया द्वारा भेड़ मारने के समान ही नष्ट कर दें॥ १॥ हे शपथ, तू बाधक न हो हमको छोड़। जैसे गिरती हुई बिजली वृक्ष को भस्म करती है वैसे ही तू शाप देने वाले (हमारे) शत्रुओं को भस्म कर दे॥ २॥ हम शाप नहीं देते, परन्तु जो शत्रु हमको शाप दें, कठोर भाषण करें, ऐसे शत्रुओं को, कुत्तों के आगे रोटी डालने के समान हम मृत्यु के आगे फेंकते हैं॥ ३॥

विशेष—जब किसी सिद्ध पुरुष ने अकारण क्रोधवशीभूत होकर श्राप दे दिया हो अथवा शत्रु हमें नष्ट करने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर हमारे विरुद्ध अनैतिक वाणी का निरन्तर प्रयोग करता हो, तो इस मन्त्र का प्रयोग करने पर शत्रु की वाणी निष्क्रिय होकर वापस लौटकर, उसी पर अनिष्ट प्रभाव करती है।

14. दुःस्वप्ननाशनम्—

1-3 अंगिराः प्रचेता यमश्च, दुःस्वप्ननाशनम्, देवता-ब्रह्मणस्पते पथ्यापङ्क्तिः, 2 भुरिक्, त्रिष्टुप्, 3 अनुष्टुप्।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

परोऽपेहि मनस्पाप। किमशस्तानि शंससि।
परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि सं चर गृहेषु गोषु

अवशसा निःशसा यत्पराशसोपारिम जाग्रतो यत्स्वपन्तः।
अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यजुष्टान्यारे अस्मद्दधातु॥ २॥
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पतेऽपि मृषा चरामसि।
प्रचेता न आंगिरसो दुरितात्पात्वंहसः॥ ३॥

—का. 6/अ. 5/सू. 45

अर्थ—हे पाप में आसक्ति रखने वाले मन! तू हमसे दूर रह। तू अशोभन बातों को लाता है इसलिए मैं तुझे नहीं चाहता। मेरा मन स्त्री, पुत्र और गवादि पशुओं में उचित भाव से रहे॥ १॥ हम जिन दुःस्वप्नों से पीड़ित होते हैं, उनके कारणरूप पाप को (हे ब्रह्मणस्पते!) हम से दूर कर दे॥ २॥ हे मन्त्र स्वामिन्! हे ब्रह्मणस्पते! हे इन्द्र! पापवश जिस दुःस्वप्न से हम व्यर्थ ही पीड़ित होते हैं, उस पाप से आंगिरस मन्त्र वाले ज्ञानी वरुणदेव हमारी रक्षा करें॥ ३॥

15. पतिलाभः—

1-3 अथर्वा, अर्यमा, अनुष्टुप्ः।

अयमा यात्यर्यमा पुरस्ताद्विषितस्तुपः।
अस्या इच्छन्नग्रुवै पतिमुत जायामजानये॥ १॥
अश्रमदियमर्यमन्नन्यासां समनं यती।
अंङ्गोन्वऽर्यमन्नस्या अन्याः समनमायति॥ २॥
धाता दाधार पृथिवीं धाता द्यामुत सूर्यम्।
धातास्या अग्रुवै पतिं दधातु प्रतिकाम्यऽम्॥ ३॥

—का. 6/अु. 6/सू. 60

अर्थ—जो सूर्य-रश्मियाँ पूर्व दिशा में उग रही हैं, वे सूर्य इस स्त्री रहित पुरुष को स्त्री और कन्या के लिए पति प्रदान करने की इच्छा से उदय हो रहे हैं॥ १॥ पतिव्रता स्त्रियों ने जिस शान्ति कर्मों को किया था उन्हें करती हुई यह पति अभिलाषिणी कन्याएं, पति के प्राप्त न होने पर दुःखित हैं। हे अर्यमा! अन्य स्त्री भी इसके निमित्त शान्ति कर रही है॥ २॥ अखिल विश्व के धारक विधाता ने पृथिवी को स्थापित कर द्युलोक और सविता को सूर्यमण्डल में स्थापित किया है! वे संसार के नियन्ता, इस कन्या के लिए काम्य पति प्रदान करें॥ ३॥

विशेष—पति निश्चित हो जाने के बाद अर्थात् सगाई के पश्चात् यह मन्त्र जाप विशेष फलदाई होता देखा गया है। तलाक या मनमुटाव की स्थिति में यह मन्त्र शीघ्र फलदाई है। वैसे कोई भी पति-अभिलाषी कन्या इसका जाप कर सकती है। इसका प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता।

16. जायाकामना (सुयोग्य पत्नी की प्राप्ति हेतु)-

1-3 भगः, इन्द्रः, अनुष्टुप्।

आगच्छत आगतस्य नाम गृह्णाम्यायतः।
इन्द्रस्य वृत्रघ्नो वन्वे वासवस्य शतक्रतोः ॥ १॥
येन सूर्यां सावित्रीमश्विनोहतुः पथा।
तेन मामब्रवीद्भगो जायामा वहतादिति ॥ २॥
यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो बृहन्निन्द्र हिरण्ययः।
तेना जनीयते जायां मह्यं धेहि शचीपते ॥ ३॥

—का. 6/अ. 8/सू. 82

अर्थ—आते हुए व आये हुए इन्द्र की प्रसन्नता के लिए (मैं) वृत्र संहारक आदि नाम से सम्बोधन करता हूँ और विवाह की कामना वाला मैं, शतकर्मा इन्द्र से सुयोग्य पत्नी की याचना करता हूँ॥ १॥ मुझे विवाह की इच्छा वाले पुरुष को इन्द्र भग प्रदान करें। सविता की अनुकम्पा से अश्विनी कुमारों ने जिस मार्ग से सूर्या, सावित्री आदि को विवाह द्वारा प्राप्त किया, उसी मार्ग से मुझे भी विवाह-निमित्त सुन्दर स्त्री प्राप्त होवे॥ २॥ हे शचीपति इन्द्र! तुम्हारा धन को धारण करने वाला जो हाथ है, उसके द्वारा, मुझ पुत्राभिलाषी को सुयोग्य व सुन्दर पत्नी दो॥ ३॥

17. दुःस्वप्ननाशम्—

1 यमः, स्वप्ननाशनम्, अनुष्टुप्।

यत्स्वप्ने अन्नमश्नामि न प्रातरधिगम्यते।
सर्वं तदस्तु मे शिवं नहि तद्दृश्यते दिवा।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda, Niali,odisha

—का. 7/अ. 10/सू. 101

अर्थ—स्वप्न में जिस अन्न को खाता हूँ, वह सवेरा होने पर दिखाई नहीं देता। ... और भोजन अखाद्य भक्षणादि सब अन्न मेरे कल्याण करने वाले हों, दुःस्वप्न

18. ज्वरनाशनम् (बुखार उतारने का मंत्र)—

1-2 अथर्वाङ्गिराः, 1 पुरोष्णिक्, 2 एकावसाना द्विपदा।

नमो रूराय च्यवनाय नोदनाय धृष्णवे।
नमः शीताय पूर्वकामकृत्वने॥ १॥
यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येतीमं मण्डूकमभ्येऽत्वव्रतः॥ २॥

—का. 7/अ. 10/सू. 116

अर्थ—उष्ण ज्वर के अभिमानी रूप ज्वर को नमस्कार है, शरीर तोड़ने वाले शीत ज्वर को भी नमस्कार है। तृतीयक और चातुर्थिक ज्वर इस मण्डूक पर उतर जावे।

विशेष—जब ज्वर औषध द्वारा दुसाध्य हो जावे तो किसी जीवित या मृत मेंढक को हाथ में लेकर रोगी व्यक्ति के ऊपर से सात बार मन्त्र बोलते हुए उवार दें तो रोगी का ज्वर उतर जायेगा।

19. अभयम्—

1 अथर्वा, द्यावापृथिवी, त्रिष्टुप्।

इदमुच्छ्रे योअवसानमागां शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्। असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु न वै त्वा द्विष्मो अभयं नो अस्तु॥ १॥

—का. 19/अ. 2/सू. 14

अर्थ—श्रेष्ठ फलरूप लक्ष्य स्थान को मैं प्राप्त हो गया हूँ। आकाश और पृथिवी मेरे लिए मंगलमय हों। चारों दिशाएं निरुपद्रव हों। हे सम्पन्नता! हम तुम्हारे द्वेषी नहीं हैं, इसलिए हमको अभय प्राप्त कराओ।

20. यजमान की सम्पन्नता व आयुष्य-कामना के लिए—

ब्रह्मा, ब्रह्मणस्पतिः, विराडुपरिष्टाद्बृहती।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान्यज्ञेनबोधय।
आयुः प्राणं प्रजां पशून्कीर्तिं यजमानं च वर्धय॥

—का. 19/अ. 7/सू. 63

अर्थ—हे ब्रह्मणस्पते! उठो, देवताओं को यज्ञ के लिए प्रतिबोधित करो। इस यजमान की आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति में वृद्धि करो।

विशेष—यह आशीर्वचन न होकर हवनात्मक मन्त्र है। इस मन्त्र की नित्य आहुति देने पर यजमान का चहुँमुखी विकास होता है।

21. प्रतिद्वन्द्वी को हराने का मन्त्र—

उदसौ सूर्यो अगादुदिदं मामकं वचः।
यथाहं शत्रुहोऽसान्यसपत्नः सपत्नहा॥ १॥
सपत्नक्षयणो वृषाभिराष्ट्रो विषा सहिः।
यथाहमेषां वीराणां विराजानि जनस्य च॥ २॥

—का. 1/अ. 5/सू. 29

अर्थ—यह सूर्य ऊपर चला गया है, मेरा यह मन्त्र भी ऊपर गया है, ताकि मैं शत्रु को मारने वाला, प्रतिद्वन्द्वी-रहित तथा प्रतिद्वन्द्वियों को मारने वाला होऊँ। प्रतिद्वन्द्वी को नष्ट करने वाला, प्रजाओं की इच्छा को पूरा करने वाला, राष्ट्र को सामर्थ्य से प्राप्त करने वाला तथा जीतने वाला होऊँ, ताकि मैं शत्रु पक्ष के वीरों का तथा अपने एवं पराये लोगों का शासक बन सकूं।

नोट—हमारे कार्यालय द्वारा I.A.S व R.A.S तथा अन्य राजकीय उच्चपदाधिकार के अभिलाषी व्यक्तियों द्वारा इन मन्त्रों का बराबर 21 रविवार तक प्रयोग कराए गये तथा वे सभी प्रयोग 95% सफल रहे। इस मन्त्र से सूर्य को नित्य अर्घ्य दिया जाता है तथा प्रति रविवार को अर्घ्य में रक्तपुष्प डाला जाता है। अर्घ्य द्वारा विसर्जित जल से दक्षिण नासिका, दक्षिण नेत्र, दक्षिण कर्ण व दक्षिण भुजा को स्पर्शित किया जाता है। तत्पश्चात् पूर्व निश्चित् साक्षात्कारों के लिए जावें तो अवश्य सफलता मिलती है। यह वस्तुतः आत्मविश्वास बढ़ाने वाला मन्त्र है तथा दिन के 11 बजे से 3 बजे तक इस मन्त्र का विशिष्ट प्रभाव देखा गया है। प्रस्तुत मन्त्र 'राष्ट्रवर्द्धनम्' नामक सूक्त से उद्धृत है।

22. अभिचार लौटाने हेतु प्रयोग—

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda, Nialiodisha

(जब यह पता चल जाये कि बलवान् शत्रु हमें मन्त्र-तन्त्र बल से उत्पीड़ित कर रहा है, तब इन मन्त्रों का नित्य प्रयोग करना चाहिए, जब तक कि शत्रु समाप्त न हो जाये अथवा शरणागत होकर अपने पापों का प्रायश्चित्त न कर ले।)

ऋषि-ब्रह्मा, देवता-आयुः, छन्द-पङ्क्तिः, विराट्-बृहती

शेरभेक शेरभ पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥ १॥
शेवृधक शेवृध पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥ २॥
म्रोकानुम्रोक पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥ ३॥
सर्पानुसर्प पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥ ४॥
जूर्णि पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥ ५॥
उपब्दे पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥ ६॥
अर्जुनि पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेति किमीदिनीः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥ ७॥
भरूजि पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्तः॥ ८॥

अर्थ—हे शेरभक! (वध करने वाले) तुम शेरभ के समान सबकी हिंसा करने वाले राक्षसों के स्वामी हो। तुम शेरभों के मुख्य हो। हमारी ओर भेजी हुई तुम्हारी जो यातना और राक्षस हैं वे आयुधों सहित हमारे पास से लौट जायें। तुम्हारे चोर आदि अनुचर भी यहां से चले जायें। जिस प्रयोक्ता ने तुम्हें हमारे पास भेजा है अथवा तुम अपने दल सहित हमारे जिस शत्रु के पास रहते हो, उन्हीं के पशुओं का भक्षण करो, तुम और तुम्हारे आयुध शत्रु के मांस का भक्षण करें॥१॥ हे शेवृधक! (घात करने वाले) तुम अपने आश्रितों की सुख-वृद्धि करने वाले शेवृधों के अधिपति हो। तुम्हारी भेजी हुई यातनायें, राक्षसियां और हिंसात्मक आयुध मेरे पास से लौट जायें। तुम्हारे चोर आदि अनुचर भी यहां न रहें। हे राक्षसो! जिस प्रयोक्ता ने तुम्हें हमारे पास भेजा है, अथवा तुम हमारे जिन विरोधियों के पास रहते हो, उन्हीं शत्रुओं के मांस का भक्षण करो॥ २॥ हे म्रोक और अनुम्रोक (चोर)! तुम धन छोड़कर गुप्त रीति से चले जाते हो। तुम्हारी यातना, राक्षस और हिंसात्मक आयुध मेरे पास से लौट जायें। तुम्हारे चोर और अनुचर भी यहां न रहें। हे म्रोकानुम्रोका! जिस प्रयोक्ता ने तुम्हें यहां भेजा है अथवा तुम हमारे पास जिस विरोधी के पास रहते

हो, उन्हीं शत्रुओं के मांस का भक्षण करो॥ ३॥ हे सर्प, हे अनुसर्प! तुम्हारे द्वारा प्रेषित यातना, राक्षस और हिंसात्मक आयुध मेरे पास से लौट जायें। तुम्हारे किमीदिन आदि अनुचर भी वहां न रहें। हे राक्षसो! जिस प्रयोक्ता ने तुम्हें यहां भेजा है, अथवा तुम हमारे जिन विरोधी के पास रहते हो, उन्हीं शत्रुओं के मांस का भक्षण करो॥ ४॥ हे जूर्णि राक्षसी! तू देह को जीर्ण करने वाली है। तेरे द्वारा प्रेषित अलक्ष्मी रूप यातनायें, राक्षसियां और हिंसात्मक आयुध मेरे पास से चले जायें। तुम्हारी किमीदिनी आदि अनुचरणी भी मेरे पास न रहें। सदल जूर्णियो! जिन प्रयोक्ता ने तुम्हें हमारे पास यहाँ भेजा है अथवा हमारे जिस शत्रु के पास में रहती हो, उन्हीं शत्रुओं का भक्षण करो। उन्हीं का मांस खाओ॥ ५॥ हे उपाशब्द राक्षसी! तू कर्कश शब्द वाली और क्रूरकर्मा है। तेरे द्वारा प्रेषित अलक्ष्मी करने वाली यातनायें, राक्षसियां और हिंसा के साधन रूप आयुध मेरे पास से लौट जायें। तुम्हारी किमीदिनी आदि अनुचरी भी यहां न रहें। सदलबल उपाब्द राक्षसियो! जिस प्रयोक्ता ने तुम्हें हमारे पास भेजा है अथवा तुम हमारे जिस शत्रु के पास रहती हो, उन्हीं शत्रुओं का भक्षण करो॥ ६॥ अर्जुनी नाम्नी राक्षसी! तुम्हारे द्वारा प्रेषित यातनायें, राक्षसियां और हिंसा के साधन रूप आयुध मेरे पास से लौट जायें। तुम्हारी किमीदिनी आदि अनुचरी भी यहां न रहें। हे सदल अर्जुनी राक्षसियो! जिस प्रयोक्ता ने तुम्हें हमारे पास भेजा है अथवा तुम हमारे जिन विरोधियों के पास रहती हो, उन्हीं शत्रुओं के मांस का भक्षण करो॥ ७॥ हे भरुजी नाम्नी राक्षसी! तुम्हारे द्वारा प्रेषित अलक्ष्मी वाली यातनायें, हिंसा, साधन, आयुध और किमीदिनी आदि अनुचरी मेरे पास से लौट जाएं। हे सदलबल भरुजियो! जिस प्रयोक्ता ने तुम्हें हमारे पास भेजा है अथवा तुम हमारे जिस विरोधी के पास रहती हो उन्हीं शत्रुओं के मांस का भक्षण करो॥ ८॥

23. मृतसंजीवनी प्रयोग—

1-11 गरुत्मान्, तक्षकः, जगती, 2 आस्तार पंक्तिः, 4,7,8 अनुष्टुप्, 5 त्रिष्टुप्, 6 पथ्यापंक्ति, 9 भुरिक्, 10,11 निचृदगायत्री।

ददिर्हि मह्यं वरुणो दिवः कविर्वचोभिरुग्रैर्नि रिणामि ते विषम्।
खातमखातमुत सक्तमग्रभमिरेव धन्वन्नि जजास ते विषम्॥ १॥
यत्ते आपोदकं विषं तत्त एतास्वग्रभम्।
गृह्णामि ते मध्यममुत्तमं रसमुतावमं भियसा नेशदादु ते॥ २॥

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

वृषा मे रवो नभसा नतन्यतुरुग्रेण ते वचसा बाध आदु ते
अहं तमस्य नृभिरग्रभं रसं तमस इव ज्योतिरुदेतु सूर्यः॥ ३॥
चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि विषेण हन्मि ते विषम्
अहे म्रियस्व मा जीवीः प्रत्यगभ्येऽतु त्वा विषम्॥ ४॥
कैरात पृश्न उपतृण्य बभ्र आ मे शृणुतासिता अलीकाः।
मा मे सख्युः स्तामानमपि ष्ठाताश्रावयन्तो नि विषे रमध्वम्॥ ५॥
असितस्य तैमातस्य बभ्रोरपोदकस्य च।
सात्रसाहस्याहं मन्योरव ज्यामिव धन्वनो विमुञ्चामि रथाँ इव॥ ६॥
आलिगी च विलिगी च पिता च माता च।
विद्म वः सर्वतो बन्धवरसाः किं करिष्यथ॥ ७॥
उरुगूलाया दुहिता जाता दास्यसिकन्या।
प्रतङ्कं दद्रुषीणां सर्वासामरसं विषम्॥ ८॥
कर्णा श्वावित्तदब्रवीद्गिरेरवचरन्तिका।
याः काश्चेमाः खनित्रिमास्तासामरसतमं विषम्॥ ९॥
ताबुवं न ताबुवं न धेत्वमसि ताबुवम्।
ताबुवेनारसं विषम्॥ १०॥
तस्तुवं न तस्तुवं न धेत्वमसि तस्तुवम्।
तस्तुवेनारसं विषम्॥ ११॥

—का. 5/अ. 3/सू. 13

अर्थ—स्वर्ग के देवता वरुण ने मुझे उपदेश किया। उनके वचनों से मैं तेरे विष को हटाता हूँ। जो विष मांस में अथवा उससे ऊपर है, उसे मैं ग्रहण करता हूँ। रेत में जल के नष्ट होने के समान तेरा विष नष्ट हो जाये॥ १॥ जल का शोषण करने वाले तेरे विष को मैंने भीतर ही रोक लिया। तेरे उत्तम, मध्यम विष को मैं ग्रहण करता हूँ वह मेरे डर से नाश को प्राप्त हो॥ २॥ मेरा वचन वर्षा करने वाला और मेघ के समान गर्जनशील है, मैं अपने उग्र वचनों से तुझ सर्प को बांधता हूँ। अन्धकार में सूर्योदय के समान यह पुरुष विष-मुक्त होकर जीवित हो जाये॥ ३॥ हे सर्प! अपनी नेत्र शक्ति से, मैं तेरी शक्ति का नाश करता हूँ। विष से विष का नष्ट करता हूँ। तू मृत्यु को प्राप्त हो, तेरा विष तुझे ही प्राप्त हो॥ ४॥ हे का

और निन्दनीय सर्पो! मेरे मित्र के स्थान के पास न रहो। मेरी इस बात को औरों को सुनाते हुए अपने विष से स्वयं ही व्याप्त होओ॥ ५ ॥ कृष्ण वर्ण वाले, गीले स्थानों पर रहने वाले, वभ्रु-वर्ण वाले, शुष्क स्थान और सात्रासाह सर्प के क्रोध को, धनुष से रौंदे उतारने के समान तथा मरुभूमि में रथों को उतारने के समान उतार देता हूँ॥ ६ ॥ हे सर्पो! तुम्हारे माता-पिता आलिङ्गी प्राण और विलगी द्रुतगति वाले हैं। तुम्हारे बंधुओं को हम जानते हैं। तुम निर्वीर्य हमारा कुछ नहीं कर सकते॥ ७॥ विशाल गूलर वृक्ष से प्रकट उसकी पुत्री सर्पिणी, काली सर्पिणी की सेविका है। दांत से क्रोध करने वाली इस सर्पिणी का दुःख देने वाला विष प्रभावहीन हो॥ ८॥ पर्वत के समीप घूमने वाली ने कहा कि खुदे हुए स्थानों में रहने वाली सर्पिणियों का विष प्रभावहीन हो॥ ९ ॥ तू ताबुव नहीं है, क्योंकि ताबुव के प्रभाव से विष प्रभावहीन हो जाता है॥ १० ॥ तू तस्तुव भी नहीं है, क्योंकि तस्तुव के प्रभाव से विष निष्प्रभावी हो जाता है॥ ११ ॥

24. सर्पविषनाशक मन्त्र—

1-3 शन्तातिः । 1 विश्वदेवा, 2-3- रुद्रः, उष्णिग्गर्भा पथ्यापंक्तिः, 2 अनुष्टुप्।

मा नो देवा अहिर्वधीत्सतोकान्त्सहपूरुषान्।
संयतं न विष्परद्व्यात्तं न सं यमन्नमो देवजनेभ्यः॥ १॥
नमोऽस्त्वसिताय नमस्तिरश्चिराजये।
स्वजाय बभ्रवे नमो नमो देवजनेभ्यः॥ २॥
सं ते हन्मि दता दतः समु ते हन्वा हनू।
सं ते जिह्वाया जिह्वां सम्वास्नाह आस्यऽम्॥ ३॥

—का. 6/अ. 6/सू. 56

अर्थ—हे विष शमनकर्ता देवगण! सर्प हमारी, हमारे पुत्र-पौत्र इत्यादि की हिंसा न कर पावे। सर्प का मुख दंश के निमित्त न खुले और खुला मुख मन्त्र शक्ति से यथावत् रहे। सर्पादि के विष के शमनकर्ता देवताओं को नमस्कार है॥ १॥ तिरछे बल वाले तिरश्चिराज कृष्णवर्ण, असित और वभ्रु वर्ण के स्वज नामक सर्पों को नमस्कार और इनको वश में रखने वाले देवताओं को भी नमस्कार है॥ २॥ हे सर्प! तेरी ऊपर- नीचे की दंत-पंक्तियों को मिलाता हुआ, ठोड़ी के ऊपर-नीचे के भागों को सीता हूं, तेरी जीभ मिलाकर ऊपर के मुख-भाग को नीचे के भाग में सिलता हूँ और अनेक सर्पों के फनों को एक साथ बांधता हूँ॥ ३॥

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

विशेष—सर्पविषनाशक के साथ-साथ विषैले सर्पों को कीलन करने में भी यही मन्त्र काम में आता है।

25. पृथ्वी से जल निकालने का मंत्र—

ऋषि-अथर्वा, देवता-पृथिवी, छन्द-त्रिष्टुप्, जगती पंक्ति, अष्टि, शक्वरी, वृहती, अनुष्टुप्, गायत्री।

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भवितव्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥ १॥
यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिद जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥ २॥
यस्या हृदयं परमे व्योऽमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे॥ ३॥
यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा॥ ४॥
यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे।
इन्द्रो यां चक्रं आत्मनेऽनमित्रां शचीपतिः।
सा नो भूमिर्वि सृजतां माता पुत्राय मे पयः॥ ५॥

—का. 12/अ. 1/सू. 1

अर्थ—ब्रह्म, तप, सत्य, यज्ञ, दीक्षा और बृहन् जल पृथिवी के आश्रयभूत हैं, ऐसी यह भूत और भवितव्य जीवों का पालनकर्त्री पृथिवी हमको स्थान दे॥ १॥ समुद्र, नदियों और जल से सम्पन्न पृथिवी, जिसमें कृषि और अन्न होता है, जिससे यह प्राणवान् संसार तृप्त रहता है, वह पृथिवी हमको फलरूप रस, उपलब्ध होने वाले प्रदेश में प्रतिष्ठित करे॥ २॥ जो पृथिवी समुद्र में थी, विद्वान् जिस पृथिवी पर श्रम करते हुए विचरते हैं, जिसका हृदय आकाश में स्थित है, वह अमृतमयी पृथिवी हमको श्रेष्ठ राष्ट्र, बल और दीप्ति में प्रतिष्ठित करे॥ ३॥ जिस पृथिवी में प्रवाहमान जल समान गति से दिन और रात्रि में भी गमन करता है ऐसी भूमि धारा पृथिवी हमको साररूप फल और वर्च से युक्त करे॥ ४॥ जिस पृथिवी को अश्विनीकुमारों ने बनाया, विष्णु ने जिस पर विचक्रमण किया, इन्द्र ने जिसे अपने अधीन कर शत्रुओं से हीन किया, वह पृथिवी, माता द्वारा पुत्र को दूध पिलाने के समान साररूप जल मुझे प्रदान करे।

विशेष—औद्योगिक क्षेत्रों में नई फैक्ट्रियों में कुएँ से जल प्राप्त करने तथा जल को निरन्तर गतिशील बनाने हेतु यह मन्त्र अमोघ है। इसके विधिवत् प्रयोग से कुएँ का जल नहीं टूटता।

26. पृथ्वी से धन एवं विविध सम्पदा प्राप्त करने का मंत्र—

ऋषि-अथर्वा, देवता-पृथिवी, छन्द-त्रिष्टुप्, जगती पंक्ति, अष्टि, शक्वरी, बृहती, अनुष्टुप, गायत्री।

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशिनी
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणो नो
दधातु॥ १॥
शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता।
तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्यां अकरं नमः॥ २॥
विमृग्वरीं पृथिवोमा वदामि क्षमां भूमि ब्रह्मणा
वावृधानाम्।
ऊर्जं पुष्टं बिभ्रतीमन्नभागं घृतं त्वाभि निषीदेम भूमे॥ ३॥
मा नः पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत।
स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन्परिपन्थनो वरीयो
यावया वधम्॥ ४॥
यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्॥ ५॥
सा नो भूमिरा दिशतु यद्धनं कामयामहे।
भगो अनुप्रयुङ्क्तामिन्द्र एतु पुरोगवः॥ ६॥
निधिं बिभ्रती बहुधा गृहा वसु मणिं हिरण्यं पृथिवी
ददातु मे।
वसूनि नो वसुदा रासमाना देवी दधातु सुमनस्यमाना॥ ७॥
जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी
यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥ ८॥

—का. 12/अ. 1/सू. 1

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

अर्थ—जो पृथिवी धनों की धारणकर्त्री, संसार की भरणकर्त्री, सुवर्ण को धारण करने वाली और विश्व की आश्रयरूपा है, वह वैश्वानर अग्नि को धारण करने वाली पृथिवी हमको द्रव्य दे॥ १॥ जो पृथिवी शिला, भूमि, पत्थर और धूल के रूपों को धारण करती है, ऐसी पृथिवी हिरण्यवक्षा है, मैं उसे नमस्कार करता हूँ॥ २॥ हे क्षमारूपिणी पृथिवी! परमपवित्र मन्त्र द्वारा मैं तेरा स्तवन करता हूँ हे पृथिवी! तू पोषक अन्न और बल को धारण करने वाली है, मैं तुझ पर घृताहुति देता हूँ॥ ३॥ हे पृथिवी! मेरे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों ओर रहो, मुझे दस्यु प्राप्त न करें, विकराल हिंसा से मुझे बचाती हुई, तुम मेरे लिए मंगल करने वाली होवो॥ ४॥ हे पृथिवी! मैं तेरे जिस स्थल को खोदूं, वह शीघ्र ही यथावत् हो जाये। मैं तेरे मर्म को पूर्ण करने में समर्थ नहीं हूँ॥ ५॥ यह भूमि हमको अभीष्ट धन दे। भाग्य हमको प्रेरणाप्रद हो और इन्द्र हमारे अग्रगण्य हों॥ ६॥ निधियों को धारण करने वाली पृथ्वी हमें निवास, मणि, सुवर्ण इत्यादि विविध सम्पदा दे। यह धन प्रदान करने वाली हम पर प्रसन्न होती हुई (हम पर) वरदायिनी बने॥ ७॥ अनेक धर्म और अनेक भाषा वाले मनुष्यों को धारण करने वाली पृथिवी, अडिग धेनु के समान मेरे लिए धन की सहस्र धाराओं का दोहन करे॥ ८॥

27. यक्ष्मा (टी. बी.) दूर करने का मंत्र—

ऋषि-भृगुः, देवता-अग्निः, मन्त्रोक्ताः-मृत्यु, छन्द-त्रिष्टुप् अनुष्टुप, गायत्री।

नडमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि।
यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकमधराङ्परेहि॥ १॥
अधशंसदुः शंसाभ्यां करेणानुकरणे च।
यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरजामसि॥ २॥

—का. 12/अ. 2/सू. 2

अर्थ—हे क्रव्याद् अग्ने! तू नड पर आरोहण कर, जो यक्ष्मा मनुष्यों में, या जो यक्ष्मा गौ में है, तू उनके साथ ही यहां से दूर जा। तू अपने भाग्य की सीमा पर आ॥ १॥ पाप और दुर्भावनाओं का नाश करने वाले कर और अनुकर से यक्ष्मा को पृथक् करता हूँ और मृत्यु को भी दूर भगाता हूँ।

28. वैधव्य रोकने हेतु मन्त्र-प्रयोग—

ऋषि-भृगुः, देवता-अग्नि।

इमां नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा संस्पृशन्ताम्
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे।

व्याकरोमि हविषाहमेतौ ब्रह्मणा व्य१हं कल्पयामि।
स्वधां पितृभ्यो अजराँ कृणोमि दीर्घेणायुषा
समिमान्त्सृजामि॥ २॥

—का. 12/अ. 2/सू. 2

अर्थ—यह स्त्रियां सुन्दर पति से युक्त रहें। विधवा न हों। यह अश्रुओं से रहित और घृतयुक्त हों। यह सुन्दर अलङ्कारों को धारण करने वाली हों और सन्तानोत्पत्ति के लिए मनुष्य योनि में रहें॥ १॥ मैं इन दोनों (पति-पत्नी) को मन्त्र शक्ति से सामर्थ्यवान् करता हूँ। पितरों की स्वधा को जीर्णतारहित करता हुआ इन्हें दीर्घायु वाला बनाता हूँ।

29. दिव्यवाणी प्राप्त करने वाला मंत्र—

ऋषि-अथर्वा, देवता-वाक्, छन्द-अनुष्टुप्, उष्णिक्, बृहती, गायत्री।

निर्दुरर्मण्यऽऊर्जा मधुवती वाक्॥ १॥
मधुमती स्थ मधुमतीं वाचमुदेयम्॥ २॥
उपहूतो मे गोपा उपहूतो गोपीथः॥ ३॥
सश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रूयासम्॥ ४॥
सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा हासिष्टां सौपर्णं चक्षुरजस्रं ज्योतिः॥ ५॥
ऋषीणां प्रस्तरोऽस्ति नमोऽस्तु दैवाय प्रस्तराय॥ ६॥

—का. 16/अ. 1/सू. 2

अर्थ—मैं दूषित चर्मरोग से मुक्त रहूँ, मेरी वाणी बलवती और मधुमती रहे। औषधियो! तुम मधुर रस से पूर्ण रहो, मेरी वाणी भी मधुरस से पूर्ण हो। मैं इन्द्रियों से पालित मन और मुख का आह्वान करता हूँ। मेरे कान कल्याणकारी बातों को सुनें, मैं मंगलमयी प्रशंसात्मक बातों को सुनूं। मेरे श्रोत्र उत्तम प्रकार से सुनते रहें और निकट से सुनना न छोड़ें, मेरे नेत्र गरुड़ के नेत्र के समान होते हुए दर्शनशक्ति से युक्त रहें। तू ऋषियों का प्रस्तर है, देवरूप प्रस्तर को नमस्कार है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

30. गाय के रोग को दूर करने का मंत्र—

ऋषि-शान्तानि, देवता-मन्त्रोक्ता, छन्द-बृहती, अनुष्टुप्-प्रभृति।

शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत्।
शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरव तीर्यती॥ १॥

—का. 19/अ. 1/सू. 9

अर्थ—कांपती हुई पृथ्वी, कम्प के दोष को दूर करती हुई शांति देने वाली हो, ज्वाला रूप से गिरने वाली बिजलियों का स्थान भी सुखदायक हो। दूध के स्थान पर रक्त देने वाली धेनु तथा फटती हुई पृथ्वी, हमारे दोषों को शांत कर फलदायी बने।

31. अमंगल दूर करने का मंत्र—

नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः।
शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोपसर्गाः शमु नो भवन्तु॥ १॥

—का. 19/अ. 1/सू. 9

अर्थ—उल्काओं के आघात से स्थाई च्युत नक्षत्र हमें शांति दें, शत्रुओं के कृत्यादि अभिचार कर्म सुख दें। भूमि खोदकर हड्डी और केश आदि लपेटकर बनायी गई विष पुत्तलिकायें हमारे लिए शान्तिप्रद हों, विद्युत अपने देखने से प्राप्त हुई व्याधि को दूर करे। राष्ट्र में होने वाले विघ्न भी शांत हों।

32. गुग्गल-धूप द्वारा रोग नष्ट करने का मंत्र—

ऋषि-अथर्वा, देवता-गुग्गल, छन्द-अनुष्टुप्।

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते।
यं भेषजस्य गुग्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते॥ १॥
विश्वञ्चस्तस्माद्यक्ष्मा मृगा अश्वा इवेरते।
यत् गुग्गुलु सैन्धवं यद्वाप्यामि समुद्रियम॥ २॥
उभयोरग्रभं नामास्मा अरिष्टतातये॥ ३॥

—का. 19/अ. 5/सू. 38

अर्थ—जो व्यक्ति गुग्गलरूप औषधि की नस्य (धूप) आदि लेता है, उसे व्याधियां पीड़ित नहीं करतीं और अन्य द्वारा प्रेरित शाप भी नहीं लगते॥ १॥ गुग्गल के धुएं को सूंघने वाले के समीप से द्रुतगामी अश्व और हरिण के भागने के समान व्याधियां (यक्ष्मा, मृगी वगैरह) चारों दिशाओं की ओर भाग जाती हैं॥ २॥ हे गुग्गलों! तुम समुद्र से उत्पन्न हुई हो या सिन्धुदेश में प्रकट हुई हो। मैं तुम दोनों प्रकार को ही कहता हूँ, इस वर्तमान रोगादि को दूर करने के निमित्त मैं तुम्हारे नाम को कहता हूँ, अतः यह प्राणी रोगरहित हो जाये।

33. कृत्या निवारक मणि—

ऋषि-अङ्गिरा, देवता-जङ्गिडो वनस्पतिः, छन्द-अनुष्टुप।

जङ्गिडोऽसि जङ्गिडो रक्षितासि जङ्गिडः।
द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वं रक्षतु जङ्गिडः॥ १॥
या गृत्स्यस्त्रिपञ्चाशीः शतकृत्याकृतश्च ये।
सर्वान् विनक्तु तेजसोऽरसांञ्जङ्गिडस्करत्॥ २॥
अरसं कृत्रिमं नादमरसाः सप्त विस्रसः।
अपेतो जङ्गिडामतिमिषुमस्तेव शातय॥ ३॥

—*का. 19/अ. 5/सू. 34*

अर्थ—जङ्गिड नामक औषधि से निर्मित मणे! तू कृत्याओं और कृत्या कर्मों का भक्षण कर लेती है। तू सब भयों को दूर करने वाली हो। यह मणि हमारे मनुष्यों और पशुओं आदि की रक्षक हो॥ १॥ पुतलियों के निर्माता और तिरपन प्रकार की ग्राहिका कृत्यायें हैं, उन सबको यह जङ्गिड मणि रसहीन और निर्वीर्य करे॥ २॥ अभिचार कर्म से उत्पन्न हुई कृत्रिम ध्वनि जो हमारे कानों और सिर आदि स्थानों में होती है इस मणि के प्रभाव से निरर्थक हो जाये, नासिका के छेद, नेत्र-गोलक, कर्ण-छिद्र और मुखछिद्र भी अभिचार कर्म के अनिष्ट से मुक्त हों। हे मणे! तू अपने धारणकर्ता की कुबुद्धि और दरिद्रता को, बाण फेंक कर नष्ट करने के समान ही नष्ट कर दे॥ ३॥

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

दुर्गासप्तशती के चमत्कारी एवं अनुभूत तान्त्रिक प्रयोग

'कलौ शक्तिं विचिन्तयेत्' अर्थात् कलिकाल में शक्ति की उपासना एवं साधना शीघ्र प्रभावशाली एवं तत्काल फलदायी मानी गई है। शक्ति-उपासना में तांत्रिक मंत्र विशिष्ट शक्तिशाली माने गये हैं। तांत्रिक मंत्रों की दृष्टि से 'दुर्गासप्तशती' सर्वोपरि है। श्रीमार्कण्डेयपुराण के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य का वर्णन 700 श्लोकों में होने से यह 'सप्तशती' के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। 13 अध्यायों में विभक्त अनुष्टुप छन्दों में निर्मित, ये सभी श्लोक तन्त्रोक्त होने से 'मन्त्र' कहलाते हैं। शाक्त सम्प्रदाय व भारतीय तांत्रिक वाङ्मय में दुर्गासप्तशती जितना प्रचलित व प्रसिद्ध अन्य कोई ग्रन्थ नहीं है। यों तो दुर्गासप्तशती स्वयमेव अनेक प्रकार के विशिष्ट प्रयोगों से परिपूर्ण महासमुद्र है, जिसमें सम्यक् रूप से गोता लगाने वाले कुशल साधक अनेक प्रकार की दुर्लभ सिद्धियों, शक्तियों व उपलब्धियों को सहज में ही प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु मुमुक्षु सज्जनों के लाभार्थ कुछ अनुभूत सफल प्रयोगों का यहां दिग्दर्शन विधि-विधान से कराया जा रहा है।

दुर्गापूजन काल—यों तो सभी तिथियां व काल भगवती की आराधना के लिए शुभ ही होते हैं, परन्तु शास्त्रकारों ने तत्काल सिद्धि के लिए कुछ मर्यादाएं निश्चित कर रखी हैं। स्वयं जगदम्बा अपने श्रीमुख से कहती हैं—'अष्टमी, चतुर्दशी और नवमी को जो एकाग्रचित्त होकर मेरे 1, 2, 9 व 10 अध्यायों के प्रसंग का पाठ करेंगे, उन्हें कोई पाप स्पर्श नहीं कर सकेगा, उसके घर कभी दरिद्रता नहीं होगी तथा उनको कभी अपने प्रेमीजन से बिछोह का कष्ट नहीं भोगना पड़ेगा।'[1]

प्रत्येक नववर्ष के प्रारम्भ में अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक 'दुर्गासप्तशती' के पठन-पाठन व हवन के विधान की परम्परा है जिसे लोग 'नवरात्रि' (नोरता) कहते हैं। दुर्गासप्तशती में दुर्गा के नव स्वरूप—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी व सिद्धिदात्री हैं। प्रत्येक देवी के निमित्त एक-एक पाठ अर्पण करते हुए नव दिनों में नव दुर्गा का

---

1. अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्॥ *अ. १२/श्लो. ४*

एक अनुष्ठान पूरा होता है। विशेष अनुष्ठान एवं काम्य प्रयोगों के निमित्त शतचण्डी, सहस्रचण्डी एवं लक्षचण्डी के प्रयोग सर्वविदित हैं। नवदुर्गा की सिद्धि हेतु सर्वश्रेष्ठ समय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा व चैत्र प्रतिपदा हैं, जो कि 'प्रकट नवरात्रि' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा एवं माघ शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि 'गुप्त नवरात्रि' (नोडता) कहलाते हैं। 'गुप्त नोडता' का प्रयोग गुप्त-सिद्धि के लिए श्रेष्ठ होता है।

दुर्गापूजन हेतु कतिपय चिन्तन बिन्दु—

* देवी की प्रतिष्ठा हमेशा सूर्य दक्षिणायन में रहने पर ही होती है। माघ व आश्विन मास में देवी की प्रतिष्ठा सब कार्यों के लिए प्रशस्त मानी गई है।
* एक घर में तीन शक्ति (देवी प्रतिमाओं) की पूजा नहीं होती।
* देवीपीठ पर वंशवाद्य, शहनाई व मधुरी भूल कर भी न बजावें।
* भगवती दुर्गा का आह्वान बिल्वपत्र, बिल्वशाखा, त्रिशूल या श्रीफल पर किया जा सकता है परन्तु दूर्वा से भगवती का पूजन कभी न करें।
* देवी को केवल रक्त कणेर और नाना सुगन्धित पुष्प प्रिय हैं, सुगन्धिहीन व विषैले पुष्प देवी पर कभी न चढ़ावें।
* नवरात्रि में कलश-स्थापन व अभिषेक का कार्य केवल दिन में होता है। 'रुद्रयामल' के अनुसार मध्यरात्रि में, देवी के प्रति किया गया हवन शीघ्र फलदायी व सुखकर होता है।
* भगवती की प्रतिमा हमेशा रक्तवस्त्र से वेष्टित होती है तथा इसकी स्थापना उत्तराभिमुखी कभी नहीं होती।
* देवी पूजनकाल में साधक यम-नियमों का पालन करते हुए निराहार व्रत रखे व पाठ के तत्काल बाद दुग्धपान करे तो भगवती शीघ्र प्रसन्न होती हैं।
* देवी उपासक के गले तथा गोमुखी में रुद्राक्ष व मूंगे की माला अवश्य होनी चाहिए। देवी प्रतिमा की केवल एक ही प्रदक्षिणा होती है।
* 'देवी कवच' से शरीर की रक्षा होती है तथा पुरुष अपमृत्यु से रहित होकर 100 वर्ष की स्वस्थ आयु भोगता है। कवच पाठ करने से मनुष्य सभी प्रकार की बाहरी बाधा (भूत-प्रेतादि) से सुरक्षित हो जाता है। कवच 'शक्ति' का बीज है अतः दुर्गा-पूजन के पूर्व इसका पाठ अनिवार्य है। परन्तु दुर्गायज्ञ में कवच के रक्षामन्त्रों से हवन निषिद्ध है, जो मूर्ख कवच मन्त्र से हवन करता है वह मर कर नरक में जाता है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

* अर्गला लोहे व काष्ठ की होती है जिसके लगाने से किवाड़ नहीं खुलते। घर में प्रवेश करने हेतु मुख्य द्वार की अर्गला का जितना महत्त्व होता है उतना ही महत्त्व सप्तशती में 'अर्गला' पाठ का है। इसके पाठ करने से किसी प्रकार की बाधा घर में नहीं आ सकती एवं सकल मनोरथ सिद्ध होकर मनुष्य तीनों लोकों में पूजनीय हो जाता है।
* 'कीलक' को सप्तशती पाठ में उत्कीलन की संज्ञा दी गई है इसलिए कवच, अर्गला व कीलक क्रमशः दुर्गापूजन के पूर्व अनिवार्य हैं।
* चतुर्थ अध्याय के मन्त्र 24 से 27 की आहुति वर्जित है। इन चार मन्त्रों की जगह 'ॐ महालक्ष्मै नमः' से चार बार हविष्यात्र समर्पित करना चाहिए।
* हवनात्मक प्रयोग में प्रत्येक अध्याय के आदि व अन्त के मंत्रों को शर्करा, घृत व लौंग से युक्त करके क्षीर की आहुति देनी चाहिए।
* पाठांत में 'सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्र' पढ़ने पर ही दुर्गा पाठ का फल मिलता है। अनेक प्रभावशाली बीजाक्षरों एवं साबर मंत्रों से युक्त यह स्तोत्र दुर्गापाठ के सफलता की कुंजी (चाबी) कहलाता है। इसके बिना दुर्गापाठ का फल अरण्यरोदन के समान निष्फल हो जाता है।
* सम्पूर्ण दुर्गासप्तशती प्रथमचरित्र, (1) मध्यमचरित्र (2,3,4) व उत्तरचरित्र (5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12) इन तीनों भागों में विभक्त है। किसी भी चरित्र या अध्याय का अधूरा पाठ नहीं करना चाहिए।
* प्रत्येक अध्याय के आगे देवी के ध्यान दिये गए हैं। जैसा ध्यान हो, उसी प्रकार से देवी के स्वरूप का चिन्तन करना चाहिए एवं अमुक कार्य हेतु प्रयोग में लाये जाने वाले मन्त्र का अनुष्ठान करने के पूर्व उस मंत्र के अध्याय के प्रारम्भिक ध्यान का चित्र आंखों के सामने होना चाहिए। विधिवत् ध्यान के अभाव में सिद्धि नहीं मिलती।
* विशेष कार्यों की सिद्धि हेतु अभीष्ट मन्त्रों का सम्पुट दिया जाता है। यह सम्पुट पाठ दो प्रकार के होते हैं, एक उदय और दूसरा अस्त, वृद्धि के लिए उदय और अभिचार के लिए अस्तसम्पुट का प्रयोग किया जाता है। विस्तार के भय से सभी सामग्री नहीं दी जा रही है। कोई भी अनुष्ठान प्रारम्भ करने से पूर्व योग्य गुरु से निर्देशन अवश्य लेना चाहिए।
* दुर्गासप्तशती के मंत्रों की उपासना व उच्चारण-पद्धति गुरुमुख से ही सीखनी चाहिए क्योंकि सेतु, महासेतु, मुखशोधन, कुल्लुका, शापोद्धार, संजीवन, उत्कीलन, निर्मलीकरण आदि विषयों को गुरुकृपा से ही जाना जा सकता है। पुस्तक के पढ़ने-मात्र से सिद्धि नहीं मिलती। सिद्धि तो शुद्ध संकल्प व गुरुकृपा पर ही निर्भर रहती है।

सिद्धि-असिद्धि की तत्काल परीक्षा

देवी प्रतिष्ठा, दीक्षा, स्थापना, यज्ञ एवं विशिष्ट अनुष्ठानों को सम्पन्न करने के पूर्व जौ (यव) के दानों को ताजा मिट्टी के पात्र में बोया जाता है। प्रतिष्ठा किंवा स्थापना के दिवस ही शुभकाल में ये दाने बोये जाते हैं। 'सिद्धांतशेखर' के अनुसार तीसरे ही दिन यवांङ्कुर के दर्शन हो जाने चाहिए।

इन अङ्कुरों की बढ़ोत्तरी व प्रफुल्लता पर कार्य सिद्धि की परीक्षा होती है। 'अवृष्टिं कुरुते कृष्णा, धूम्राभं कलहं तथा' अर्थात काले अंकुर उगने पर उस वर्ष अनावृष्टि, निर्धनता, धुएं की आभा वाले होने पर परिवार में कलह जानें। न उगने पर जननाश, मृत्यु व कार्यबाधा, नीले रंग से दुर्भिक्ष (अकाल) समझें। रक्त वर्ण के होने पर रोग, व्याधि व शत्रु-भय समझें। हरा रंग पुष्टिवर्धक तथा लाभप्रद है तथा श्वेत दूर्वा अत्यन्त शुभफलकारी व शीघ्र लाभदायक मानी गई है। आधी हरी व पीली दूर्वा उत्पन्न होने पर पहले कार्य होगा परन्तु बाद में हानि होगी। अशुभ दूर्वा के उत्पन्न होने पर आठवें दिन 'शांति होम' द्वारा उनका हवन किया जाता है। श्वेत दूर्वा पर अन्य कई तांत्रिक प्रयोगों की चर्चा तन्त्रशास्त्र में की गई है।

श्री दुर्गासप्तशती
(प्रथमोऽध्याय:)

मधु-कैटभ वध नामक
पहला अध्याय

महाकाली
प्रथम चरित्र

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

ध्यान—ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥१॥

उन महाकाली के भयावह स्वरूप को नमस्कार करता हूं, जिन्होंने अपने दस हाथों में खड्ग चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिध, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शङ्ख धारण कर रखे हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वे समस्त अङ्गों में दिव्य आभूषणों से विभूषित हैं। उनके शरीर की कांति नीलमणि की आभा के समान श्यामवर्ण वाली है। उनके दस मुख, दस हाथ व दस पांव हैं। भगवान् विष्णु के सो जाने पर, मधु और कैटभ नामक राक्षसों को मारने के लिए कमलजन्मा ब्रह्माजी ने जिसका स्तवन किया था, उन उपर्युक्त लक्षणों से युक्त महाकाली का मैं स्मरण करता हूँ।

* प्रबल आकर्षण हेतु—

ॐ महामाया हरेश्चैषा तया संमोह्यते जगत्,
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥—१/५५

महामाया (महाकाली) त्रिलोकीनाथ श्रीहरि की योगमाया हैं, वही इस संसार को मोह में घेरे रखती हैं। वही भगवती महामाया ज्ञानियों का चित्त-बलात् खींचकर मोह में गिरा देती हैं।

विशेष—इस मन्त्र के विधिवत् जप, हवन व मार्जन करने के पश्चात् व्यक्ति सकल चराचर जगत को वशीभूत करने में समर्थ हो जाता है। प्रथमतः इस मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् इस मन्त्र को मन में उच्चारण करते हुए किसी भी दुराग्रही व्यक्ति के पास चले जायें, वह फौरन आपकी ओर आकर्षित हो जाएगा। इस मन्त्र के द्वारा अभिमन्त्रित करके सिंदूर को ललाट प्रदेश पर लगाने से भी कई लोग यकायक आकर्षित होकर आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए लालायित हो जाते हैं।

म
हा
ल
क्ष्मी

महिषासुर-सैन्य वध नाम द्वितीयोऽध्यायः, महालक्ष्मी, (मध्यम चरित्र)

ध्यान—ॐ अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

कमल के आसन पर बैठी हुईं, प्रसन्न मुखवाली महिषासुरमर्दिनी, भगवती महालक्ष्मी का मैं स्मरण करता हूं। यह महालक्ष्मी समस्त देवताओं के तेज से उत्पन्न हैं। इनके 18 हाथ हैं जिसमें इन्होंने रुद्राक्ष की माला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कमण्डलु, दण्ड, शक्ति, तलवार, ढाल, शंख, घण्टा, मधुपात्र, त्रिशूल, पाश और चक्र को धारण कर रखा है।

बलवान् शत्रुओं के समूह को नष्ट करने के लिए—

क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम्॥—२/६७

भावार्थ—जिस प्रकार तृण और काष्ठ के ढेर को प्रज्वलित अग्नि कुछ ही क्षणों में भस्म कर देती है, ठीक उसी प्रकार से 18 भुजाओं वाली सुरोजाद्भव महालक्ष्मी ने असुरों की विशाल सेना को क्षण भर में नष्ट कर दिया। वही जगदम्बा मेरे शत्रु-समूह का यथाशीघ्र नाश करें।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

म
हि
षा
सु
र
म
र्दि
नी
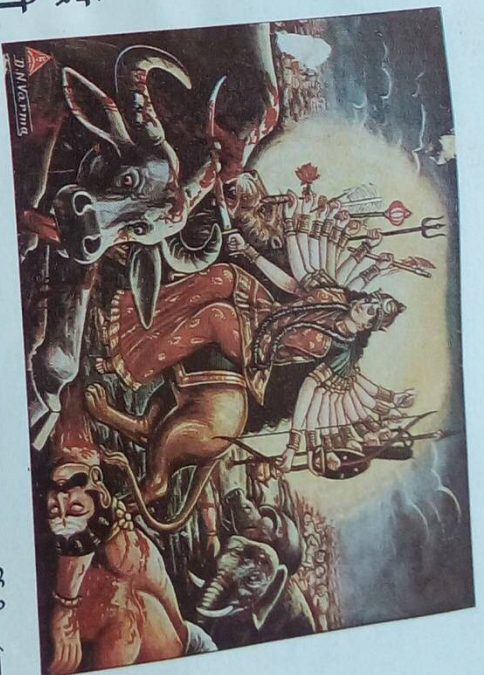
महिषासुर वध नामक तृतीयोऽध्यायः, महिषासुरमर्दिनी (मध्यम चरित्र)

ध्यान—एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्,
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्।
ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः,
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः॥

वह 18 भुजा वाली, त्रिनेत्रा, जगदम्बा उछलीं और उस महादैत्य (महिषासुर) के ऊपर चढ़ गईं तथा अपने पैर से उस दैत्य को दबाकर उन्होंने शूल से उसके कण्ठप्रदेश पर आघात किया। पैरों से दबा होने पर भी महिषासुर अपने मुख से (दैत्य के रूप से बाहर आने लगा) अभी आधे शरीर से ही बाहर निकलने पाया था कि देवी ने अपने पराक्रम से उसे रोककर, तलवार से उसका मस्तक काट गिराया, ऐसी देवी को मैं नमस्कारपूर्वक स्मरण करता हूँ।

आत्मविश्वास के साथ प्रतिष्ठापूर्वक शत्रु को विनष्ट करने हेतु—

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ, मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव, गर्जिष्यन्त्याशु देवताः॥—३/३८

'वराहतंत्र' के अनुसार इस मन्त्र के उच्चारण के साथ-साथ यज्ञाग्नि में शहद की आहुति देनी चाहिए। शत्रु के स्वरूप का ध्यान करते हुए इस मन्त्र के सम्पुट पाठ करने से कैसा भी बलवान् शत्रु हो, परास्त हो जाता है।

ज या दु र्गा

शक्रादय स्तुतिः नामक चतुर्थोऽध्यायः, जया दुर्गा, (मध्यम चरित्र)

ध्यान-ॐ **कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां,**
शङ्खंचक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः॥

काले बादलों के समान भरपूर शक्ति से सम्पन्न श्यामल आभा वाली, अपने कटाक्ष मात्र से शत्रु समूह को भय प्रदान करने वाली, मस्तक पर आबद्ध चन्द्र-कांति के कारण दिव्य तेज वाली, शंख, चक्र, तलवार व त्रिशूलादि दिव्य आयुधों को धारण करने वाली, तीन नेत्र वाली, सिंह पर आरूढ़ हुई, ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि देवताओं से घिरी हुई, तीनों लोकों को अपने दिव्य तेज से परिपूर्ण करने वाली इस जया नामक दुर्गा का मैं ध्यान करता हूँ। जिस दुर्गा को इन्द्रादिक देवता अपनी कामनाओं की सिद्धि के लिए पूजते हैं, वह दुर्गा मेरे लिए भी फलदायी होवे।

दुःख व दरिद्रता दूर करने हेतु—

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥—४/१७

हे देवि! दुर्गति व विपत्ति में गिरे हुए मनुष्यों के स्मरण किये जाने पर, तुम उन लोगों का भय दूर कर देती हो, और अच्छी अवस्था में स्मरण करने पर उन लोगों को आनन्द (मङ्गल) करने वाली बुद्धि प्रदान करती हो। दुःख, दरिद्रता और भय हरने वाली देवि! आपके सिवाय दूसरी कौन है जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा ही दयार्द्र रहता हो।

वित्त, समृद्धि, वैभव एवं दर्शन हेतु—

यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि॥
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने॥
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके॥ ४/३५, ३६, ३७

हे परमदयालु भगवती महेश्वरी! यदि आप हमें वर ही देना चाहती हैं तो यही वर देना कि हम जब-जब आपका स्मरण करें, तब-तब आप दर्शन देकर, हम लोगों के महान् संकट दूर कर दिया करें। हे प्रसन्नमुखी जगदम्बा! जो मनुष्य इन स्तोत्रों द्वारा आपकी स्तुति करे, उसे वित्त, समृद्धि और वैभव देने के साथ ही उसकी स्त्री, सम्पत्ति व सन्तानादि को भी निरन्तर बढ़ाते रहना। हे अम्बिके! आप सदा हम पर प्रसन्न रहें।

महासरस्वती
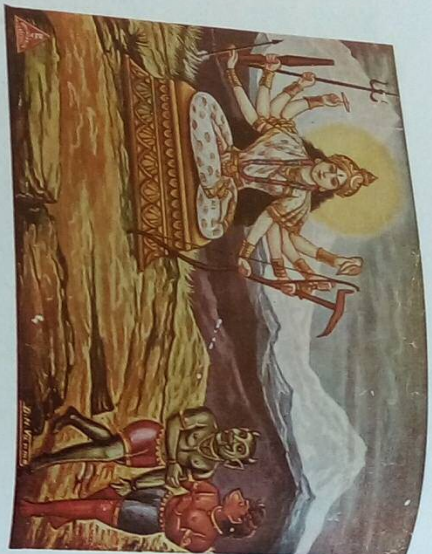
देव्यादूतसंवाद नामक पञ्चमोऽध्यायः, महासरस्वती, (उत्तर चरित्र)

ध्यान—ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥

जो अपने कर कमलों में घण्टा, शूल, हल, शंख, मूसल, चक्र, धनुष और बाण धारण करती हैं। शरद ऋतु के शोभासम्पन्न चन्द्रमा के समान जिनकी मनोहर कांति है, जो तीनों लोकों की आधारभूता और शुम्भ आदि दैत्यों का नाश करने वाली हैं तथा गौरी के शरीर से जिनका प्राकट्य हुआ है, उन महासरस्वती देवी का मैं निरन्तर भजन करता हूं।

आत्मविश्वास में वृद्धि व दासत्व से मुक्ति हेतु—

यो मां जयति संग्रामे, यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥—५/१२०

विशेष—प्रस्तुत मंत्र स्वयं जगजननी जगदम्बा के मुख से उच्चारित है। इस मंत्र में जगदम्बा का स्वाभिमानपूर्ण व्यक्तित्व, चुनौतीपूर्ण जीवन तथा दृढ़ प्रतिज्ञापूर्वक संकल्प शक्ति के दर्शन होते हैं।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

धूम्रलोचन संहार

धूम्रलोचन वध नामक षष्ठोऽध्यायः, पद्मावती, (उत्तर चरित्र)

ध्यान—ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली,
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां।
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये॥

सर्वज्ञेश्वरभैरव के अङ्क में निवास करने वाली परमोत्कृष्ट पद्मावती देवी का मैं चिन्तन करता हूँ। वे नागराज के आसन पर बैठी हैं, नागों के फणों में सुशोभित होने वाली मणियों की विशाल माला से उनकी देहलता उद्भासित हो रही है। सूर्य के समान उनका तेज है, तीन नेत्र उनकी शोभा को बढ़ा रहे हैं। उनके हाथों में माला, कुम्भ, कपाल और कमल हैं तथा उनके मस्तक में अर्धचन्द्र का मुकुट सुशोभित है।

हुंकार मात्र से शत्रु को पीड़ित करना—

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः॥—६/१३

देवी के द्वारा शत्रु के प्रति कहे गये उत्साहित वचनों को सुनकर, वह दैत्य सेनापति धूम्रलोचन अभिमान में अंधा होकर (जगदम्बा की ओर) दौड़ा, तब अम्बिका

ने (कुछ क्रोधित होकर) 'हुं' शब्द जोर से उच्चारित किया तथा उस उच्चारण मात्र से वह महाशक्तिशाली दैत्य तत्काल उसी अवस्था में वहीं पर भस्मीभूत हो गया।

चा मु ण्डा
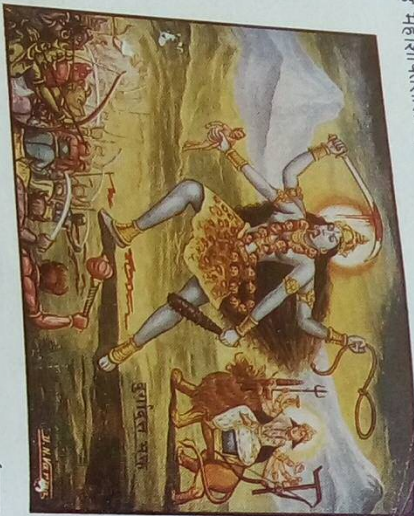
चण्ड-मुण्ड वध नामक सप्तमोऽध्यायः, चामुण्डा, (उत्तर चरित्र)

ध्यान—**भ्रकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्,**
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी।
विचित्रखट्‌वाङ्गधरा नरमाला विभूषणा,
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा॥

दुष्ट शत्रुओं के प्रति क्रोध होने के कारण अम्बिका की भौंहें कुछ टेढ़ी हो गईं तथा तत्काल उसी क्षण विकराल मुख वाली काली अम्बिका के तेज से प्रकट हुईं, जो कि तलवार और पाश लिए हुए थीं तथा विचित्र खट्वाङ्ग धारण किये और चीते के चर्म की साड़ी पहने, नरमुण्डों की माला से विभूषित थीं। वह चामुण्डा अत्यन्त रौद्र रूप में थीं। उनके शरीर पर वस्त्र नहीं थे तथा उनके शरीर का मांस भी सूख गया था, केवल हड्डियों का ढांचा शेष रह गया। ऐसी चामुण्डा निरन्तर जिह्वा लपलपाने के कारण अत्यन्त डरावनी प्रतीत हो रही हैं, उन्हें मैं भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

'हं' शब्द से शत्रु का नाश करना—

उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्॥—७/२०

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

देवी ने बहुत बड़ी तलवार हाथ में लेकर 'हं' का उच्चारण करके चण्ड पर धावा किया और उसके केश पकड़कर उसी तलवार से उस राक्षस (चण्ड) का मस्तक काट डाला।

र क्त बी ज सं हा र

रक्तबीज वध नामक अष्टमोऽध्यायः, देवी-इन्द्राणी, वैष्णवी, शिवा, ब्रह्माणी, नारसिंही, वाराही इत्यादि, (उत्तर-चरित्र)

ध्यान—**ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं**
घृतपाशांकुशबाणचाप हस्ताम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखै
रहमित्येव विभावये भवानीम्॥

मैं अणिमा आदि सिद्धिमयी किरणों से आवृत भवानी का ध्यान करता हूं। जिनके शरीर का रंग लाल है, नेत्रों में करुणा बह रही है तथा हाथों में पाश, अंकुश, बाण और धनुष शोभा पाते हैं।

विशेष—देवताओं के अभ्युदय के लिए तथा असुरों के विनाश के लिए ब्रह्मा, शिव, कार्तिकेय, विष्णु, इन्द्र, वराह इत्यादि सभी देवों की पराक्रमी शक्तियां उनके शरीरों से निकल कर उन्हीं के तद्रूप, वाहन व आयुध के साथ, चामुण्डा के सहायतार्थ असुरों से युद्ध करने आईं। इस प्रकार से इस अध्याय में भिन्न-भिन्न देवताओं की शक्तियों को स्वीकार कर उन्हें नमस्कार किया है।

पिशाच-बाधा नष्ट करने हेतु—

ॐयतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति,
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान् महासुराः।
तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्,
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः।—८/६०

ज्योंही वह रक्तबीज नामक विकराल राक्षस घायल होकर गिरा व उसके शरीर से रक्त बहने लगा त्योंही चामुण्डा ने उसे अपने मुख में ले लिया। रक्त के गिरने से चामुण्डा के मुख में जो अन्य दैत्य (रक्तबीज) उत्पन्न हुए, उन्हें भी वह चट कर गई और उसने रक्तबीज का सारा रक्त पी लिया। तदनन्तर अम्बिका ने रक्तबीज को, जिसका रक्त चामुण्डा ने पी लिया था, वज्र, बाण, खड्ग तथा ऋष्टि आदि से मार डाला।

विशेष—जिस व्यक्ति के शरीर में पिशाच ने प्रवेश कर लिया हो, उसकी हालत बड़ी गम्भीर होती है क्योंकि पिशाच व्यक्ति विशेष के शरीर का सारा खून पी जाता है। जिससे व्यक्ति कृशकाय, कमजोर व पीतवर्ण का हो जाता है परन्तु आवेश के समय उसमें दस-पन्द्रह व्यक्तियों जितना बल होता है। प्रस्तुत मन्त्र को ग्यारह बार बोलकर जल अभिमंत्रित करें, फिर ग्यारह बार बोलकर चाकू अभिमंत्रित करें। चाकू को जल में ग्यारह बार घुमायें। पिशाच ग्रसित व्यक्ति को आधा जल पिलावें तथा आधा जल उसके शरीर पर छिटकें। पिशाच भाग जाएगा तथा व्यक्ति को आराम मिलेगा।

* स्वप्न द्वारा भविष्यकथन

दुर्गे देवी नमस्तुभ्यं सर्व कामार्थ साधिके।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्व प्रदर्शयः।।

जब किसी कामना के सिद्धि होने या न होने की जिज्ञासा हो तो रात्रि के समय शुद्धासन पर उत्तराभिमुख बैठकर दस हजार जप करें और जपमाला को सिर के नीचे रखकर वहीं सो जायें। ऐसा करने पर निद्रा आने पर, सब कामों को सिद्ध करने वाली महामाया भगवती स्वप्न में, देववाणी संस्कृत के द्वारा कुछ कहेंगी। उस कथन को तत्काल कागज पर नोट कर लेना चाहिए और अपने अभीष्ट की सिद्धि या असिद्धि को जान लेना चाहिए।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

नि
शु
म्भ
व
धः

'निशुम्भ वधः' नामक नवमोऽध्यायः, नारसिंही, इन्द्राणी, वाराही, कौमारी, ब्रह्माणी, शिवा, दुर्गा, वैष्णवी, काली (उत्तर-चरित्र)

ध्यान—ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां,
पाशांकुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि॥

मैं अर्धनारीश्वर के श्रीविग्रह की निरन्तर शरण लेता हूं। उसका वर्ण बन्धूक पुष्प और सुवर्ण के समान रक्त-पीत मिश्रित है। वह अपनी भुजाओं में सुन्दर अक्षमाला पाश, अंकुश और वरद-मुद्रा धारण करती है, अर्धचन्द्र उसका आभूषण है तथा वह तीन नेत्रों से सुशोभित है।

* प्रेतग्रस्त व्यक्ति पर काबू पाने के लिए—

कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः॥—९/३८

कौमारी की शक्ति से विदीर्ण होकर कितने ही महादैत्य मृत्यु को प्राप्त हो गये। ब्रह्माणी के मन्त्रपूत जल (छिड़कने) से कितने ही राक्षस निस्तेज होकर मारे गये।

विशेष—प्रस्तुत मन्त्र से मन्त्रपूत जल को बाधा-ग्रसित व्यक्ति के मुंह पर पूर्ण आत्मविश्वास के साथ छिड़कें, प्रेत तत्काल प्रकट होकर क्षमा मांगता हुआ चला जायेगा।

शुम्भवधः

'शुम्भवध' नामक दशमोऽध्यायः, कामेश्वरी, (उत्तर-चरित्र)

ध्यान—ॐउत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां,
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्॥

मैं मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण करने वाली शिवशक्तिस्वरूपा भगवती कामेश्वरी का हृदय में चिन्तन करता हूं। वे तपाये हुए सुवर्ण के समान सुंदर हैं। सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि ये ही तीन उनके नेत्र हैं तथा वे अपने मनोहर हाथों में धनुष-बाण, अंकुश, पाश और शूल धारण किये हुए हैं।

* मन्त्रबल से शत्रु को मूर्छित करना—

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्,
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि।

स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।
चालयन् सकलां पृथ्वीं लब्धिद्वीपां सपर्वताम्॥—१०/२७

समस्त दैत्यों के राजा शुम्भ को घमण्ड से अपनी ओर आते देखकर देवी ने त्रिशूल से उसकी छाती छेदकर उसे पृथ्वी पर गिरा दिया। देवी के शूल की धार से घायल होने पर उसके प्राण-पखेरू उड़ गये और वह समुद्रों, द्वीपों तथा पर्वतों सहित समूची पृथ्वी को कंपाता हुआ भूमि पर गिर पड़ा।

विशेष—जिस शत्रु को पीड़ा देनी हो, उसके वजन के अनुपात का आटा लें तथा उसके शरीर की लम्बाई के अनुपात का पुतला बनावें। पुतले के मध्य भाग में शत्रु का नाम लिखें। फिर उपर्युक्त मन्त्र से तेज धार वाली कील को अभिमन्त्रित करते हुए पुतले के वक्षस्थल में शूल घुसेड़कर, पुतले को 1 हाथ गहरा गड्ढा खोदकर श्मशान में गाड़ दें, अभीष्ट व्यक्ति सूखकर कांटा हो जायेगा।

नींबू तन्त्र—

* नींबू हवा में उछले

बाजार से कागजी नींबू लावें तथा नींबू में बारीक छेद करके, उनमें पारा और हल्दी भरकर, मोम से मुंह बन्द कर दें। उस नींबू को जब तेज धूप में रखा जायेगा अथवा अग्नि का ताप दिया जायेगा तो वह नींबू हवा में उछलने-कूदने लगेगा तथा देखने वाले हैरान रह जायेंगे।

* नींबू से ताजा रक्त निकालना

कटहल के दूध को पांच-दस बार चाकू पर सुखा दें। उस चाकू से नींबू काटेंगे तो ताजा रक्त के समान रस टपकेगा।

अथवा किसी छुरी पर ओड़हुल का फूल (लाल) घिसकर सुखा लो। जब उस छुरी से नींबू काटोगे तो उसका रस लहू के समान लाल निकलेगा।

भुवनेश्वरी
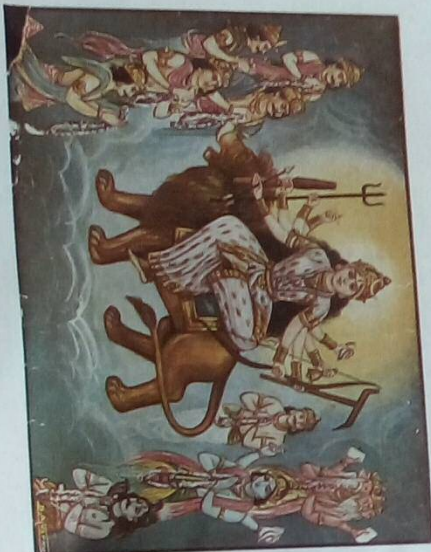
'देवीस्तुति' नामक एकादशोऽध्यायः, भुवनेश्वरी, (उत्तर-चरित्र)

ध्यान—ॐ बाल रविद्युतिमिन्दु किरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।

मैं त्रिभुवनविजयी भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करता हूं। उनके श्रीअंगों की आभा प्रभातकाल के सूर्य के समान है। मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है। वे उभरे हुए स्तनों और तीनों नेत्रों से युक्त हैं। उनके मुख पर मुस्कान की छटा अति सुन्दर है। उनके हांथ वरद, अंकुश, पाश एवं अभयमुद्रा से सुशोभित हैं।

* समस्त स्त्रियों में मातृभाव की प्राप्ति हेतु—

विद्या समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः॥—११/६

हे देवि! सम्पूर्ण विद्यायें तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। जगत् में जितनी स्त्रियां हैं, वे सब तुम्हारी ही प्रतिमूर्तियां हैं। हे जगदम्बे! एक मात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है। तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है? तुम तो स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे परावाणी हो।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda, Niali,odisha

विशेष—अन्य स्त्रियों को देखते ही जिनकी बुद्धि कामासक्त हो जाती है, जिनको अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण नहीं, उनके लिए उपर्युक्त मन्त्र विशेष फलदायी तो है ही साथ-ही-साथ, साधुओं, योगियों व यतियों के लिए भी इस मन्त्र का विशेष महत्त्व है।

कुशाग्र बुद्धि के लिए—

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥—११/८

हे! बुद्धिरूप से समस्त मनुष्यों के हृदय में निवास करने वाली! स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) प्रदान करने वाली नारायणी! तुमको मैं नमस्कार करता हूं।

विशेष—मन्द बुद्धि बालकों में कुशाग्रता (Intelligency) जाग्रत करने हेतु यह मन्त्र सरलतम व श्रेष्ठ है।

मंगलमय (कल्याण) कामना हेतु—

सर्व मङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥—११/१०

हे भगवती नारायणी! तुम सब प्रकार का मंगल धारण करने वाली, मंगलमयी हो, कल्याणदायिनी, शिवा (शान्ति प्रदान करने वाली) हो। सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, त्रिनेत्रधारी गौरी हो, अतः हे देवी! तुझे मैं नमस्कार करता हूं।

विशेष—जब किसी प्रकार के अमंगल की आशंका हो तो इस मन्त्र का निरन्तर (चलते-उठते-बैठते) जाप करने से अप्रिय आशंका निर्मूल समाप्त होकर शुभद घटनायें घटित होती हैं, यह मन्त्र अनुभूत है।

जगदम्बा की शरण प्राप्ति के लिए—

शरणागतदीनार्तपरित्राण परायणे।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥—११/१२

शरण में आये हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सभी प्राणियों के कष्ट को दूर करने वाली हे नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है।

भयनाश हेतु—

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्,
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तुते॥—११/२५

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्या रूपा दुर्गे देवि! सब प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है। हे कात्यायनी! यह तीन लोचनों से विभूषित तुम्हारा सौम्य मुख सब प्रकार के भयों से मेरी रक्षा करे, तुम्हें बार-बार नमस्कार है।

समस्त प्रकार के रोगों के नाश हेतु—

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्॥
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वमाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।—११/२९

हे करुणामयि देवी! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं अपितु तुम्हारी शरण में गये हुए मनुष्य तो दूसरों को शरण देने में समर्थ हो जाते हैं।

विशेष—इस मन्त्र द्वारा यज्ञ में गिलोय अथवा गुड़ की आहुति अथवा हरित वनस्पति (ईख) की आहुति दी जाती है। इसके लगातार प्रयोग से कैसा भी रोगी हो एक बार बीमारी को त्यागकर, स्वस्थ हो जाता है।

शास्त्रार्थ विजय हेतु—

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
स्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽति महान्धकारे,
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्॥—११/३१

हे ज्ञानमयी देवी! विद्याओं में, ज्ञान को प्रकाशित करने वाले शास्त्रों में तथा आदिवाक्यों (वेदों) में तुम्हारे सिवा और किसका वर्णन है तथा तुमको छोड़कर दूसरी कौन ऐसी शक्ति है, जो इस विश्व को अज्ञानमय घोर अन्धकार से परिपूर्ण ममतारूपी गड्ढे में निरन्तर भटका रही हो।

* बाधा दूर कर वैरी-नाश करने हेतु—

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥—११/३८

हे समस्त विश्व का पालन करने वाली सर्वेश्वरी! तुम तीनों लोकों की सम्पूर्ण बाधाओं को शांत करने वाली हो, हमसे शत्रुता करने वाले लोग भी तुमसे छिपे नहीं, अतः अब यह तुम्हारा काम है कि मुझ शरणागत के वैरियों का विनाश करो।

विशेष—काली मिर्च व सफेद सरसों अपने ऊपर सात बार घुमाकर यज्ञस्थली में फेंकने से व्यक्ति की सारी बाधायें दूर हो जाती हैं। इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित नींबू को यज्ञ में जलाने से व्यक्ति के शत्रुओं का नाश होता है। यह अनुभूत सिद्ध प्रयोग है।

* संतान प्राप्ति हेतु—

नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भ-सम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी॥—११/४२

इस मंत्र से नवनीत व मिश्री की आहुति दी जाती है।

विशेष—इस मंत्र के सम्पुट पाठ से शतचण्डी का प्रयोग कराने पर बांझ स्त्रियां भी ऋतुमती होकर संतान धारण करने योग्य हो जाती हैं।

अचानक आये हुए संकट को दूर करने हेतु—

ॐ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॐ॥—११/५५

भगवती स्वयं अपने मुखारविन्द से इस मंत्र द्वारा प्रतिज्ञापूर्वक घोषणा कर रही हैं—'जब-जब संसार में दानवी बाधा उपस्थित होगी, तब-तब अवतार लेकर मैं शत्रुओं का संहार करूंगी।'

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

विशेष—इस मंत्र की 1008 आहुति एक पान पर, शाकल्य, कमलगट्टा घी में भिगोकर, 1 सुपारी, २ लौंग, 1 इलायची तथा गुग्गल, रक्त-पुष्प, रक्त चन्दन

से वेष्ठित कर, सभी वस्तुएं सुवे में लेकर, खड़े होकर अग्नि में त्याग देने पर, अचानक आई हुई कैसी भी विपत्ति हो, तुरन्त दूर हो जाती है; यह पूर्णतः परीक्षित प्रयोग है।

श्री दुर्गा

फलस्तुति' नामक द्वादशोऽध्यायः, दुर्गा, (उत्तर-चरित्र)

ध्यान—**ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कंधस्थितां भीषणां,**
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं,
बिभ्राणा—मनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

मैं तीन नेत्रों वाली दुर्गादेवी का ध्यान करता हूं। उनके श्रीअंगों की प्रभा बिजली के समान है। वे सिंह के कन्धे पर बैठी हुई भयंकर प्रतीत होती हैं। हाथों में तलवार और ढाल लिए अनेक कन्याएं उनकी सेवा में खड़ी हैं। अपने हाथों में चक्र, गदा, तलवार, ढाल, बाण, धनुष, पाश और तर्जनी मुद्रा धारण किये हुए हैं। उनका स्वरूप अग्निमय है तथा वे माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करती हैं।

* धन-धान्य व पुत्र हेतु—

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥—१२/१३

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

बन्दी को जेल से छुड़ाने हेतु—

राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे॥—१२/२७

कुपित राजा के आदेश से वध या बन्धन के स्थान में ले जाये जाने पर अथवा महासागर में नाव पर बैठने के बाद भारी तूफान से नाव के डगमगाने पर, मेरे चरित्र का स्मरण करने पर मनुष्य सभी प्रकार के संकटों से मुक्त हो जाता है।

* **'रात्रिसूक्त'** के पाठ करने से रात्रि को डरावने सपने आना, नींद न आना, अचानक झिझककर बच्चे का रोना तथा प्रेत-बाधा इत्यादि सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिलती है।
* सिद्ध किये गए **'कवच'** का झाड़ा देने से भूत-प्रेत इत्यादि बाधाएं शांत हो जाती हैं, बच्चों की नजर, टोकार दूर हो जाती हैं।
* **'दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला'** के तीस हजार मन्त्रों के पुरश्चरण को करके जो मनुष्य इसके दशांश मन्त्रों को सिद्ध अग्नि में मधुमिश्रित सफेद तिलों से हवन कर लेता है वह अपने मनचाहे एक कार्य को तत्काल प्राप्त हो जाता है।
* **'देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र'** के नित्य पाठ करने से व्यक्ति कई प्रकार के पापों व दोषों से मुक्त होकर, जगदम्बा के साथ पुत्रतुल्य वात्सल्य भाव को प्राप्त हो जाता है।
* जिसके घर में प्रेतबाधा हो, अतृप्त आत्मायें भटकती हों, या कोई गन्दी हवा उधम मचाती हो तो, उस मकान में किसी योग्य ब्राह्मण को बिठाकर 'दुर्गा सप्तशती' के नौ पाठ करावें। तत्पश्चात एक पाठ का विधि-विधान से हवन करावें। पूर्णाहुति के समय लोबान, गुग्गल व धूपबत्ती का धुआँ करें एवं यज्ञ धूम्र को पूरे मकान में घुट जाने दें। अपवित्र आत्माएँ जल जायेंगी अथवा हमेशा-हमेशा के लिए घर छोड़ देंगी, यह अनुभूत है।

रामचरितमानस के सिद्ध चमत्कारी 'मन्त्र'

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस एक प्रासादिक ग्रन्थ है। ऐसी मान्यता है कि इस असाधारण ग्रन्थ के दोहे-चौपाई मन्त्र-सदृश पवित्र एवं प्रभावकारी हैं तथा आश्रित भक्त को अपेक्षित फल प्रदान करने में समर्थ हैं। श्रीरामचरितमानस का पाठ या अनुष्ठान करने मन्त्र की भांति जप करने से अनेक सकाम एवं निष्काम साधकों को अभीष्ट की प्राप्ति हुई है, और ऐसे प्रसङ्ग प्रायः अनेक देखने में आये हैं। यहाँ अनुष्ठान में प्रयुक्त होने वाले कुछ मानस-सिद्ध मन्त्र दिये जा रहे हैं, जिनसे साधक लोग लाभ उठा सकते हैं। जो लोग संस्कृत नहीं जानते तथा तांत्रिक अनुष्ठानों के यम-नियम, आचार व व्यवहार से घबराते हैं, उनके लिए मानस के ये मन्त्र 'राम-बाण' औषधिस्वरूप हैं एवं सब प्रकार की सिद्धियों को देने वाले हैं।

नियम—

मानस के दोहे-चौपाइयों को सिद्ध करने का विधान यह है कि किसी भी शुभ दिन की रात्रि को दस बजे के बाद हवन के द्वारा मन्त्र सिद्ध करना चाहिए। फिर जिस कार्य के लिए मन्त्र जप की आवश्यकता हो, उसके लिए नित्य जाप करना चाहिए। काशी में भगवान् शंकरजी ने मानस की चौपाइयों को मन्त्र-शक्ति प्रदान की है इसलिए काशी की ओर मुख करके, उन्हें साक्षी बनाकर, श्रद्धा से जप करना चाहिए, अवश्य लाभ मिलता है, यह अनुभूत है।

हवन की सामग्री–

(1) चन्दन का बुरादा (2) तिल (3) शुद्ध घी (4) शुद्ध चीनी (5) अगर (6) तगर (7) कपूर (8) शुद्ध केसर (9) नागर मोथा (10) पञ्चमेवा (11) जौ और (12) चावल

आवश्यक जानकारी–

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

जिस उद्देश्य के लिए चौपाई, दोहे या सोरठे का जप करना बताया गया है,

उसको सिद्ध करने के लिए एक दिन हवन की सामग्री से उस चौपाई, दोहे या सोरठे के द्वारा 108 बार हवन करना चाहिए। यह हवन केवल एक ही दिन करना है। इसके लिए कोई अलग कुण्ड बनाने की आवश्यकता नहीं है। मामूली मिट्टी की वेदी बनाकर, उस पर अग्नि रखकर उसमें आहुति दे देनी चाहिए। प्रत्येक आहुति में चौपाई के अन्त में 'स्वाहा' बोल देना चाहिए। यह हवन रात को 10 बजे के बाद करना होगा।

प्रत्येक आहुति लगभग 10 ग्राम (सब चीजें मिलाकर) होनी चाहिए। इस हिसाब से 108 आहुति के लिए एक किलो सामग्री सब चीजें मिलाकर बना लेनी चाहिए। कोई चीज कम-ज्यादा भी हो तो आपत्ति नहीं। पञ्चमेवा में पिश्ता, बादाम, किशमिश, अखरोट, काजू ले सकते हैं। इनमें से कोई चीज न मिले तो उसके बदले में अखरोट या मिश्री मिला सकते हैं। केसर शुद्ध चार आने भर ही डालने से काम चल जायेगा, अधिक की आवश्यकता नहीं है।

हवन करते समय माला रखने की आवश्यकता एक सौ आठ की संख्या गिनने के लिए है। इसलिए दाहिने हाथ से आहुति देकर फिर दाहिने हाथ से ही माला का एक-एक मनका सरका देना चाहिए। फिर माला या तो बायें हाथ में ले लेनी चाहिए या आसन पर पर रख देनी चाहिए। फिर आहुति देने के लिए बाद में उसे दाहिने हाथ में लेकर एक मनका सरका देना चाहिए। माला रखने में असुविधा हो तो गेहूं, जौ या चावल आदि के 108 दाने रखकर उनसे भी गिनती की जा सकती है। बैठने के लिए आसन ऊन का अथवा कुश का होना चाहिए। सूती कपड़े का हो तो वह धोया हुआ पवित्र होना चाहिए।

मन्त्र सिद्ध करने के लिए चौपाई या दोहा यदि लंका-काण्ड का हो तो उसे शनिवार को हवन करके सिद्ध करना चाहिए। दूसरे काण्डों के चौपाई, दोहे को किसी भी दिन हवन करके सिद्ध किया जा सकता है। रक्षा-रेखा की चौपाई एक बार बोलकर, जहां बैठे हों, वहां अपने आसन के चारों ओर चौकोर रेखा खींच लेनी चाहिए। इस चौपाई को भी ऊपर लिखे अनुसार एक सौ आठ बार आहुति देकर सिद्ध कर लेना चाहिए। पर रक्षा-रेखा न भी खींची जाये तो आपत्ति नहीं है।

एक दिन हवन करने से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो तब तक उस मन्त्र (चौपाई, दोहे) का प्रतिदिन कम-से-कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिए, अधिक कर सकें तो अधिक अच्छा फल मिलेगा। मानस के दोहे विपरीत या प्रतिकूल फल नहीं देते। अगर चाहें तो नियमित के जप के सिवा दिन भर चलते-फिरते भी उस चौपाई या दोहे का जप कर सकते हैं। जितना अधिक हो, उतना ही उत्तम है।

कोई दो कार्यों के लिए चौपाइयों का अनुष्ठान एक साथ करना चाहें तो कर सकते हैं पर दो चौपाइयों को पहले दो दिनों में अलग-अलग हवन करके सिद्ध कर लेना चाहिए।

स्त्रियों के लिए—

स्त्रियां भी इस अनुष्ठान को कर सकती हैं, परन्तु रजस्वला होने की स्थिति में जप बन्द रखना चाहिए। हवन भी रजस्वला अवस्था में नहीं करना चाहिए। जप करते समय मन में यह विश्वास अवश्य रखना चाहिए कि "भगवान् श्रीसीतारामजी की अहैतुकी कृपा से मेरा कार्य अवश्य सफल होगा।" विश्वासपूर्वक जप करने पर सफलता अवश्य मिलती है।

1. चमत्कारिक रक्षा-रेखा—

मन्त्र 'सिद्ध' करने के लिए या किसी संकटपूर्ण जगह पर रात व्यतीत करने के लिए अपने चारों ओर रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिए। लक्ष्मणजी ने सीताजी की कुटीर के आस-पास जो रक्षा-रेखा खींची थी, उसी लक्ष्य पर यह रक्षा-मन्त्र बनाया गया है। इसे एक सौ आठ आहुति द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिए—

मामभिरक्षय रघुकुलनायक।
धृत वर चाप रुचिर कर सायक॥

2. विचार शुद्ध करने के लिए—

ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपा निरमल मति पावउँ॥

3. आपसी संशय की निवृत्ति के लिए—

रामकथा सुन्दर कर तारी।
संशय बिहग उड़ावनिहारी॥

—व. 0/127

4. विरक्ति के लिए—

भरत चरित कीरित नेमु, तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद प्रेमु, अवसि होइ भव रस बिरति॥

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

5. भक्ति की प्राप्ति के लिए—

भगत कल्पतरु प्रनत हित, कृपासिंधु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु, देहु दया करि राम॥

6. श्री हनुमानजी को प्रसन्न करने के लिए—

सुमिरि पवनसुत पावन नामू।
अपने बस करि राखे रामू॥

7. मोक्ष-प्राप्ति के लिए—

मो सम दीन न, दीन हित, तुम्ह समान रघुवीर।
अस विचारि रघुबंस मनि, हरहु विषम भव भीर॥

—उ./1180

8. श्रीसीतारामजी के दर्शन के लिए—

नील सरोरुह नील मनि, नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि, कोटि-कोटि सत काम॥

9. श्री जानकीजी के दर्शन के लिए—

जनक सुता जग जननि जानकी।
अतिशय प्रिय करुना निधान की॥

10. श्री रामचन्द्रजी को वश में करने के लिए—

केहरि कटि पट पीतधर, सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुलभूषनहि, बिसरा सखिन्ह अपान॥

—बा./241

11. सहजस्वरूप-दर्शन के लिए—

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना।
बिस्वासहुं ते प्रगटे भगवाना॥

12. भगवत्प्रेम की प्राप्ति के लिए—

कामिहि नारि पिआरि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम ।।

—उ./1180

13. श्रीराम की शरण प्राप्ति के लिए—

सुनि प्रभु वचन हरष हनुमाना।
सरनागत बच्छल भगवाना॥

—सु. /838

14. माता पार्वती को प्रसन्न करने के लिए—

धन्य धन्य गिरिराजकुमारी।
तुम्ह समान नहि कोउ उपकारी।।

—बा. /125

15. प्रभु कृपा एवं संकट-निवृत्ति के लिए—

मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी॥
दीनदयाल बिरिदु सम्भारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

—सु. /822

16. प्रेम बढ़ाने के लिए—

सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

17. विपत्तिनाश के लिए—

राजिव नयन धरें धनु सायक।
भगति विपति भंजन सुखदायक॥

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

18. संकटनाश के लिए—

जौ प्रभु दीन दयालु कहावा। आरत हरन वेद जसु गावा॥
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥

19. कठिन क्लेश-नाश के लिए—

हरन कठिन अति कलुष कलेसू।
महामोह निसि दलन दिनेसू॥

20. विघ्न विनाश के लिए—

सकल विघ्न ब्यापहिं नहिं तेहो।
राम सुकृपा बिलोकहिं जेही॥

21. घर में माङ्गलिक कामना हेतु—

जब तें रामु ब्याहि घर आए।
नित नव मंगल मोद बधाए॥

22. विविध रोगों तथा उपद्रवों की शांति के लिए—

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहिं ब्यापा॥

23. मस्तिष्क की पीड़ा दूर करने के लिए—

हनूमान अंगद रन गाजे। हाँक सुनत रजनीचर भाजे॥

24. विषनाश के लिए—

नाम प्रभाउ जान सिय नीको।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

25. भूत को भगाने के लिए—

प्रनवउँ पवनकुमार, खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम सर चाप धर॥

—बा. /27

26. नजर झाड़ने के लिए—

स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी।
निरखहिं छवि जननी तृन तोरी॥

—बा. /207

27. जीविका प्राप्ति के लिए—

बिस्व भरन पोषन कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई॥

—बा. /206

28. लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए—

जिमि सरिता सागर महुं जाहीं।
जद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
मिलि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ।
धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ॥

29. पुत्र-प्राप्ति के लिए—

ऐहि विधि गर्भसहित सब नारी।
भईं हृदय हरषित सुख भारी॥
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए।
सकल लोक सुख संपति छाए॥

—बा. /199

30. सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए—

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं।
सुख संपति नाना विधि पावहिं॥

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

31. मनोरथ-सिद्धि के लिए—

भव भेषज रघुनाथ जसु, सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥

अथवा

जदपि सखा तब इच्छा नाहीं।
मोर दरसु अमोघ जग माहीं॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा।
सुमन वृष्टि नभ भई अपारा॥

—सु. /845

32. मुकद्दमा जीतने के लिए—

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं॥

—कि. /790

33. शत्रुता-नाश के लिए—

बयरु न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई॥

34. विवाह के लिए—

तब जनक पाई वसिष्ठ आयसु, ब्याह साज सँवारि कै।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुँअरि लई हँकारि कै॥

35. नये शहर में प्रवेश करते समय, शत्रु के सामने जाते समय व यात्रा की सफलता के लिए अमोघ मंत्र—

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदय राखि कोसलपुर राजा॥

गरल सुधा रिपु करहि मिताई।
गोपद सिन्धु अनल सितलाई॥

—सु. /799

36. परीक्षा में पास होने के लिए—

मोरि सुधारिहि सो सब भाँती।
जासु कृपा नहिं कृपा अघाती॥

37. विद्याप्राप्ति के लिए—

गुरुगृह गए पढ़न रघुराई।
अलप काल विद्या सब पाई॥

—बा. /213

38. कातर की रक्षा के लिए—

मोरें हित हरि सम नहिं कोउ।
एहि अवसर सहाय सोई होउ॥

39. भगवत्स्मरण करते हुए आराम से मरने के लिए—

राम चरन दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ तें, गिरत न जानइ नाग॥

—कि. /769

40. पोलियो ठीक करने व गूंगे को बोलाने के लिए—

मूक होई बाचाल, पंगु चढ़ई गिरिबर गहन।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवउ सकल कलि मल दहन॥

—बा./3

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

41. रोग-निवृत्ति एवं मोक्ष-प्राप्ति हेतु—

जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय सूल।

सो कृपाल मोहि तो पर, सदा रहउ अनुकूल॥

—उ. /1172

42. बिना औषध के रोग नष्ट करना—

राम कृपाँ नासहिं सब रोगा।
जौ एहि भाँति बनै संयोगा॥
सदगुर बैद बचन बिस्वासा।
संजम यह न विषय कै आसा॥

—उ. /1168

43. सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त करने के लिए—

बंदउँ बालरूप सोइ रामू।
सब विधि सुलभ जपत जिसु नामू॥
मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी॥

—बा. /126

* उपद्रवी स्थान को शुद्ध करना

यदि किसी की भूमि, मकान या दूकान में उपद्रव होता हो, डरावने स्वप्न आते हों, अकारण भय लगता हो, नित्य कलह-झगड़ा होता हो, रोज़ी बन्द हो अथवा कमाई में बरकत न होती हो, तो निम्न मन्त्र का अनुष्ठान करने से रोजी खुल जायेगी, ऊपरी या अन्दरूनी हवाओं की हरकत बन्द हो जायेगी।

"ॐ ह्रीं दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानि करं परं रक्षो

भूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ह्रीं ॐ॥''

इस मन्त्र के 11,000 जाप करके एक दिन में सिद्ध कर लें। इसके दशांश का हवन तद्दशांश मार्जन व तर्पण करें। तत्पश्चात् खेजड़ी की लकड़ी, खैर की लकड़ी, लोहे की कीलें, कौड़ी, पीली हल्दी गांठ, लूंग डोडे वाले ये सभी चीजें आठ-आठ की मात्रा में लें। मन्त्रपूत करके इन चीजों को लक्षित स्थान की आठों दिशाओं में गाड़ दें। ध्यान रहे कि यह प्रक्रिया मन्त्र बोलते हुए आग्नेयकोण से शुरू करें तथा एक हाथ का गड्ढा खोदकर डालनी चाहिए, तथा कौड़ी चित्ती करके डालनी चाहिए। सभी प्रकार की बाधा दूर होकर भूमि श्रेष्ठ फलदायी हो जाती है। यह प्रयोग अनेक बार आजमाइश किया हुआ है व सत्य है।

चमत्कारिक शाबरमंत्र

उत्पत्ति व रहस्य—

अनेक तांत्रिक व वैदिक मंत्रों के विद्यमान होते हुए भी शाबर मंत्रों के शीघ्र व तात्कालिक चमत्कारी प्रभाव से विद्वत्समाज चमत्कृत है। सर्प-बिच्छू के झाड़े से लेकर भूत-प्रेत निकालने व हाजरात सिद्ध करने हेतु शाबर मन्त्रों का ही प्रयोग होता है। ग्रामीण सभ्यता शाबर मन्त्रों से ही प्रभावित है। शाबर मन्त्रों की गुप्त अन्तर्गर्भित शक्ति एवं इनकी उत्पत्ति का रहस्य विद्वानों के लिए आज भी शोध व अनुसंधान का विषय बना हुआ है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान् शिव और पार्वती ने जिस समय अर्जुन के साथ किरात वेश में युद्ध किया था, उस समय पार्वती व शिव के बीच आगम-चर्चा को लेकर आपसी प्रश्नोत्तर हुए। चूंकि तन्त्रविद्या के आदिदेव उस समय शबर वेष में थे तथा आद्यशक्ति पार्वती शबरी वेष में थीं। अतः उनके द्वारा प्रदत्त तांत्रिक मन्त्र शाबर-मन्त्र किंवा 'शाबरी-मन्त्र' कहलाने लगे।

विद्वानों के एक बहुत बड़े वर्ग की यह मान्यता है कि कलियुग के परम सिद्ध औघड़ तपस्वी महर्षि गुरु श्री मत्स्येन्द्रनाथ के काल से शाबर-मन्त्रों की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई क्योंकि वैदिककाल व पौराणिककाल में ऐसे मन्त्रों की चर्चा नहीं मिलती। गुरु श्री मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य गुरु गोरखनाथ सिद्ध योगी व चमत्कारी तांत्रिक के रूप में विश्वविख्यात हुए। गुरु गोरखनाथ ने जनहित में लोकभाषा में कुछ मन्त्र बनाये। वे मन्त्र आगे चलकर शाबर-मन्त्रों के नाम से विख्यात हुए। आगमशास्त्रों में शाबर-मन्त्रों की सिद्धि देने वाले ग्यारह आचार्य माने गये हैं—

1. नागार्जुन 2. जड़भरत 3. हरिश्चन्द्र 4. सत्यनाथ 5. भीमनाथ 6. गोरखनाथ 7. चर्पटनाथ 8. अवघटनाथ 9. कन्यधारी 10. जलन्धरनाथ 11. मलयार्जु-नाथ

कालांतर में अनेक योगियों, यतियों व पीरों के नाम शाबर-मन्त्रों के साथ जुड़ते चले गये। कुछ भी हो, शाबर मन्त्रों का अपना अलग अस्तित्व व इतिहास है जिससे इनकार नहीं किया जा सकता। वैदिक कर्मकांड से अनभिज्ञ, शास्त्रीय ज्ञान-शून्य, ब्राह्मणेतर व्यक्तियों के लिए शाबर-यन्त्र सहज सुलभ प्राप्य 'अनमोल-रत्न' की तरह उपयोगी साबित हुए।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

शाबर-मन्त्र व उनका वैशिष्ट्य—

यजुर्वेद व अथर्ववेद के कई काण्ड अनेक प्रकार के अभिचार, मारण, उच्चाटन, आकर्षण, विद्वेषण एवं चमत्कारिक मन्त्रों से भरे पड़े हैं। यद्यपि इन वैदिक मन्त्रों की प्रभावोत्पादक शक्ति से इनकार नहीं किया जा सकता तथापि शाबर-मन्त्रों का अपना अलग वैशिष्ट्य व चमत्कार है। हमारे केन्द्र द्वारा किये गए अन्वेषण के आधार पर हमें निम्नलिखित तथ्य प्राप्त हुए हैं—

1. शाबर-मन्त्र वस्तुतः जंगलीमन्त्र हैं, जो व्याकरण, अर्थ एवं उच्चारण की दृष्टि से सर्वथा अशुद्ध माने जाते हैं। ये मन्त्र ग्रामीण सभ्यता के प्रतीक हैं तथा नितांत गंवारू बोलचाल की भाषा व निरर्थक से वर्ण-योजना से बने हुए हैं।
2. वैदिक अथवा अन्य तांत्रिक मन्त्रों की तरह इसमें ध्यान, न्यास व तर्पण-मार्जन की आवश्यकता नहीं होती। शाबर-मन्त्र बिना ध्यान, न्यास, विनियोग के होते हैं, जिसमें अनुष्ठान, हवनादि की अपेक्षा भी नहीं रहती।
3. अन्य मन्त्रों की साधना, अङ्ग-शुद्धि, सन्ध्या, पूजा, अर्चना इत्यादि का ध्यान रखते हुए बड़ी पवित्रता के साथ की जाती है। शाबर-मन्त्रों में शुद्धि, पवित्रता पर भी कोई ध्यान नहीं किया जाता।
4. वैदिकमन्त्र प्रायः स्तुतिपरक होते हैं। अपने इष्ट देव अथवा मन्त्रानुसार विशिष्ट देवता की ओर उद्दिष्ट होकर साधक अपना अमुक कार्य करने के लिए देवता से अनुनय, विनय व प्रार्थना करता है तथा देवता प्रसन्न होकर साधक का कार्य करते हैं। शाबर-मन्त्र एकदम उलटे होते हैं। शाबर-मन्त्रों में आराध्य देव को सेवक या नौकर की भांति आज्ञा दी जाती है। इसमें मन्त्रज्ञ, साधक देवताओं पर हावी बना हुआ रहता है तथा लक्षित देवता से चुनौतीपूर्ण भाषा में बात करता है। यथा—उठ रे हनुमान, चौंसठ जोगिनी चलो, अरे नारसिंह वीर, डाकण का नाक काट, भंवरवीर तू चेला मेरा, देखूं रे अजयपाल तेरी शक्ति, देखूं रे भैरव तेरी शक्ति, इत्यादि।
5. जहां वैदिक व अन्य तांत्रिक मन्त्रों की भाषा शिष्ट, सभ्य व सुसंस्कृत होती है वहाँ शाबर-मन्त्रों में एक प्रकार की गाली-गलौच जैसी भाषा का इस्तेमाल किया जाता है तथा साधक अपने आराध्य देवता को बड़ी-से-बड़ी सौगन्ध देता है कि मेरा यह कार्य हर हालत में करो। एक शिष्ट व सज्जन व्यक्ति अपने पूज्य आराध्य के प्रति ऐसी भावना भी नहीं रख सकता, वैसे वाक्य इन मन्त्रों को जानने वाले बेझिझक बोल जाते हैं। यथा—उठ रे हनुमान जति, मेरा यह काम नहीं करे तो माता अंजनी का दूध हराम करे। सीता की सेज पर पाँव धरे। महादेव की जटा पर घाव करे, मेमदा पीर की आन। सुलेमान पैगम्बर की दुहाई। पार्वती की चूडी चूके, सुलेमान पीर की पूजा पांव ठेली।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

गुरु गोरखनाथ लाजे, वगैरह-वगैरह।

6. शाबर-मन्त्रों की सबसे प्रमुख विशेषता है—गुरु की भक्ति। अपने प्रत्येक मन्त्र में साधक गुरु की भक्ति की दुहाई देता है, और गुरु को सदैव स्मरण रखता है। शाबर-मन्त्रों के उपासक गुरु की ताकत को देव-शक्तियों से भी अधिक मानते हैं। उनकी यह मान्यता है—

तीन लोक नवखण्ड में, गुरु से बड़ा न कोय।
करता करै न करि सके, गुरु करै सो होय॥

गुरुदेव के नाम में अपूर्व शक्ति होती है और यही कारण है कि गुरुदेव के प्रति अनन्य श्रद्धा व भक्ति के माध्यम से शाबर-मन्त्र तुरन्त फलदायी होते हैं।

7. शाबर-मन्त्रों के जानकार व्यक्ति में आत्म-शक्ति गजब की होती है। ये लोग एक प्रकार के सिद्ध औघड़ की तरह निर्भीक, साहसी व अहंकारी होते हैं। इन्हें अपनी शक्ति पर बड़ा भयंकर स्वाभिमान होता है तथा प्रत्येक मन्त्र में इस बात को दोहराते हैं कि मेरी शक्ति, गुरु की भक्ति। ऐसा प्रतीत होता है कि शाबर-मन्त्रों में मन्त्र गौण किन्तु स्वयं की शक्ति व गुरु की भक्ति को प्रधान माना गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि 'आत्म-शक्ति' शाबर-मन्त्रों की सफलता की मुख्य कड़ी है।
8. एक विशेषता और शाबर-मन्त्रों में पाई जाती है कि मन्त्र के अन्त में अनिवार्य रूप से पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कहा जाता है—शब्द साचा, पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। अर्थात् शाबर-मंत्र में प्रयुक्त शब्दावली को साक्षात् ईश्वर की वाणी के रूप में स्वीकार किया गया है। मन्त्र में सम्बोधित देवता व ईश्वर का अस्तित्व अलग-अलग माना गया है तथा अन्त में सर्वोच्च सत्ता के रूप में मन्त्र की सफलता के लिए सर्वशक्तिमान्, अनन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायक, सर्वविभु, सर्वेश्वर परमपिता परमेश्वर को याद किया गया है। इस प्रकार की विशेषता किसी भी अन्य मन्त्रों में नहीं मिलती, जिसमें आराध्य देव व आराध्यदेव को शक्ति प्रदान करने वाले सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ सर्वेश्वर, परमात्मा को साथ-साथ याद किया गया हो। शाबर-मन्त्रों की प्रक्रिया देखकर **'केनोपनिषद्'** की एक बहुत ही सुन्दर किन्तु महत्त्वपूर्ण घटना सहज ही स्मरण हो आती है।

प्राचीनकाल में एक बार देवासुर संग्राम के अन्दर भगवत्कृपा से देवता विजयी हुए। यह विजय वस्तुतः भगवान् की ही थी, देवता तो निमित्त मात्र थे, परन्तु इस ओर देवताओं का ध्यान नहीं गया तथा भावनावश यह मानने लगे कि हम बड़े भारी शक्तिशाली हैं, एवं हमने अपने ही बल-पौरुष से असुरों को पराजित किया है। देवताओं के इस मिथ्या अभिमान को अकारण करुणा-वरुणालय परमब्रह्म परमात्मा समझ गये। भगवान् ने सोचा—यदि यह अभिमान स्थाई भाव से इनमें बना रहा तो ये लोग अहंकारी व अकर्मण्यशील हो जायेंगे तथा इनका पतन हो जायेगा। अतः

देवताओं पर कृपा करके उनका दर्प चूर्ण करने के लिए सर्वविभु एक दिव्य यक्ष के रूप में प्रकट हो गये। इस महाकाय यक्ष की दिव्य आभा व तेजस्विता से सारा देवलोक निस्तेज-सा हो गया, देवता मन-ही-मन सहम गये तथा उसका परिचय जानने के लिए व्यग्र हो उठे। देवताओं के मानसिक संकल्प को जानकर सबसे पहले अग्निदेव यक्ष के पास जाकर बोले—'मैं तीनों लोकों में प्रसिद्ध अग्नि हूं, मेरा ही गौरवमय और रहस्यपूर्ण नाम 'जातवेदा' है। देवताओं ने मुझे आपके रहस्य का पता लगाने भेजा है। अतः कृपाकर कहें, आप कौन हैं? और क्या चाहते हैं?' यक्ष ने अनजान बनते हुए कहा—'अच्छा! आप अग्निदेवता हैं? पर यह तो बताइये कि आपमें क्या शक्ति है? आप क्या कर सकते हैं?' इस पर अग्नि ने पुनः सगर्व उत्तर दिया—'मैं ब्रह्माण्ड का अप्रतिम तेजपुंज हूं, मेरी आभा से तीनों लोक आलोकित हैं। मैं यदि चाहूं तो इस सारे भूमण्डल को क्षणभर में जलाकर राख का ढेर कर दूं।' अग्निदेव की इस गर्वोक्ति पर हंसकर यक्ष ने एक सूखे घास का तिनका अग्निदेव के सामने रखकर कहा—'आप तो सभी को जलाकर राख कर सकते हैं, तो कृपाकर तनिक-सा बल लगाकर इस सूखे तृण को जला दीजिये।' अपने तिरस्कार पर अग्निदेव को क्रोध आया और अपने हुंकार मात्र से तिनके को जलाना चाहा। जब नहीं जला तब उन्होंने उसे जलाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर उसको तनिक-सी आंच नहीं लगी। आँच लगती भी कैसे? अग्नि में जो अग्नितत्त्व है, जो दाहकशक्ति है वह तो मूलरूप से परमात्मा द्वारा ही सम्प्राप्त थी। यदि वे ही उस शक्ति-स्रोत को रोक दें तो फिर शक्ति कहां से आती? अग्निदेवता इस बात को न समझकर डींग हांक रहे थे। जब उनसे सूखा तिनका नहीं जल सका, तब तो उनका सिर लज्जा से झुक गया और वे हतप्रतिज्ञ व हतप्रभ होकर चुपचाप देवताओं के पास लौट आये।

जब अग्निदेव यक्ष का पता लगाने में असफल रहे तो देवताओं ने इस कार्य के लिए अप्रतिम शक्तिसम्पन्न वायुदेव को भेजा। वायुदेव लपककर यक्ष के पास पहुंच गये और बोले—'मैं प्रसिद्ध वायु हूं, मेरा ही गौरवमय और रहस्यपूर्ण नाम 'मातरिश्वा' है। मैं चाहूं तो इस सारे भूमण्डल में जो कुछ भी देखने में आ रहा है सबको क्षणभर में बिना आधार के उठा लूं, उड़ा दूं।' यक्षरूपी परमेश्वर ने उनके आगे भी उसी सूखे तिनके को डालकर कहा—'आप तो सभी को उड़ा सकते हैं, तनिक-सा बल लगाकर, कृपा कर इस सूखे तृण को भी उड़ा दीजिए।' वायु देवता ने इसको अपना बड़ा भारी अपमान समझा और जोर से हुंकार भरके उस तिनके को उड़ाना चाहा। जब नहीं उड़ा तो उन्होंने अपनी पूरी शक्ति लगा दी, पर वह सर्वशक्तिमान परमात्मा के द्वारा शक्ति रोक लिये जाने के कारण वे उसे तनिक-सा भी नहीं हिला सके और अग्निदेव की भाँति हतप्रतिज्ञ, हतप्रभ होकर लज्जा से सिर झुकाये वहाँ से लौट पड़े।

Shakir Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

जब दोनों असफल रहे तो महान् शक्तिशाली देवराज इन्द्र स्वयं यक्ष की शक्ति का पता लगाने यक्ष के पास पहुंचे। उनके वहाँ पहुंचते ही यक्ष उनके सामने से अन्तर्धान हो गये और आकाशवाणी हुई—हे देवताओ! अपनी स्वतन्त्र शक्ति के सारे मिथ्या अभिमान को त्याग दो। यह वस्तुतः परब्रह्म-परमात्मा की महिमा है जिसकी शक्ति से अग्नि तेजोमय एवं वायु गतिशील है। उस परमतत्त्व की शक्ति से ही वाणी प्रकाशित होती है। इस परमतत्त्व को नेत्र द्वारा भी नहीं देखा जा सकता वरन् इसकी सहायता से नेत्र देखने की शक्ति को प्राप्त करते हैं। जो कान से नहीं सुना जा सकता वरन् जिससे श्रोत्रों में सुनने की शक्ति आती है। वह परमशक्ति सर्वविभु व व्यापक है, सूक्ष्म से सूक्ष्मतर है, नाशरहित व सब भूतों की योनि है उस तत्त्व को धीर लोग ही समझ पाते हैं।'

इस घटना से देवताओं को अपनी शक्ति व सामर्थ्य का आत्मज्ञान हुआ। हो सकता है, शाबर-मन्त्रों के आद्यनिर्माता व शबरनाथ स्वामी को इस गूढ़ रहस्य का पता हो तभी उन्होंने अपने द्वारा रचित मन्त्रों के माध्यम से अभीष्ट देव एवं उस देवता के मूलभूत शक्ति स्रोत परब्रह्म-परमात्मा, सर्वज्ञ ईश्वर को भी साथ-साथ स्मरण किया।

यों तो अनेक प्रकार के शाबर-मन्त्रों का बृहत् संकलन हमारे पास उपलब्ध है, जिन्हें प्रकाशित करने पर अलग से एक विशाल ग्रन्थ का निर्माण हो सकता है, परन्तु यहां हम, हमारे प्रबुद्ध पाठकों के लिए कुछ चुने हुए व अनुभूत शाबर-मन्त्रों को ही प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है कि पाठकगण इससे लाभान्वित होंगे तथा अपने प्रयोगों से कार्यालय को अवगत कराते हुए आवश्यक निर्देशन प्राप्त करते रहेंगे। काम्य कामना भेद से नौ प्रकार के मन्त्र होते हैं— 1. शान्ति 2. पुष्टि 3. वशी 4. आकर्षण 5. मोहन 6. स्तम्भन 7. विद्वेषण 8. उच्चाटन 9. मारण।

1. शान्तिकरण मन्त्र—

जिन मन्त्रों के प्रयोग द्वारा रोग आदि दुष्कृत्यों का नाश होता हो, भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी-शाकिनी इत्यादि बाधाओं का निराकरण होता हो, सर्प, बिच्छू इत्यादि जहरीले जानवरों के विष का शमन होता हो, दुष्ट व्यक्तियों द्वारा किये गए अभिचारों की निवृत्ति होती हो तथा ग्रह-नक्षत्रजन्य प्रकोपों की शान्ति होती हो। त्रिताप निवारक ये सभी मन्त्र शान्तिकरण मन्त्र कहलाते हैं। शान्तिकरण वाले सभी मन्त्रों की स्वामिनी रति देवी होती है। शान्ति कर्म सम्बन्धी प्रयोग हेमन्त ऋतु में शीघ्र फलदायी होते हैं तथा प्रातःकाल प्रथम प्रहर में ईशान्यकोण में बैठकर इन मन्त्रों का जाप करना चाहिए। शान्तिकरण में श्वेत वस्त्र पहनना चाहिये। शुभ्र श्वेत स्फटिक मणि या रुद्राक्ष की माला द्वारा स्वस्तिकासन में जाप करने पर शान्तिकर्म में शीघ्र सिद्धि मिलती है। शान्तिकर्म में दूध, शुद्ध गोघृत, तिल, गूलर तथा पीपल की लकड़ी व खीर

का हवन किया जाता है। शान्तिकर्म में कलश सुवर्ण अथवा नवरत्नों से अलंकृत होता है।

विविध रोग-निवारक (शान्ति) मन्त्र

पीलिया झाड़ने का मन्त्र—

जिसको पीलिया रोग हुआ हो उसके सिर पर कांसे की एक कटोरी में तिल का तेल लेकर कटोरी रखें और डाभ (कुशा) से उस तेल को चलाते हुए नीचे लिखे मन्त्र को सात बार पढ़ें। ऐसा तीन दिन तक करने से तेल पीला पड़ जायेगा और पीलिया झड़ जायेगा।

''ॐ नमो वीर वेताल कराल, नारसिंह देव, नार कहे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूँ भिदाती, कारै-झारै पीलिया रहै न एक निशान, जो कहीं रह जाये तो हनुमंत जति की आन। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

कण्ठबेल दूर होने का मन्त्र—

कण्ठबेल के रोगी को सात दिन तक चाकू की सहायता से झाड़कर जमीन पर 21 लकीर करें।

''ॐ नमो कण्ठबेल तू द्रुम द्रुमाली, सिर पर जकड़ी वज्र की ताली। गोरखनाथ जागता आया। बढ़ती बेल को तुरन्त घटाया। जो कुछ बची ताहि मुरझाया। घट गई बेल बढ़त नहीं बैठी। तहाँ उठत नहीं। पके फूटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई। ॐ नमो आदेश गुरु को। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।''

धरण ठिकाने लाने का मन्त्र—

मन्त्र सिद्ध करके आवश्यकता पड़ने पर किसी सूत में नौ बार मन्त्र पढ़कर नौ गांठ लगावें तथा उसे दल्ले के समान गोल बनाकर नाभि पर रख दें फिर नौ बार मन्त्र पढ़ते हुए उस पर फूंक मारें। धरण ठिकाने आ जायेगी।

''ॐ नमो नाड़ी-नाड़ी, नौ सौ नाड़ी, बहत्तर सौ कोठा चले अगाड़ी। डिगे न कोठा चले न नाड़ी। रक्षा करे जति हनुमंत की आन, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

* आधा सिरदर्द मिटाने का मन्त्र—

कृष्ण पक्ष की चौदस (चतुर्दशी) तिथि को श्मशान में जाकर नीचे लिखे मन्त्र

के 10,000 जप करके कुछ राख मन्त्रित कर लें। फिर रोगी के मस्तक पर कुछ राख मलते हुए सात बार मन्त्र बोलें। रोग मिट जायेगा।

''वन में ब्याई अंजनी, कच्चे बन फूल खाय।
हाक मारी हनुमन्त ने इस पिण्ड से आधा सीस उतर जाये।''

कखलाई (कोख में होने वाले फोड़े) का निवारण—

मन्त्र सिद्ध करके नीम की डाली से 21 बार झाड़ दें और उस जमीन की मिट्टी फोड़े पर लगा दें। तीन दिन में गांठ बैठ जायेगी।

''ॐ नमो कखलाई भरी तलाई, जहां बैठा हनुमन्ता आई। पके न फूटे चले न पीड़ा, रक्षा करे हनुमन्त वीरा। दुहाई गोरखनाथ की। शब्द साचा पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु को।''

अदीठ मन्त्र (कैंसर व फोड़े को ठीक करने के लिए)—

ग्रहण में मन्त्र सिद्ध करके जब प्रयोग करना हो तब मोर के पंख से पृथ्वी साफ कर मन्त्र पढ़ते हुए सात बार झाड़ें और जमीन की धूल सातों बार लेकर फोड़े के चारों तरफ लगायें। इस तरह सात दिन तक करने से रोग नष्ट होता है।

''ॐ नमो सिर कटा, नख फटा, विष कटा, अस्थिमेदमजागत फोड़ा फनसो अदीठ, हुंबल रैल्या व रोग रींघण वाय जाये। चौसठ जोगनी बावन वीर, छप्पन भैरव, रक्षा कीजे आय। शब्द साचा पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

* लकवा ठीक करने का मन्त्र—

''ॐ नमो गुरुदेवाय नम.। ॐ नमो उस्ताद गुरु कूँ, ॐ नमो आदेश गुरु कूँ, जमीन आसमान कूँ, आदेश पवन पाणी कूँ, आदेश चन्द्र-सूरज कूँ, आदेश नवनाथ चौरासी सिद्ध कूँ, आदेश गूंगीदेवी, बहरीदेवी, लूलीदेवी, पांगुलीदेवी, आकाशदेवी, पातालदेवी, उलूकणीदेवी, पूंकणीदेवी, टुंकटुंकीदेवी, आटीदेवी, चन्द्रगेहलीदेवी, हनुमान जति अञ्जनी का पूत, पवन का न्याती, वज्र का कांच, वज्र का लंगोटा ज्यूं चले ज्यूं चल, हनुमान जति की गदा चले ज्यूं चल, राजा रामचन्द्र का बाण चले ज्यूं चल, गंगा-जमना का नीर चले ज्यूं चल, दिल्ली-आगरा का गैलो चले ज्यूं चल, कुम्हार को चाक चले ज्यूं चल, गुरु की शक्ति, हमारी भक्ति, चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

विधि—

आशापुरी धूप लगाकर, मोरपंख से दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) झाड़ा देना तथा प्रत्येक झाड़े में इस मन्त्र को सात बार बोलना। इक्कीस दिन के लगातार प्रयोग से लकवा ठीक हो जाता है परन्तु 21 दिन तक नित्य दिन में तीन बार खेजड़ी सींचणी जरूरी है। व्यक्ति के ठीक हो जाने के पर्व 'उतारा' करना भी जरूरी है।

उतारा करने की विधि—

झाड़ा प्रारम्भ करने से एक दिन पहले शनिवार को 'उतारा' (टोटका) करें तथा रविवार को झाड़ा देना शुरू करें। सात पाव आटे का चूरमा बनावें, उसमें यथेष्ट शुद्ध घृत, गुड़, मावा मिलाकर चूरमे को घी से तर कर दें। इसमें से सबसे पहले हनुमानजी को सवासेर का रोट चढ़ाना। सात कोरी ठिकरियां लेनी। ठीकरी में सबसे पहले सात काजल फिर सात कुंकु की टीकियां देनी चाहिए। उसके पश्चात् अवशिष्ट चूरमा सातों ठिकरियों पर रख दें। प्रत्येक ढेरी पर एक-एक खारक, सुपारी, काजलपुड़ी, कुंकुमपुड़ी, इलायची, लौंग, चरचडीला की पुड़ी रख देनी। धूप आशापुरी (राल) का धुआं देना। डंकोलियों का पालना बनाकर मौली से बांधें। उतारा (टोटका) खेजड़ी के नीचे रख देना। पालने में रूई की छोटी गद्दी करके बिछानी। पालना खेजड़ी के बांध देना। खेजड़ी में जल सींचने के लिए नई मटकी लावें, उसी से हमेशा जल सींचें। आते-जाते समय किसी से बोलें नहीं। सींचने के बाद मटकी वापस लाकर जतन से रखनी ताकि फूटे नहीं। उतारा करने के पूर्व एक नारियल मावड़िया (बायोसा या माताजी) के थान (चबूतरी) पर चढ़ाना। नारियल की गिरियां बच्चों में तुरन्त बांट दें। इस विधि से कार्य करने पर बीजासणी दोष यानि लकवा (पक्षाघात) ऊपरी हवा (वाहन) का दोष ठीक हो जाता है।

—संकलन, विद्याधर शर्मा (पातन का वाड़ा)

* हैजा चढ़ाने व उतारने का मन्त्र—

ॐ वासुदेवलक्ष्मी फट् स्वाहा।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

इस मन्त्र के दस हजार जप से अभिमन्त्रित किया हुआ जल जिसको पिला देंगे उसे फौरन हैजा हो जायेगा।

ॐ वासुदेवलक्ष्मी विघ्न शान्तिः।

इस मन्त्र के एक हजार जप से अभिमन्त्रित जल पिला देने से हैजा शांत हो जाता है।

—स्व. श्री दौलतराम दवे (दुन्दाड़ा)

* अर्द्धाङ्ग चढ़ाने व उतारने का मन्त्र—

ॐ नमो सुर सुन्दरी आगच्छ-आगच्छ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र का 371 बार मिट्टी की माला पर जप करें तथा घृत, मिश्री, दूध का हवन करने से संकल्पित व्यक्ति को अर्द्धाङ्ग का रोग हो जाएगा।

ॐ कलो कलोधिमतां स्वाहा।

इस मन्त्र का 121 जाप करके अभिमन्त्रित दूध, मिश्री व घी अर्द्धाङ्ग वाले को पिला देवें तो सात रोज में रक्षा हो जायेगी।

—स्व. श्री दौलतराम दवे (दुन्दाड़ा)

* गठिया रोग चढ़ाने व उतारने का मन्त्र—

ॐ भ्रां भ्रां भ्रां भ्रां भ्रां भ्रां भस्ममागते फट् स्वाहा।

इस मन्त्र के 1001 जाप ग्रहणकाल में करने से सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन-मार्जन अवश्य करें तत्पश्चात् किसी भी स्थान से भस्मी लेकर इस मन्त्र को 101 बार उस पर पढ़ें। वह भस्मी जिस पर डाल देंगे उसको तत्काल गठिया रोग हो जायेगा।

ॐ भ्रां भ्रां भ्रां भ्रां भ्रां भ्रां भस्ममागते सर्वाङ्गे नमस्कारे नमस्तुते फट् स्वाहा।

कौओं का घोसला उतारकर उसको जलावें तथा उसकी भस्मी पर उपर्युक्त मन्त्र 108 बार पढ़कर खिला दें। गठिया रोग छूट जाता है।

—स्व. श्री दौलतराम दवे (दुन्दाड़ा)

* सर्वरोगप्रद शिव मन्त्र—

ॐ कल्पान्ते नमस्कारे फट् स्वाहा।

यह शिवजी का सिद्ध मन्त्र है। इसके 5022 जप करने से यह सिद्ध होता है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित विभूति को लक्षित व्यक्ति के वस्त्र में बांध कर रख दें। जिस प्रकार का रोग देना होगा, सो सब हो जायेगा। इसी मन्त्र से वही विभूति 1042 बार पढ़कर चटा देने से रोग छूट जायेगा।

* सर्वरोगनिवारक-मन्त्र—

"वन में बैठी वानरी अंजनी जायो हनुमंत, बाला डमरू ब्याहि बिलाई आंख की पीड़ा, मस्तक पीड़ा, चौरासी, वाई, बली-बली भस्म हो जाये, पके न फूटे, पीड़ा करे, तो गोरख जती रक्षा करे, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

इस मन्त्र का 41 दिन में सवालाख जप करें और किसी भी रोग को दूर हटाने के लिए रोगी पर मोरपंख से 108 बार झाड़ देवें। हनुमानजी के सामने तेल का दीपक लगाकर जप करें। इस मन्त्र के प्रभाव से सभी प्रकार की बीमारियां ठीक हो जाती हैं।

विषनिवारक मन्त्र, ओझा के लिए जरूरी बातें—

पहिले रोगी के काटी हुई जगह के ऊपर पट्टी बांध दें, फिर उसे पढ़ा हुआ पानी पिला दें तब झाड़ना शुरू करें। अगर झाड़ते-झाड़ते भी विष नहीं उतरे तो जानना चाहिए कि कोई दूसरा ओझा विष चढ़ा दिया है। तब उसका कटान पढ़ना चाहिये। अगर इस पर भी विष नहीं उतरे तो लचारी कौड़ी उड़ाना चाहिए। घर से चलने के समय ओझा पहले आत्मरक्षा और देहबन्धन पढ़कर अपना देह बांध लें। सांप अगर पकड़ा जाये तो उसको मारे नहीं, बल्कि कहीं किनारे छोड़ देवे।

* बिच्छू का जहर चढ़ाना—

ॐ नमो लोह की कोटि, बिच्छू उपना, तिण बिच्छू का नाम न लेना, चढ़ बिच्छू जहर प्रमाण, नहीं चढ़े तो गुरु गोरखनाथ की आण। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को लगातार पढ़ते रहने से लक्षित व्यक्ति जिसको बिच्छू ने काटा है, चिल्लाने व तड़फने लगेगा।

* बिच्छू का जहर उतारने का मन्त्र—

ॐ नमो काहर कबरी, गंटीयाली पर्वत, चरईनिपनी बिच्छू, द्रोहा काला बिच्छू धवला बिच्छू, मार्गरी, छित्राणी बिच्छू, इत उतारु, नहीं तर नीलकण्ठ मोर हकारू, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

राख से मन्त्र कर इक्कीस बार झाड़ा देना और काटे गये स्थान पर राख मलना, बिच्छू का जहर उतर जायेगा।

* बिच्छू का जहर उतारने का झाड़ा—

ॐ नमो आदेश गुरु का, काला बिच्छू कंकरीयाला, सोना का डंक, रूपे का भाला, जो उतरे तो उतारुं, चढ़े तो मारूं, नीलकण्ठ मोर, गरुड़ का आयेगा, मोर खायेगा तोड़, जा रे बिच्छू डंक छोड़, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र का 108 बार झाड़ा नीम की डाली से देने पर कैसा भी विषैला बिच्छू हो, उसका विष उतर जाता है।

सर्प-विष उतारने का सिद्ध मन्त्र—

ॐ नमो पर्वताग्रे रथो आन्ति, विट बड़ा कोटि तन्य बीरडर पंचनशपनं पुरमरी अंसडी तनय तक्षक नागिनी आण, रुद्रनी आण, गरुड़ की आण, शेषनाग की आण, विष उडन्ती, फुरु फुरु फुरु ॐ फुरु डाकू रड़ती भरड़ा भरड़ती विष तु दन्ती उदकान।

यह मन्त्र 21 या 108 बार पानी या काली मिर्च पर अभिमन्त्रित करके देना। काली मिर्च चबाने को कहना, रोगी को पानी पिलाना तथा पानी मुंह पर छोड़ना तो कैसा भी विष हो फौरन उतर जाये। यह मन्त्र नागपंचमी के दिन सिद्ध किया जाता है। उस दिन साधक उपवास रखे। खीर, शक्कर और घृत से युक्त मधुर मिष्टान्न बनाकर नागमूर्ति के आगे भोग लगावें और उस दिन आनन्द के साथ भोजन करें। नाग देवता की स्तुति करें। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

नगाड़ा बजाकर विष उतारना—

ॐ टामक शब्द, यू भम्पउ, आला विष उ खाऊ,
चन्दन रूप ही जगभमऊ, तू छोड़ि विषऊ घरि जाऊ।

यह मन्त्र ढोल के ऊपर लिखकर नगाड़ा बजावें तो सर्प का विष उतर जाता है। इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को पिलावें तो मूर्च्छित व्यक्ति मुख से बोलेगा। विष का प्रभाव नष्ट हो जायेगा।

थप्पड़ मारकर सर्प-विष उतारना—

थर पटक धसनि-धसनि सार,
ऊपरे धसनि विष नीचे जाय।

काहे विष तू इतना रिसाय,
क्रोध तो तोर होय पानी।
हमरे थप्पड़ तोर नहिं ठिकाना,
आज्ञा देवी मनसा माई।
आज्ञा विषहरि राई दुहाई॥

इस मन्त्र को पहले अमावस्या की रात्रि, अथवा ग्रहण या होली की रात्रि में सिद्ध करते हैं। इसके पश्चात् जो व्यक्ति सर्प काटे की सूचना देने आवे तो यदि व्यक्ति थप्पड़ सहन करने लायक हो तो उसे उपर्युक्त मन्त्र का जाप करते हुए खींचकर थप्पड़ मारें। आप स्वयं आश्चर्य करेंगे कि रोगी के शरीर में विष का वेग कम हो जायेगा। फिर विधिवत् झाड़ा लगायें। रोगी को नीम के पत्ते खिलायें। विष-दोष स्वतः ही समाप्त हो जायेगा। इस प्रयोग से सर्प काटा हुआ व्यक्ति मर नहीं सकता। यह अद्‌भुत सफल प्रयोग है।

विष रोकना—

1. ओपार धोबार झी कापड़ कांचे, धलो कालो विष पानी ते भासे। उदो लो धोबार की आमी तोमार शिष्य नेतेर आंचले बान्धिया राखिलाम फलानार अंगेर कालकूट विष, धोलाम बान्धिया थाक गिया पोड़िया आमी जीवत आसी तोर ईश्वर महादेव सेवा बरिया यदि आभार एड़ आइछेली छोटे, तोर ईश्वर महादेवर मस्तक फाटे॥

विधि—

जब कोई सांप काटे की खबर कहने आवे, वैसे ही यह मन्त्र तीन बार पढ़कर अपनी चादर या धोती के छोर में बांधकर गिरह दे दें। विष जहां तक चढ़ा है वहीं रुक जायेगा।

सांप को बाहर निकालने का मन्त्र—

''कोथा चण्डि विषहरि विषवृक्षमूले। एकबारे एखाने आसे सन्ताने। दा देखिले एड़ आसे एड़ आसे गरुड़ आसने। नाच्छि योगिनी जतो मनसार भासाने। जरत कारू छिलो जानि ए महि मण्डले। वोस्ताद बधिया फैले सागरेर जले॥ कुझान विज्ञान काटी करी खान खान। भये सापा बापा बोले करे अगुवान॥ माथा जुजु मुड़ि धीरे-धीरे आसे। बेहुला कान्दिया निजेर चोखेर जले भासे॥ सार सार माल साठ गरुड़ेर फुस। काल नागिनी चौंसट्टि योगिनी नाई होस आम आय आय हरि हरि विषहरि झरि। गरुड़ मनसार दोहाई, सिद्धि चण्डीर दोहाई शीघ्र आय।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

विधि—

मन्त्र पढ़कर धूल फूँकें। इसके पहले दो बार आत्मरक्षा मन्त्र पढ़ लें जो शुरू में दिया गया है। जब सभी प्रकार के प्रयोग विफल हो जाते हैं तब कौड़ी फेंकी जाती है जिससे सर्प को बाहर आना ही पड़ता है। यह अन्तिम अमोघ उपाय है।

* मन्त्र कौड़ी उड़ाने का—

1. चिकन बिरा, सिगन नारायण, कामधेनु, कान टन खागा, ताया में काटा मुंडा टोन टोन करि चल, नरा नरी शिवेर ओझा सर्प आन धरे, आसका आव बध बादगा।

2. आनकार आतू मानकारे आत ओंमाद रेखा मानकारे आत।

3. सूर्य अग्नि उठे, रूद्र बरने कौड़ी चले, सर्प दर्शने कान हवते, जोभ हवते, सर्व आन विद्यमानै।

विधि—

चैत्र संक्रांति के दिन एक पीपल के घड़े में सांची सरसों का तेल भरकर तीन चित्ती कौड़ी उसमें तीन दिन तक छोड़ दें। रोज संध्याकाल में दीपक लगाएं, परन्तु शुक्रवार को घड़े में तेल भरें। संक्रान्ति के दिन कौड़ी को जगाएं। इन कौड़ियों को यत्न से रखें और हर रोज संध्या दें। जब कौड़ी चलानी हो, तब प्रत्येक मन्त्र पढ़-पढ़कर क्रमशः पूर्व, दक्षिण और पश्चिम दिशा में कौड़ी फेंकें और मन में कहें कि स्वर्ग, मृत्यु, पाताल जहाँ कहीं सांप हो पकड़कर लावो।

नोटः जब सांप आवे, तो रोगी को ठीक उसी जगह, उसी अवस्था में रखें, जहां जिस जगह पर, जिस प्रकार सांप ने काटा हो।

* सांप छुड़ाने का मन्त्र—

काला कपड़ पहरिया, भगवा किया भेष,
मैं तो सर्पा छोड़ियो, फिर-चर त्यारै देश।

ऐसा मन्त्र पढ़ने से सर्प ओझा के वचनों (मन्त्र-बल) से मुक्त होकर, अपने स्वतन्त्र व इच्छित स्थान पर चला जाता है। फिर नुकसान नहीं पहुंचाता।

पागल कुत्ते का झाड़ा—

ॐ नमो सुणहीं सुणहां कुकुरी, दाड़ उगती मारूं रे, हिड़किया विष डाड़िया हरे, विष ने ठाड, सत्तो राजा गरुड़ रे बाण, चक्र चुकती, दुग्गल की वाचा फुरे, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

गोबर की चौकी करना, गेहूँ एक सेर, एक पैसा, सुपारी सात लेना, कुत्ते के काटे गये व्यक्ति को चौकी पर बिठावें, सिन्दूर का टीका करें, धूप-गुग्गल जलावें और झाड़ा 108 बार देवें, पागल कुत्ते का काटा ठीक हो जायेगा।

भूत-प्रेत बाधानाशक मंत्र—

दोष परिक्षण—

ॐ अप्रतिचक्रे स्फट विचक्राय स्वाहा।

सरसों के आठ दाने लेकर उपर्युक्त मन्त्र पढ़ते हुए जल से धो दिरावें और सुखा लें। सुखा लेने के पश्चात् फिर उन दानों के ऊपर 108 बार इस मन्त्र को पुनः पढ़ें, तत्पश्चात् एक कटोरी में पानी भरकर लावें तथा उसमें आठों दाने छोड़ दें। एक तैरे तो भूत-दोष, दो तैरें तो क्षेत्रपाल-दोष, तीन तैरें तो शाकि-दोष, चार तैरें तो यन्त्र-दोष, पाँच तैरें तो आकाशदेवता-दोष, छः तैरें तो शाकनी-दोष, सात तैरें तो वन्ध्यावासिनी-दोष, आठ तैरें तो कुलदेवता-दोष, न तैरे तो कोई दोष नहीं।

दोषनिवारक-टोटके—

(1) नौ कोरे मिट्टी के शिकोरे (घड़े) शराब या दही के भरके श्मशान में छोड़ दें तो भूत-दोष जाये। (2) क्षेत्रपाल-दोष के लिये अठाई (व्रत) करना, रातिजोगा देना, फल-फूल व गुग्गल से पूजा करना। (3) शाकिनी-दोष के लिए लाल वस्त्र सात हाथ, रक्त चन्दन, एक सेर खिचड़ी, एक सेर पकौड़े, ठीकरी के ऊपर डालकर तीन रास्तों पर रख दें। रक्षा-ताबीज गले में पहनावें, शाकिनी-दोष मिट जायेगा। (4) यन्त्र-दोष ठीक करने के लिए चौदह सुपारी, चौदह सुगन्धित वस्तु, नैवेद्य व धूप की बलि देवें। (5) आकाश-दोष के लिए सगोत्र कुंवारी दो कन्याओं को भोजन कराना, पांच कांसी के छालिये में बलि देनी, दक्षिण दिशा में पूजा करनी, पहले दिन बलि देनी, दूसरे दिन फीका अनाज तथा तीसरे दिन पकवान को उवार कर बलि देनी, आरोग्य लाभ होगा। (6) जलदेवता-दोष शान्ति के लिए लाल कणेर के पुष्प तथा लाल चन्दन व चावल की बलि देना, जलस्थान जाकर सात बार धूप-

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

दीप-नैवेद्य क्षीर की बलि चढ़ानी। (7) वन्ध्यावासिनी-दोष के लिए व्यक्ति को घर के बाहर ले जाकर, लापसी की बलि देना, ठीक हो जायेगा। (8) कुलदेवता-दोष निवारण करने हेतु घर की स्वामिणी कन्या को भोजन करावें, व वेष पहनावें तो शान्ति हो जायेगी।

नोटः यदि जातक को दृष्टि-दोष हो गया हो तो रात को सिर के नीचे नमक की पोटली रखना, सुबह सात बार उवारकर फेंक देना, तत्काल लाभ होगा।

प्रेतबाधा-निवारक मन्त्र—

हनुमानजी के मन्दिर में तेल का दीपक जलाकर 1,25,000 जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। फिर किसी भी तरह की प्रेतबाधा होने पर मोर पंख से 108 बार झाड़ देवें, बाधा दूर होगी।

ॐ नमो दीप सोहे, दीप जागे पवन चले, पानी चले, शाकिनी चले, डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले, नौ सौ निन्यानवे नदी चले, हनुमान वीर की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रेतबाधा-निवारक (बालकों के लिए)—

पहले ग्रहण के समय मन्त्र का जाप करके सिद्ध कर लें और किसी बालक को बाधा होने पर मन्त्र को 21 बार बोलकर तीर से झाड़ दें तथा पानी को 21 बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके पिला दें।

ॐ काला भैरव कपिली जटा, रात-दिन खेले चौपटा। काला भस्म मुसाण, जेहि मांगू तेहि पकड़ो आण। डंकिनी शंखिनी पट्ट सिहारी, जरख चढ़ती गोरख मारी। छोड़ि-छोड़ि रे पापिनी बालक पराया, गोरखनाथ का परवाना आया।

डाकिनी-शाकिनी को सजा देना—

ॐ नमो माणकाय योगिनी संस्थायः शाकिनी कल्प वृक्षाय, चौसठ योगिनी, संधि रुद्रकालदठेन साध्य-साध्य, मारय-मारय, अपि रहस्य-रहस्य शाकिनी नश्य वारान, उग्रंगा-उग्रंगा, ॐ हिं हीं हीं हीं हीं हुर स्वाहा।

इस मन्त्र से गुग्गल को अभिमन्त्रित करके ऊखल में डालें और मूसल से उसको कूटें। डाकिनी को भयंकर चोटें लगेंगी तथा चिल्लाती हुई, वह पीड़ित व्यक्ति के शरीर को छोड़ देगी। गुग्गल कूटते समय यह मन्त्र इक्कीस बार बोलें।

शाकिनी प्रहार लागति घोडो मुकिये, साकिनी मस्तक मुडाय, ॐ इट्टी-मिट्टी स्वाहा। इक्कीस बार कूटना।

* डाकिनी-शाकिनी को जलाने का मन्त्र—

ॐ नमो हनुमन्ताय, महाबलाय पराक्रमाय, अस्मद् कुल शाकिनी नाश कुरु-कुरु, सुख प्रज्वलाय स्वाहा।

आटे का पुतला बनाकर इस मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर रूई की एक जोत बनावें और उस पुतले के मुख पर दीवट रखकर उसको जला दें। शाकिनी-डाकिनी भस्म हो जायेगी।

डाकण को नाक काटकर सजा देना—

ॐ नमो नारसिंह वीर, भैरव मन्त्र जागे, ग्रहदोष बांध ल्याव, आमली डाल मुख वाट लाडो आवे, नारसिंह वीर भंवर भोला, कालो छेड़ो, रम-रम करती बाले, सात समुद्र सोखतो, एक हमारो काम करिजे, अरे नारसिंह वीर की छूरी, डाकण का नाक काट ल्याव, न काट लावे तो ईश्वर महादेव रानी पार्वती की चुड़ी चुके, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह मन्त्र एक सौ आठ बार बोलकर, मेण का पुतला बनाना, उसके ऊपर उड़द चढ़ाना, उसके बाद पुतले को कोड़े मारना, पुतले पर छूरी मन्त्रित कर चलाना, छूरी से पुतले का नाक काटें तो डाकण का नाक कटे, सिर काटें तो डाकण का सिर कटे।

—स्व. वेदिया श्री लक्ष्मीनारायण दवे (दुन्दाड़ा)

नजर झाड़ने का मन्त्र (नजर कामण शान्ति-करण)—

ग्रहण के समय मन्त्र-जप कर मन्त्र सिद्ध करें और बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से 11 बार झाड़ दें। शान्ति होगी।

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरु को। ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी, बोले छल सों अमृत बानी। कहो नजर कहाँ ते आई, यहाँ की ठोर तोहि कौन बताई। कौन जात तेरी काँ ठाम, किसकी बेटी कहो तेरो नाम। कहाँ से उड़ी कहाँ को जाया, अब ही बस करले, तेरी माया। मेरी बात सुनो चित्त लगाय, जैसी होय सुनाऊँ आय। तेलन, तमोलन, चुहड़ी चमारी, कायथनी, खतरानी, कुम्हारी। महतरानी, राजा की रानी, जाको दोष ताहि सिर पर पड़े। हनुमन्त वीर नजर से रक्षा करे। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

कामण उतारने का मन्त्र—

ॐ नमो वज्र योगिनी, चौसठ योगिनी, काम विहाडनी, अमुख शरीरात् कामण दोष नाशय-नाशय स्वाहा।

इक्कीस बार पढ़कर, हाथ में जल लेकर छाँट दें, तो कामण उतर जाये।

उच्चाटन व कामण उतारने का मन्त्र—

करकर लोहा वज्र किवाड, वज्रे बंदी दशमे द्वार, जहां थी आयो तिहा जाये, जिण रुख आयो, लगायो, ताही खाय, चट पटंत, संधान सोखत रक्त, इस पिण्ड जो वेदन करे, बिका पान करे, श्री महन्त भादल की आज्ञा फुरे, उल्टन्ती वेध, परटन्त बाण, इस पिण्ड की मूढ़ी, सूढ़ी, टूणा-कामण, वीर बेताल की आज्ञा पर आज्ञा, जो इस पिण्ड कुं कुछ करे, तो ईश्वर महादेव की आज्ञा उल्टे।

इस मन्त्र के द्वारा जिस किसी ने भी जातक पर उच्चाटन-कामण किया हो तो वे सभी नष्ट होकर, उलटे करने वाले पर पड़ते हैं।

प्रत्येक बाधा शान्त-करण चमत्कारी सिद्ध मन्त्र झाड़ा—

ॐ नमः वीरवज्र हनुमंत रामदूत चल, वेग चल, लोहे की गदा, वज्र का सोटा, पान का बीड़ा, तेल सिंदूर की पूजा, हं हं हंकार, पवनकुमार, चल चं चं चं चक्र हस्त ले, भैरव काल, चामुण्डा कील, मसान कील, देव कील, दैत्य कील, दानव कील, राक्षस कील, डाकिनी कील, शाकिनी कील, नवकोटि कील, नाग कील, छलछिद्र भेद कील, भोंदरा भोंधरा कील, बावन वीर कील, बारह जाति बाघ कील, अचल चला पृथ्वी कील, कील-कील, सिंह कील अपघात करे, उलट ताके ऊपर परे, खं खं खाय स्वाहा।

विधि—

इस प्रयोग को जिस शनिवार को रक्तातिथि (4, 9, 14) और श्रावण, रोहिणी नक्षत्र हों व चन्द्रमा शुभ हो तो रात्रि के दस बजे के उपरान्त श्री हनुमानजी का पूजन करके मोरपंख पर 108 बार जप करें। इसी प्रकार सात शनिवार पर्यन्त करना चाहिए। इस प्रयोग के शुरू करते ही वीरवर हनुमानजी के रौद्र रूप में डरावने दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं, लेकिन डरना नहीं चाहिए, अगर भयानक स्वप्नों का आधिक्य होने लग जाये तो शान्ति-मन्त्र की एक माला या शान्ति-स्तोत्र पाठ करना चाहिए।

जिस स्त्री, पुरुष, बालक पर नजर मसान, प्रेतबाधा या अन्य किसी प्रकार का दोष होवे तो मन्त्र की 11 आवृत्ति पाठ बोलकर मोर-पंख से झाड़ देवें। उपरान्त हनुमानजी को भोग लगावें व बच्चों को बांट दें। कबूतर, मोर आदि जानवरों के लिए अनाज डालें। गाय, सांड आदि के खाने के वास्ते घास आदि की व्यवस्था करावें। इस प्रयोग से जन-कल्याण करें। रोजगार न करें। इस मन्त्र का दुरुपयोग करने वाले मनुष्यों को अनेक कष्ट व हानि की सम्भावना है।

मन्त्र से अग्नि लगाना व बुझाना—

प्राय: हम देखते व सुनते हैं कि कई गांवों व घरों में बिना कारण के अचानक आग लग जाती है। अभीष्ट व्यक्ति के कपड़े, रुपये व सामान एकदम जलने लगते हैं परन्तु पास में पड़े हुए दूसरे व्यक्ति के कपड़े व सामान का कुछ नहीं बिगड़ता। इस प्रकार की जादुई आग किसी दुश्मन के द्वारा भेजी जाती है, जिसका काट मन्त्र-बल से ही सम्भव है।

आगिया वेताल-साधना (मन्त्र)—

ॐ अगिया वेताल महावेताल, बैठ वेताल अग्नि, अग्नि तेरे मुख में सवामण अग्नि, महाविकराल फट् स्वाहा।

विधि—

थोड़े से उड़द लाकर अपने सामने रखें तथा थोड़ा घास-फूस भी। प्रतिदिन एक सौ आठ बार इस मन्त्र को पढ़ना है तथा हर मन्त्र के साथ दो-चार दाने उड़द के सूखी घास पर डालने हैं। यह प्रयोग इक्कीस दिन तक चलेगा। ऐसा करते-करते एक दिन ऐसा आयेगा कि घास अपने आप जलने लगेगी। अचानक आग के प्रकट होते ही समझें कि अगिया वेताल प्रकट हो गया है। कई बार वेताल साकार रूप में भी प्रकट हो जाता है। ऐसी अवस्था में घबरायें नहीं, डरने से वेताल वापस चला जाता है। अगिया वेताल के प्रकट होते ही दाहिने हाथ से उसे पंचमेवा (दाख, छुहारा, बादाम, चिरौंजी व चिलगोजा) भेंट करें। श्रद्धापूर्वक भक्ति से उसे नमस्कार करते हुए कहें—हे वीर वेताल! शान्त भाव से आप मेरी जिह्वा पर विराजमान हो जाइए। वेताल के निवास करने के तीन स्थान हैं— 1. दाहिने हाथ का अंगूठा 2. आंख 3. जिह्वा। जिह्वा पर रहने पर स्मरण करते ही वेताल प्रकट हो जाता है तथा इच्छित स्थान पर अग्नि लगाता है व कार्य करता है। यह साधना रात्रिकाल में की

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

जाती है तथा नाभि तक पानी में खड़े रहकर भी की जाती है, जिससे तत्काल सिद्धि मिलती है।

अगिया बांधने का मन्त्र—

ॐ नमो आगी थम्बो, आगरणी थम्बो, राजा शरीरी प्रजा थम्बो, ईश्वर ब्रह्मा थो भई आगी, सूर्य राय दीवार ई साख।

सूर्य के सामने इक्कीस बार बोलकर पानी मन्त्र कर फेंकें, आग बुझ जायेगी।

अग्नि रोकने का (अन्य) मन्त्र—

ॐ नमो अर्जलई, पर्जलई, बलई, तउ कण्ठ भार, ताबिहुं तइ थम्बउ, तेल पड़े तिसार, अग्नि कुंरुद्र, ब्रह्मानी जारी, पाणि रे लाइऊ, हरि विष नर देर कोमारी, दृष्टि आवि कु ताटउ जाये खेव ॐ ठः ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र को इक्कीस बार बोलकर पानी मन्त्रित कर दुग्ध मिश्रित पानी की धार देने से अग्नि शान्त हो जाती है।

* घरों में पत्थर-ईंट बरसाना व रोकना—

रविवार के दिन जो मनुष्य मर जाये, तो उसके पीछे श्मशान घाट जावे। मुर्दे को जहां विश्राम दिया जाये, उस स्थान की मिट्टी ले, तालाब की मिट्टी ले तथा गधे के पेशाब में मिलाकर, गोली बनाकर, जिस घर में फेंकेंगे वहां पत्थरों व ईंटों की वर्षा शुरू हो जायेगी।

नीचे लिखे मन्त्र को नई ईंट पर राख से लिखकर जिस घर में रख आवें, उस घर में ईंट-पत्थर बरसना बन्द हो जायेगा।

कहि गेला गड़िया क्षेत्रपाल ताल, विताल सिधा चाली, शीघ्र गति रवि शशि चलिया जाईस। पवनेर ढोक, डम्बर बाजाइया जादस मानिन्द्रा कतो, प्रेतो-प्रेती, ब्रह्ममुखी दानवेरं मां छय कुडी, छय दूत लईसा, नाविया पूजा खा, महादेवरि सन्तोष बरे, भस्म होये 'अमुकार' छापनीय मारकर गिया। कार आज्ञा शिवशंकेरर आज्ञाय।

* अमोघ रक्षा-मंत्र की चौकी—

भूत-प्रेत, पिशाच, डाकण का सामना करने के पूर्व तथा श्मशान-साधना करने

के पहले शरीर की रक्षा-चौकी बहुत ही जरूरी है। अन्यथा साधक कई बार विपत्ति में फंस जाता है। रक्षा-चौकी का मन्त्र यह है—

ॐ नमो खर्परी सर्ववश कर की चौकी, वज्र भेरू की चौकी, बावन क्षेत्रपाल की चौकी, कालजय कालकादेवी की चौकी, हीये हनुमन्त वीर की चौकी, सात सहेलियां की चौकी, चौकी चीड़ी बावन वीर की, चौकी नखसक देव की चौकी, मार मारकरन्ता आया, इण घट का रखवाला भेरू, हमारे शरीर की रक्षा नहीं करे तो, माता कालका का दूध पिया हराम करे, हमारा रखवाला न बने तो, माता कालका की सेज पर पांव धरे, शब्द साचा, पिण्ड काचा, चलो मन्त्र काल भैरव की वाचा।

रविवार से आठ दिन तक साधना करनी, भैरोजी के थान पर घी, तेल का दीपक व धूप बत्तीसा जलाने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

—स्व. वेदिया श्री जयनारायण दवे (दुन्दाड़ा)

आत्म-रक्षा का मन्त्र—

ॐ नमो वज्र की चौकी वन में वास, मरे भूत जो लेवे सांस, पिण्ड छोड़ी घटता में पैसे, ब्रह्मा कुंची, महेश्वर ताला, इस पिण्ड का गुरु गोरख रखवाला।

यह मन्त्र सात बार बोलकर चोटी के गांठ लगावें। चोटी नहीं हो तो पगड़ी या अंगोछे के गांठ लगावें, ऐसा करने से सामने वाले को लगा हुआ भूत-प्रेत या पिशाच आपके शरीर में प्रवेश नहीं कर पायेगा।

—स्व. वेदिया श्री जयनारायण दवे (दुन्दाड़ा)

(2) पुष्टिकारक मन्त्र—

जिन मन्त्रों के द्वारा व्यक्ति अपने व अपने परिवार के पराक्रम को बढ़ाता हो, धन-धान्य, यश-कीर्ति, प्रतिष्ठा व पद को प्राप्त करता हो, जिन मन्त्रों का अवलम्बन लेकर व्यक्ति नाना प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि को प्राप्त करते हुए, सम्पन्नता, समृद्धि, ऐश्वर्य व वैभव को प्राप्त करना चाहता हो, वे सभी मन्त्र पुष्टिकारक मन्त्र कहलाते हैं। पौष्टिक कर्म का देवता मन्त्रानुसार होता है। पुष्टि कर्म वाले मन्त्रों का जाप माघ-फाल्गुन महीनों में श्वेत या इच्छानुकूल स्वच्छ राजसी वस्त्र पहनकर करना चाहिए। पुष्टि कर्म में शुद्ध गौ-घृत, बिल्व-पत्र अथवा चमेली के पुष्प, खीर, कमलगट्टा, दही, अन्न, तिल एवं यथेष्ठ निर्दिष्ट सामग्री से हवन किया जाता है। इस कर्म में मूंगा, हीरा, स्फटिक तथा रुद्राक्ष की माला ग्राह्य है। पद्मासन में बैठकर जाप करने से इस कर्म में शीघ्र सफलता मिलती है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

लक्ष्मी प्राप्ति का अमोघ-मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी ममगृहे आगच्छ-आगच्छ ह्रीं नमः।

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि को कुंकुम या अष्टगन्ध से थाली पर लिखें, बहीखाते में लखें तथा उसी रात्रि को 12,000 या सवा लाख यथेष्ट जप करें, तो उस वर्ष में व्यक्ति बहुत दौलत व ऋद्धि-सिद्धि को पाता है। यह सत्य व अनुभूत मन्त्र है।

धन-प्राप्ति का मन्त्र—

ॐ सरस्वती ईश्वरी भगवती माता क्रां क्लीं श्रीं श्रीं मम धनं देहि फट् स्वाहा।

यदि रुपयों की आवक में बराबर रुकावट होती हो, तो इस मन्त्र के रोज 108 जप 40 दिन तक लगातार करें। लक्ष्मीदेवी प्रसन्न होकर धन देंगी। यदि किसी में उधारी बाकी हो, व्यक्ति की नियत बदल गई हो तो इस मन्त्र प्रयोग के द्वारा व्यक्ति की बुद्धि निर्मल व शुद्ध हो जाती है तथा आपका रुका हुआ पैसा मन्त्र-बल से वापिस आने लगता है।

लाभ-प्राप्ति का मन्त्र—

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीमेव कुरु-कुरु वांछितमेव ह्रीं ह्रीं नमः।

यदि व्यापार में बराबर घाटा पड़ता हो एवं व्यापार बन्द करने की स्थिति आ गई हो, तो प्रस्तुत मन्त्र के 108 जप नित्य प्रातःकाल को 40 दिन तक करें। घाटा दूर होकर व्यक्ति को लाभ होने लगेगा।

* सर्व सिद्धिदायक कुबेर-मन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यक्षराजाय कुबेराय वैश्रवणाय धनाधिपतये, धनधान्य-समृद्धि में देही-देही दापय दापय स्वाहा ॐ।

आर्थिक उन्नति, समृद्धि, ऐश्वर्य व वैभव-प्राप्ति हेतु यह मन्त्र अमोघ है। एक लाख जप करके दशांश की आहुति काले तिलों से करनी चाहिए। यह मन्त्र सिद्ध होने पर व्यक्ति का चहुँमुखी विकास होता है तथा लक्ष्मी स्थाई रूप से उसके घर में निवास करती है। पूजा के अन्त में महेश्वर की प्रार्थना अनिवार्य है।

ॐ धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च।
धनधान्य समृद्धि मे कुरुनाथ महेश्वर॥

—स्व. त्रिवेदी नन्दराम शर्मा (सोजत)

बाजार से मिठाई मंगाने का मन्त्र—

ॐ नमो नवाब सुलेमान सत्ता पर बैठा, तहाँ स्त्री पुकारण लागी, अहो! नवाब सुलेमान पैगम्बर, देखूं तेरी शक्ति, बाबा आदम के कुल गोत्री उठ-उठ, लाव-लाव, वेग-वेग, पूर मन इच्छत पाऊं, ॐ ह्रीं क्रीं स्वाहा।

विधि—

बुध या गुरु की रात्रि को स्नान करके, पीले वस्त्र पहनना, पीत पुष्पों की माला पहननी, श्वेत पुष्प देवता को चढ़ाना, पीले बाजोट के ऊपर रक्त वस्त्र रखकर, चावलों से मस्जिद बनानी, उस पर दीपक रखकर धूप लोबान देना तथा एक ही बैठक में 700 या 7000 जप मन्त्र के करने, जपान्त में पञ्चामृत का हवन करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग करते समय खाली थाली या बर्तन को गोद में लेकर वस्त्र से ढक दें। 108 बार जपते ही इच्छित मिठाई आवे। वह मिठाई खुद नहीं खावें।

—स्व. वेदिया भगवानचन्द दवे (दुन्दाड़ा)

कढ़ाई बांधने व छुड़ाने का मन्त्र—

ॐ नमो आदेश गुरु कूं, सोना की हांडी, रूपा का पात, तले भेरू सहल करे, ऊपर हनुमंत वीर गाजे, जलती बांधु, बलती बांधु, बांधु कड़ा तवाई, हमारी बांधी नहीं बन्धे तो लाख-लाख मेहम्दा पीर की दुहाई।

पीर का थान सवा हाथ का बनाना, धूप लोबान का करना, दक्षिण या उत्तर दिशा में बैठकर नित्य 21 माला 11 दिन तक फेरना, मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग करते वक्त इस मन्त्र को बोलते हुए, सात कंकरी कढ़ाई पर मारें, चाहे कितनी भी लकड़ी या ईंधन जलावें, कढ़ाई का सामान पकेगा नहीं।

प्रत्युपचार (काट)—

ॐ नमो आदेश गुरु को, जल छोड़ू, जलवाई छोड़ू, छोड़ूकड़ा, तवाई, शेष भट्टी की जाल छोड़ू, आकाश ने पाताल छोड़ू, सौ-सौ चाड़ चूको, हमारी छोडी नहीं छूटे, तो वीर्य हनुमान को लाजै, माता अञ्जनी का दूध पिया हराम करे।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

—स्व. वेदिया भगवानचन्द दवे (दुन्दाड़ा)

* अनाज की राशि उड़ाने का मन्त्र—

"ॐ नमो हंकालो चौसठ योगिनी, हंकालो बावन वीर, कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊं, आगे चौसठ वीर, जल बन्धि, बल बन्धि, आकाश बन्धि, पवन बन्धि, तीन देश की दिशा बन्धि, उत्तर को अर्जुन राजा, दक्षिण तो कार्तिक विराजे, आसमान लो वीर गाजे, नीचे चौसठ योगिनी विराजे, पीर तो पास चलि आवे, छप्पन भैरो राशि उड़ावे, एक बन्ध आसमान में लगाया, दूजे बान्धि राशि घर में लाया।"

विधि—

दीपावली की रात्रि को वन में जाकर मेष या बकरी की मींगणी लावें, उसको सात बार मन्त्र कर धान की राशि के ऊपर धर आवें, पीछे से राशि चली आवेगी। कुल अनाज की आधी राशि पुण्य कर दें।

भूमि में गड़ा खजाना दीखे—

जिस जगह पृथ्वी में धन होने का अंदेशा हो, वहां पर चमेली के पुष्पों को दही में भिगोकर अलग-अलग रख दें, दूसरे दिन प्रातः यदि दही का रंग पीला, काला या लाल हो जाये, तो उस जगह धन अवश्य है, ऐसा निश्चय जानें। इसी प्रकार हल्दी व दूध मिलाकर छींटना, दूसरे दिन रंग बदला हुआ मिले तो वहां धन जानना। इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या 90 पर निर्दिष्ट प्रयोग के द्वारा भूमि शुद्ध करें उसके पश्चात् रात्रिकाल को साधक उसी भूमि पर शयन करे तथा निम्न मन्त्र का जाप करें—

सत्यं दर्शय भौमेयं दिव्यं सत्येन दर्शय।
यदि भूमिगतं द्रव्यमात्मान दर्शय स्वयम्॥

इस मन्त्र के जाप करने के पश्चात् रात्रिकाल चौथे पहर में, यक्ष, किन्नर या धन का रक्षक देव दर्शन देकर बात करेगा, उसके कथनानुसार आचरण करें तो धन अवश्य मिलेगा।

निधि-दर्शन काजल—

काले कौवे की जीभ व मांस को निकालकर आक की रूई से लपेटकर बत्ती बनावें, फिर बकरी के घी से दीपक जलाकर, उसका काजल, उपर्युक्त मन्त्र बोलते हुए तैयार करें, इस काजल को नेत्रों में लगावें तो जहां धन गड़ा होगा वह दीखने लगेगा।

व्यापार-वृद्धि का अमोघ मन्त्र—

श्री शुक्ले महाशुक्ले, कमल दल निवासे श्री महालक्ष्म्यै नमो नमः। लक्ष्मी-माई, सत्य की सवाई, आवो माई करो भलाई, न करो तो सात समुद्र की दुहाई, ऋद्धि-सिद्धि खावोगी तो नौ नाथ चौरासी की दुहाई।

दीपावली की रात्रि को एकांत में पवित्रतापूर्वक बैठकर दस हजार मन्त्र जपें। जिसकी रोजी कमजोर हो, वह व्यक्ति दूकान खोलते व बन्द करते वक्त इस मन्त्र के 108 जाप करें, तो निश्चित रूप से व्यापार बढ़ेगा, रोजी खुलेगी।

विवाद जीतने का मन्त्र—

नीली-नीली, महानीली (शत्रु /प्रतिपक्षी/जज का नाम) जीभि तालू सर्व खिली, सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा।

इस मन्त्र को सिद्ध करके, विवाद के समय 21 बार मन में बोलें, तो व्यक्ति विवाद/मुकदमा/शास्त्रार्थ जीत कर आवे।

दृष्टि बांधने का मन्त्र—

ॐ नमो काला भैरो, घुंघरा वाला हाथ खड्ग फूलों की माला, चौसठ योगिनी सङ्ग में चाला, देखो खोलि नजर का ताला, राजा-प्रजा ध्यावे तोहि, सबकी दृष्टि बांध दे मोहि, मैं पूजो तुमको नित ध्याय, राजा-प्रजा मेरे पाय लगाय, भरी अथाई सुमिरो तोय, मेरा किया सब-कुछ होय, देखूं भैरो तेरी शक्ति, शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

रविवार की रात्रि को श्मशान या भैरो के मन्दिर में जाकर 1008 जाप कर, मन्त्र को सिद्ध कर लें। प्रयोग के समय एक चुटकी भस्म 11 बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारें, तो सबकी दृष्टि बंध जाये। उस साधक का गुप्त कार्य किसी को न दिखलाई पड़ेगा। मदारी व बड़े-बड़े जादूगर लोग इसी मन्त्र का प्रयोग करते हैं।

(3) वशीकरण-मन्त्र—

जिन मन्त्रों के प्रयोग द्वारा प्राणीमात्र को वश में किया जाता हो, वे सभी वशीकरण-मन्त्र कहलाते हैं। इन मन्त्रों का प्रयोग शत्रु व मित्र दोनों पर किया जाता है, अपने वशीभूत करने की यह प्रक्रिया 'वश्य-कर्म' कहलाती है। वशीकरण की स्वामिनी

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

सरस्वती देवी हैं। इसका प्रयोग बसन्त ऋतु में प्रातःकाल से कुछ समय पश्चात् उत्तर दिशा की ओर बैठकर होता है। वशीकरण में लाल वस्त्र तथा मूंगा, हीरा, स्फटिक एवं नाना प्रकार के रत्नों की माला अनुकूल होती है। इसमें राई व लवण का हवन अनुकूल होता है। वशीकरण हेतु ताम्र-कलश, सप्तमी तिथि व शनिवार उपयुक्त रहता है। वशीकरण प्रयोग करने वाले साधक को हमेशा मीठी, मधुर, व विनम्र वाणी बोलनी चाहिए।

* तिलक-वशीकरण—

ॐ गुरुजी सिन्दुरजोगी में है मन्द प्याला, जिस कुल गाया, उसी को लागा, घरे सुख नहीं, बाहर सुख नहीं, फिर-फिर देख हमारा मुख, हमकूं छोड़ दूसरे कूं ध्यावे, तो काड कालजा वीर नृसिंह खावे तले धरती, ऊपर आकाश, चन्दा-सूरज दोनु साख, अजरी हुक मदीया फजरी, बन्द किया, चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा, वाचा चूके तो उबो सूके।

चलती नदी में नाभिपर्यन्त खड़ा रहकर, साढ़े बारह हजार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। धूप बत्तीसा लगाना, फिर सिन्दूर का तिलक लगाकर इच्छित औरत-पुरुष के पास जावे, तिलक की ओर देखते ही पुरुष स्त्री वशीभूत हो जाते हैं।

—स्व. वेदिया श्री दौलतराम दवे (दुन्दाड़ा)

पुरुष वशीकरण-मन्त्र—

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं श्रीपति में वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को 1008 बार जप कर, कपूर, चन्दन, तुलसी-पत्र को गौदुग्ध में घिसकर मस्तक पर तिलक लगावें, इच्छित व्यक्ति से मिलें। वह व्यक्ति तुरन्त वशीभूत हो जायेगा।

पति वशीकरण-मन्त्र—

ॐ नमो महायक्षिणी ममपति वश्य मानय कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र के 1008 जप करें, बृहस्पतिवार के दिन कदली का रस, सिन्दूर और योनि का रक्त मिलाकर, अभिमन्त्रित कर मस्तक पर लगावें, तो कैसा भी निष्ठुर पति हो, वशीभूत हो जाता है।

स्त्री को ससुराल भेजने का मन्त्र—

नमो क्षेत्रपाल मणिभद्राय, अडिआणपीड नवखण्डमध्ये कामणि लागे, अमुकडो (अभीष्ठ व्यक्ति का नाम) अमुकडी (अभीष्ट स्त्री का नाम) सुप्रेम बान्धिजे, बापवीर गोरिया तोरी शक्ति, अमुकडानो (पुरुष नाम) अमुकडी (स्त्री नाम) मुख देखे तो इज सुख होये, तेहने सुखे सुखं नारसिंहाय नमः।

चावल सवासेर इक्कट्ठा करके 108 बार मन्त्रना, उस पर पाव तेल डालें और तिलवट सवासेर मन्त्र कर स्त्री अपने पति को खिलावे, ताँबे की एक मूर्ति क्षेत्रपाल की बनावे, कणेर, तेल, सिंदूर से पूजा करे। ऐसा करने पर स्त्री ससुराल में प्रेमपूर्वक रहती है, पति प्रसन्न रहता है।

स्त्री-वशीकरण (सुपारी)—

ॐ नमो आदेश गुरु कूं, पीर में नाथ, प्रीत में माथ, जिसे खिलाऊं, वह मेरे साथ, शब्द साचा, पिण्ड कांचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

रवि या मंगलवार को एक सुपारी इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके निगल जायें और जब सुपारी मल-त्याग द्वारा, निकले, तब सात बार जल से, सात बार दूध से मन्त्र बोलते हुए स्वच्छ करें, धूप गुग्गल की धुनी देवें और अभिलक्षित स्त्री को सुपारी किसी प्रकार खिला दें, वह वश में रहेगी।

प्रेमिका (पत्नी) को वशीभूत करने का मन्त्र—

ॐ शिवे भगवे भगे-भगे भगं, क्षोभय-क्षोभय, मोहय-मोहय, छादय-छादय, क्लेदय-क्लेदय क्लीं शरीरे ॐ फट् स्वाहा।

यह मन्त्र एकान्त में जिस स्त्री की फोटो के सामने 108 बार पढ़ा जायेगा, वह युवती कामविह्वला होकर चरणों में दौड़ी चली आयेगी। यदि सात दिन तक सोते समय बराबर, प्रयोग किया जाये तो अभीष्ट स्त्री कामातुर होकर रात्रि में सेज पर आवेगी। ध्यान रहे, इस मन्त्र से गलत कार्य न करें वरना इसका परिणाम साधक पर बहुत बुरा होता है।

सर्व स्त्री-पुरुष वशीकरण—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपुरुष, सर्वस्त्री हृदयहारिणी, ममवश्यं कुरु वषट् ह्रीं श्रीं नमः नमः।

किसी भी महीने की शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से चतुर्दशी तक यह मन्त्र साधें,

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

उसके बाद किसी भी व्यक्ति के सामने जाकर इक्कीस बार मन्त्र पढ़ना, ऐसा करने से चारों दिशाओं में सभी उसके सेवक हो जाते हैं और उसकी आज्ञा वनराज सिंह की तरह चलती है।

अमृत-वशीकरण—

ॐ चण्डी महांचण्डी दुरिताप हारिणी, सर्वशत्रु विनाशिनी, खिलणी, मोहणी, स्तम्भिनी, उच्चाटिनी, त्रैलोक्य स्वामिनी, मायामोहं बन्धिनी, राजा प्रजा वशीकरणी, सर्वजन वशीकरणी, ऐं क्लीं ह्रीं ह्रौं स्वः ॐ फट् स्वाहा।

सुबह ब्रह्ममुहूर्त में अणबोल्या उठकर 21 बार मन्त्र पढ़ें, अमृत (अपने थूक) का तिलक करें। सुबह होते ही जिसको पहले देखें उसका वशीकरण हो जाये।

पान-वशीकरण—

ॐ नमो आदेश गुरु कूं, मेघवर्ण पान, शंखवर्ण चूना, रक्तवर्णखेर, बाटकवर्ण गोला, चारपे दशो ला दे, हाथ दे, तो छांगल पेटो दे, तो पांगल पेटीते होय, अब घर छोड़ दे, द्वारा छाड़ी, द्वार छाड़ी, बहिन भाई, सोनारा कामिनी पगे लाई अमुके (व्यक्ति का नाम) की ताताई, अमुकी (जिसके लिए बुलाना है) पास लाई, फुरो मन्त्र लूणिया चमार की आण, शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, मेरी शक्ति गुरु की भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—

सात बार चूना, सात बार कत्था, सात बार सुपारी, सात बार पान (कुल 28 बार) अभिमन्त्रित करके, जिसको खिलावें वह वशीभूत होवे। विपरीत लिंगी को पान खिलाते समय बोलें नहीं, पीठ फेर दें। विपरीत लिंगी अपने आप चलकर बोले तो, बात करें।

लौंग-वशीकरण—

ॐ नमो आदेश गुरु को, लौंगा-लौंगा मेरा भाई, इन लौंगों ने शक्ति चलाई, एक लौंग राती, एक लौंग माती, दूजे लौंग बतावे छाती, तीजा लौंग अंग मरोड़, चौथा लौंगा दोऊ कर जोड़, पांच लौंग जो मेरा खाये, मुझको छोड़ अन्य को न जाये, घर में सुख नाहीं वाहे, सुख फिरि-फिरि देखे मेरा मुख, जीवन भर चाटै

पगतली, मोहे सेवे सर्वस्व मान, मोहि छोड़े अन्त जाये तो गुरु गोरखनाथ की आन, शब्द सांचा पिण्ड कांचा, पुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

चतुर्दशी या अमावस्या के दिन पांच फूलदार लौंग हाथ पर रखकर, लोबान धूप जलाकर 108 बार पढ़कर, फूंकें और पांचों लौंगों को पीसकर जिसे खिला दें, वह हमेशा के लिए वश में हो जाये, यह परीक्षित है।

लूण-वशीकरण—

ॐ लूण-लूणी, गुरु मीठानो सागर, मानीजे राजलोक, झूपड़े, रावले कोठारी, अमुकानु (अभीष्ट व्यक्ति का नाम) दोष, अमुकानु (नाम) रोष तिम करे, जिम लूण पाणी गलै, तिम गल, जाओ। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

डली वाले लूण की इक्कीस डली पर 21 बार मन्त्र रविवार को जपें। अभीष्ट व्यक्ति को सब्जी या शिकंजी में लूण घोलकर खिला दें, उसका गुस्सा उतर जायेगा।

गुड़-वशीकरण—

ॐ नमो आदेश गुरु को यह गुड़ राती यह गुड़ माती, यह गुड़ लावे पाय पड़ाती। ज्यूं-ज्यूं गूड़ खिलावण पावे, मुआ मड़ा मसान जगावे। अरे काला पीर, पेडु उपन्ना जी, जिण दूयु तिण लाजो, न लजावो तो हनुमन्त वीर की आण, नारसिंह वीर की आण, गौरी पार्वती की चूडी चूके, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

गुड़ एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके, किसी प्रकार से उसमें खिलाना। खाने वाला व्यक्ति वशीभूत हो जायेगा।

पुष्प-वशीकरण—

ॐ नमो फूल सुगन्धा, फूल ही बांधूं, सात समुद्रा, अहो फूल झटीयारा, चौसठ जोगणी खरा प्यारा, ऐ फूल! ये दिन पाऊं, सूती सुवासणी सेजी बुलाऊं, मूआ मड़ा मसान जगाऊं, हाक करी उचाठ लाऊं, गलि हठ मेरे पगे लगाऊं, देखूं गोरा भैरव तेरी शक्ति, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

होली के दिन पहले होलिका को निमन्त्रण दें और होली के दिन जब होली जले उस स्थान पर सिन्दूर, लाल चन्दन व गुग्गल से 108 बार आहुति देने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् जब भी प्रयोग करना हो, एक बार पुष्प पर पढ़कर जिसको सुंघायेंगे, वह वशीभूत हो जायेगा। यह मन्त्र अनुभूत व प्रामाणिक है।

Shaikh Abdul Gafar Maghikhanda, Niali, odisha

पुष्प और काजल-वशीकरण—

ॐ नमो आदेश गुरु का, फूल-फूल फूलेश्वरी फूल लगले बंधावे। सेली एक फूल हंसे, एक फूल विकसे, एक फूल में कलवो वीर बसे, कलवो वीर कालका रो वीर, पर नारी सूं हमारा सीर, आवे तो बूटे, नहीं तो काला भैरू नारसिंह छूटे खाये, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, ठः ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र को 108 बार बोलकर एक चौका बनाना, उसमें इच्छित पुष्प की बत्ती बनाकर दीपक जलाना, उसका काजल बनाना तथा यह मन्त्र बोलकर काजल व पुष्प दोनों को मन्त्रना, स्त्री को पुष्प सुंघा देना, नहीं सूंघे तो दिखा देवें और पुष्प को उलटा रख दें, स्त्री के ओढ़ने व साड़ी के पल्ले पर काजल लगा देना, रात्रि को स्त्री दौड़ती हुई आती है और वशीभूत होकर आपकी आज्ञा का पालन करेगी। यह सही व सत्य है।

(4) मोहन-मन्त्र

यह वशीकरण का ही एक अलग प्रारूप है। इन मन्त्रों के प्रयोगों के द्वारा साधक अभीष्ट प्राणी को भ्रमित व मोहित कर देता है। मोहन-मन्त्रों द्वारा साधक अपना एक माया-जाल फैलाता है, जिससे व्यक्ति दिग्भ्रमित हो जाता है। पाश्चात्य देशों में इस प्रक्रिया को हिप्नोटिज्म व मेस्मरिज्म कहते हैं, जबकि भारतीय लोग इसे 'सम्मोहन-क्रिया' कहते हैं। चैत्र-वैशाख महीने, अष्टमी तिथि व गुरुवार इसके लिए अनुकूल समय है। मोहन-क्रिया में राई, लवण के अलावा धतूरे का प्रयोग भी होता है। इस कर्म के लिए वसन्त ऋतु व शुक्रवार श्रेष्ठ रहता है।

सर्वजन मोहन-मन्त्र—

**ॐ नमो भगवते कामदेवाय, यस्य-यस्य दृश्यो भवामि।
यश्च-यश्च मम मुखं पश्यति, तं-तं मोहयतु स्वाहा।**

इस मन्त्र को रविवार के दिन 1008 जाप करके सिद्ध कर लें, तुलसी के बीजों को सहदेई के रस में पीसकर उक्त मन्त्र को 21 बार पढ़कर, तिलक लगावें, तो सभी जन सम्मोहित हो जायेंगे।

मोहनी-चूर्ण (भूरकी)—

ॐ मोहिनी-मोहिनी कहां चली, हरखु दाई का मचली, फलाणी (अभीष्ट

स्त्री का नाम लें) के पास चली, औरों को देखे जले-बले मुझे देखे पांव पड़े, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, बेमाता की आज्ञा।

किसी भी कृष्णपक्ष को, रविवार के दिन, सन्ध्या समय, गुड़ 50 ग्राम जल के साथ पीवें, उस दिन उपवास रखें, रात्रि को दस बजे के पश्चात् किसी भी वृक्ष के नीचे बैठकर धूप-दीप करना, लौंग सात, इलायची बड़ी एक, पान एक, सुपारी एक, पेड़ा एक, स्नान करके, एक वस्त्र पहनकर, मूंगे की माला पर 1008 मन्त्र जपें, फिर भोग धरें, फिर पान व पेड़ा आप खावें। इलायची, सुपारी, लौंग का चूर्ण बनाकर, 21 बार मन्त्र पढ़ें, अभीष्ट स्त्री पर फेंक दें, मोहित हो जायेगी। यह प्रयोग सत्य है।

मोहनी-तिलक—

ॐ नमो तिलक ईश्वर, तिलक महेश्वर, तिलक जय-विजयकार, तिलक काढ़ी ने निसरू घर से, मोहु सकल संसार।

इस मन्त्र से गोरोचन, कपूर, कस्तूरी, केसर इन सभी वस्तुओं को अभिमन्त्रित करके तिलक करें, तो देखते-ही-देखते लोग मोहित होकर सेवक बन जायेंगे।

* सम्मोहित गणेश लड्डू—

ॐ नमो जगत गणेश कनककुमार, कामण-माला जड़ि सेवन्ते, छटसार, कर मोदक आहार, राज-मोह, प्रजा-मोह, सभा-मोह, नर-नारी मोह, पशु-पक्षी मोहे, जीव-जन्तु मोहे, कीट-पतंग मोह, नारी मोहिजे, श्री गणेश सरदार की दुहाई, गुरु की शक्ति, हमारी भक्ति, फुरौ मन्त्र ईश्वरो वाचा।

गणेश-चतुर्थी का व्रत करें, गणेशजी की मूर्ति बनावें, लड्डू एक-एक करके मन्त्र बोलते हुए, इक्कीस चढ़ावें, ये लड्डू जिन-जिन को खिलावें, वे सभी मोहित (मदहोश) हो जायेंगे।

(5) आकर्षण-मन्त्र—

यह भी वशीकरण का ही एक अलग प्रारूप है। अपनी ओर बलात् किसी को आकृष्ट करने का नाम ही आकर्षण है। दूर स्थित या समीपस्थ मनुष्य या किसी अन्य प्राणी को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए इन मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींचता है उसी प्रकार इन मन्त्रों से आकर्षित होकर अभीष्ट प्राणी साधक के समीप आ जाता है। आकाशस्थ मेघों में आकर्षण-मन्त्रों द्वारा ही जल बरसाया जाता है। आकर्षण हेतु बाघम्बर एवं सुगंधित द्रव्यों का प्रयोग करना चाहिए।

Shaikh Abdul Gafar,Manikhanda,,Niali,odisha

स्त्री आकर्षण-मन्त्र—

ॐ नमो देव आदिरूपाय अमुकस्य आकर्षणं कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र के 1008 जाप करके, अपनी अनामिका अंगुली के रक्त से भोजपत्र पर मन्त्र लिख, जिसको आकर्षित करना हो, उसका नाम लिखें और भोजपत्र शहद में डुबा दें, तो वह कामिनी अवश्य आपकी ओर आकर्षित होगी।

जल-आकर्षण—

ॐ नमो त्रिजट लम्बोदर वद-वद अमुकी आकर्षय-आकर्षय स्वाहा।

इस मन्त्र को 108 बार पढ़कर, जल मन्त्रित कर, सिर के पास रख दें। मध्य रात्रि को उठकर पीयें। सात दिन तक ऐसा प्रयोग करने पर लड़की चल कर आपके पास आकर बात करेगी।

खोये हुए व्यक्ति की वापसी के लिए आकर्षण-मन्त्र—

ॐ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम, राजा बाहु सहस्त्रवान् यस्य स्मरण मात्रेण, गतं नष्टं च लभ्यते, क्लीं ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः, अमुकं शीघ्रमानयानय स्वाहा।

जब किसी व्यक्ति का कोई प्रियजन रूठकर या अनायास कहीं चला गया हो तथा उसका पता न चलता हो तो, उपर्युक्त मन्त्र को उसके पहने हुए वस्त्र पर नाम लिखकर चरखे की माला के साथ लपेटकर उलटा घुमाओ। उस व्यक्ति का कोई प्रियजन या सम्बन्धी उस चरखे को प्रतिदिन एक-आधा घण्टा नियमित घुमावे, ऐसा करने पर एक सप्ताह के भीतर-भीतर व्यक्ति घर आ जायेगा। यदि यह मन्त्र जातक के बिना धुले हुए कपड़े के बीच रखकर घट्टी में दबा दिया जाये, तो सौ कोस की दूरी से व्यक्ति तीन पखवाड़े के भीतर-भीतर घर आ जाता है, फिर वस्त्र हटा दें। यह अनुभूत है।

शीघ्र आकर्षण हेतु अग्नि-प्रयोग—

इस मन्त्र को काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिलाकर भोजपत्र पर सफेद कणेर की कलम से लिखें, पूरे नाम सहित लिखें और उस भोजपत्र को खैर की लकड़ी की आग पर तपायें तो, एक हजार किलोमीटर दूर बैठे हुए व्यक्ति को भी फौरन घर की याद आयेगी। इस मन्त्र को नित्य सुबह-शाम सात दिन तक तपाने से अथवा चूल्हे के नीचे राख में दबाने से वह व्यक्ति आकृष्ट होकर जब तक घर नहीं आयेगा, तब तक उसे चैन नहीं मिलेगा। ध्यान रहे, मन्त्र जलने न पावे।

घर से रूठकर गये पुरुष व पशु को बुलाने का मंत्र—

ॐ नमो आली कालिका, काकुड़ी का, अमुखा/अमुखी आकर्षय-आकर्षय, बड़े वेग आकर्षय, जिण वाटै जाई सोई वाट खीलू ॐ श्रीं ह्रीं आकर्षय-आकर्षय स्वाहा।

बताशे या शक्कर से इस मन्त्र की दस हजार आहुति देने पर अभीष्ट पुरुष या पशु आकर्षित होकर यदि जीवित है तो घर को लौट आता है।

(6) स्तम्भन-मन्त्र—

जिस मन्त्र-बल से साधक किसी व्यक्ति, पशु, पक्षी या गतिमान वस्तु अथवा मन्त्र-शक्ति को कीलित व स्तम्भित कर देता है, वह प्रक्रिया 'स्तम्भन-कर्म' कहलाती है। स्तम्भन-प्रयोग से साधक वस्तु की स्वाभाविक प्रकृति का अवरोध कर देता है, जिससे उसकी चंचलता व क्रियमाण शक्ति जड़ तथा निष्क्रिय हो जाती है। इस कर्म की स्वामिनी श्रीलक्ष्मीदेवी हैं। स्तम्भन हेतु अनुकूल ऋतु शिशिर, दिशा पूर्व, समय सांयकाल व रंग पीला रहता है। स्तम्भन में पीली या रुद्राक्ष की माला ग्राह्य है।

शत्रु-मुख स्तम्भन—

ॐ श्री आदिपुराण पुरुष, एक अलख, एक ही समर्थ, एक ही धणी, एक ही आधार, एक गोसाईं, एक ताहरी रक्षा, एक परमेश्वर, एक नु जय हो, परमेश्वर (अमुक) शत्रु-मुख स्तम्भि-स्तम्भि, दुश्मन ने पय मार घाली-घाली, वैरी ने संहारी-संहारी, बाबाजी परमेश्वर नु नाम सत्य।

यह मन्त्र पत्र पर लिखकर बीच में शत्रु का नाम लिखे, फिर मेण की गोली बनावे। ज्वार के दाने उसके ऊपर तीन डाले, शत्रु के घर के द्वार के बाहर जमीन खोदकर चबूतरी के पास गाड़ दे या शत्रु के मकान के पीछे गाड़ दे। शत्रु का अनर्गल बोलना बन्द हो जायेगा व मुख स्तम्भित हो जायेगा।

स्त्री की कोख-बन्धन—

ॐ नमो नील-नील महानील, दिष्ट देख कोख खील, फल मरे, फल सूखे, पत्थर काटि रेख, इन पेड़ रे फल-फूल होवे तो हनुमन्त की दुहाई, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

Shaikh Abdul Gafar,Mathikhanda,,Niali,odisha

रविवार को रूई की पूणी ढाई, क्वांरी कन्या के पास से कतावे, सातवड़ा डोरा करे। नील की कोख में सात बार झंकोलकर इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर, नौ गांठ

मारे, इसके बाद काले कपड़े मे डालकर सूत धरती में गाड़ दे, इच्छित स्त्री की कोख बन्द हो जायेगी। यह प्रयोग सही व सत्य है।

गर्भ स्तम्भन-मन्त्र—

ॐ नारसिंह वीर, एक पुत्र माड, मर्द गर्भ जातो रहे, एक मासियों, दो मासियों, तीन मासियों, चौमासियों, पंचमासियों, छठमासियों, सतमासियों, अठमासियों, नवमासियों, दसमासियों, मान मर्द तेरी शक्ति फुरे।

जिन स्त्रियों के बच्चे अधूरे गिर जाते हों, बीमारी लाइलाज हो चुकी हो, उनके लिए यह अमोघ प्रयोग है। मौली या कच्चा सूत लेकर जच्चा के शरीर प्रमाण से सात बार नापकर सतेवड़ा करना, उसके पश्चात् देव-कोप, देव-डोकरी, 14 बंट देकर डोरा बनाना, उसमें मन्त्र बोलकर नौ गांठ देनी, उसके बाद 108 मन्त्रों से डोरे को मन्त्रकर जच्चा की कमर में बांधे। गर्भ स्तम्भित हो जायेगा, गिरेगा नहीं।

भूत-प्रेत, पिशाच, खवीस, नजर, टोकार, कीलन का अमोघ-मंत्र—

ॐ नमो आदेश गुरु कुं, श्वेत घोड़ो, श्वेत पलाण, तिणी चढ़ी चाले मोहम्मद खान, घर-घर जाते चाल्या महेम्दा पीर, नव से पाखर लार, चीर बांधु, नीर बांधु जुगाड़ बांधु, छल बांधु, छिद्र बांधु, भूत बांधु, प्रेत बांधु, दुष्ट बांधु, मूंठ बांधु, रक्तियो, कडूयियो मसान बांधु, चौंसठ जोगिनी बांधु, बावन क्षेत्रपाल बांधु, लख चौरासी छलाकी बांधु, उड़न्त बांधु, गुड़न्त बांधु, सेजयो बांधु, भेजीयो बांधु, अयिना को वहिना को बांधु, चौदीशे मशान बांधु, वाट को वटाउकों बांधु, घाट को बांधु, हाट पटड़ को बांधु, कुआ को, पोखर को बांधु, नदी-नाला को बांधु, ऊंवार को पार को बांधु, कीट धड़ को बांधु, ताल को बांधु, तलिया को बांधु, रूख को बांधु, वृक्ष को बांधु, रोड़ी को बांधु, राख को बांधु, आवतो-जावतो वाटको बांधु, बाकि खुदा रसूल्ला की आन, तीस रोजा की आन, नव नाथ चौरासी सिद्ध की आन, एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर की आन, ख्वाजा मोहम्मद की आन, हनुमन्त जति की आन, दुहाई, सुलेमान पैगम्बर की आन, इह कात नम नमें किम छे, वेग मन्त्र का तिवा लग, लग ते काट शिरी, शिरी ते काटी नाड़ी, नाड़ी ते काट कलेजा, कलेजा ते काटी, रूका-रूका ते काटी तेली, तेली ते काट बाल, बाल ते काटी छपड़ी, बते काटी तवड़ी, ते काटी हाड़, हाड़ ते काटी हिया, हिया ते काट मांस, मांस ते काटी चाम, चाम ते काट वेग, मन्त्र न काटे तो श्री महादेव पार्वती बीबी जले खांम वे जपा उंदे वेगी, मन्त्र न कांटे तो सुलेमान पैगम्बर की लाख कौड़ी दुहाई, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

21 दिन तक रोज एक माला का जाप कर मन्त्र सिद्ध कर लें, फिर ग्रस्त

व्यक्ति के ऊपर सात बार मन्त्र पढ़कर, सात बार ही फूंक मारें और उसकी शिखा के गांठ दे दें तो, तुरन्त प्रेत बंध जायेगा, फिर उसको पूछताछ करके, जाने को कहें और बालों की गांठ खोल दें तो, तुरन्त प्रेतात्मा निकल जायेगी और फिर कभी नहीं आयेगी। इसका झाड़ा देने पर ऊपर लिखे अन्य सभी दोष समाप्त हो जाते हैं। झाड़ा देते समय गुग्गल धूप की धूनी देनी चाहिए। यह मन्त्र अन्य सभी मन्त्रों के न काम करने की हालत में, विशेष रूप से कार्य करता है, इसलिए अमोघ-मन्त्र कहलाता है।

सर्प-कीलन—

''ॐ नमो आदेश गुरु कूं, ॐ नमो गंगा-जमना थी आडु वेलु खीलू, होठ-कण्ठ तालु खीलू, माय-बाप जाण के आयो, खीलू बहिन भाणजी, जिणय के यऊ खोलायो, खीलू वाट घाट जिण सु आयो, खीलू धरती आकाश मेरे, सर्व जो लेवे सांस, ॐ आस्तिकाय नमः।''

यह मन्त्र सात बार लिखकर गोली बनाकर सांप के ऊपर फेंकें, सर्प कीलन हो जाएगा, कहीं चल नहीं पायेगा, न काट पायेगा।

मसाण जगाने व कीलने का मन्त्र—

ॐ नमो आठ खाट की लाकड़ी मूंज बनीका कावा।
मुवा मुर्दा बोले नहीं तो महावीर की आण॥

मदिरा एक बोतल, चमेली के फूल, लोबान की धूप, छाछछड़ीलौ, लौंग, कपूरकचरी, अन्तर का फोआ, चौमुखा चून का दीपक, इतनी सभी वस्तुएं लेकर श्मशान में जायें, धूप देवें तो मसाण में मसाण मर्द को देखे, मसाण जागै हाहाकार होय।

ॐ मसाण के मसाण बांधो, चुड़ैल के चुड़ैल बांधो, भूत के भूत बांधो, दोहाई हिंगलाज की, दोहाई गोरखनाथ की, दोहाई हनुमान यति की, दोहाई सैय्यद पीर की।

गंगाजल हाथ में लेकर इस मन्त्र से छींटा देने पर, मसाण की सारी हरकतें कीलित होकर बन्द हो जाती हैं।

(7) विद्वेषण-मन्त्र—

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

जिन मन्त्रों के प्रयोग से साधक अभीष्ट प्राणी को उसके मित्र, देश, ग्राम या प्रिय वस्तु से घृणा व द्वेष उत्पन्न करा देता है, वे 'विद्वेषण-मन्त्र' कहलाते हैं। विद्वेषण-

प्रयोग अधिकतर दो प्राणियों के बीच होता है, जिसके कारण दोनों प्राणियों में आपसी राग-द्वेष, ईर्ष्या व घृणा के भाव उत्पन्न होकर शत्रुता हो जाती है तथा उस घर में कलह बना रहता है एवं आवक रुक जाती है। विद्वेषण-कर्म की देवी श्रीज्येष्ठा है तथा इसका वासा नैऋत्य दिशा में है। ग्रीष्म ऋतु, मध्याह्नकाल, मंगलवार विद्वेषण के लिए उपयुक्त रहता है। इसके लिए सर्प की हड्डी की माला अथवा मनुष्य के बाल में पिरोकर घोड़े के दांत की माला उत्तम रहती है तथा घोड़े के चर्म के आसन पर बैठना चाहिए।

दो मित्रों के बीच में घृणा पैदा करना—

ॐ नमो नारायणाय (अमुकस्यामुकेन) सह विद्वेष कुरु-कुरु-स्वाहा।

सर्प की हड्डी की माला से नैऋत्य दिशा की ओर मुंह करके इक्कीस दिन तक रोज एक माला का जाप करे। अमुक की जगह पर दोनों का नाम बोले तो घनिष्ठ सम्बन्ध भी शत्रुता में बदल जायेंगे।

शीघ्र विद्वेषण-मन्त्र—

ॐ नमो भगवती श्मशान कालिके (अमुकस्यामुकेन) विद्वेषय-विद्वेषय हन-हन, पच-पच, मथ-मथ, ॐ फट् स्वाहा।

हवन-कुण्ड को श्मशान की आग से प्रज्वलित करें, खेजड़ी व खैर की लकड़ी काम में लें तथा नीम के पत्ते व कडुआ तेल, तिल, जौ, चावल सबको मिश्रित करके दस हजार आहुति दें। हवन शनि या मंगलवार को करें, दूसरे दिन ही अभीष्ट व्यक्ति का विद्वेषण हो जायेगा।

(8) उच्चाटन-मन्त्र—

जिन मन्त्रों के प्रयोग द्वारा प्राणीमात्र विभ्रमित, विक्षिप्त व अकारण पागल जैसा हो जाता है वह 'उच्चाटन-कर्म' कहलाता है। मन्त्र-बल के द्वारा अभीष्ट व्यक्ति में स्वयं के प्रति अविश्वास, भय भ्रान्ति व अशान्ति की धारणा उत्पन्न कर दी जाती है। उच्चाटन कर्म की स्वामिनी श्री दुर्गादेवी हैं। इस कर्म के लिए वर्षा ऋतु तथा दिन का चौथा प्रहर श्रेष्ठ रहता है। इसका वास वायव्य कोण में है तथा इसके प्रयोगकाल में धूम्रवर्ण के वस्त्र पहनने चाहिए, उच्चाटन में ऊँट या भैंसे के चर्म का आसन प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए मिट्टी का कलश, कौओं के पंख का हवन निर्दिष्ट है। किसी उद्दण्ड मनुष्य ने किसी की स्त्री, पुत्र, धन, गृह तथा धरती आदि छीन ली हो तथा शारीरिक शक्ति से उसका निराकरण सम्भव न हो तब ही उच्चाटन मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए।

शत्रु के गले में गाँठ उत्पन्न करना—

ॐ नमो गुरु गुबडीया क्षेत्रपाल हाड़ गुरु, वाटला काका, धियणी आला काड़ी, राती काड़ी, दन्ता जु काड़ी, काल मुहां काड़ी, हक कुत्ते नु काड़ी नहीं काड़े तो अपनी माता रे माथे पग धरने भोजन करे, साख गुरु गुबड़ी, आंकू क्षेत्रपाल थारी शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को 21 अथवा 108 बार जपना, उड़द 14, कपासिया 9, कणेर के पुष्प 108, नीम के पत्ते 14 इकट्ठे करके मेण का पुतला बनावें, पुतले की कुल लम्बाई 21 अंगुल होनी चाहिए, पुतले पर शत्रु का नाम लिखें और उसके हृदय पर कील गाड़ें। शत्रु के बाएं चरण की धूल लेकर पुतले की बांहों पर डालें। पुतले के तन में धूल डालकर फिर रविवार से लेकर सात दिन तक इस मन्त्र का प्रयोग करते हुए 21 कीलों से पुतले की 20 उंगलियां और एक हृदय में कील दें। सातवें दिन शत्रु के गले में गाँठ होगी और कितना भी उपाय व दवा-दारू करने पर भी ठीक न होगी।

बलवान शत्रु को पैरों में गिराने का मन्त्र—

ॐ नमो कुड़न्त डफडलडुं, एकला मैं वीर हनुमन्त का चेला, पकड़-पकड़ पछाड़ूं, मस्तक फोडूं, सवा मण की जंजीर जड़ाऊँ (अमुक) आन मेरे पगे पड़े न आन पड़े तो माता अंजनी का दूध हराम करे, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र की ताकत से शक्तिशाली शत्रु भी पैरों में आकर गिरता है।

शत्रु-उच्चाटन—

ॐ नमो क्षेत्रपाल विकराला मम शत्रु उच्चाटय-उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

यह मन्त्र 108 बार बोलकर चावल मन्त्रितकर शत्रु के घर के बीच में फेंक दे। फेंकने के साथ ही शत्रु के घर के सभी लोगों का उच्चाटन हो जाएगा। यह सत्य सिद्ध मन्त्र है।

* शत्रु-परिवार का उच्चाटन—

ॐ नमो भगवते रुद्राय दण्ड करालाय अमुकं सपुत्र बान्धवैः सह हन-हन, दह-दह, पच-पच, शीघ्रं उच्चाटय-उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Nlali,odisha

नीमपत्र पर शत्रु का नाम लिखकर दस हजार मन्त्रों की आहुति दें। शत्रु के सम्पूर्ण परिवार में उच्चाटन हो जायेगा।

(9) मारण-मन्त्र—

जिस प्रयोग के द्वारा जीवमात्र की मृत्यु हो जाती है, उसको 'मारण-कर्म' कहते हैं। मारण मन्त्रों की स्वामिनी श्री भद्रकाली देवी हैं। इसका वास अग्निकोण में है तथा शरद् ऋतु और कृष्ण पक्ष की मध्यरात्रि में इसका प्रयोग अभीष्ट फल को देने वाला होता है। काले रंग या गहरे नीले रंग के वस्त्र, भैंस के चर्म का आसन, मिट्टी के पात्र, उल्लू का पंख, विषमिश्रित रुधिर से हवन तथा गदहे के दांत की माला से किया गया जप, मारण मन्त्रों में शीघ्र फलदायी होता है। रविवार, पंचमी, एकादशी, द्वादशी, पूर्णिमा और अमावस्या इसके लिए अभीष्ट सिद्धि देने वाले अनुकूल दिवस माने गये हैं। मारण-प्रयोग किसी पर वृथा नहीं करना चाहिए। यह प्रयोग तब करना चाहिए जब प्रजा के भारी अनिष्ट होने की सम्भावना हो तथा स्वयं के प्राणों पर बन आई हो, तभी इसका प्रयोग रक्षा के निमित्त करना चाहिए।

मा र ण प्र यो ग

ध्यान—शवारूढाम्महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्,
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्।
मुण्डमालाधरान्देवी लालजिह्वान्दिगम्बराम्,
एवं सच्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीम्॥

वह महाकाली मुर्दे पर सवार है। उनकी शरीराकृति शिवजी के समान भस्म, बाघम्बर व सर्पयुक्त होने से महाभयंकर व डरावनी है। ऐसी विकराल रूप वाली महामाया (शत्रुओं के प्रति उपेक्षापूर्ण भाव से) हँस रही हैं तथा ऐसा करने पर उनकी तीक्ष्ण दाढ़ें स्पष्ट दिखलाई पड़ रही हैं। उनके चार हाथ हैं। एक हाथ में रक्तरंजित खड्ग है, दूसरे में नर-कपाल, एक में अभयमुद्रा है, दूसरे में वर है। गले में मुण्डमाल है, दिशाएं ही उनका अम्बर हैं तथा लपलपाती हुई जिह्वा बाहर निकली हुई है। श्मशान ही जिनका निवास स्थान है, ऐसी महाकाली का मैं भक्तिपूर्वक ध्यान करता हूं।

शत्रु-नाश—

ॐ नमो मातेश्वरी भगवती अमुकस्य हन-हन स्वाहा।

इस मन्त्र के इक्कीस हजार जप करें तथा दशांश की आहुति सरसों के तेल में कणेर के पुष्प मिलाकर दें तो शत्रु निश्चय मृत्यु को प्राप्त होता है।

वैरी-नाश—

ॐ नमो काल भैरू, कंवली जटा, रात-दिन खेले जुवटा, हाथे भाखर, कांधे मड़ा, यूं देखूं ज्यूं भैरव खड़ा, मारो वैरी थारो, भख काटी मुंडी, कलेजा काड़, पकड़ी, पछाड़ी, काडी करी डाल (अमुका) को मारी-मारी, भैरव भूपाल न मारे तो सगी बहिन भांणजी के सेजा चढ़े, कुकर्म करे तो पाप तेरे सिर चढ़े, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

21 माला का जप, 45 अरेठा की माला पर दिन में दो बार करना, तीन दिन में काम सिद्ध होवे।

खूनी मूंठ चलाने का मन्त्र—

ॐ नमो काला भैरो, मसान वाला, चौसठ योगिनी करे तमासा, रक्त बाण चलि रे भैरो, कचिया मसान, मैं कहूँ तोसों समझाय, सवा पहर में धुनी दिखाय, मूवा मुर्दा मरघट बास, माता छोड़े पुत्र की आस, जलती लकड़ी धुके मसान, भैरो मेरा वैरी तेरा खान, सेली सिंगी रुद्रबाण, मेरे वैरी को नहीं मारो तो राजा रामचन्द्र लक्ष्मण की आण।

किसी मुर्दे को मसाण में देखकर, उसकी हांडी लेकर मसाण की अग्नि में लाल करें, फिर उतार कर उसमें मुट्ठी भर उड़द डालें, जो [illegible] उन्हें अलग करें और जो फूल जाये उन्हें अलग कर लें। जले हुए उड़द को 21 बार मन्त्र करके सुबह बासी मुंह जिसको मारें, वह व्यक्ति खून की उलटी करके तड़पने लगेगा।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

जल-मूंठ का मन्त्र व प्रयोग—

भरणी भरेः मारे झरे, एक नर मरेः शस्त्र नर मरे, वीर बजरंग के आगे धरे, आल्हरगुहामेधर, पानखरा चूना मुआ, मसाण, खनेमायतेः खनेवापते खनेवालीहोतः तन्दीठः एमारीतरफ पीठः शव, शव, शव ध्यान में दीनीः (अमुकाः) जलदपानः एक मूंठ मैं मारो तोहीः उलटी कैंची तब वशिमोहीः कछसो मछ मछसो पच खं खं खं।

प्रयोग—रविवार के दिन एक क्वांरी कन्या की पंचोपचार पूजा करें, गुड़ नैवेद्य खाने को देवें, इसके अलावा उसको कुछ न खिलावें। जब कन्या गुड़ खाने लगे, तब उपर्युक्त मन्त्र 108 बार जपें, ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् रवि या मंगलवार के दिन छोटे-छोटे नागरवेल के सात पान टुंचका सहित लेवें। बीच के पान में जिस व्यक्ति पर मूंठ चलानी हो, उसका नाम लिखें, नदी में स्नान करने को जावें, तब एक बड़ी कैंची तेज धार वाली साथ ले जायें। नाभिपर्यन्त जल में खड़े होकर इक्कीस बार यह मन्त्र जपें, फिर पीछे की ओर गोता मारकर जल के भीतर ही भीतर सातों पान दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बीचोबीच में से काट डालें। काटन मूल (टुंचके) के ओर से प्रारम्भ करें व नोक पर्यन्त स्पष्ट काटें। कुछ भी काटने में बाकी न रह पावे, नहीं तो साधक के कार्य में विघ्न समझें। विघ्न आने पर 1008 गायत्रीमन्त्र का जप करें, तो विघ्न शान्त होय। जिसका नाम पान में लिखकर काटेंगे, उसका प्राणनाश हो जायेगा। पान काटने के पूर्व पान पर नाम लिखकर प्राणप्रतिष्ठा के मन्त्र पढ़ने चाहिए। यह प्रयोग सत्य है, इसमें सन्देह नहीं।

—स्व. वकील श्री प्रतापचन्द दवे (बालोत्तरा)

मूंठ काटने का संजीवन मन्त्र—

ॐ नमो संजीवन, जीवन चढण, जिन गुरु आपी, तिण चरी-चरी।

इस मन्त्र से फूंक करके पानी पिला दे, तो एक बार मरता हुआ व्यक्ति भी बोले परन्तु इसके पहले पृ. सं. 130 पर दिया गया कीलन मन्त्र जरूर पढ़ लें तथा अपने शरीर की रक्षा अवश्य कर लें। यदि अग्नि मूंठ जो कि सबसे खतरनाक होती है, जलती हुई हंडिया में आती दिखाई दे तो अपनी अनामिका अंगुली के रक्त का छींटा देकर आत्मरक्षा-मन्त्र पढ़ लें। हंडिया मूंठ वहीं शांत होकर गिर जायेगी।

कुछ चमत्कारी मुस्लिम-मन्त्र

*अल्लोपनिषद्—

हरिः ॐ॥ अस्मल्लाइल्ले मित्रावरुणादिव्या दिव्याणि धत्ते। इल्ले वरुणो राजा पुनर्ददुः हवामि मित्रे इल्लां इलल्ले इल्लां वरुणो मित्रो तेजकामाः होतारमिंद्रो महा सुरेन्द्रः अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्णं ब्रह्माणं अल्लां अदल्लामुकमेककं अल्लां मुकनिषातकं अल्लो यज्ञेनहुत हुत्वः अल्लसूर्य चन्द्र सर्वनक्षत्राः अल्लो ऋषिणां सर्व दिव्या, इन्द्राय पूर्वमपा परम अन्तरिक्षं विश्वरूपं दिव्याणि धत्ते इल्ललेवरुणो राजा पुनर्ददुः इल्लां कबरइल्लां इल्लेति इलल्लाः। अल्ला इलल्ला अनादि स्वरूपाय अथर्वणीशाखां ह्रं ह्रीं जनान् पशुत् सिंहान् जलचरान् अदृष्टं कुरु-कुरु फट्, असुर संहारणीं हीं अल्लो रसूल मोहम्मदकवरस्य अल्लो अल्लां इल्लं लेति इल्लल्लाः। इति अल्लां॰ सूक्त अथर्वणी समाप्तं। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

पांच सौ वर्ष पुरानी एक जीर्ण-शीर्ण पाण्डुलिपि के अनुसार यह असुर संहारणी विद्या है। इसके नित्य पाठ करने से व्यक्ति अतुल पराक्रम को प्राप्त करता है। जिसके शरीर में शक्तिशाली मुस्लिम रूह (जिह्, खवीस, पीर, फकीर) ने प्रवेश कर लिया हो तो, इस अल्लोपनिषद् को सुनाते ही वह प्रसन्न हो जाता है तथा उसके शरीर को छोड़ देता है। एकांत जंगल में हिंसक जानवर शेर इत्यादि यदि दिखलाई दे जाए, तो इसके पाठ करने पर वह नजरों से ओझल हो जाते हैं। अनजाने तालाब या समुद्र में मगरमच्छ या अन्य हिंसक जलचर को देखने पर, इसके पाठ करने पर वह जलचर भी तत्काल भाग जाता है। इसके पाठ को सुनने से राक्षसों, पिशाचों व हिंसक पशुओं की आसुरी शक्ति नष्ट हो जाती है।

---

*1. पाणिनीय सूत्र में अम्ब, अक्क, अल्लयो ईरचः के अनुसार अम्बा, अक्का और अल्ला माता शब्द के पर्याय हैं। एक अन्य विद्वान् के अनुसार 'आह्लाद ददाति यः स अल्लाः' जो आह्लाद, प्रसन्नता व खुशियों को प्रदान करता है, वह अल्ला है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

पीर-पैगम्बर बुलाने का मन्त्र—

ॐ बिसमिल्ला हिर्रहमाने रहीम या जिब्राईल या तत काफीलया, अब्राईल या मेखाईल बहक या बन्धु हयन-हयन, ईस्मन-ईस्मन, बहक लाइल्लाहो इल्ला हो, मोहम्मद रसूलल्लाहो खतुमां सलेमान बिंदाउद अले सलाम हजरकाब्द, हजरकाब्द, हजरकाब्द।

इस मन्त्र को नित्य सोते समय १०८ बार जपें, धूप लोबान का करें, चालीस दिन लगातार करते ही पैगाम्बर, पीर व अच्छी रूह श्वेत पोशाक में हाजिर होगी, हाजिर होते ही घबरायें नहीं, मनइच्छा वरदान (मुराद) मांग लें। न मांगने पर रूह फटकार देगी जिससे अनिष्ट भी हो सकता है।

घर की रक्षा का चमत्कारी मन्त्र—

या अल्लाह पाक, इस आंगन को मैं आज करता हूँ बन्द, हजरत सुलेमानी की बरकत से बन्द, हजरत मूसा की आज्ञा से बन्द, हजरत अली की शमशेर से बन्द, हजरत अहमद के कलाम से बन्द, या रहमान की रहमत से बन्द, या करीम की करम से बन्द, या खालिक की बरकत से बन्द, या मालिक की रहमत से बन्द, या अल्लाह पाक मालिक रब्बुल गफूर, हमारे इस दोआ को तू करले कबूल, बहक्के हक ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदुरसूल्लाह॥

सोने के वक्त वजू (हाथ-मुंह धोकर) करके पानी के साथ पांच बार पढ़कर ताली मारकर सो रहें, उसका सिमाना (आवाज) जहां तक होगा मकान रक्षित रहेगा।

देह-रक्षा मुस्लिम-मन्त्र—

दोआ आयतल कुर्सी बन्दन कोरान, बाहिरे-भीतरे सुब्हान, लोहे की कोठरी, ताम्बे का किवाड़, सामने की छड़ी पैगाम्बेरर बाड़ी, अमुकेर शरीर र दिनेर चारि पहर, रातिर चारि पहर किंछू नहिं देखी खाली, बहके हक लाएलाहा इल्लल्लाह महम्मदुर रसूलल्लाह।

इस मन्त्र के पढ़ने के बाद बदजात रूहें शरीर पर हावी नहीं होतीं तथा इनसान की रक्षा होती है।

सुखपूर्वक प्रसव कराने का मन्त्र—

ॐ गफुरूर्रहीम अल्लाह गफुरूर्रहीम, रहम करिये अल्लाह मालेकुम करीम।

तालाब या कुएं से एक हाथ से खींचकर पानी निकालें व मन्त्र पढ़कर गर्भिणी को पिलावें, तत्काल कष्टी कष्ट से छूट जायेगी।

* पान वशीकरण मन्त्र—

ॐ श्री रामनागरबेली अकनकबीरी, सुनिये नारी बात हमारी, एक पान रंग मंगाय, एक पान से जसो लावै, एक पान मुख बुलावै, हमको छोड़ि और को देखे, तो तेरा कलेजा मोहम्मदा पीर छक्खै।

तीन नागरवेल के पान, इक्कीस बार मन्त्र बोलकर स्त्री को खिलावें, तो वह वशीभूत हो जायेगी।

मित्र वशीकरण मन्त्र—

शाल चक्कर, हीरा मक्कर, मक्के खबर अल्ला हो अकबर, इलाही इजुहील, मेरा दुरस्त मिल, फातमा का हुक्म दोस्त के माफिक, तू करना मालूम।

यह मन्त्र एक बार मन में पढ़कर सलाम करें। अगला व्यक्ति आपसे जानी दोस्त के माफिक बात करेगा।

वशीकरण मन्त्र—

दिल कबूतर हो रहा, घेरा पड़ा यासीन का, मुश्किल हमारी टाल दे सदका मोईनुद्दीन का।

जिसको वश में करना हो, उसकी तरफ या उसके घर की तरफ पढ़कर फूंकें।

मदारी का खेल बाँधना—

सारी बांधो, कुसारी बांधो, सभी बांधो, सबूरा बांधो, काला बांधो, दीन बांधो, ताई बांधो, कामख्या बांधो, महान बांधो, देव बांधो, ताल बांधो, पानी बांधो, आग बांधो, वैरया बांधो, जल बांधो, फिराउन बांधो, पूंगी बांधो, मसूरा बांधो, कन बांधो, कवी बांधो, अटका बांधो, गैला बांधो, वैला बांधो, गुलाब के फूल बांधो, दोहाई काला पहाड़ की, बांधो काली माई, दोहाई चूरा पीर की, बचाना चूरा पीर।

इस मन्त्र को पढ़कर सरसों या उड़द पढ़कर मदारी को मारें, तो उसे तरह-तरह की विपदा होने लगेगी। पांच-छः बार लगातार पढ़ने पर पूंगी बन्द हो जायेगी, पर इसके पहले अपनी आत्मरक्षा कर लेनी चाहिये। इन्हीं मन्त्रों से तेल पढ़कर,

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

फूंककर यदि उस तेल से पकवान बनाया जाये, तो बहुत कम तेल या घी जलेगा। परन्तु मन्त्र पढ़ने वाला तेल पढ़कर अपने हाथ से पकवान छानकर चूल्हे पर रख दे, जो पीछे फकीर या कुत्ते को खिला दे।

घर में लगी हुई आग कम करने का मन्त्र—

रहमकुन अए इलाही पाक बारी, इस घर के ऊपर अपने फजल से कर तू रहमत-जारी। जैसी रहमत की थी तू ने खलील पर, वैसी रहमत कर तू ऐ पखरदिगार। बहके हकला एलाहा इल्लल्लाहा मुहम्मदुर रसूललाह।

विधि—

थोड़ी मिट्टी पर यह मन्त्र 21 बार पढ़कर घर पर छिड़कें।

* घर बांधना—

घर बान्धम दोर मान्धम उटन बन्धन आर। बन्धन करीनू आमी नामे ते अल्लार। जिब्राईल, मीकाईल, ईस्राफील आर। ईज्राईल अल्लार गोलाम हुकुम बर्दार॥ बाड़िर चारि कोने ईहादेर राखिया मौजूद। अल्लाह बो नबीर नामे भेजिया दरूद। बन्धन करीनूं आमी (फलानार) बड़ी। मेहर करिवे अल्ला आपे पाक बारी। एई बाड़ीर ऊपर ते भूत-प्रेत डाईने योगिनी, देव दैत्य यदि थाके केहो। मारिया गुर्जर बाढ़ी दूर करके देहो। या इलाहो, माबूद, करीम, रहीम, साबूद, बहक लाइलाहा इल्लल्लाहा मोहम्मदुर रसूललाह।

विधि—

शनि या मंगल के दिन चार काले घड़े लावें। घड़े के भीतर सात गांव की मिट्टी ला रखें। शनि या मंगल को लोहार के यहाँ से चार लोहे की कांटी बनवा और सात घाट का पानी और बिना फूले सीमल गाछ की जड़ लाकर सभी चीजों को चार हिस्से करके घड़े में रखकर प्रत्येक में तीन बार मन्त्र पढ़कर मुँह पर ढकना छिपाकर अच्छी तरह से बन्द करके थोड़ा सरसों का तेल घड़े के ऊपर लगा दें और घर के चारों कोनों में अजान दे-देकर चारों घड़े गाड़ दें। वह घर हर आफत से बचा रहेगा।

कुछ दुर्लभ जैन-मन्त्र

धन-धान्य बढ़ाने वाला आतल कुर्सी मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रः कलिकुण्ड स्वामिने नमः, जये विजये अपराजिते चक्रेश्वरी ममार्थं सिद्ध-सिद्ध, कुरु-कुरु स्वाहा।

किसी भी धान के सात अच्छे दाने लेकर उस पर यह मन्त्र सात बार पढ़ना तथा दाने वस्तु में वापस डाल देना, उस वस्तु की वृद्धि होगी तथा उससे बराबर लाभ होगा।

कार्य सिद्धि जैन मन्त्र—

ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं पद्मावती मम कार्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को इक्कीस बार पढ़कर, अभीष्ट वस्तु लिख करके जावे तो राजा व उच्चाधिकारी वश में हो जाते हैं।

सर्वदोष नाशक रक्षा-मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय, ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय, आत्मचक्षु, परचक्षु, भूतचक्षु, डाकिनीचक्षु, सर्वलोग चक्षु, पितरचक्षु, आत्म कश-कश, हन-हन, दह-दह, पच-पच, ॐ फट् स्वाहा।

यह जैन यतियों द्वारा प्रदत्त दुर्लभ-मन्त्र है। अचानक किसी प्रकार की हवा (नजर) लगने पर, तबीयत खराब होने पर, जीव मचलने पर, इस मन्त्र को जपता हुआ कुलवाणि करके, पिलावें और इस मन्त्र को इक्कीस बार पढ़ें तो, सब प्रकार के दोष हट जाते हैं और जीव को आराम मिलता है।

नारियल द्वारा पुत्र-प्राप्ति का मन्त्र—

ऐं नमः ॐ नमो भगवती पद्मे ह्रीं क्लीं ब्लूं त्रिट-त्रिट (अमुक) स्त्री अपत्य हिनाय अपत्य गुण क्षय, सर्वावयव संयुत शोभन सुन्दर दीर्घायु पुत्रं देही-देही, मा विलम्बय-विलम्बय, रां ह्रीं श्रीं पद्मावतीं मम कार्यं कुरु-कुरु स्वाहा ठः ठः ठः स्वाहा।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda, Niali,odisha

इस मन्त्र को एक सौ आठ बार नारियल पर जपें। तत्पश्चात् अभिमन्त्रित नारियल ऋतु धर्म के पश्चात् शुद्ध होने पर स्त्री को खिलावें, पुत्र अवश्य होवे। यह सही, सत्य है।

सभी प्रकार के बुखार व ज्वर-नाश करने का मन्त्र—

ॐ नमो श्री पार्श्वनाथाय चिपटी नाम महाविद्याय, सर्व ज्वर, विनाशनिया, या दिशं पश्यामि, ता ता भवति निः ज्वर, शिरो मुञ्छ-मुञ्छ, ललाट मुञ्छ-मुञ्छ, नेत्र मुञ्छ-मुञ्छ, नासिका मुञ्छ-मुञ्छ, क्रोधो मुञ्छ-मुञ्छ, कटि मुञ्छ-मुञ्छ, पादो मुञ्छ-मुञ्छ गुटिं मुञ्छ-मुञ्छ, भूमियां गच्छ महान् ज्वर स्वाहा।

इक्कीस बार यह मन्त्र पढ़कर उड़द के दाने अभिमन्त्रित करें। एक-एक दाना मन्त्र बोलते हुए इक्कीस बार यह मन्त्र पढ़कर रोगी के ऊपर फेंकें। सभी प्रकार का बुखार दूर होकर रोगी को तत्काल राहत मिलती है। यह सही, सच्ची व अनुभूतशुदा बात है।

चोर पकड़ने का मन्त्र—

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वां ज्वीं ज्वालामालिनी चोर कण्ठं ग्रहण-ग्रहण स्वाहा।

शनिवार रात्रि को चावल धोकर, इक्कीस बार इस मन्त्र द्वारा अभिषिक्त कर कोरी हांडी में डालें। रविवार को सुबह धूप देकर, इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर चावल सन्देहास्पद व्यक्ति को खिलावें, तो जो चोर होगा, उसके मुंह में से खून गिरने लगेगा।

वर्षा रोकने व कराने का जैन-मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्ष्रीं सों क्षं क्षं मेघकुमारकेभ्यो वृष्टि स्तम्भय-स्तम्भय स्वाहा।

श्मशान में प्यासा बैठकर जाप करें, तो मेघ का स्तम्भन हो जायेगा। बादल उमड़-घुमड़ कर आयेंगे परन्तु वर्षा नहीं होगी।

ॐ नमो रम्ल्व्यूं मेघ कुमाराणां ॐ ह्रीं श्रीं क्षम्ल्व्यूं मेघ कुमाराणां वृष्टिं कुरु-कुरु ह्रीं सं वौषट्।

इस मन्त्र का एक लाख विधिपूर्वक जप करें। जब पानी बरसाना हो तब उपवास कर पाटा पर मन्त्र लिखकर पूजा करें, पानी बरसे।

नवकार महामन्त्र—

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

यह सर्वाधिक प्रसिद्ध जैन-मन्त्र है। जैन धर्मानुसार यह पंच नमस्कार मन्त्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में महान् मंगल है। इसके पढ़ने से आनन्द-मंगल होता है क्योंकि इसके पढ़ते ही लोक के असंख्य महान् आत्माओं का स्मरण व आशीर्वाद प्राप्त होता है।

यह मूल मन्त्र 35 अक्षरों का होने से 'पंचत्रिंशत्यक्षरी-मन्त्र' कहलाता है परन्तु इस मन्त्र के पांचों पदों के आगे ओंकार (ॐ) लगा दिया जाये तो यह 'णमोकार-मन्त्र' बन जाता है, जिसके जपने से व्यक्ति का पराक्रम बढ़ता है व सिद्धि की प्राप्ति होती है। यदि णमोकार मन्त्र तीन बार पढ़कर धूल चूंटी के फूंक दे, उस धूल को जिसके सिर पर डालें, वह तुरन्त वश में हो जाता है।

चौथ या चतुर्दशी शनिवार को णमोकार मन्त्र पढ़कर शत्रु के सन्मुख जाकर दाहिनी ओर खड़े होकर मन्त्र का मानसिक जप करें तो शत्रु भी आज्ञाकारी सेवक हो जाता है। यदि णमोकार मन्त्र उलटा जपें तो बन्दी को मोक्ष मिलता है, परन्तु बिना कार्य उलटा न जपें। णमोंकार मन्त्र के प्रत्येक पाद में ॐ के पीछे 'ह्रीं' का सम्पुट लगाने पर यह परम वशीकरण-मन्त्र बन जाता है। जब किसी राजा, हाकिम या उच्चपदाधिकारी से मिलने जाना हो तो, सिर पर पगड़ी का दुपट्टा बांधते वक्त 21 बार मन्त्र पढ़कर उसके पल्ले में अभीष्ट व्यक्ति का ध्यान धरकर गांठ बांध दें। सिर पर वह वस्त्र पहनकर जावें तो उच्चाधिकारी मेहरबान होकर आपके इच्छानुकूल कार्य करेगा। **ऐसो पंच णमोकारो सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलम् ॐ हूं फट् स्वाहा** णमोकार मन्त्र के पीछे यदि उपर्युक्त पद जोड़ दिया जाये तो यह रक्षा-मन्त्र हो जाता है। इस मन्त्र से आत्मरक्षा होती है तथा इस मन्त्र से काले धागे में पांच गांठें लगाकर जिसको पहना दिया जाये, उसकी भी रक्षा हो जाती है।

स्त्रियों का रक्तस्राव बन्द करना—

ॐ नमो लोहित पिंगलाय मातंग राजाना स्त्रीणां रक्तं स्तम्भय-स्तम्भय ॐ तद्यथा हुसु-हुसु, लघु-लघु, तिलि-तिलि, मिलि स्वाहा।

रक्तसूत्र या मौली को दोवड़ती करके सात गांठें लगावें तथा इक्कीस बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर डोरा स्त्री के वाम (Left) पैर के अंगूठे पर बांध दें, तत्काल रक्तस्राव बन्द होगा।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

रोजी-रोजगार का मन्त्र—

ॐ नमो नगन चीटि महावीर, हूं पूरों तोरी आशा, तूं पूरो मोरी आशा।

भूने हुए चावल एक सेर, पाव शक्कर, आधा पाव घी, इन सब चीजों को मिलाकर प्रातःकाल, सबेरे उठते ही जहां पर चींटियों का बिल हो, वहां जाकर मन्त्र पढ़ते जायें और एकत्रित सामग्री को थोड़ी-थोड़ी करके चींटियों के बिल पर डालते जायें। इस प्रकार 40 दिन तक करने पर तुरन्त रोजगार मिलता है तथा एक संकल्पित मन की इच्छा पूर्ण होती है।

बिना याचना के भोजन मिले—

ॐ रत्नत्रयाय मणिभद्राय महायक्ष सेनापतये ॐ कलि-कलि स्वाहा।

दातुन करने योग्य किसी भी वृक्ष की कोमल टहनी के सात टुकड़े करके इस मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके प्रातःकाल में खावें, अथवा दातुन करके फेंक दें, तो बिना मांगे भोजन मिलता है। अर्थात् भोजन के लिए किसी से याचना नहीं करनी पड़ती है। साधुओं के लिए यह मन्त्र अमोघ है।

पद्मावती साधने का मन्त्र—

ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै नमः।

इस मन्त्र के सवालक्ष जाप मूंगे की माला पर करने से पद्मावती देवी के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं तथा साढ़े बारह हजार जप करने पर स्वप्न में दर्शन होते हैं। पद्मावती के दर्शन से साधक को प्रचुर द्रव्य की प्राप्ति होती है तथा लक्ष्मी का वासा जिह्वा पर हो जाता है।

* निधि-दर्शन जैन मन्त्र—

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र पार्श्वनाथाय नमः निधि दर्शनं कुरु-कुरु स्वाहा।

नेत्र बन्द करके इस मन्त्र के सवा लाख जप करें। तत्पश्चात् मन्त्र बोलते हुए हाथों से नेत्रों को स्पर्श करें तो भूगर्भ में छिपी हुई निधि (दौलत) दिखेगी।

यन्त्र

चमत्कारी विद्याओं में यन्त्र का स्थान सर्वोपरि है तथा मन्त्र और तन्त्र इसके साधक तत्त्व माने गए हैं। यन्त्र सब सिद्धियों का द्वार है तथा देवताओं का आवास गृह है, जिसमें अपने-अपने स्थान, दिशा, मण्डल, कोण आदि के अधिपति व्यवस्थित रूप से आह्लादित होकर विराजे रहते हैं, मध्य में उच्च सिंहासन पर प्रधान देवता प्राणप्रतिष्ठित होकर पूजा प्राप्त करते हैं। यन्त्र मन्त्र का रचनात्मक शरीर है जिसमें अनुष्ठेय कर्मकाण्ड की सम्पूर्ण प्रक्रिया सूक्ष्म रूप से ठीक उसी प्रकार से छुपी होती है जिस प्रकार से नक्शे में भवन व बीज में वृक्ष छिपा रहता है। मन्त्रों की तरह कुछ ऐसे क्लिष्ट यन्त्र भी होते हैं जो कि आवरण पूजाओं से कीलित होते हैं। इसके विपरीत कुछ ऐसे यन्त्र भी होते हैं जिसके दर्शन मात्र से व्यक्ति अभीष्ट मनोरथ को पा लेता है। श्रीयन्त्र, गायत्रीयन्त्र व स्वर्णाकर्षक भैरवयन्त्र ऐसे ही यन्त्रों की श्रेणी में आते हैं जिनके दर्शनमात्र शुभ फलों को देने वाले कहे गए हैं। शास्त्रकारों ने इस बात पर जोर दिया है कि जिस प्रकार शरीर और आत्मा में कोई भेद नहीं होता, उसी प्रकार से यन्त्र और देवता में कोई भेद नहीं होता। फलतः यन्त्र की पूजा किये बिना देवता प्रसन्न नहीं होते।

कई-कई यन्त्र ऐसे भी होते हैं जिसमें 'अंकसिद्धि' होती है जो कि बिना मन्त्रों के कार्य करते हैं तथा उनका परिणाम आश्चर्यजनक होता है। सिद्ध पुरुषों ने इन यन्त्रों के माध्यम से ऐसे-ऐसे कार्य कर दिखाये जो कि द्रष्टा को आश्चर्य में डुबाये बिना नहीं रह सकते। ऐसे ही यन्त्रों में पंचदशी व बीसा का नाम सर्वोपरि लिया जा सकता है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि मन्त्र की तरह यन्त्र में भी अनन्त शक्तियों का भण्डार होता है। हम यहां पर हमारे प्रबुद्ध पाठकों के लिए ऐसे ही कुछ चमत्कारी व शक्तिशाली यन्त्रों का संकलन प्रस्तुत कर रहे हैं। मैं तो आपको केवल इतना विश्वास दिला सकता हूं कि इस प्रकरण में प्रयुक्त सामग्री यथासम्भव प्रामाणिक, सत्य व अनुभूत है। व्यक्तिगत सफलता-असफलता के लिए हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। शास्त्रकारों ने कहा है—

औषधीमणिमन्त्राणां, ग्रहनक्षत्रतारिका।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धि, अभाग्यं निष्फलं भवेत्॥

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Nlali,odisha

—डॉ. द्विवेदी

श्रीविद्या के उपासक व पंचदशी यन्त्र के साधक
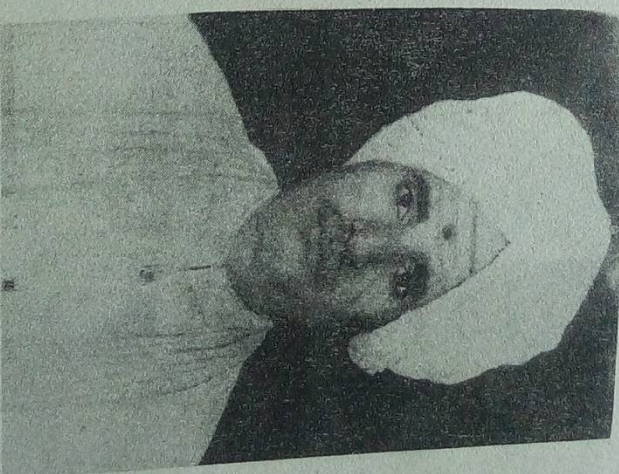
श्रीमालीकुलकमल दिवाकर, याज्ञिककर्मकोविद,
अनुष्ठानकेसरी, कर्मकाण्डमणि, ज्योतिषशास्त्रमर्मज्ञ,
श्रीमालीकुलगुरु, दानवीर, ब्रह्मलीन तपोमूर्ति
प्रातः स्मरणीय पुण्यः श्लोक

वेदपाठी पं. जयनारायणजी वेदिया (दुन्दाड़ा)

लक्ष्मी-प्राप्ति का अचूक माध्यम 'श्रीयन्त्र'

॥ श्रीयन्त्रम् ॥
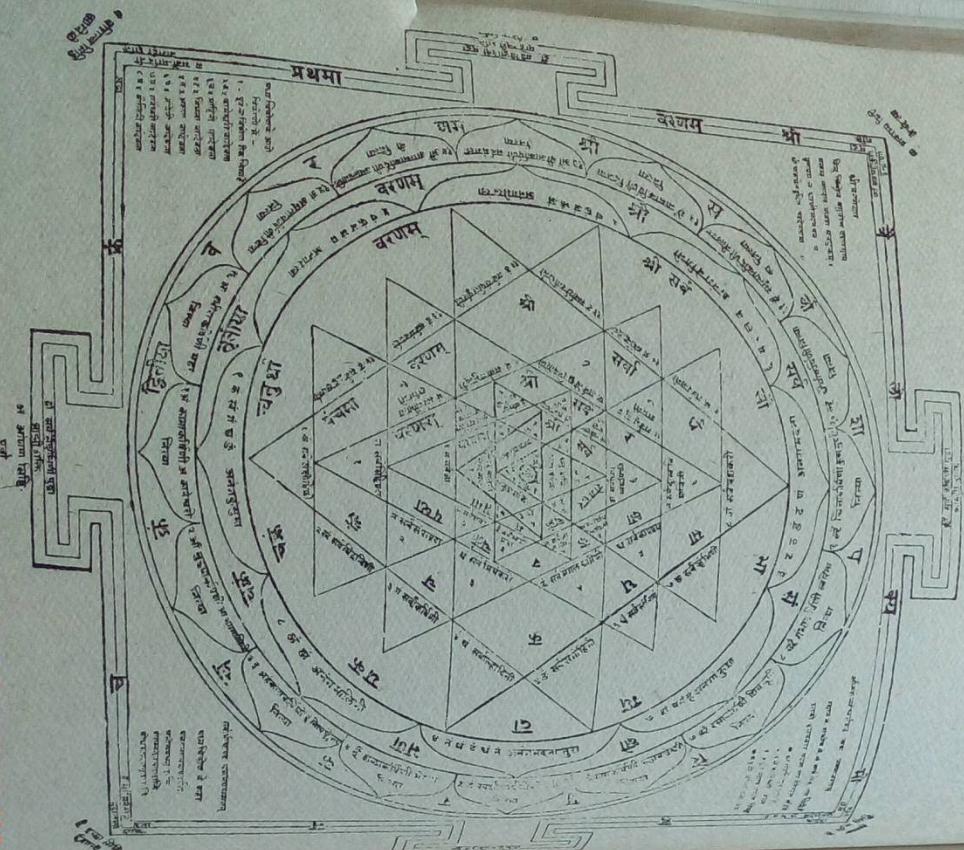
अनन्त ऐश्वर्य व लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए '**श्रीविद्या**' व '**श्रीयन्त्र**' का महत्व सर्वाधिक है। श्रीविद्या 'शताक्षरी परमविद्या' के नाम से जानी जाती है। इसके मूलमन्त्र में केवल सौ अक्षर ही होते हैं। जिसके निरन्तर आवृत्ति से '**श्री कामः शततं जपेत्**'

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda, Nidi,odisha

तत्काल सिद्धि मिलती है। श्रीमाली ब्राह्मणों के पास यह विद्या कुल-परम्परा (परिपाटी) से प्राप्त होती रही है। सभी श्रीमाली ब्राह्मणों के घरों में कुलदेवी के रूप में आद्याशक्ति श्री स्वरूप भगवती महालक्ष्मी की ही उपासना होती है, यही कारण है कि श्रीविद्या के निष्णात उपासक व पण्डित कालान्तर में श्रीमाली ब्राह्मण के नाम से पहचाने जाने लगे।

प्रातः स्मरणीय पूज्यपिताश्री हमें श्रीविद्या के अनेक रोचक संस्मरण सुनाया करते थे। उन्होंने बताया कि सौराष्ट्र के प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर के भूगर्भ में स्वर्ण शिलाओं पर श्रीयन्त्र उत्कीर्ण थे जिनकी गुप्त रूप से श्रीमाली ब्राह्मणों द्वारा नित्य पंचोपचार पूजा की जाती थी। यही कारण था कि वहां अतुल सम्पत्ति की नित्य वर्षा होती थी। अरबों-खरबों के रत्न तो केवल मन्दिर के स्तम्भों में ही जड़ित थे। इसकी प्रशंसा से आकृष्ट होकर मोहम्मद गजनवी इसे लूटकर ले गया तथा स्वर्ण के लालच में इन श्रीयन्त्रों को भी खण्ड-खण्ड करके अपने साथ ले गया तब से यह मन्दिर 'श्रीयन्त्र' विहीन है। दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान जब मैं तिरुपति बालाजी पहुंचा तो मैंने पाया कि वहाँ के मुख्य विग्रह की पीठ में श्रीयन्त्र उत्कीर्ण है जिसका अभी भी विधि-विधान से नित्य पूजन होता है। यह मन्दिर अब सरकार के अधीन है फिर भी वहाँ की मासिक आय लाखों-करोड़ों में आज भी प्राप्त है।

श्रीविद्या की उपासनापद्धति तन्त्रों की आधारभूत पद्धति है। त्रिपुरोपनिषद् में कादिहादि विद्याओं के नाम से इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। श्रीविद्या का प्रचार दक्षिण भारत में अधिक है। परमकारुणिक शंकरावतार भगवत्पाद श्रीमच्छङ्कराचार्य की लेखनी से प्रादुर्भूत 'सौन्दर्य लहरी' व 'प्रपंचसार' इस विद्या की शुद्ध सात्त्विकी का सर्वोपरि प्रमाण हैं। श्रीमच्छङ्कराचार्य की श्रीविद्या की दीक्षा योगीन्द्र श्रीगोविन्दपादाचार्य से मिली थी। श्री गोविन्दपादाचार्य को इस विद्या की दीक्षा श्री गौडपादाचार्य के गुरु परमाचार्य भगवान् श्री दत्तात्रेय स्वयं ने दी। इस प्रकार से इस विद्या की अति-प्राचीनता सिद्ध है।

कथा प्रसिद्ध है कि गुरुगृह-निवास के नियमानुसार आचार्य शंकर एक दिन भिक्षा के लिए किसी सद्गृहस्थ ब्राह्मण के द्वार पर गये। गृहस्थ बहुत ही निर्धन था। भिक्षा देने योग्य मुट्ठी भर चावल भी उसके घर में नहीं थे। निदान ब्राह्मण-पत्नी ने शंकर के हाथ में एक आंवला देकर, रोते हुए अपनी निरन्न अवस्था का वर्णन किया। ब्राह्मणी की दुःखद निर्धनता ने करुणामूर्ति शंकर के कोमल हृदय को द्रवित कर डाला। उन्होंने वहीं खड़े होकर करुणा विगलित चित्त से श्रीविद्या की अधिष्ठात्री देवी आद्याशक्ति भगवती महालक्ष्मी की स्तुति प्रारम्भ की और उनकी वाणी से अनायास ही करुणापूर्ण कोमल-कांत पद्यावली से आकृष्ट होकर भगवती महालक्ष्मी देखते-देखते आचार्य के सम्मुख अपने त्रिभुवन मोहन रूप में प्रकट हो गयीं और कोमल शब्दों में कहा—''बेटा, मैंने तुम्हारा अभिप्राय जान लिया है, परन्तु

निर्धन परिवार ने पूर्व जन्मों में ऐसा कोई भी सुकृत, पुण्य कार्य नहीं किया जिससे मैं इसे धन दे सकूं।

आचार्य ने बड़े ही विनीत शब्दों में करुणामयी अम्बा से निवेदन किया— पूर्वजन्म में इस ब्राह्मण ने ऐसा कोई सुकृत नहीं किया है जिसके फलस्वरूप इसे धन-सम्पत्ति दी जा सके, इससे क्या हुआ? मेरे जैसे भिक्षुक को आंवले का दान देकर इसने जो महान् पुण्यराशि अर्जित की है उसके कारण यह अतुल सम्पत्ति का अधिकारी हो गया है। अतः यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हुई हों, तो इस परिवार को दारिद्र्य से मुक्त कर दीजिए।

इस युक्ति का भगवती खण्डन नहीं कर सकीं और प्रसन्न होकर देवी ने कहा— ''यही होगा आचार्यवर! मैं इसे प्रचुर स्वर्ण के आंवले दूंगी।'' यह सुनकर आचार्य शंकर प्रसन्नता के साथ ब्राह्मणी को शीघ्र धनवान होने का आशीर्वाद देकर, गुरु गृह लौट गये। दूसरे दिन ही प्रातःकाल ब्राह्मण-दम्पत्ति ने देखा, उनके घर में सर्वत्र स्वर्ण के आंवले बिखरे पड़े हैं। इस घटना का उल्लेख 'शंकरदिग्विजय' के चतुर्थ सर्ग में दिया गया है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि न केवल श्रीविद्या के उपासक अपितु श्रीविद्या के उपासक जिस पर प्रसन्न हो जायें, उस पर भी भगवती श्री की कृपा सद्य हो जाती है, इसमें संदेह नहीं। श्रीविद्या की साधना हेतु हमें उसके आधारभूत 'श्रीयन्त्र' को समझना प्रथमतः अनिवार्य है। इस 'श्रीयन्त्र' का आर्तभाव में श्रद्धापूर्वक पूजन करने पर बहुतों को धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती हुई प्रत्यक्ष देखी व सुनी गई है।

सारी सृष्टि का विकास व विलयक्रम श्रीयन्त्र में बताया गया है। मनुष्य देह का नाप 96 अंगुल प्रमाण होता है। इसलिए श्रीचक्र का माप भी 96 इकाइयों पर रखा जाता है। मध्य का बिन्दु बीज शक्त्यात्मक है। प्रथम केन्द्रीय त्रिकोण में सर्वसिद्धिप्रद शम्भु का स्थान माना गया है। अष्टकोण अष्ठवसु के स्थान हैं। अन्तर्बहि दश-दश त्रिकोण दस प्राणों के द्योतक हैं। षोडश दल चन्द्रमा की विशुद्ध 16 कलाएं हैं तथा आठ दलों में 16 कलाओं का समावेश भी दर्शाया गया है। इसके बाहर की तीन भूपूर रेखाएं त्रैलोक्य वशीभूत साधन हैं तथा इसके चार द्वार, चारों दिशाओं से ऋद्धि-सिद्धि के प्रवेश के उपकरण ही तो हैं। यह श्रीयन्त्र आकाश में विचरण करने वाली समृद्धिशाली किरणों के ऐश्वर्यप्रदाता+धनात्मक इलेक्ट्रॉन्स को अपनी ओर आकर्षित कर उसे वापस रिफलेक्ट करके उपासक के मुखमण्डल व उपासनास्थल को आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित करता है।

श्रीयन्त्र में चार सीधे व पांच उल्टे त्रिकोणों से मिलकर कुल 43 त्रिकोणों की सृष्टि होती है। इस पर 'श्रीसूक्त' के पाठ [illegible] लक्ष्मी अतुल सम्पत्ति की वृष्टि करने लग जाती है परन्तु बिना गुरु के यह विद्या फलीभूत नहीं होती। शास्त्रकारों ने कहा है कि यदि साक्षात् भगवान् भी बिना गुरु के इसका प्रयोग करें तो उन्हें भी सफलता नहीं मिलेगी।

Shaikh Abdul Satar,Majhikhanda,,Niali,odisha

तांत्रिक साहित्य में अकेले श्रीयन्त्र पर जितना लिखा गया है उतना किसी पर नहीं। जिज्ञासु पाठकों के अनेक पत्र प्रतिमाह प्राप्त होते हैं कि श्रीयन्त्र पर जपने के लिए सूक्ष्मतर व सटीक चमत्कारी मन्त्र कौन-सा है? हमारे प्रबुद्ध पाठकों के लाभार्थ यह दुर्लभ मन्त्र यहां दे रहे हैं—

'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः।'
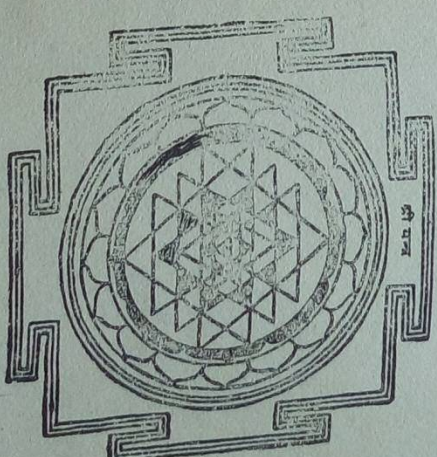
प्रयोग—जो लोग आवरण पूजाओं को स्वयं करने में समर्थ हों, वे लोग बीजमन्त्रों से युक्त 'श्रीयन्त्र' काम लें। शास्त्रकारों के अनुसार लक्ष्मी का निवास स्वर्ण व रजत में होता है। अतः स्वर्ण व रजत पत्रों पर निर्मित 'श्रीयन्त्र' ज्यादा प्रभावशाली होते हैं। धातुनिर्मित श्रीयन्त्रों में पुनः प्रतिष्ठा व अभिषेक की सुविधा रहती है। यदि तीन धातु (स्वर्ण, रजत व ताम्र) से मिश्रित अंगूठी बनाकर उस पर 'श्रीयन्त्र' निर्मित किया जाये, तो वह ज्यादा प्रभावशाली रहता है। हमारे कार्यालय ने इस प्रकार की अंगूठियां बनाकर अनेक लोगों पर प्रयोग किये जो कि सर्वाधिक सफल रहे। भोजपत्र पर अष्टगन्ध से 'श्रीयन्त्र' बनाकर यदि बटुए (पर्स) में रखा जाये तो बटुआ नोटों से भरा रहता है, यह भी अनुभूत है।

श्री महालक्ष्मी यन्त्र—
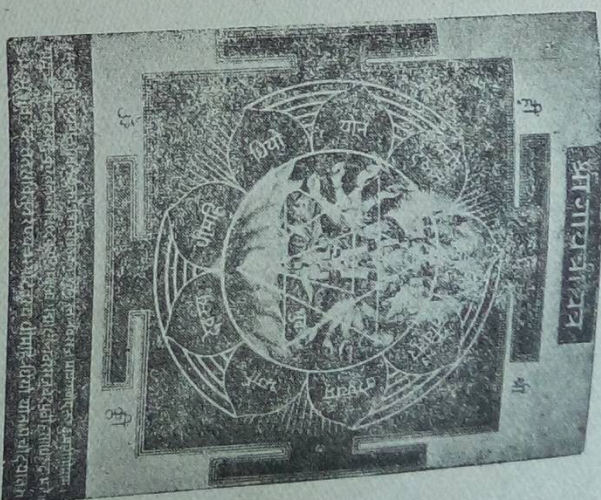
ॐ कमलासन पर बैठी हुई, उन्मत्त हाथियों द्वारा सेवित महालक्ष्मी का प्रसन्न मुद्रा में चित्र बनावें, उस चित्र को चारों ओर से भूपूर से बन्द करके, अन्दर षट्कोण तथा एक वृत, फिर अष्टदल पद्म बनावें। चित्र के अभाव में केवल यन्त्र भी बनाया जा सकता है। इस प्रकार की लक्ष्मी को 'ज्येष्ठा लक्ष्मी' कहा जाता है। यदि चित्र में बैठी हुई महालक्ष्मी के दोनों तरफ हाथी स्वर्णाघट से अभिषेक करते हुए हों तो वह 'गजलक्ष्मी' कहलाती हैं। दोनों ही यन्त्रों के सामने नीचे लिखे मन्त्र के सवालाख जप कमलगट्टे की माला पर चालीस दिन में करने चाहिए। अन्तिम दिवस इस मन्त्र से कमलपत्र, बिल्वपत्र अथवा दुग्धस्रावित स्निग्ध औषधियों किंवा क्षीर से हवन करना चाहिए। पांच पवित्र कन्याओं को श्वेत भोजन कराने से यह यन्त्र व मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने पर आर्थिक स्थिति पूर्णतः अनुकूल होकर व्यापार सम्पन्नता की ओर बढ़ता है तथा चारों ओर से रुपया आना शुरू हो जाता है। कुछ ही समय में जातक प्रबल पराक्रमी व ऐश्वर्यसम्पन्न हो जाता है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

मन्त्र— ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद,
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

श्री गायत्री महायन्त्र

यन्त्रराज गायत्री की महिमा शब्दातीत है। पद्मासन पर स्थित पंचमुखी व अष्टभुजायुक्त गायत्री का वरदमुद्रा में चित्र बनावें। उसको भूपूर में वेष्टित कर, बिन्दु, त्रिकोण, उलटा षट्कोण एवं अष्टदल बनावें। आठों ही दल में 'तत्' से प्रारम्भ करके पूरा गायत्री मन्त्र चित्रानुसार लिखना है। मध्य बिन्दु पर 'ओम', षट्कोण मध्यवर्ती कोण में 'भूः' बायें 'भुवः' एवं दायें 'स्वः' लिखना, शुभ मुहूर्त में यन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा करके गायत्री के मूलमन्त्र का सवा लाख जप रुद्राक्ष की माला पर करें। दशांश हवन, तिल, यव, शक्कर, मिष्टान्न एवं सुगन्धित औषधियों को मिलाकर करें। पूर्णाहुति पर श्रद्धानुसार यज्ञोपवीतधारी 5, 11, 21 ब्राह्मणों को भोजन कराने पर गायत्री मंत्र सिद्ध हो जाती है। गायत्रीमाता के प्रसन्न होने पर व्यक्ति लौकिक उपलब्धियों की सीमाओं को लांघकर आध्यात्मिक उन्नति को स्पर्श करने लगता है। व्यक्ति का अतुलनीय तेज बढ़ता है। मेधा व धारणा शक्ति बढ़ जाती है, वाणी ओजस्वी हो जाती है तथा व्यक्ति श्राप व आशीर्वाद देने की शक्ति को प्राप्त करता है।

गायत्री मन्त्र—**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

श्री श्री गायत्री यन्त्रराज

चित्रात्मक यन्त्र के अभाव में प्रस्तुत यन्त्र को भोजपत्र पर बनावें अथवा ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करावें। इसमें 1, बिन्दु, 2, त्रिकोण, 3, वृत्त, 4, अष्टदल, 5, षट्कोण, 6, दो वृत्त, 7, फिर अष्टदल, 8, दो वृत्त, 9, पुनः अष्टदल, 10, एक भूपूर, इस प्रकार से दस खण्डों में गायत्री महायन्त्र का निर्माण होता है। इसकी विधिवत् प्राणप्रतिष्ठा जानकर विद्वान् किंवा कर्मकाण्डी ब्राह्मण से करानी चाहिए। पीत वस्त्र, पीत यज्ञोपवीत, सात्त्विक भोजन, पूर्ण ब्रह्मचर्य एवं चालीस दिन तक उपवास रखते हुए सवा लाख जाप करने पर गायत्रीमाता प्रसन्न होकर मनोवांछित वर देती हैं। वेदमाता गायत्री के प्रसन्न होने पर व्यक्ति में स्वतः दिव्यता आ जाती है तथा वह भौतिकता से हटकर परोपकारी व आध्यात्मिक प्राणी बन जाता है।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda, Niali,odisha

शत्रुनाशक बगला-यन्त्र

आज का युग महत्त्वाकांक्षा एवं संघर्ष का युग है। आज प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में लगा हुआ है। विशुद्ध स्पर्द्धा की जगह ईर्ष्या, राग-द्वेष और घृणा ने ले ली है। फलतः इस समय चतुर्दिक् असन्तोष, विद्रोह, ईर्ष्या, अभाव, युद्ध, घृणा और संघर्ष बिखरा पड़ा है। आज चारों तरफ परस्पर संघर्ष इतना अधिक बढ़ गया है कि मुकदमेबाजी, लड़ाई-झगड़ों एवं आपसी मन-मुटाव से जन-मन संत्रस्त व भयाक्रांत है।

ऐसे विकट समय में बगलामुखी साधना ही भयग्रस्त लोगों को सांत्वना और साहस का सम्बल प्रदान कर सकती है। दुनिया के सभी श्रेष्ठ तांत्रिकों, मांत्रिकों, साधकों एवं सिद्ध तपस्वियों ने एक मत से स्वीकार किया है कि मानव को शांति और निश्चिन्तता तभी मिल सकती है जबकि वह अपने शत्रुओं से निश्चिन्त रहे, उसके शत्रु उस पर हावी न हो सकें। अतः शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए शास्त्रार्थ में व मुकदमे में प्रतिद्वन्द्वी को कीलन करने के लिए, विजयश्री का वरण करने के लिए एवं अपना प्रभाव व पराक्रम बढ़ाने के लिए बगला साधना का महत्त्व बताया गया है।

व्यापारी लोग अपने पराक्रमवृद्धि हेतु, जनसामान्य मुकद्मों में अनुकूलता व सफलता के लिए तथा नेतागण राजनीति में अपने प्रतिद्वन्द्वी का पराभव करने के लिए बगलामुखी यन्त्र का प्रयोग करते देखे गये हैं।

मैंने स्वयं जीवन की विकट परिस्थितियों में एक-दो बार इसका प्रयोग किया और तत्पश्चात् एक-दो व्यक्तियों से इसका अनुष्ठान भी करवाया और आयोजन सफल रहा। तब से मेरा विश्वास बगला-यन्त्र में पूर्णतः जम गया।

परन्तु ध्यान रहे कि बगला के अनुष्ठान निरपराध व सज्जन व्यक्तियों को सताने के लिए नहीं हैं। अपने शत्रु को, प्रतिद्वन्द्वी को अपने विरुद्ध निरपराध सजा मिलने से रोकने के लिए, बन्धन मुक्ति के लिए, किसी उच्चाधिकारी को अपने अनुकूल में निर्णय करने की प्रेरणा के लिए यदि इसका प्रयोग किया जाये, तो कोई अनुचित बात नहीं होगी।

यदि ठीक से अनुष्ठान करने के बाद भी आपका काम नहीं हुआ है या जो संकेत आपको मिलते हैं, वे प्रतिकूल हैं तो यह अनुष्ठान उस व्यक्ति विशेष के लिए तुरन्त छोड़ देना चाहिए। यदि फिर भी आप हठ करके अनुष्ठान करते रहते हैं तो आपका काम हो तो जाएगा परन्तु आपको चपत जरूर लगेगी। यह मेरा निजी

अनुभव है कि हठी व जिद्दी बालक के रोकर किसी वस्तु के मांगने से माँ झुंझलाकर वस्तु तो दे देती है परन्तु कभी-कभी चपत भी लगा देती है। बुद्धिमान व्यक्ति माँ के संकेत को समझ जाता है परन्तु हठी व क्रोधी व्यक्ति पुत्र-मृत्यु, स्त्री-मृत्यु एवं स्वयं की अकाल मृत्यु के रूप में चपत खाता है। इसके तीन मुख्य कारण हैं— 1. जिस व्यक्ति के विरुद्ध आप प्रयोग कर रहे हैं वह सात्त्विक व निरपराध हो। 2. जिस व्यक्ति के विरुद्ध आप प्रयोग कर रहे हैं वह स्वयं माँ का अनन्य भक्त हो। 3. आप अनधिकृत रूप से शास्त्रीय परम्पराओं के विपरीत उच्चारण दोष किया त्रुटिपूर्ण साधना में संलग्न हों।

अनुष्ठान के नियम—

बगला साधना खुले आकाश के नीचे नहीं करें, मकान की ऊपरी छत पर न करें, सिला हुआ वस्त्र पहनकर न करें, एक वस्त्र से न करें। कम-से-कम दो वस्त्र धोती व उपवस्त्र का होना आवश्यक है।

साधक को पीले रंग के आसन पर बैठना चाहिए। बगला पूजा में पीले पुष्प एवं पीले चावल ही काम में आते हैं। इस साधना में जप के लिए हल्दी की गांठों की माला होती है। ऐसी माला पूरी 108 मणकों की बन सके तो ठीक अन्यथा, 54, 36, 27 अथवा 9 मणकों की भी बन सकती है।

आहार—जिस दिन अनुष्ठान चल रहा हो, दिन में दोपहर में एक बार दूध, चाय, फल या सूखा मेवा ले सकते हैं। रात को केसरिया खीर, बेसन के लड्डू, पीली सब्जी तथा सब्जी में सेंधा नमक व काली मिर्च होनी चाहिए, ले सकते हैं। लालमिर्च सर्वथा वर्जित है। अनुष्ठान के समय व्यक्ति पूर्णतः मनसा, वाचा, कर्मणा ब्रह्मचर्य का पालन करे। इसके मन्त्र का पुनश्चरण एक लाख पच्चीस हजार जप संख्या करने से हो जाता है। उसका दशांश संख्या हवन करें। हवन का दशांश मन्त्रों से तर्पण, तर्पण के दशांश मन्त्रों का मार्जन तथा मार्जन के दशांश संख्या में ब्राह्मण भोजन करावें। ध्यान रहे कि अनुष्ठानकाल में बगलामुखी देवी का चित्र व यन्त्र आपकी आंखों के सामने होने चाहिए तथा आपके अनुष्ठान क्रिया पर किसी भी अन्य व्यक्ति की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए।

बगला मन्त्र प्रयोग—

सबसे पहले भूत-शुद्धि फिर आत्म-शुद्धि कर लें। तत्पश्चात् हाथ में द्रव्य, अक्षत, पुष्प, जल लेकर संकल्प करें। संकल्प के अन्त में यह पद जोड़ दें—**मम समस्त सद् अभीष्ट सिद्धर्थं.........(यहां कार्य प्रयोजन को कहें) श्री भगवती पीताम्बराया श्री बगलामुखी देव्याः यथा लब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये** कहकर

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

जल आदि सामग्री छोड़ दें, तत्पश्चात् विनियोग करें।

विनियोग मन्त्र—ॐ अस्यश्री बगलामुखी ब्रह्मास्त्र विद्या मंत्रस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुपछन्दः बगलामुखी देवता ह्रीं बीजम् क्लीं शक्तिः हं कीलकः बगुलामुखी प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

अथन्यास—

ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यानमः॥ ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यानमः॥ ॐ हं ह्रीं अनामिकाभ्यानमः॥ ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यानमः॥ ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यानमः॥

यन्त्र-पूजन एवं यन्त्रोद्धार—

यन्त्रोद्धारः—त्र्यस्त्रं वृत्तमष्टदलम्पद्मम्भूपुरान्वितम्।
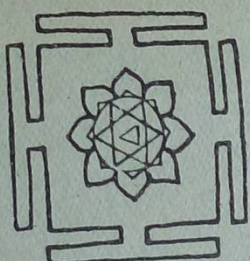
श्री बगला-यन्त्र

अर्थात् मध्य में त्रिकोण उसके ऊपर षट्कोण, उसके बाद गोल घेरा, गोल घेरे के ऊपर अष्टदल, और अष्टदल के ऊपर अष्टपद्म और एक भूपूर से युक्त यह यन्त्र 'बगलायन्त्र' कहलाता है। प्राचीन तांत्रिकों, कालीतन्त्रों, शाक्तप्रमोद तथा मन्त्रमहोदधि को यही यन्त्र अभीष्ट है।

बगलामुखी की साधना हेतु विशिष्ट यंत्र
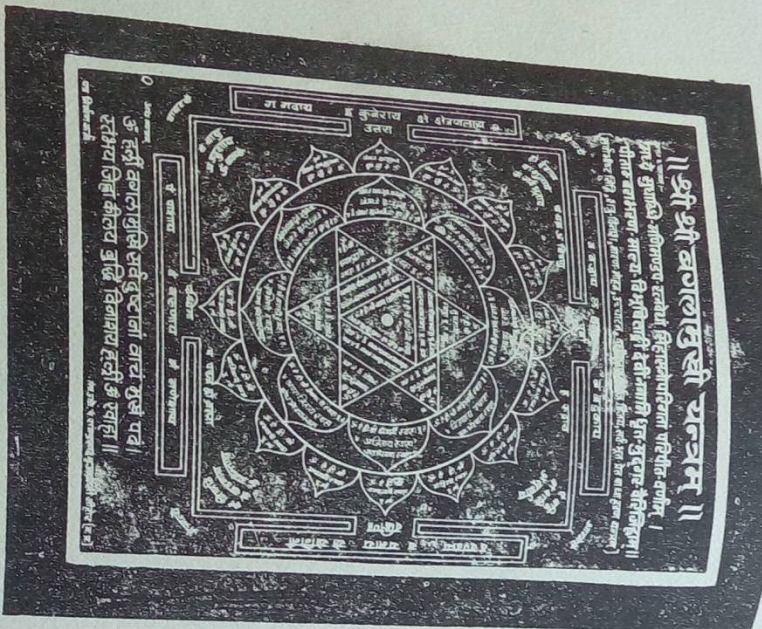
यन्त्रोद्धार—मध्य में बिन्दु, फिर उलटा त्रिकोण, षट्कोण वृत्त, अष्टदल वृत्त, षोडशदल एवं भूपूर से युक्त यह विशिष्ट यन्त्र भोजपत्र किंवा ताम्रपत्र या स्वर्णपत्र पर बनाया जाये तो विशेष प्रभावशाली होता है। जब शत्रु का नाश विशेष रूप से अभीष्ट हो तो मूल मन्त्र में 'ह्लीं' की जगह 'ह्ली' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

यन्त्र-पूजन—

हाथ में पीले चावल लें एवं बगलायन्त्र के त्रिकोण के मध्यबिन्दु पर ध्यान एकत्रित करके यह मन्त्र पढ़ें—

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

'' ॐ नमो नित्ये बगलामुखी एहि-एहि मण्डल मध्ये अवतर-अवतर सान्निध्यं कुरु-कुरु स्वाहा महापद्म वनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे। सर्वभूत हिते मातरेहि परमेश्वरी। देवेशिभक्ति सुलभे परिवार समन्विते यावदत्त्वं पूजयिष्यामि तावदत्त्वं सुस्थिरा भवः।'' (चावल यन्त्र पर छोड़ दें।)

ध्यान मन्त्र—

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं।
हेमाभाङ्गरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्॥
हस्तैर्मुद्गर पाशबद्ध रसनां संविभ्रतीं भूषणै।
र्व्याप्तांगी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये॥

इसके पश्चात् षोडशोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् बगलामुखी की मूर्ति अथवा यन्त्र को प्राणप्रतिष्ठा से पूजित करके भगवती बगला का आह्वान मुद्रा से आह्वान करें।

आह्वान मन्त्र—

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डप रत्नवेदी सिंहासनोपरिगताम्परिपीत वर्णाम्॥
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीन्देवीन्नमामिधृतमुद्गर वैरिजिह्वाम्॥

* श्री बगलामुखी देवी

मन में ऐसी धारणा रखें कि मणिमण्डल व रत्न सिंहासन पर बैठी हुई पीत आभा व आभूषणों से युक्त बगलादेवी बायें हाथ से शत्रु की जिह्वा को खींचकर दायें हाथ से गदा से आक्रमण करने वाली है। ऐसा ध्यान आते ही देवी को तुरन्त नमस्कार करें।

नमस्कार मन्त्र—

जिह्वाग्रमादाय करेण देवी व्वामेन शत्रून्परिपीडयन्तीम् ॥
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यान्द्विभुजान्नमामि ॥
फिर मानसिक पूजा करके मूल मन्त्र का जप प्रारम्भ करें।

मूल मन्त्र—

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व्वदुष्टानां वाचमुखं स्तम्भय-स्तम्भय, जिह्वाकीलय, बुद्धिन्नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।

इस प्रकार से बगला-साधना परिपूर्ण हो जाती है। कुछ लोग इस मूल मन्त्र में शत्रु का नाम भी डाल देते हैं। इसका भी प्रभाव शीघ्र होता देखा गया है। बगलामुखी यन्त्र को धारण करने का प्रभाव बहुत ही अनुकूल होता देखा गया है। 'दुर्वासा तन्त्र' में बताया गया है कि प्रत्येक श्रेष्ठीजन, धनिक, राजा तथा युद्धप्रिय व्यक्ति को हर समय बगलामुखी यन्त्र धारण किये रहना चाहिए। महर्षि अंगिरा ने 'कृत्या' पर भाष्य लिखा है। उनके अनुसार जिस व्यक्ति ने बगलामुखी यन्त्र धारण कर रखा है, उसे प्रत्यङ्गिरा शक्ति स्वयं प्रतिपक्षी की क्रिया को लौटाकर अभिचार करने वाले को मार देती है।

भाष्यकार महिधर ने लिखा है कि यदि किसी शत्रु ने मारण प्रयोग या उच्चाटन तथा पराभव हेतु कोई कार्य किया हो तो 'बगलायन्त्र' धारण करने से शत्रु के प्रयोग निष्फल हो जाते हैं। यन्त्र धारण करने वाले व्यक्ति का पराक्रम व वैभव अद्भुत ढंग से बढ़ता है। यह यन्त्र दायें हाथ में अंगूठी की शक्ल में पहना जा सकता है। त्रिलोह की अंगूठी बड़ी शक्तिशाली रहती है। बगला यन्त्र दाहिनी भुजा पर बांधा जा सकता है व गले में भी पहना जा सकता है। बगला यन्त्र धारण करने वाले व्यक्ति से द्वेष रखने वाला व्यक्ति स्वयं आकर मित्रता की याचना करता है।

लकवा पर टोटका—

किसी भी रविवार के दिन पुष्यनक्षत्र के समय एकदम सम्पूर्ण काले घोड़े की नाल निकलवाकर उसकी अंगूठी या कड़ा बनवाकर रोगी को पहना देने से उसे जीवन में कभी भी लकवे (पक्षाघात) का प्रकोप पुनः न होगा। यदि लकवा होने के आसार दिखाई पड़ जायें तो पहले से ही कथित वस्तु पहना देने से लकवे से बचाव हो सकता है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

श्री महाकाली यन्त्र

मध्य में बिन्दु, पांच उलटे त्रिकोण, तीन वृत्त, अष्टदल, वृत्त एवं एक भूपुर से आवृत्त करके महाकाली का यन्त्र तैयार किया जाता है। स्तम्भन, आकर्षण, उच्चाटन, विद्वेषण व मारण प्रयोगों में काल उपासना का सर्वाधिक महत्त्व है। महाकाली का ध्यान व चित्र पृ. सं. 134 पर दिया जा चुका है। इस यन्त्र को पूजा के लिए धातु पर या भोजपत्र पर शुभमुहूर्त में बनाकर प्राण प्रतिष्ठा कर लें तथा प्रतिदिन इसके मूल मन्त्र की 108 आवृत्ति करने पर महाकाली शीघ्र प्रसन्न होती हैं।

मूल मन्त्र—

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।

यह मूल मन्त्र 22 अक्षरों का है। यदि साधक को सुख, लक्ष्मी एवं पराक्रम

वृद्धि अभीष्ट हो तो 'ॐ कालिकायै नमः' इस अष्टाक्षर मन्त्र का जाप करें। इस मन्त्र का ऋषि-महाकाल, छन्द-बृहती, बीज-आद्य, शक्ति-क्रोधवर्ण एवं विनियोग-सर्वसिद्धि है तथा देवी महाकाली है। तान्त्रिक ग्रन्थों में नवकालियों के नामों का उल्लेख मिलता है— 1. दक्षिणकाली 2. भद्रकाली 3. श्मशानकाली 4. कालकाली 5. गुह्यकाली 6. कामकलाकाली 7. धनकाली 8. सिद्धिकाली 9. चण्डकाली। महाकाली की साधना अमोघ फल देने वाली मानी गई है। इस यन्त्र के नित्य पूजन से अरिष्ट व बाधाओं का स्वतः ही नाश होकर शत्रुओं का पराभव होता है।

सिद्ध सूर्य महायन्त्र

श्रीश्री सिद्ध सूर्य महायंत्रम्॥
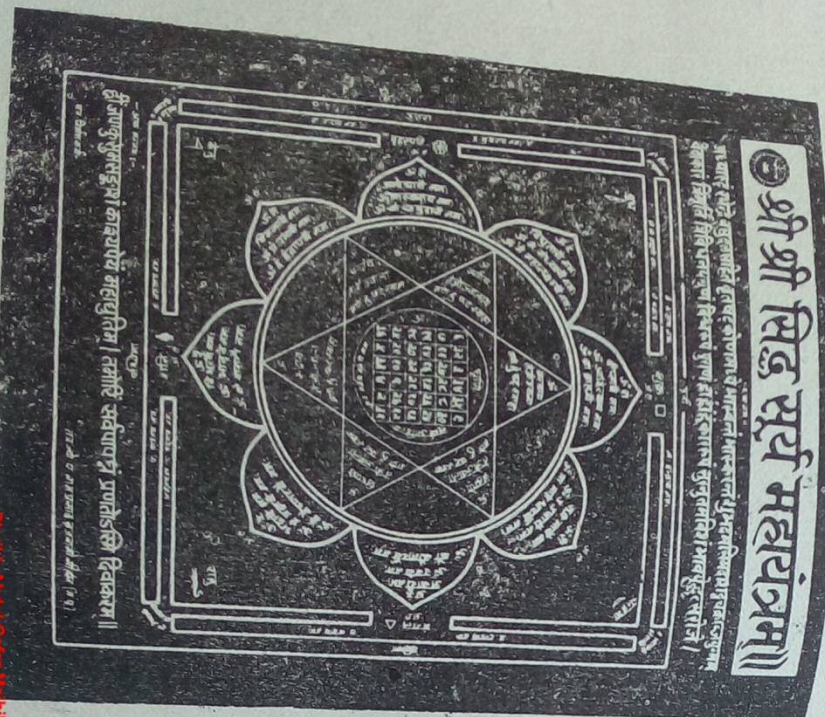
बिन्दु, षट्कोण, दो वृत, अष्टदल व भूपूर से आवृत्त सिद्ध सूर्य महायन्त्र, सूर्य-सम्बन्धी विशेष अनुष्ठानों के लिए बनाया गया है। इस यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठायुक्त पूजन करने पर व्यक्ति का आत्मबल बढ़ता है, पिता की दीर्घायु होती है, राज्य

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Nlali,odisha

में वर्चस्व व पराक्रम बढ़ता है, नौकरी मिलती है, नेत्रशक्ति बढ़ती है। इस यन्त्र को सामने रखकर 'आदित्य हृदय' का पाठ किया जाये व सूर्य देवता को अर्घ्य चढ़ाया जाये तो व्यक्ति इच्छित लक्ष्य पर शीघ्र पहुंचता है।

श्री लक्ष्मी गणेश महायन्त्रम्

॥श्रीश्रीलक्ष्मी गणेश महायंत्रम्॥

प्रस्तुत यन्त्र श्री गणेश एवं श्री लक्ष्मी का संयुक्त यन्त्र होने से 'महायन्त्र' बन गया है। श्री गणेश ऋद्धि-सिद्धि के दायक एवं लक्ष्मीजी धनदात्री माता हैं। दीपावली या दशहरे के दिन उपर्युक्त यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से बनावें अथवा रजतपत्र पर उत्कीर्ण कर प्राणप्रतिष्ठा करें। तत्पश्चात् इसको गल्ले, तिजोरी, अलमारी या पूजा में रख दें। मूल मन्त्र का 1008 जाप करें। 108 मन्त्रों का हवन करें, 11

मन्त्रों का तर्पण व मार्जन करें। एक शुद्ध सात्त्विक ब्राह्मण को मोदक व बर्फी का भोजन करावें। इतना करने से यह मन्त्र अपना काम करना शुरू कर देता है। इस यन्त्र से लक्ष्मी का भण्डार भरपूर रहता है तथा सभी लोग मोहित व प्रसन्न रहते हैं। मूल मन्त्र व ध्यान इस प्रकार है—

ध्यान—

वीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल,
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलश प्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभयां सपद्मकरया शिलिष्टोज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्तिविपत्ति संस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥

मूल मन्त्र—

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरदे सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

पागड़े जीत का यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखें। देवदत्त की जगह पर अभीष्ट व्यक्ति का नाम लिखें। तत्पश्चात् यन्त्र को अपनी पगड़ी, टोपी या साफे में रखकर, अपने इष्टदेव का स्मरण करके, अभीष्ट व्यक्ति के पास जावें। आपका कार्य तत्काल होगा।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

दीपक यन्त्र
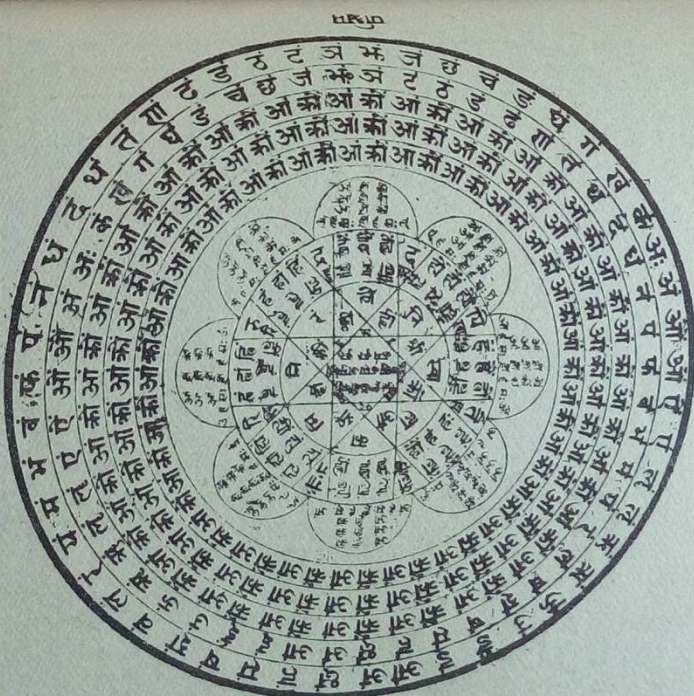
सम्पूर्ण वर्णमाला एवं बीजाक्षरों की दिव्य शक्ति से आवृत्त इस यन्त्र की म[illegible] अद्भुत है। इस यन्त्र को चाहें तो ताम्र या रजतपत्र पर उत्कीर्ण करा लें [illegible] भोजपत्र पर बनवाकर फ्रेम करा लें। इस यन्त्र का पूजन करें। बीचों-बीच में [illegible] का दीपक रखें। दीपक की विधिवत् पंचोपचार पूजा करें तो इच्छित [illegible] तत्काल सिद्धि मिलती है एवं मन्त्र स्वतः ही उत्कीलित हो जाते हैं [illegible] पास सुगन्धित पुष्प व चावल अवश्य रखें।

त्रिकोण, षट्को[illegible] के बिना दुर्गापूज[illegible] विधिवत् प्राणप्रति[illegible] में तत्काल सिद्धि[illegible] धानपीठ में उच्चास[illegible] चमचौरस रजत[illegible] प्रतिष्ठित है। अत[illegible]

श्रीदुर्गासप्तशती यन्त्र

देवी पश्चिमा

वं वज्राय नमः

पं पद्माय नमः

अं ब्रह्मणे नमः लं इन्द्राय नमः

यं वायव्याय नमः

सं सोमाय नमः

गं गदायै नमः

देवी दक्षिणा

देवी पूर्वा
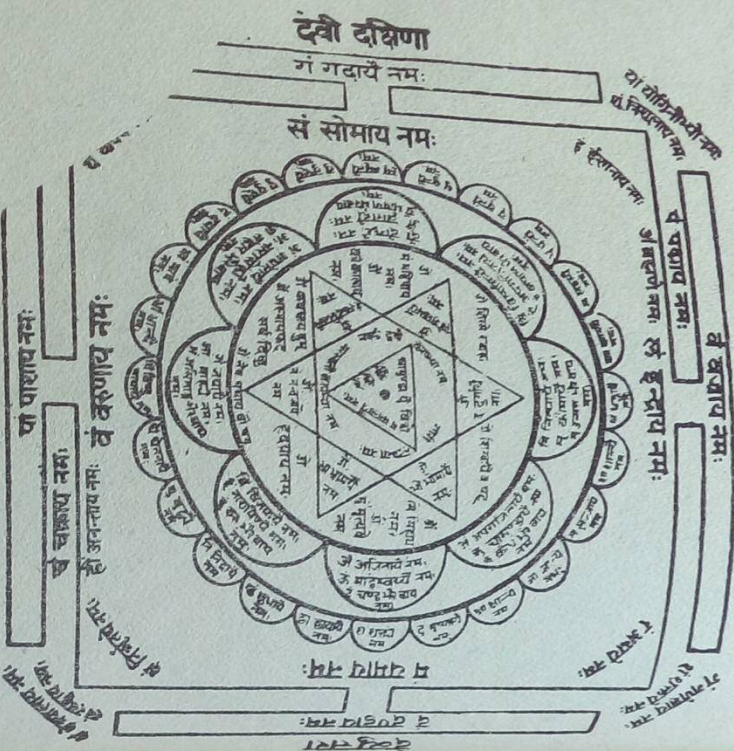
दल, चौबीस दल एवं भूपूर से आवृत्त 'दुर्गा सप्तशती
द्धि नहीं मिलती, ऐसा शास्त्रकारों का मत है। इस
नित्य दुर्गा पूजन करने पर व्यक्ति को दुर्गा सम्बन्धी
शतचण्डी, लक्षचण्डी व दुर्गा सम्बन्धी याज्ञिक
त्र को ही प्रतिष्ठित कर पूजित किया जाता
यह यन्त्र पिछले 50 वर्षों से हमारे
चमत्कारी प्रभाव अनुभूत है।

श्री बटुक भैरव यन्त्र

'शिवागमसार' के अनुसार जहां अन्य देवता दीर्घकालिक उपासना के पश्चात् प्रसन्न होते हैं, वहाँ बटुक भैरव तो उपासित होने पर शीघ्र प्रसन्न होते हैं और सब प्रकार की कामनाओं में तुरन्त सफलता देते हैं। परन्तु साधक को सर्वप्रथम वीर-शांति करनी चाहिए, क्योंकि वे श्री भैरवनाथ की आज्ञा से अपूजित रहने पर साधकों के मनोरथों को नष्ट करते रहते हैं। 1. चण्ड, 2. प्रचण्ड, 3. ऊर्ध्वकेश, 4. भीषण, 5. अभीषण, 6. व्योमकेश 7. व्योमबाहु, 8. व्योमव्यापक नामक इन आठ वीरों को आह्वानपूर्वक नैवेद्य समर्पण करने पर श्री बटुक भैरव की साधना में बाधा नहीं पड़ती। बटुक साधना में दीपदान का प्रयोग विशेष रूप से अभीष्ट रहता है।

बटुक साधना के लिए त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त और चतुष्कोण से यह यन्त्र बनता है। जिसके बीच में 'श्री' बीज तथा आठों कोणों में अष्ट भैरवों के नाम तथा दक्षिणावृत्त से मूलमन्त्र लिखा जाता है। इस यन्त्र में प्राणप्रतिष्ठा करके 'भैरव स्तोत्र' का पाठ करें तथा मूलमन्त्र के दस हजार जाप कर हवन करें।

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारण कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा।

इसके पश्चात् मन्त्र के अक्षरों की संख्या 21 के अनुसार कच्चे सूत की बत्तियां बनाकर प्रज्वलित कर, बलि अन्न उसमें डालकर, तालाब या बहती नदी में छोड़ने पर भैरवनाथ शीघ्र प्रसन्न होते हैं। दीपक बलिदान का यह मन्त्र है—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं बं सर्वज्ञाय महाबलपराक्रमाय बटुकाय इम दीपं गृहाण सर्वकार्यार्थ साधकाय दुष्टनाशय-दुष्टान्नाशय, त्रासय-त्रासय, सर्वतो मम रक्षां कुरु-कुरु फट् स्वाहा।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

श्री स्वर्णाकर्षण भैरव यन्त्र
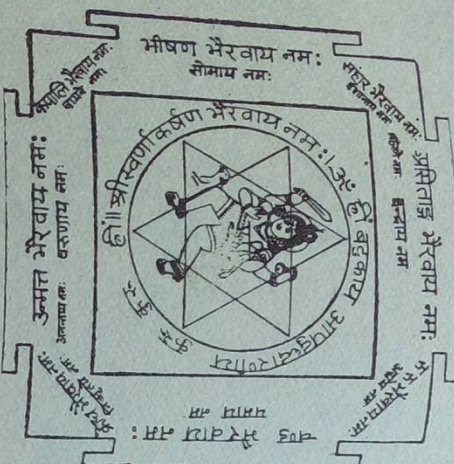
ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं हूं सः वं आपदुद्धारणाय अजायलब्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्र्य विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः।

इस मन्त्र के दस हजार जाप व दशांश हवन करने से व्यक्ति के ऊपर किये गये कामण तथा दरिद्रता व ऋण का नाश होता है। व्यक्ति को सर्वविध सुख-सम्पन्नता व स्वर्ण की प्राप्ति होती है। यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की अष्टमी से चतुर्दशीपर्यन्त विशेष फलदायी रहता है तथा हवन में पायस, बिल्व समिधायें व कमलपुष्प अभीष्ट धन को देने वाले कहे गये हैं।

* मस्सों पर टोटका—

शरीर पर जितने तिल हों, उतने ही साबित उड़द के दाने, रविवार की रात्रि को एक काले कपड़े के बीच में गांठ बांधकर इधर-उधर दो खाली गांठें और लगा दी जायें। अब इस कपड़े को सिरहाने रखकर व्यक्ति सो जावे। प्रातः तड़के बिना किसी से बोले, टोके, कपड़े को जमीन पर बिछा ले और तीन बार उस पर चले। फिर चुपचाप कपड़े को कुएं में फेंक दे। उड़द के दाने सड़ते जायेंगे और मस्से सूखते जायेंगे।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

वाहन दुर्घटनानाशक अद्भुत यन्त्र
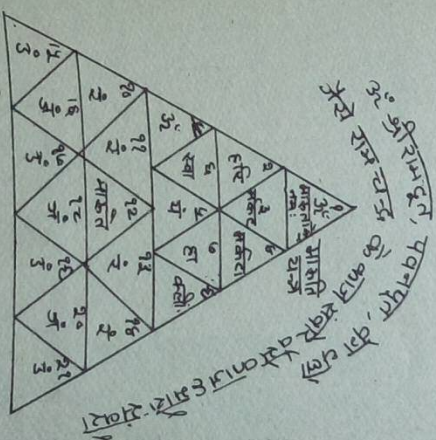
दुर्घटनानाशक इस शाबर यन्त्र का प्रयोग अमोघ है। नया वाहन खरीदते ही लोग इसे अपने वाहन (ट्रक, बस, कार, स्कूटर) के अगले हिस्से में लगाते हैं तथा उनकी यह मान्यता है कि वायुपुत्र हनुमान की कृपा से उनके वाहन अचानक दुर्घटनाग्रस्त नहीं होते, आई विपत्ति टल जाती है तथा वाहन ठीक समय पर लक्षित स्थान पर पहुंच जाता है।

यह तो सर्व विदित है कि महाभारत में वीरवर अर्जुन के रथ के अग्र भाग पर हनुमान ध्वज व ऐसा ही कोई यन्त्र रहा होगा जिसके कारण सम्पूर्ण युद्ध के दौरान अर्जुन का रथ जरा-सा भी क्षतविक्षत नहीं हो पाया।

विधि—

किसी भी मंगलवार के दिन हनुमान मंदिर में जाकर इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से बनावें या ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करावें। इस यन्त्र के मूलमन्त्र का 1008 जप करें। गुड़ या नैवेद्य का भोग हनुमानजी को लगावें। सिन्दूर व लाल पुष्प यन्त्र पर चढ़ावें। तत्पश्चात् श्रेष्ठ चौघड़िये में यन्त्र को अपने वाहन पर लगावें एवं इसका चमत्कार देखें।

मूलमन्त्र—

ॐ मारुतात्मने नमः हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा,
ॐ क्लीं रं रं मारुते रं रं उं जं उं जं उं जं उं।

इस प्रकार से यह यन्त्र वाहन के लिए कवच का काम करता है क्योंकि इसके

लगाने से वाहन अभिमन्त्रित व सुरक्षित होकर, अनुकूल लाभ देने लग जाता है—यह बात पूर्णतः परीक्षित व सत्य है। इसे गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पूज्य गुरुवर श्री द्विवेदी के निर्देशन में कुछ मारुति यन्त्र बनाये गये हैं। इच्छुक व्यक्ति यह यन्त्र अज्ञातदर्शन कार्यालय से सम्पर्क करके प्राप्त कर सकते हैं।

—सत्यवीर शास्त्री

घण्टाकर्ण महावीर

हिन्दुओं की चौंसठयोगिनी एवं बावन वीर में से यह एक महावीर घण्टाकर्ण (बेताल) है। परवर्ती जैन धर्मावलम्बियों ने इस वीर को अपने धर्म में भी बड़ा भारी स्थान दिया। ऐसी मान्यता है कि घण्टा की आवाज कानों तक पहुंचे इतनी देरी में ही इस महावीर की शक्ति काम कर जाती है। सबसे पहले भोजपत्र पर अष्टगन्ध से घण्टाकर्ण यन्त्र बनाकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करें। तत्पश्चात् ग्रहणकाल अथवा होली, दीपावली जैसे विशिष्ट अवसर पर दस हजार जाप करके मन्त्र सिद्ध कर लें। भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी, नजर-टोटका एवं पिशाच-बाधा में इस वीर का मन्त्र तत्काल काम करता है। चाकू या मोरपंख के द्वारा इसके मन्त्र से झाड़ फूंक करने पर बाधित व्यक्ति को तत्काल राहत मिलती है।

इसका मूलमन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—

ॐ घण्टाकर्णो महावीरः सर्व व्याधि विनाशकम्, विस्फोटकभयम् प्राप्ते रक्ष-रक्ष महाबलः। यत्रत्वंतिष्ठसेदेव लिखितोक्षर पंक्तिभिः [illegible] वात पित्त कफोद्भवः तत्र राजभयम् नास्ति यान्ति कर्णे जपाक्षरं शाकिनी भूत वेताला, राक्षसा पन्नगा शिवा, नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दंशनम्, अग्नि चोर भयम् नास्ति। ॐ ह्रीं घण्टाकर्णो नमोस्तुते ठः ठः ठः स्वाहा।

Shakti Abdul Gafar Majhikhanda, Niali,odisha

विशेष—

राजकामना, लक्ष्मीकामना और खासकर शत्रु-नाश कामना में और भूत-पलीत कामना में जल मंत्रितकर पिलाने से भूत-प्रेत, रोग एवं अकाल मृत्यु से राहत मिलती है। इस मन्त्र को सिद्ध करने पर दशांश आहुति गुग्गल धूप से दी जाती है तथा झाड़-फूंक के समय गुग्गल धूप देने से मन्त्र का असर जल्दी व अधिक प्रभावशाली होता देखा गया है।

* घण्टाकर्ण महायन्त्र—

ॐ घण्टाकर्णो महावीरा (अमुकस्य/मम) सर्वोपद्रवं नाशनम् कुरु-कुरु स्वाहा।

फल—

एक लाख मन्त्र जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसमें अमुकस्य शब्द के स्थान पर व्यक्ति का नाम बोलना चाहिए और स्वयं की उन्नति के लिए उस स्थान पर स्वयं का नाम अथवा मम शब्द का उच्चारण करना चाहिए। इस मन्त्र के प्रयोग से सभी प्रकार के उपद्रवों का नाश होकर व्यक्तिविशेष की उन्नति होती है।

* कामण-टुमण दूर करने का मन्त्र—

अमुक जातकस्य उपरि चिन्ते चिन्तावे, जड़े-जड़ावे, धरे-धारवे, अस्य उपरि कृत कामण-टुमण, नजर-टोकार मध्ये, डाकिनी-शाकिनी मध्ये, छल मध्ये, छिद्र मध्ये, इष्ट मध्ये, मूठ मध्ये, ताव-तेजारा मध्ये, रात-दिन, वेला-कुवेला मध्ये, यत दोषं जातं, तत् परिहर-परिहर, ह्रीं घंटाकर्ण नमोस्तुते। अस्य सर्वान् रोगान्, दोषान्, निवारय-निवारय, दूरीकुरु-दूरीकुरु, ठः ठः ठः स्वाहा।

लक्ष्मी प्राप्ति का घण्टाकर्ण मन्त्र—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठं ॐ घण्टाकर्ण महावीर लक्ष्मी पूरय-पूरय सुख सौभाग्य कुरु-कुरु स्वाहा।

धन त्रयोदशी को 40 माला, रूप चतुर्दशी को 42 और दीपावली के दिन 43 माला, उत्तर दिशा की तरफ बैठकर जपें, लाल पीताम्बर, मूंगे की माला व रक्तचन्दन से घण्टाकर्ण यंत्र की पूजा करें, धूप बत्तीसा या चन्दन अगरबत्ती जलावें, ऐसा करने पर वीर घण्टाकर्ण की कृपा से शीघ्र लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

संतान-यन्त्र

संतान प्राप्ति के लिए अधिकांश प्रयोगों में **ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्दः वासुदेव जगत्पते देहि में तनयं कृष्ण त्वामह शरणागतः।** इस मंत्र से वेष्ठित षट्कोणात्मक यंत्र बनावें तथा मन्त्र के दस हजार जप व हवन करने पर अपेक्षित फल जरूर मिलता है। इसके अतिरिक्त निम्न प्रयोग भी करें।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

रविवार के दिन सुगन्ध रासना (सर्पाक्षी) को जड़ सहित उखाड़कर लावें। उसके पत्ते व जड़ को दस वर्ष तक की अवस्था वाली लड़की से एक ही रंग की गाय के दूध में एक तोला पिसवाकर सात दिन तक लें, ऊपर से पाव भर दूध ले लें। एक सप्ताह तक ऐसा करने तथा हलका भोजन करने से बंध्या पुत्रवती होती है।

रुद्राक्ष और सुगन्ध रासना को (एक रंग की) गाय के दूध में कन्या से पिसवाकर एक सप्ताह पान करने से पुत्र लाभ होता है। ये योग ऋतुकाल में किये जाते हैं।

रविवार पुष्य नक्षत्र के योग में सहदेई की जड़ प्रातःकाल उखाड़ लावें। उसे छाछ में सुखा, चूर्ण करके उपर्युक्त विधि से लेनी चाहिये।

जीवोपोता की जड़ गाय के दूध में पीने से गर्भधारण कराती है।

पीपल की जटा एक रंग के गाय के दूध में अथवा स्त्री के दूध में लेने से बंध्या भी गर्भवती होती है। जटा वाला पीपल बहुत कठिनता से मिलता है। ऐसा ही एक दूसरा पेड़ और होता है, जिसके जटा आई रहती है इसलिए जानकार आदमी से परीक्षा करा लेनी चाहिए।

वंध्या के भी पुत्र होवे

भोजपत्र पर सर्पाकृति, फिर सामने 'ह्रीं' कारयुक्त मयूर की आकृति बनावें। मयूर के उदर में षट्कोण पर निम्न मन्त्र लिखें—'**ॐ ह्रीं गं गणपतये मत्कुले पुत्रं देहि-देहि स्वाहाः।**' इस मन्त्र के दस हजार जप करें, दशांश हवन करें, यन्त्र को कमर में बांधकर पति के साथ रमण करें तो निश्चित् रूप से वन्ध्या के भी पुत्र होता है।

प्राचीन पाण्डुलिपियों से प्राप्त कतिपय दुर्लभ-यन्त्र

अपने नाम से अनुकूल दिन देखकर नारियल छीलकर या गोटे पर केसर से यह यन्त्र लिखना। उस गोटे के पास सवासेर चावल, दो सुपारी तथा एक यन्त्र ऐसा ही भोजपत्र पर बनाकर रखना। धूप, दीप कर, जिसको वश में करना हो, उसका ध्यान धरना। तत्पश्चात् एक सेर प्रमाण से मिष्टान या लड्डू बनावें, भोग धरें, उसमें नारियल या गोटे को बारीक छीलकर मिला दें। दूसरा यन्त्र स्त्री अपनी चोली में रखकर मिठाई पति को खिलावे, तो पति वशीभूत हो जाये। यदि यन्त्र सिर पर रखकर, मिठाई सासु को खिलावे, तो सासु वश में हो जायेगी। यदि यन्त्र कण्ठ (गले) में रखकर, मिठाई जेठ, देवर व ननद को खिलावे, तो सभी वशीभूत होकर, आज्ञा का पालन करने लग जाते हैं। चावल, सुपारी, दक्षिणा किसी पूजनीय ब्राह्मण को भेंट कर दें।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

इस यन्त्र को भोजपत्र पर बनाकर चोली में रखने से पति वश में रहता है।

प्रसव के पहले पुत्र-पुत्री जानने का यंत्र—

एक लकड़ी के पाटे पर कुंकुम से यह यन्त्र बनावें। गर्भवती स्त्री के ऊपर एक सुपारी सात बार फिराकर, उसके हाथ से सुपारी यन्त्र के किसी भी कोष्टक में रखावें। यदि दोकी व तुर्की अक्षर पर सुपारी रखे, तो कन्या तथा हीं, ऊ, 3 व 5 पर सुपारी रखे तो पुत्र होवे। बाकी में गर्भपात। यह प्रयोग निःसंदेह व सत्य है।

शनिवार की रात्रि को यह यन्त्र तांबे के पत्र पर लिखें। शुद्ध गौघृत से दीपक जलाकर इस यन्त्र से काजल बनावें। यह काजल फिर जिस स्त्री को वश में करना हो, उसकी पल्ले पर लगा दे या किसी विधि से उसके आंख में लगा दें, वह वशीभूत हो जायेगी।
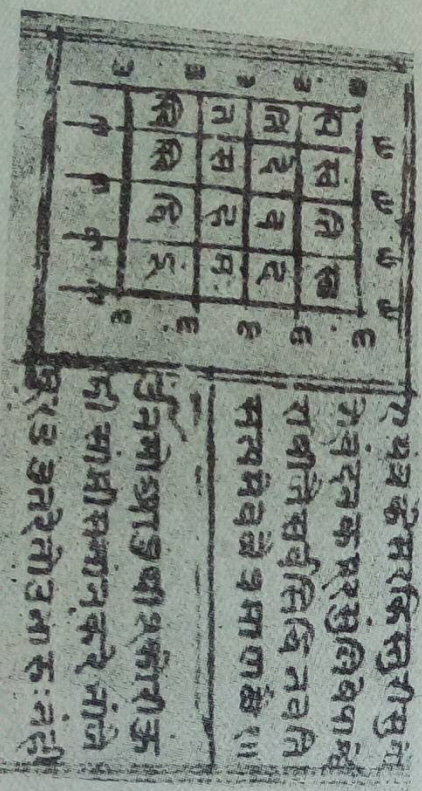
शुभ मुहूर्त में इस यन्त्र को भोजपत्र पर केसर, कस्तूरी, गोरोचन, चंदन, कपूर से लिखकर अपने पास रखें, तो सब प्रकार से सिद्धि होकर कार्य में सफलता मिलती है। यह 'सर्वसिद्धिदायक' यन्त्र का सत्य, सही व प्रामाणिक प्रयोग है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

* शीघ्र विवाह हेतु सफल प्रयोग—

यह यन्त्र ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करावें अथवा भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखें। धूप-दीप जलाकर मन्त्र का पंचोपचार पूजन करके, हाथ में जल लेकर संकल्प करें:

......अमुकं गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक शर्माऽहं, (अमुक) कन्या प्राप्तयर्थे विश्वावसुगंधर्वराजमत्रस्य जपमहं करिष्ये। हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

ॐ अस्य श्री राजगंधर्वमंत्रस्य, मदनऋषिः, अनुष्टुपछंदः, राजगंधर्वदेवता। ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम् ममकृते (अमुक) कन्या शीघ्र प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ विश्वासु अंगुष्टाभ्यां नमः ॐ राजगंधर्व तर्जनीभ्यां नमः ॐ कन्यासहस्त्र संवृतः मध्यमाभ्यां नमः ॐ कन्या स्वरूपं ममनिश्चिता अनामिकाभ्यां नमः ॐ (अमुकी) कन्या प्राप्त्यर्थ कनिष्ठिकाभ्यां नमः तां मां प्रयच्छ-प्रयच्छ करतलकरपृष्ठाभयां नमः। इत्थं हृदयादोन्यासकृत्वा।

ध्यान—ईश्वरशीर्ष समुत्पन्नां मदनविह्वललालसा,
विद्याधरः कुलाललितां जयति त्रैलोक्य मोहनी,
बाला श्रीमत्कल्पतरोर्मूलैगणीमण्डप मध्यमां,
सिंहासना समारूढा राजविश्वासु प्रदां,
कोटि कन्दर्प लावण्यं विवाहार्थ विचिन्तयेत्।

मूलमंत्र—

ॐ विश्वासु राजगंधर्व कन्यासालंकृता सहस्त्र संवृताममाभिपिसितां (अमुक नाम्नी) प्रयच्छ-प्रयच्छ स्वाहा।

एक मास तक सायंकाल 24 माला नित्य जपें। दशांश का लाजा होम (चावल व शमीपत्र मिश्रित) करें। 24 ब्राह्मणों को भोजन करावें, तो एक महीने के अंदर इच्छित युवती से विवाह होता है। यह पांच-सात बार आजमाइश किया हुआ प्रयोग है।

—स्व. वकील श्री प्रतापचन्द दवे (बोलात्तरा)

भूत-प्रेत लगाने का यंत्र—

यह भूत प्रेत लगाने का यन्त्र है। रविवार को भोजपत्र पर लिखकर धूप, लोबान देकर इस यन्त्र को जिसके घर में फेंक दें, वहाँ पर भूत-प्रेत, डाकिनी, शाकिनी की छाया पड़ जायेगी।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

इस यन्त्र को सादे पत्र पर कोयले से लिखकर जला दें तो भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी सबका नाश हो जाता है।

यह 'भूत-प्रेत जलाने का यंत्र' है। इस यन्त्र को सादे कागज पर काली स्याही

में बनावें। जिस व्यक्ति को प्रेत लगा हो उसका नाम बीच के खाली कोष्ठक में लिख दें। कोड़ी के फूल 27 लेकर प्रेतग्रसित व्यक्ति के ऊपर से उवारें, फूल उवार कर यन्त्र पर रखें। रखते ही छल-बल प्रकट होकर बोलेगा। प्रेतग्रसित व्यक्ति को यन्त्र के सामने देखने को कहें, तथा प्रेत को आज्ञा दें कि यन्त्र पर उतरे। तुरन्त यन्त्र को पैर की तरफ से जलावें, उसके साथ ही प्रेत चिल्लाता हुआ जल जायेगा।
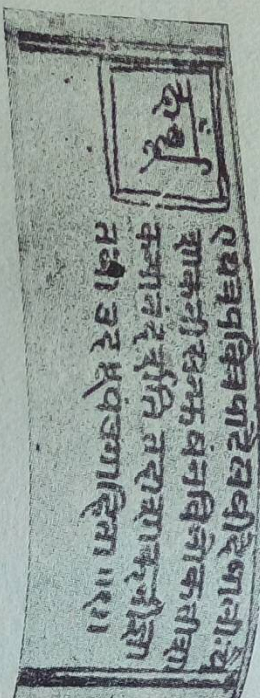
इस यन्त्र को पवित्र पाटे पर लिखकर जिस स्त्री को प्रेत लगा हो, देखने को कहें। यदि स्त्री इस यन्त्र की तरफ न देखे तो निश्चित् समझें कि उस पर शाकिनी की छाया है। फिर उसे गुग्गल, धूप व मिर्च की धूनी दें, तब वह बोलेगी।
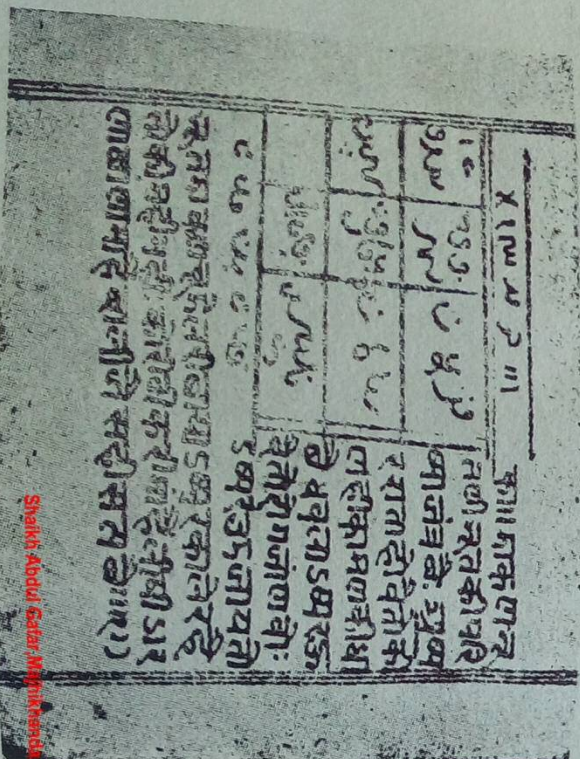
कोरी ठीकरी प्रेतग्रसित व्यक्ति पर सात बार उवारें। उस ठीकरी पर कोयले

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

से उपर्युक्त यन्त्र बनावें तथा आरणियां छाणा (कण्डे) ऊपर रखकर उस यन्त्र को जलावें। यदि अक्षर लाल पड़ जायें तो किसी ने कामण किया, यदि सफेद हो जायें, तो रोगी की छाया है, यदि अक्षर उड़ जायें तो भूत, डाकण व चुडैल की छाया समझनी, यदि अक्षर यथावत् काले रहें तो कुछ भी नहीं है, ऐसा समझना चाहिए।
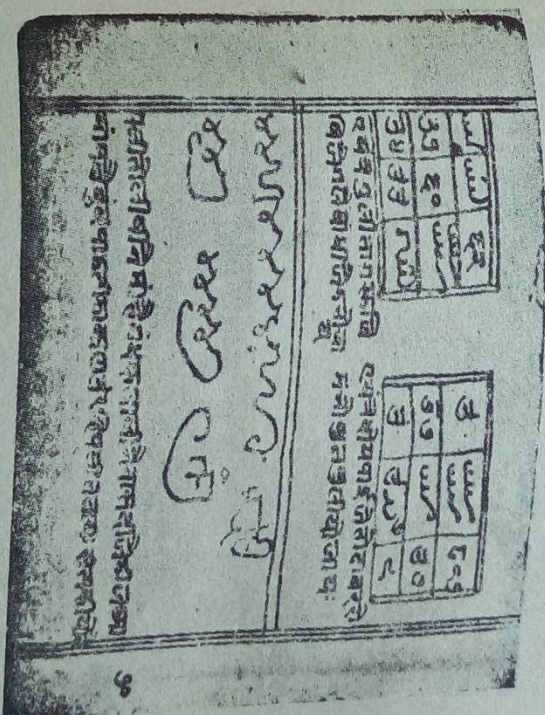
इस पाण्डुलिपि में तीन यन्त्र हैं। दाईं तरफ के छोटे यन्त्र को गुलीताग से लिखकर गले में बांधें तो बच्चे को अकारण हिचकियां आनी बन्द हो जाती हैं। बाईं तरफ वाले यन्त्र को धोकर पिलाने से बच्चे को बड़ी खांसी की तकलीफ दूर हो जाती है। तीसरे वाले बड़े यन्त्र को लिखकर उसका पलीता बनावें, अन्दर कुछ गंधक डाल दें। प्रेतग्रसित व्यक्ति के शरीर में ज्योंही प्रेत का आवेश हो, इस पलीते को जला दें। डाकण, शाकण, प्रेत, पिशाच चिल्लाते हुए या तो भाग जायेंगे या फिर जल जायेंगे। यह प्रयोग सही है।

ऊपर वाले यन्त्र को सादे कागज पर कुंकुम से बनावें तथा रविवार के दिन लिख, जिस घर में रख दें वहां पर से भूत-प्रेत, डाकन-शाकन इत्यादि सभी के उपद्रवों का नाश हो जाता है, यह प्रयोग अनुभूत व सत्य है।

नीचे लिखे दूसरे अरबी भाषा वाले यन्त्र को सुथार के बसोते पर अष्टगंध से लिखें फिर आरणियां छाणा (जंगली कण्डे) में जलाकर उसे गर्म करें। तीन दिन ऐसा प्रयोग नित्य करने पर सारे कामण दोष मिट जाते हैं।

ज्वर-नाश का टोटका—

रविवार को आक की जड़ उखाड़कर कान में बांधने से अनेक प्रकार के ज्वरों में लाभ मिलता है। इसी दिन प्रातःकाल बिना टोके निर्गुन्डी और सहदेवी की जड़ को कमर में बांधने से भी ज्वर शांत होता है। चौलाई की जड़ सिर में बांधने से प्रत्येक प्रकार के असाध्य ज्वर में आशातीत लाभ मिलता है।

Shakti Sodh Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

उपर्युक्त यन्त्र के दो पलीते कागज पर बनावें। पहले पलीते को रुई में लपेटकर, गौघृत से उसकी बत्ती बनाकर दीपक में रखें, दूसरा पलीता भोजन करते हुए आदमी के हाथ में देकर चौक में जलते हुए दीपक की तरफ बैठ, व फिर उसे बत्तीवाला पलीता दिखावें, देखते ही छल बल शरीर में आकर प्रकट होगा। फिर उससे वचन लेकर चाहे तो छोड़ दें, चाहे जला दें।

कीटाणु-रक्षा के लिये टोटका—

जन्म लेने के तुरन्त पश्चात् यदि शिशु के शरीर पर मेहंदी का लेप करके कुछ समय पश्चात् नहलाने से उसकी त्वचा कीटाणुरक्षक बन जाती है। उसकी त्वचा पर किसी भी संक्रामक रोग का प्रभाव हो नहीं पाता।

इसी प्रकार चेचक के रोगी के तलओं से मेहंदी का लेप करते रहने से रोगी के नेत्र सुरक्षित रहते हैं।
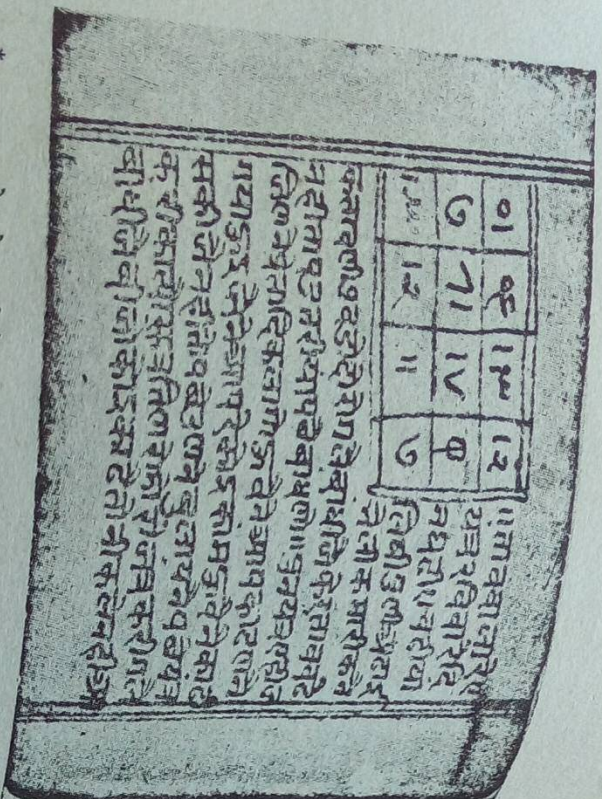
* इस यन्त्र के दो कार्य हैं। जिसको एकातरा बुखार आता हो उसके लिए रविवार के दिन सवा घड़ी दिन चढ़ने पर क्वांरी कन्या से ढाई पूणी रूई का सूत कतावें। सूत सातवड़ा करके इस यन्त्र के चारों ओर लपेटकर रोगी के गले में बांधें फिर बुखार नहीं आयेगा। यह प्रयोग बुखार उतरने पर ही करें।

* जिसको प्रेत लगा हो, उस प्रेतग्रस्त व्यक्ति के गले में इसी यन्त्र की तांती कर पहना दें। भूतप्रेत बंध जायेगा तथा उसके शरीर से निकलकर भाग नहीं पायेगा।

आधा सिरदर्द पर टोटका—

सूर्योदय के साथ ही आधा सिरदर्द कितना असहनीय होता है इसे भुक्तभोगी ही जानते हैं। प्रातःकाल चौराहों पर बिना किसी के टोके दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके गुड़ की डली दांत से काटकर फेंकने से आधा सिर का दर्द चला जाता है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

दाढ़ व दाँत-दर्द दूर करने का यन्त्र—
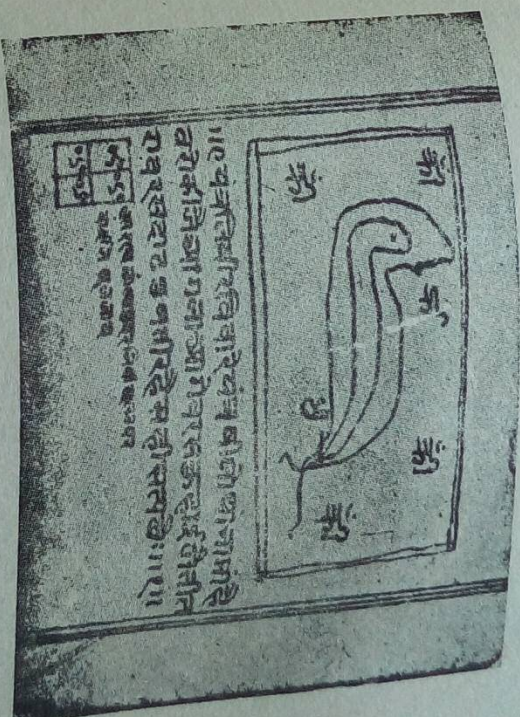
यह यंत्र रविवार के दिन लिखकर, थम्बा में ठोककर खीलें। जितनी बार ठोकेंगे, उतने वर्ष दाढ़ नहीं दुखेगी, यह सत्य है।

प्रसव-पीड़ा पर टोटका—

प्रसव-पीड़ा से पीड़ित महिला की कमर में नीम की जड़ अथवा सांप की केंचुली बांधने से तुरन्त पीड़ा में राहत होती है और सुगम प्रसव भी हो जाता है। लाल कपड़े में थोड़ा-सा नमक रखकर गर्भिणी के बायें हाथ में बांधने से भी आराम मिलता है।
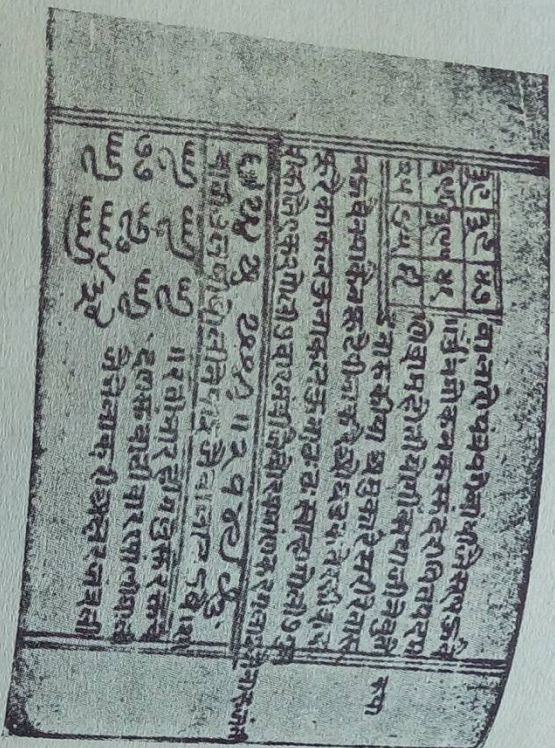
* यह बाला का यन्त्र है। इसको भोजपत्र पर लिखकर पैर में बांधें तथा गुड़ की सात डली बेर जितनी आकार में बनाकर मन्त्रित करें; एक-एक गोली, उवारकर मन्त्रित करें, फिर उन्हें गलावें, तो बाला गल जाये। मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ नमो कनक सुन्दरी पितपद्मनी द्राम होती योगी, वुआ जिणे कु तोड़, नारुकिया अमुका रे शरीरे नारु न होवे, न पाके, न फूटे, न पीड़ा करे, ओघड़ तेरी वाचा फुरे, काकल ऊना कलऊना ठः ठः स्वाहाः।

* दूसरा यन्त्र मुसलमानी अरबी भाषा में है। सादे कागज पर केसर से लिखकर, सात बार घोलकर पिला दें, बाला की पीड़ा न होवे।

* रत्ती भर हिंगलु और रक्तचंदन बांटकर पानी डालकर उससे यह यन्त्र लिखना, गुड़ में तीन गोली करके खिलाना, बाला समाप्त हो जाये।

कनखजूरे के काटने पर टोटका—

कनखजूरे के काटे हुए स्थान पर नीम की पत्तियां और सेंधा नमक एक पात्र में पीसकर लेप करना लाभप्रद है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

* यह एक दुर्लभ जैन यतियों द्वारा परीक्षित 'श्रीफल-यन्त्र' है। शुभ दिन व मुहूर्त में कुंकुम, गोरोचन से इस यन्त्र को लिखकर क्रय-विक्रय की जगह (हाट) के नीचे गाड़ दें, तो ग्राहक बहुत आवें।

* इस यन्त्र को थाली में लिखकर पिला दें। इक्कीस दिन तक लगातार पिलाने से वन्ध्या भी गर्भ धारण करे और पुत्र होवे।

* यह यन्त्र भोजपत्र पर लिखकर पीहर आई हुई स्त्री के गले में पहनावें तो वह ससुराल जावे। ससुराल के प्रति उसका लगाव हो जाता है।

नेत्र-रोग पर टोटका—

* मिट्टी के एक दिये को दहकती आग पर इतना तपाएं कि वह लाल हो जाये। इस सुर्ख लाल दिये पर गाय की बछिया का मूत्र इस तरह डालें कि धीरे-धीरे मूत्र की वाष्प निकले। नेत्र रोगी को दिये के पास इस प्रकार बैठा लें कि उसकी वाष्प का प्रभाव उसके नेत्रों पर पड़े। इस प्रकार उसके अनेक रोग नष्ट हो जायेंगे।

* नेत्र-पीड़ा पर, जिस नेत्र में पीड़ा हो उसके विपरीत पैर के अंगूठे पर आक के दूध से तर फाया रखें। यदि दोनों नेत्रों में कड़क, चुभन तथा पानी आदि बह रहा हो तो दोनों ही अंगूठों पर फाया रखें। 10-15 मिनट में ही लाभ होगा।

पञ्चागुंली कल्प—
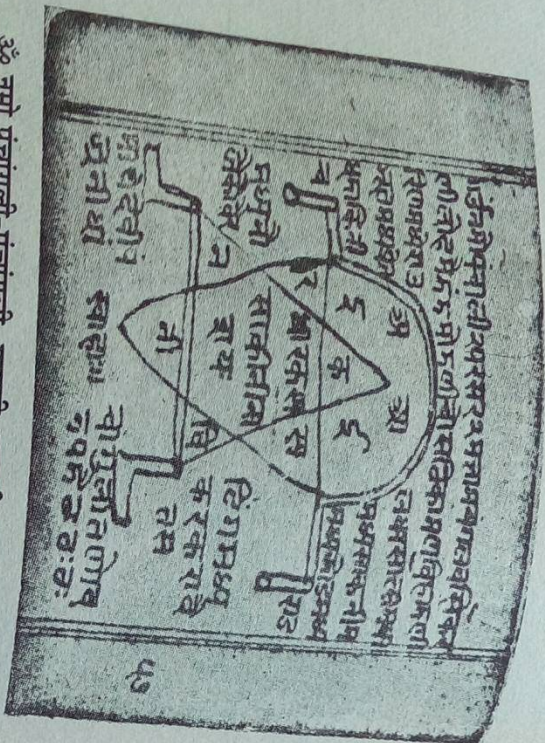
ॐ नमो पंचांगुली-पंचांगुली, परशरी, परशरी माता मंगल वशीकरनी, लोहमयं दण्ड मोदणी, चौसठ कामण विदारनी, रणमध्ये, रावलमध्ये, भूतमध्ये, प्रेतमध्ये, डाकणी-शाकनी मध्ये, छलछिद्रमध्ये, दिन-रातमध्ये, जो मुझ ऊपर बुरो कोई करे, करावे, जड़े-जड़ावे, तसु माथे पंचागुंली देवी तनो वज्र निघात पड़े, ॐ ठं ठं ठं स्वाहा।

(1) काला वस्त्र पहनकर काली बेल या नीम के नीचे 16,000 मन्त्रों का जाप करना, डेढ़ पहर रात्रि बीतने के पश्चात् जाप करना, 36,000 अथवा एक लाख जप करने पर विशेष लाभ मिलता है, इसके पश्चात् दशांश हवन करना, हवन में खली, कपासियां, करोलियां, गुग्गल, उड़द, गुड़ इत्यादि सामग्री का प्रयोग करना। इसके पश्चात् बारह अंगुल का लोहे का खीला लेना, खीले पर शत्रु का नाम लिखना, फिर मंत्र बोलते हुए तथा ठोकते हुए कील को जमीन में गाड़ दें। शत्रु का पराभव निश्चित होवे।

(2) मंगलवार से प्रारम्भ करके काले कपड़े पहन कर प्रतिदिन एक हजार जाप करें। आठवें दिन होम करें। शत्रु का नाम लेकर प्रातःकाल नौ बार तथा संध्या समय 108 बार ताली मारें, एक-एक ताली पर तीन बार मन्त्र बोलकर फूंक मारनी, शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाये तथा ग्राम, नगर छोड़कर चला जाये।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

(3) पैर की धूल से शत्रु का मारण प्रयोग—मंगलवार के दिन शत्रु के पैर

की धूल लेनी, मुंह से थूके हुए पान अथवा पान की पींक की धूल लेनी, कुम्हार के चाक की मिट्टी, इन तीनों वस्तुओं को लेकर पुतला बनावें। शत्रु के नाम की चिट्ठी लिखकर अन्दर डाल देना, खैर की लकड़ी की कील बनाकर 21 बार मन्त्र करके हृदयस्थल पर ठोकना, एक और आठ अंगुल की कील लोहे की भी उसी जगह पर ठोकनी, सस्स वेल, सरसू, नीमपत्र छोटे-छोटे पत्थर के कंकड़ से हवन करना, शत्रु का नाम लेना और वह पुतला जमीन में गाड़ देना। तीन दिन के अन्दर शत्रु मरता है। यह सही, सत्य है।

(4) **डाकिनी-शाकिनी की परीक्षा**—बायें हाथ की कनिष्ठिका अंगुली खूब बलवान् व्यक्ति हो उससे दबावें, जो मुंह से खून निकले तो समझो शाकिनी है। थूक निकले तो रोग। भस्मी अथवा कपासियां इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके खिलावें। अगर मीठा समझकर खाने लगे तो डाकिनी जानें। इसके पश्चात् कपासियां, गुग्गल, रोली, कणेर पुष्प के 108 बार होम मन्त्रों से करना तथा गुग्गल मन्त्र कर उसकी धूप देना। सकल दोष मिट जायें।

(5) इस मन्त्र से मन्त्रित कर नमक की डली, रविवार की रात को शुरू करके सात दिन तक बराबर शत्रु के घर के ऊपर डालें, तो घर सूना हो जाये।

(6) इसी मन्त्र से नमक की डली, दस बार अभिमन्त्रित करके जिसको पिला दें, वह वश में हो जाये।

(7) हमेशा यदि इस मन्त्र को पूजन में काम लें तो शरीर निरोग रहे तथा किसी प्रकार का छल-छिद्र नहीं लगे, शत्रु दबते रहें तथा घर में श्रेय व शांति स्थाई रूप से बनी रहती है।

सर्प-विष न चढ़ने के लिए टोटका—

1. चैत्र मास की मेष संक्रांति में मसूर की दाल के साथ नीम की पत्तियों को खाने से एक वर्ष तक विषैले-से-विषैले सर्प का भी विष नहीं चढ़ता।

२. प्रतिदिन प्रातःकाल सदैव कड़वी नीम की पत्तियां चबाने से सर्प का विष चढ़ने का भय नहीं रहता।

पंचदशी (पनरिया) यन्त्र—

अंक सिद्धि से प्रारम्भ होने वाले सभी यन्त्रों का यह राजा है। इस यन्त्रराज की महिमा अपार है। इस यन्त्र के प्रभाव से दुनिया का हर प्रकार का कार्य साधक आसानी से कर सकता है। यह यन्त्र हमारे पूज्य नानाजी स्व. वकील श्री प्रतापचन्दजी दवे को सिद्ध था। यही कारण है कि उनके जैसा प्रभावशाली व पराक्रमी व्यक्ति हमारी श्रीमाली जाति में अभी तक नहीं हुआ। पूज्य नानाजी समर्थ थे तथा उनके लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं था। प्रातःस्मरणीय पूज्य पिताजी ने उन्हीं से इस यन्त्र का क्रम प्राप्त करके इसे सिद्ध किया। पूज्य पिताश्री ने अपनी निजी पुस्तक में चेतावनी देते हुए यह लिखा है कि—''इस यन्त्र से दुष्ट कर्म न करें। यदि इस यन्त्र से दुष्ट कर्म करेगा, तो उसे गौहत्या, बालहत्या और ब्रह्महत्या का पाप लगेगा। उत्तम कर्म की इजाजत है। कार्य शुरू करने से पहले गुरु की आज्ञा अनिवार्य है।''

यन्त्रोद्धार—दोय [२] नव [९] चौथ [४] सप्तम [७], पंच [५] तृतीय [३] आण।
षष्ठ [६] एक [१] अरु अष्टमें [८], यन्त्र पनरियों आण॥
नव कोटा नव अंक है, नव दुर्गा को नाम।
नवविधि देणी नमो नमो, नवखंड भूमी समान॥
नव गुण उत्तम विप्र के, और भक्ति नव प्रकार।
नव ही अंक नवरत्न है, नव दुर्गा विस्तार॥
तिथि पन्द्रह और नव ग्रह, शिव-शक्ति का रूप।
या विध पनरियां यन्त्र को, जानत सुर-नर-भूप।

1. आतसी यन्त्र—
(मेष, सिंह, धन)
क्षत्रियाणां उत्तमा दक्षिण
(सूप की कलम से)
अग्नितत्त्व प्रधान—

२	७	६
९	५	१ ← द०
४	३	८

2. खाकी यन्त्र—
(वृष, कन्या, कमर)
वैश्यानां उत्तमा पश्चिमा
(स्वर्ण की कलम से)
पृथ्वीतत्त्व प्रधान—

२	९	४
७	५	३
६	१	८

↑प०

3. बादी यन्त्र—
(मिथुन, तुला, कुम्भ)
शूद्राणां कृते उत्तमा उत्तरा
वायुतत्त्व प्रधान—

८	१	६
उ० ३	५	७
४	९	२

4. आबी यन्त्र—
(कर्क, वृश्चिक, मीन)
ब्राह्मणां उत्तमा पूर्वा
(सेव की कलम से)
जलतत्त्व प्रधान—

पू०↓

४	९	२
३	५	७
८	१	६

उपर्युक्त चारों यन्त्र पनरियां या पंचदशी यन्त्र कहलाते हैं। इसमें शून्य नहीं होता एवं इसमें एक से लेकर नौ तक के सभी अंक काम में लिए गए हैं। इसके नवकोठे में नव अंक लिखे जाते हैं। कोई भी अंक दुबारा नहीं आता तथा इसमें आठ प्रकार से, पनरियां मिलता है। इस प्रकार से इसमें नव निधि व अष्टसिद्धि का प्रारूप बनता है। सनातनी इसे निवार्ण मन्त्र से जपते हैं क्योंकि उसमें नव ही अक्षर होते हैं जबकि शाक्त इसे ''नवदुर्गा प्रथम शैली पुत्री च....'' के मन्त्र से जपते हैं। जैनी लोग इसे नवकार यन्त्र के माध्यम से जपते हैं। सिद्ध यति नवनाथ से जपते हैं। मुसलमान भाई इसमें नवपीरों का नाम लिखते हैं, तो नजूमी इसमें नवग्रहों के नाम लिख देते हैं। इस प्रकार से यह सभी धर्मों में प्रचलित व प्रसिद्ध यन्त्र है। समस्त मण्डल नवखण्ड में विभाजित है, नवधा भक्ति का प्रारूप सर्वविदित है, ब्राह्मणों के लक्षण भी नव ही माने गए हैं, रत्न भी नव ही माने गए हैं। अखण्ड ब्रह्माण्ड को नियन्त्रित करने वाले नौ ग्रह शिवस्वरूप हैं एवं समस्त कालगणना 15 तिथियों में विभाजित होने से शक्तिस्वरूप है। जगतप्रसिद्ध तीन लोकों के प्रतीक नवखंड में विभाजित इस पनरिया यन्त्र के किसी भी तीन इकाई की जोड़ से 15 अंकों की प्राप्ति, वस्तुतः शिव व शक्ति का समन्वय स्वरूप माना गया है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

यह शुद्ध व सिद्ध पनरियां यन्त्र है। इसमें पनरियां आठ प्रकार से मिलता है। (अ) 2, 5, 8 (ब) 6, 5, 4 (स) 2, 7, 6 (द) 6, 1, 8 (य) 8, 3, 4 (र) 4, 9, 2 (ल) 7, 5, 3 (व) 1, 5, 9 तथा चार प्रकार से दसा, (अ) 7, 3 (ब) 9, 1 (स) 6, 4 (द) 8, 2 एवं दो प्रकार से बीसा, (अ)

7, 1, 3, 9 (ब) 2, 6, 8, 4 मिलता है। इस प्रकार से इस यन्त्र की कुल 14 कलाएं हुईं। बीच के कोठों में 5 की जगह यदि 10 का अंक रख दिया जाये तो छः प्रकार से बीसा, चार प्रकार से पनरिया और चार प्रकार से दसा मिलता है। इस प्रकार से कुल 14 कलाओं की इसमें पुनः स्थापना हो जाती है। मगर एक का अंक दुबारा आने से कुछ लोग यन्त्र को दूषित मानते हैं और फिर ऐसा करने से पांच का अंक टूटता है, जो कि सर्वसिद्धि को देने वाला है। नव अंक बिना बीसा नहीं बनता। ऐसे गिनने पर आठ ही अंक आते हैं। अतः पनरिया का यह प्रारूप ज्यादा शुद्ध है क्योंकि पांचा पनरिया का मूल है। यह यन्त्र त्रिगुणात्मक शक्ति वाला है, अर्थात् 10+15+20 कुल 45 जो कि 4+5=9 पुनः नौ की शक्ति में विलीन हो जाता है। इस प्रकार से यह 15 कलाओं वाला पनरिया बन गया है, इसमें निवार्णमन्त्र लिखने से यह चन्द्रमा की 16 कलाओं के समान, सोलह कलाओं वाला 'पनरिया-यन्त्र' बन जाता है।

वि ८	ऐं १	ण्डा ६
क्लीं ३	मुं ५	यै ७
चा ४	च्चै ९	ह्रीं २

विजयसिद्ध पनरिया।

इस प्रकार से बीजमन्त्रों सहित बने पनरिये यन्त्र की चौकी शुद्ध रजत पर बनाकर दाईं भुजा या दायें हाथ की अंगूठी में धारण की जाये तो व्यक्ति को सर्वत्र विजय की प्राप्ति होती है। अतः इसे 'विजयसिद्ध पनरिया यन्त्र' कहा गया है।

मूलमन्त्र—इस पंचदशी यन्त्र के मूल मन्त्र की जानकरी बिना यह यन्त्र जागृत नहीं होता। यन्त्रराज का मूलमन्त्र यह है—"**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं नमः।**" यह यन्त्र मुख्यतः चार प्रकार का होता है। आतसी, खाकी, वादी और आबी। अपनी-अपनी राशि के वर्ण व तत्त्वानुसार यन्त्र का प्रारूप बनाया गया है। अतः अपनी राशि के वर्ग का ही यन्त्र काम लें, दूसरा नहीं, यह शीघ्र सिद्धि का मूलमन्त्र है।

इस यन्त्र से धनलाभ, राजलाभ, शत्रु का नाश, पुत्रलाभ, बन्दी मोक्ष, देवदर्शन, वशीकरण इत्यादि कई प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं। यह यन्त्र विधिपूर्वक सवालक्ष बार लिखा जाता है। सवालक्ष को एक 'पुरश्चरण' कहते हैं। एक पुरश्चरण से यह आपका एक मनोवांछित कार्य कर देता है। वशीकरण हेतु यन्त्र में मायाबीज 'ह्रीं' लिखते रहें और लिखते समय मूलमन्त्र का उच्चारण भी करते रहें।

विधि—

लाल वस्त्र के आसन पर बैठें। धूप उत्तम सुगंधित लेवें। एकांत स्थान में प्रयोग करें। पहले उत्तम जगह को गोबर से लीपकर उस पर रक्तचन्दन अथवा केसर से मायाबीज सहित यन्त्र लिखकर उस पर गौघृत दीपक स्थापित करें। शुभ

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

कार्य में पूर्व व उत्तर की तरफ दीपक का मुख करें, अन्यथा पश्चिम या दक्षिण की तरफ मुख करें। मौली के तन्तु की 1008 तागे वाली अथवा 108 तागे वाली या फिर 18 तागे वाली बत्ती ही दीपक में प्रयोग करें। प्रयोग के दिनों में सात्विक भोजन करें। पूर्ण ब्रह्मचर्य रखें। क्षौर कार्य न करें। पान नहीं खावें। जिस जगह प्रयोग करें उसी स्थान पर भूमि शयन करें। यह यन्त्र भोजपत्र या कागज पर अष्टगंध से लिखें। एक हाथ चौड़ी आम की पाटी व एक फुट लम्बी लेवें। उसको कपूर से पांडु से पोत, अबीर, गुलाल, डाल अनार की कलम से लिखते रहें तो श्रेष्ठ है। सब कामना पूर्ण होती है, परन्तु कामना रूपी जो अंक और कलम बताई उसी से लिखें। एक जहां से यन्त्र शुरू होता है, यन्त्र का खास स्वरूप जीव है और नवा खास लक्ष्मीकामना के वास्ते है। सो लक्ष्मीकामना के लिए विपरीत यानि नवा से शुरू करें। फिर आठा, साता इस तरह क्रमवार अंक लेता हुआ एका पर आवे। कलम के रगड़ से गिरे हुए चूर्ण को आटे की गोली से बांधकर मछलियों को डाला करें। मछली गोली ग्रहण करे तो यन्त्र की सिद्धि जाननी, जो ग्रहण नहीं करे तो सिद्धि नहीं जाननी चाहिए। गोलियां गेहूं के आटे में मिष्टान्न सहित बांधें। चन्द्र स्वर में कार्य शुरू करें और जो चर कार्य हो तो सूर्य स्वर में कार्य प्रारम्भ करें। जो स्वर चलता हो उस तरफ का पैर पहले आसन पर रखें। सूर्य स्वर हो तो सम, चन्द्र स्वर हो तो विषम पैर उठाकर रखें। जप करें। दर्शन या दृष्टांत होता है तो जान लेना कार्य सिद्ध हुआ। डरावने दृश्य देखने पर धैर्य छोड़ें नहीं। कार्य सिद्ध होने पर दशांश मन्त्रों का हवन किया जाता है। उस दिन घर में क्षीर का भोजन बनाकर नव कन्याओं को खिलाया जाता है। दिनभर भजन, कीर्तन, साधु-सत्संग इत्यादि करें एवं फलसिद्धि को गुप्त रखें। 9 दिन तक प्रकट नहीं करें।

विविध प्रयोग—

1. यदि यह यन्त्र लिखकर अरटिया के बांधें फेरता रहे तथा अमुक व्यक्ति का नाम लिखकर फेरे तो वह व्यक्ति परदेश से घर आवे। 2. मारण में नीम की कलम से लिखकर हवन कर अग्नि में यन्त्र डालता रहे तो उस व्यक्ति के शरीर में आग-आग लगती है। 3. एक लाख बार लिखे तो बन्दी कारागार से मुक्त होकर घर को आता है। 4. दो लाख का प्रयोग करने पर वाहन, भूमि व राज्य की प्राप्ति होती है। 5. तीन लाख के निर्विघ्न प्रयोग करने पर व्यक्ति में स्वयं शाप देने की शक्ति आ जाती है। 6. पांच लाख के प्रयोग करने पर 'वाक्सिद्धि' की प्राप्ति होती है। 7. छः लाख यन्त्रों को लिख-लिखकर नदी में प्रवाहित करता रहे तो नदी के समीपवर्ती भूखण्ड के सभी प्राणी वशीभूत हो जाते हैं। 8. सात लाख प्रयोग करने पर साक्षात् लक्ष्मी के दर्शन होते हैं तथा व्यक्ति अपने जीवनकाल में अखण्ड

राज्य लक्ष्मी व ऐश्वर्य का भोग करता है। 9. आठ लाख प्रयोग करने पर अष्टसिद्धि की प्राप्ति होती है। 10. नौ-दस हजार के प्रयोग करने पर छोटा-मोटा कार्य सिद्ध हो जाता है। 11. कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को यदि वटवृक्ष के तले इस यन्त्र को एक हजार बार भूमि पर दाड़िम की कलम से लिखा जाये तो उस व्यक्ति के द्वारा महान् धार्मिक कार्य की सिद्धि होती है। 12. यदि इस यन्त्र को एक हजार बार भूमि पर लिखकर उस भूमि के नीचे गौमूत्र, मनशिल, कपूर, तगर से मिश्रित स्याही के द्वारा भोजपत्र पर लिखा हुआ यन्त्र गाड़ दें तो निश्चय रूप से उस भूमि पर रहने वाले व्यक्ति की दरिद्रता का नाश होता है। 13. बिल्वपत्र, रसगन्धा, हरताल व मनशिला की स्याही, बिल्वशाखा की लेखनी से दो हजार यन्त्र लिखें और पवित्र स्थान में गाड़ दें तो सरस्वती प्रसन्न होती है एवं व्यक्ति को वचनसिद्धि होने लगती है। 14. आंकड़े के पत्ते पर यदि कौवे के पंख से इस यन्त्र को दस हजार एक सौ आठ बार लिखें, अमुक शत्रु का ध्यान करके लिखें तथा यन्त्र के अन्त में 'हुं फट् ठं ठः' शब्द का उच्चारण करें तो इच्छित व्यक्ति का उच्चाटन हो जाता है। 15. इस यन्त्र को सिद्ध करके अष्टधातु में बनाकर घर में रखना चाहिए। यदि उसका नित्य पूजन, दर्शन करें तो उस घर में प्रेतबाधा से ग्रसित व्यक्ति यदि आ जाता है तो बाधा मुक्त हो जाता है। 16. गर्भकाल में प्रसववेदना से पीड़ित किसी स्त्री को यदि यन्त्र से प्रक्षालित जल पिला दिया जाये, तो प्रसव सुखपूर्वक व शीघ्र होता है। सितबंर, 1975 की बात है कि जोधपुर के एक उच्च पदस्थ अधिकारी की पत्नी स्थानीय उम्मेद अस्पताल में भयंकर प्रसव वेदना से चिल्ला रही थी। डॉक्टर ने घोषित किया कि गर्भ में मरी हुई संतान है, जिसके कारण स्त्री के शरीर में विष फैल रहा है तथा शीघ्र ही ऑपरेशन कर, गर्भस्थ शिशु को काटकर निकाला जाना बहुत जरूरी है। स्थिति बड़ी विकट थी। ऐसी हालत में जच्चा-बच्चा दोनों की मृत्यु निश्चित थी। अपने भविष्य के प्रति चिन्तातुर पति महोदय पिताजी के पास आकर फूट-फूटकर रोने लगे। पिताजी ने उन्हें सांत्वना से आशीर्वाद दिया तथा यन्त्र से प्रक्षालित जल को अपने हाथों से गर्भ प्रसव वेदनाग्रसित स्त्री को पिलाया। उसी वक्त चमत्कार हुआ। बिना ऑपरेशन के प्रसव हुआ, वह भी जीवित कन्या। वह कन्या आज भी हृष्ट-पुष्ट है तथा उस दम्पत्ति का रोम-रोम पिताजी के प्रति कृतज्ञता से आप्लावित है। प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? साधक स्वयं इसकी सिद्धि कर विचित्र अनुभव को प्राप्त करेंगे तथा अपने अनुभव से हमें भी अवगत करायेंगे। ऐसी आशा है। 17. इसके अलावा इस महान् सिद्धिदायक यन्त्र के अलग-अलग वार पर अलग-अलग प्रयोग भी हैं जो निम्नलिखित हैं—

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

रविवारे अर्क दुग्धे, श्मशान भस्मना लिखेत्
यस्य वर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत्
विक्षिप्तो जायते मर्त्य अष्टोत्तर शतं जपेत्

पञ्चदशी विलोमं तु संध्याकाले विशेषतः ॥१६॥
चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेत दुर्वा च केसरं
श्वेत गुञ्जा समायुक्तं तन्मध्ये कपिलापयः
यन्त्रेण लिखितं सम्यक् बाहुकण्ठे च धारयेत्।
राजानं वशमाप्नोति अन्य लोकेषु का कथा ॥१७॥
भौमवारे गृहीत्वा तु काक पक्षं स रक्तकं
यन्त्रेण यस्य नामानि लिखिते मौन तो नरः
तस्य द्वारे खनेद्भूमौ उल्लंघनोच्चाटनो भवेत्।
कुटुम्बादि नरा सर्वे यदि शक्र समो रिपुः ॥१८॥
बुधवारे गृहीत्वा तु नागकेसर रोचनं।
सर्षपा तैल संयुक्त लिखित्वा यंत्रमुत्तमं
वर्तिका क्रियते तस्य ज्वालयेन्मन्त्र संयुतः
नृकपालेकजल तु चाञ्जयेन्मोहयतेज्जनान् ॥१९॥
गुरुवारे हरिद्रा च रोचनं नगरं धृतं॥
यन्त्रराजं समालेख्य तस्य नामस्य मध्यम
आसने लिखते चैव सर्वाग्राकर्षण भवेत् ॥२०॥
भृगुवारे सकर्पूरं वच कुष्ट मधुः समं
लिखित यंत्रराजानं भूर्य पत्रेषु शोभने
दुष्टा स्त्री वशमायाति मानैरपि धनैरपि ॥२१॥

शनिवारे चित्ता काष्ठं पञ्चदशी विलोकिकं
लिख्यते यस्य वर्णानि श्मशाने निखनेन्दुवि
कुक्कुटस्यनुरक्तेन मृयते नात्र संशयः ॥२२॥

यन्त्रराज बीसा—

कहावत प्रसिद्ध है—"जिसके पास हो बीसा, उसका क्या करे जगदीशा।" बीसा के प्रभाव से संसार की हर मुश्किल आसान होती देखी गई है, इसलिए इसको 'यन्त्रराज बीसा' कहा जाता है।

यन्त्रोद्धार—नवकोठा, अठ अंक है और खुणा अठाईस जाण।
पांचा जिसमें न हुवे, बीसा यन्त्र प्रमाण॥
चार अंक कित ही गिणो, उत ही होवे बीस।
एका से प्रारम्भ करो, सब आंकण को ईस॥
आंक बणे, यन्त्र बणे, कह हकीकत सोय।

चार तरह दसा बणे, दाये पनरियां होय॥
पंच नव को ध्यान कर, अष्ट सिद्धि मन आण।
नव दुर्गा, दस महाविद्या को यह यन्त्र प्रमाण॥
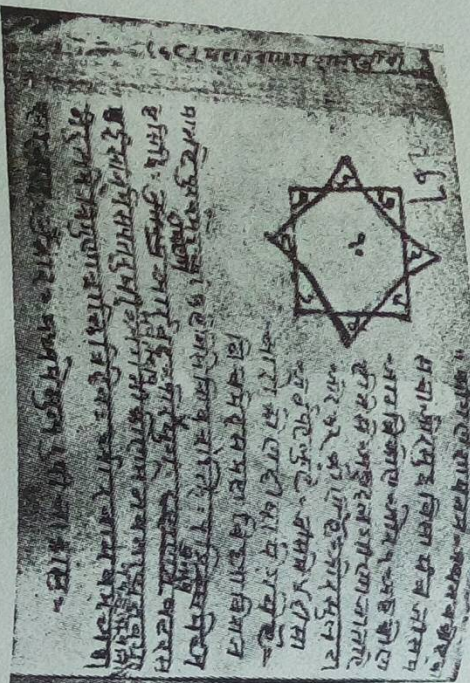
यह पूज्य नानाजी की डायरी से प्राप्त सही और शुद्ध बीसा है। इस बीसायन्त्र में आठ त्रिकोण हैं और बृहद् अष्टकोण होने से यह '**अष्टदलात्मक बीसा**' कहा गया है। इसमें कुल 32 कोण हैं। इसमें पूर्व पश्चिमादि चार दिशाओं के चार त्रिकोण दिखलाए गए हैं और बाकी चार चतुर्भुज में बने त्रिकोणों से ईशान्यादि चार दिशाओं की सिद्धि होती है। बीच में दस महाविद्या विराजमान हैं। पूर्व दिशा के त्रिकोण में दो का अंक शिव-शक्ति का प्रतीक है। पश्चिम दिशा में आठा, अष्टसिद्धि का द्योतक है, दक्षिण दिशा का चार अंक चारों युग व चारों वेदों का प्रतीक है, उत्तर में छः का अंक षट्रस, ईशान्य में सात का अंक सप्तऋषि व सप्तद्वीपी वसुंधरा का प्रतीक है, अग्निकोण में नवा नवखंड नवनाथ, नवग्रह, नैऋत्य में तिया त्रिदेव, त्रिगुणात्मक शक्ति और वायव्य में एका अक्षरब्रह्म, एक ईश्वर ओंकार का प्रतीक है, मध्य में शून्यरूपी आकाश है, इस प्रकार से बीसा का स्वरूप प्राचीन ऋषियों ने बताया है।

इसके चारों दिशाओं के तीन-तीन अंक मिलाने से चार प्रकार से बीसा, (अ) 2, 10, 8 (ब) 6, 10, 4 (स) 1, 10, 9 (द) 7, 10, 3 तथा चारों कोणों के चार अंक मिलाने से दो तरफ बीसा, (अ) 2, 6, 8, 4 (ब) 7, 1, 3, 9 इस प्रकार कुल छः तरह से बीसा मिलता है। इस बीसा यन्त्र से कुल बीस कलाएं इस प्रकार से बनती हैं। * 6 प्रकार से बीसा * मध्य का अंक छोड़ने से (अ)

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda-Niali,odisha

2+8 (ब) 6+4 (स) 1+9 (द) 7+3 चार प्रकार से दसा बनता है। * दो दिशा और एक कोण के मिलाने से (अ) 2, 7, 6 (ब) 6, 1, 8 (स) 8, 3, 4 (द) 4, 9, 2 चार प्रकार से पनरिया सिद्ध होता है। * उत्तर+ईशान्य (6+7), दक्षिण+अग्नि (4+9) के दोनों अंक मिलाने से दो तरफ से तेरिया होता है। * दक्षिण+नैऋत्य (4+3), उत्तर+वायव्य (6+1) के दो अंकों से सतियां बनता है। * पूर्व+ईशान्य (2+7), पश्चिम+वायव्य (8+1) के दो अंक जोड़ने से नविया बनता है। इसके अतिरिक्त पूर्व+नैऋत्य (2+3) दक्षिण+वायव्य (4+1) के जोड़ने से पांचे की सिद्धि होती है तथा कुल मिलाकर यह इक्कीस कलाओं वाला 'यन्त्रराज बीसा' बन जाता है।
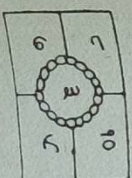
बीसा यन्त्र कई प्रकार के होते हैं तथा इनकी अनेक प्रकार से सिद्धियां जनश्रुतियों में प्रचलित हैं—

यह पांच कोणों वाला सूक्ष्म बीसा है, जो कि तांत्रिक अंगूठियों पर जड़ा जाता है। इसकी नौ कलाएं हैं—(अ) यह दो तरफ से बीसा (ब) दो तरफ से सतरियां (स) एक तरफ से पनरिया (द) एवं दो तरफ से उन्नीसा बनता है। (य) दो तरफ से इक्कीसा बनता है। अन्दर का तिया तीनों लोकों की विजय दिलाने वाला है तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्रदान करने वाला माना गया है।

यह अष्टदल त्रिकोण, 24 कोणों वाला शुद्ध बीसा है। शतरंज के हिसाब से घोड़े की चार चाल व हाथी की तीन हैं। इसमें न तो शून्य है और न ही पांच का अंक है। इसके मध्य में मायाबीज 'ह्रीं' है तथा चारों ओर 'महागौरीति चाष्टमं' के अनुसार आठ त्रिकोण व मध्य में प्रधान कामरूपी बीज की चतुष्कोणात्मक पीठ है। साधक लोग इसे अपनी इच्छानुसार काम में लेते हैं। * इसमें आठ प्रकार से बीसा बनता है। (अ) 7, 3, 2, 8 (ब) 7,3,6,4 (स) 7, 3, 9, 1 (द) 8, 2, 9, 1 (य) 8, 2, 6, 4 (र) 1, 9, 6, 4 (ल) 3, 2, 9, 6 (व) 3, 9, 2, 6 * पूर्व व पश्चिम के दोनों अंक मिलाने से (अ) 7+8 (ब) 6+9 दो प्रकार से पनरियां * तथा इसी प्रकार से दूसरे दोनों अंक मिलाने से (अ) 3+2 (ब) 4+1 दो प्रकार से पांचे की सिद्धि होती है। * दो त्रिकोण मिलाने पर क्रमशः (अ) 7+3 (ब) 8+2 (स) 9+1 (द) 6+4 चार प्रकार से दसा मिलता है। अर्थात् इसमें 5, 10, 15 व 20 सब विषय हैं। इस प्रकार यह सोलह कलाओं वाला बीसा यन्त्र है।
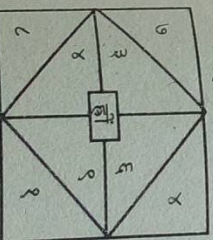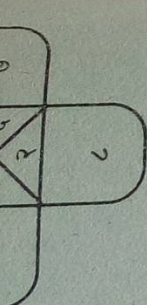
इस बीसा यन्त्र में चार त्रिकोण, पांच चतुष्कोण एवं अठाईस कोण हैं व मध्य में चतुष्कोण नहीं

है, शून्य व पांच का अंक भी नहीं है। किसी भी अंक की पुनरावृत्ति नहीं है। यह 'पंचतत्त्व बीसा' है। बीसा पांच प्रकार से मिलता है। (अ) 1, 9, 2, 8 (ब) 4, 3, 6, 7, (स) 9, 3, 2, 6 (द) 9, 2, 3, 6 (य) 1, 4, 8, 7, अन्य किसी यन्त्र का समावेश न होने से यह आठ कोठों का शुद्ध बीसा है।
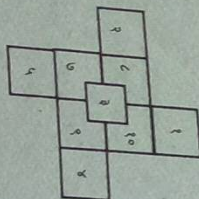
यह नवकोटा का बीसा यन्त्र है। इसमें 36 कोण बनते हैं। इस यन्त्र में 6 का अंक नहीं है और पांच का है। इसमें तीन कोठों की जोड़ से छः प्रकार से बीसा मिलता है। (अ) 2, 8, 10 (ब) 8, 7, 5 (स) 7, 9, 4 (द) 1, 10, 9 (य) 8, 3, 9 (र) 7, 3, 10 यह वायुतत्त्व वाला व छः कला का बीसा माना गया है।

यह भी नवकोटा वाला बीसा यन्त्र है। इसमें शून्य नहीं है, दस का अंक भी नहीं है तथा किसी भी अंक की पुनरावृत्ति भी नहीं है। 1 से लेकर 9 तक के सभी अंक काम में लिए गए हैं। यह निवार्ण यंत्र के बीजाक्षरों से युक्त शक्तिशाली बीसा यन्त्र है। बीच का पांचा, पंच परमेश्वर, पांचतत्त्व, पंचवायु व पांच प्रकार की अग्नियों का द्योतक अंक है। इसमें चार कोठों की जोड़ से चार प्रकार का बीसा (अ) 3, 7, 6, 4 (ब) 4, 6, 8, 2 (स) 2, 8, 9, 1 (द) 1, 9, 7, 3 तथा अन्दर के कोणों की जोड़ से दो प्रकार से बीसा (अ) 7, 5, 8 (ब) 6, 5, 9 कुल छः प्रकार से बीसा बनता है। * बीच का पांचा न गिनने पर (अ) 7+8 (ब) 9+6 दो प्रकार से पनरियां * बाहरी कोठों के चारों अंक जोड़ने पर 3, 4, 2, 1 दसा * बाहरी दो कोठों को मूल पांचे के साथ जोड़ने पर पुनः दो प्रकार से दसा (अ) 1, 5, 4 (ब) 3, 5, 2 बनता है। इस प्रकार से यह 'एकादश रुद्र' का प्रतीक, ग्यारह कलाओं वाला, अग्नितत्त्व वाला शक्ति सम्पन्न बीसा है। इसको समझना कठिन है।
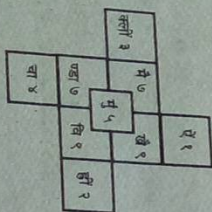
यह छः चतुष्कोण, तीन त्रिकोणों से युक्त 33 कोणों व नव कोठों वाला बीसा है। इसमें बीच का चतुष्कोण व दस का अंक नहीं है परन्तु चमत्कार यह है कि इसमें बीसा दस प्रकार से मिलता है। (अ) 9, 3, 2, 6 (ब) 9, 1, 8, 2 (स) 3, 7, 4, 6 (द) 1, 7, 4,

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha
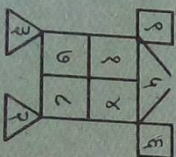
8 (य) 3, 7, 8, 2 (र) 3, 7, 1, 9 (ल) 2, 8, 4, 6 (व) 9, 1, 4, 6 (श) 1, 8, 7, 4 (ष) 9, 5, 6 * तीन कोठों की त्रिकोणात्मक जोड़ से दो पनरिये (अ) 9, 1, 5 (ब) 6, 4, 5 * एवं यन्त्र के दायें-बायें कोठों को जोड़ने से पुनः (अ) 9, 6 (ब) 7, 8 दो प्रकार से पनरिये मिलते हैं। इसी प्रकार की दूसरी जोड़ से (अ) 1+4 (ब) 3 + 2 दो पांचों की सिद्धि मिलती है। * तीनों त्रिकोणों के जोड़ने (अ) 5, 3, 2 दसा * एवं कोणात्मक जोड़ से (अ) 9 + 1 (ब) 3 + 7 (स) 8 + 2 (द) 6, 4 पुनः चार प्रकार से दसे मिलते हैं। इस प्रकार से हम देखते हैं कि कुल इक्कीस कलाओं वाला सर्वशुद्ध यन्त्रराज बीसा बन जाता है।

यह जगदम्बा की शक्ति से युक्त नवग्रहात्मक शुद्ध बीसा यन्त्र है। इसके पूजन से सभी प्रकार के ग्रहों का प्रकोप शान्त होकर जीव को राहत मिलती है। इस यन्त्र का पूरा विवरण प्रारम्भ में ही दिया जा चुका है। यह यन्त्र अमोघ है। इसके आठ कोणों में आठ क्षेत्रपाल, आठ लोकपाल एवं अष्ट सिद्धियों के नाम भोजपत्र या रजतपत्र पर लिखवाकर यदि कमलदल की आकृति में बनाया जाये तो यह 'कमला यन्त्र' बन जाता है तथा अनन्त लक्ष्मी व ऐश्वर्य को प्रदान करता है। ॐकार मध्य में रखकर यदि निवार्णमन्त्र लिख दिया जाये तो यह 'देव्यानुग्रह' बीसा यन्त्र बन जाता है। इसके ऊपर दुर्गासप्तशती के चतुर्थ अध्याय का पाठ करने से साधक का साधना बल बढ़ जाता है व प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है।
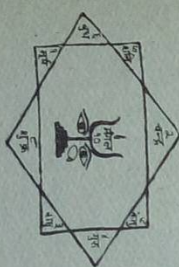
विधि—

रवि उत्तरायण में हो, उस समय शुभ दिन व स्थिर लग्न में अष्टगन्ध से दो हजार बीसायन्त्र लिखने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। सूर्य दक्षिणायन में रहने पर मध्यम कार्य होता है। जिस प्रकार का कार्य सिद्ध करना हो, उसी प्रकार की लेखनी, स्याही व दिशा काम में लेनी चाहिए। अनुष्ठान के समय व्यक्ति जितेन्द्रिय रहे। अल्प भोजन करे, भूमिशयन, यमनियम का पालन करते हुए सत्य बोले अथवा मौन धारण कर ले। मूलमन्त्र का दशांश, हवन, मार्जन व ब्राह्मण को भोजन करावे। यन्त्र द्वारा परोपकार करने से शीघ्र सफलता मिलती है। बाकी का प्रयोग पञ्चदशी के समान कर सकते हैं।

शक्तिशाली प्रेत भेजकर शत्रु को प्रताड़ित करना
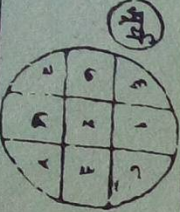
शत्रु के पैर के नीचे की मृत्तिका तथा चिता भस्म एवं मध्यमा (बिचली) अंगुली का रक्त मिलाकर एक पुतली अर्थात् मूर्ति बनावें। उस पुतली के मुख में मारण मन्त्राभिमन्त्रित उड़द डाल देवें। अर्धरात्रि के समय इस प्रयोग को करने से इन्द्रतुल्य शत्रु भी मारा जाता है।
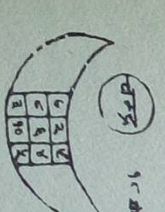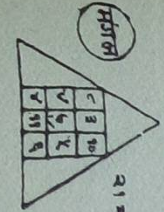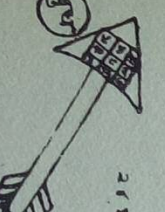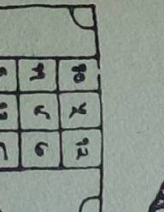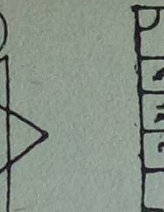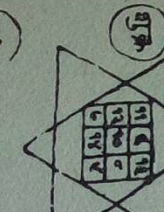
मारण मन्त्र—

ॐ नमः काल संहाराय अमुक हन-हन क्रीं हुं फट् भस्मी कुरु-कुरु स्वाहा।

अमुक शब्द की जगह शत्रु का नाम लेवें। चार अंगुली प्रमाण एक नीम की लकड़ी लेकर उसमें शत्रु के सिर का बाल लपेट, उसी से शत्रु का नाम लिखें, तत्पश्चात् सावधानी से उस लिखे नाम से चिता के अंगार पर धूप देवें। इस प्रकार तीन रात या सात रात तक धूप देने से शत्रु को प्रेत पकड़ लेता है। प्रयोग करने वाला व्यक्ति कृष्णपक्ष की अष्टमी को प्रयोग आरम्भ करे तथा चतुर्दशी तक समाप्त कर दे और ऊपर लिखित मन्त्र को प्रतिदिन 108 बार जपे।

नवग्रह के यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

नवग्रह यन्त्रों में तीन की संख्या का महत्त्व सर्वाधिक है। प्रत्येक ग्रह-यंत्र में तीन की संख्या का क्रमशः अन्तर आता है तथा सभी यन्त्रों के मूलांक में क्रमशः 3, 6 व 9 की संख्या प्राप्त होती है। नवग्रह के इन यन्त्रों का प्रभाव जबर्दस्त है। भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर पास में रखने से संबंधित ग्रह की दशा अच्छी जाती है तथा पूजागृह में रखकर पूजन करने से ग्रहों का प्रकोप शांत होता है।

यन्त्र	मन्त्र (बीजमन्त्र)	तन्त्र (रत्न व उपाय)
सूर्य — १५ यंत्र (६ १ ८ / ७ ५ ३ / २ ९ ४)	ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः जप सं. 7000	1. माणिक्य रत्न 2. धातु-तांबा या सोना 3. रवि-पुष्य योग

Shaikh Abdul Gafar Majhi,Ahanda,,Niali,odisha

यन्त्र	मन्त्र (बीजमन्त्र)	तन्त्र (रत्न व उपाय)
चन्द्र — १८ यंत्र	ॐ श्राँ श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः। जप सं. 11,000	1. मोती 2. धातु-चांदी 3. दान सफेद वस्तु
मंगल — २१ यंत्र	ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। जप सं. 10,000	1. मूंगा (प्रवाल) 2. धातु-तांबा या सोना 3. दान-लाल वस्तु
बुध — २४ यंत्र	ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। जप सं. 4000	1. पन्ना 2. धातु-सोना, कांसी 3. दान-हरी वस्तु
गुरु — २७ यंत्र	ॐ ज्राँ ज्रीं ज्रौं सः गुरवे नमः। जप सं. 19,000	1. पुखराज 2. धातु-स्वर्ण 3. दान-पीली वस्तु
शुक्र — यंत्र ३०	ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः। जप सं. 19000	1. हीरा 2. धातु-चांदी, प्लेटिनम 3. दान-सफेद वस्तु
शनि — ३३ यंत्र	ॐ खाँ खीं खौं सः शनैश्चराय नमः। जप सं. 23,000	1. नीलम 2. धातु-लोहा 3. दान-काली वस्तु

यन्त्र	मन्त्र (बीजमन्त्र)	तन्त्र (रत्न व उपाय)
राहु	ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। जप सं. 18000	1. लहसुनिया 2. धातु-लोहा, अभ्रक 3. दान-काली वस्तु
केतु	ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः केतवे नमः। जप सं. 17000	1. वैदूर्य, गोमेद 2. धातु-लोहा 3. दान-धूम्रवर्ण वस्तु

प्रत्येक ग्रह के वार के दिन शुभ मुहूर्त में उस ग्रह का यन्त्र निर्दिष्ट धातु में बनाना चाहिए, उसमें प्राणप्रतिष्ठा कर निश्चित् मन्त्रों का जप करने से अभीष्ट सिद्धि मिलती है।

अग्नि-देवता प्रकट करना—

* कई सयाने लोग हवनकुण्ड में आग प्रकट करके यज्ञ करते हैं और कहते हैं कि यह मन्त्रों की क्रिया है, इसका रहस्य यह है—बूरा चीनी + पोटैशियम क्लोरेट मिलाकर धरती पर आटे की भांति फैला दें और इसके बाद इन पर सूखी लकड़ी रखें। एक कटोरी में लौंग व चावल, गन्धक के तेजाब से भिगोकर रखें। किसी चम्मच से यह लौंग और चावल वहां डाल दें, तुरन्त आग उत्पन्न होगी।

नेत्र-रोग निवारक नेत्रोपनिषद (चाक्षुषी) विद्या

अब नेत्र-रोग का हरण करने वाली, पाठमात्र से सिद्ध होने वाली चाक्षुषी विद्या की व्याख्या करते हैं, जिससे समस्त नेत्र-रोगों का सम्पूर्णतया नाश हो जाता है और नेत्र तेजयुक्त हो जाते हैं। उस चाक्षुषी विद्या के ऋषि अहिर्बुध्न्य हैं, गायत्री छन्द है, सूर्य भगवान् देवता हैं, नेत्र-रोग की निवृत्ति के लिए इसका जप होता है—यह विनियोग है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

* चाक्षुषी विद्या

"ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि त्वरितं चक्षुरोगान् शमय-शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय-दर्शय। यथाहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय-कल्पय। कल्याणं कुरु-कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षु प्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ मः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृत गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिप्रतिरूपः। य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति॥"

विधि—

नेत्र-रोग से पीड़ित श्रद्धालु साधक को चाहिए कि प्रतिदिन प्रातःकाल हरिद्रा (हल्दी) से अनार की शाखा की कलम के द्वारा कांसे के पात्र में निम्नलिखित बत्तीसे यन्त्र को लिखे—

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

फिर उसी यन्त्र पर तांबे की कटोरी में चतुर्मुख (चारों ओर चार बत्तियों का) घी का दीपक जलाकर रख दें। तदनन्तर गन्ध पुष्पादि से यन्त्र का पूजन करें। फिर पूर्व की ओर मुख करके बैठे और हरिद्रा (हल्दी) की माला से 'ॐ ह्रीं हंसः' इस बीजमन्त्र की 6+5 मालाएं नेत्रोपनिषद् के बारह पाठ करें, सूर्य भगवान् को श्रद्धापूर्वक अर्घ्य देकर प्रणाम करें। ऐसा करते रहने से नेत्रविषयक समस्त दोष शीघ्र दूर हो जाते हैं।

कुछ चमत्कारी मुस्लिम-यन्त्र

शत्रु को नुकसान पहुंचाने वाला दूत याबुद्दू—
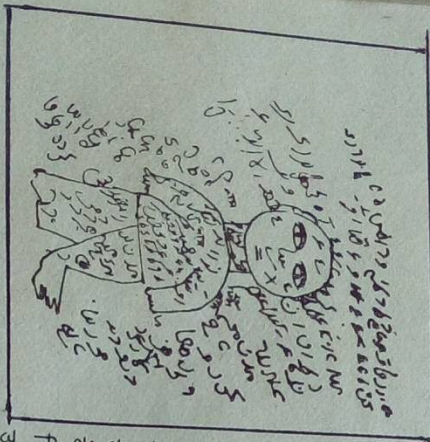
हिदायत—कृपया सभी नक्श (यन्त्र) अच्छे काम के लिए अमल में लावें। बुरा काम करने वाले को आखिर पछताना पड़ता है, इसके लिए लेखक, सम्पादक या प्रकाशक जवाबदार नहीं हैं।

सादे कागज पर काली स्याही से हूबहू नक्शा (आकार) बनावें। गर्दन के दोनों तरफ व हृदय स्थान पर शत्रु का नाम लिखें। ये नक्शे दो बनावें। एक तो हिन्दुओं के श्मशान में जाकर रविवार के दिन गाड़ दें और दूसरा मंगलवार के दिन कब्रिस्तान में जाकर गाड़ दें। जिसका नाम इस पर लिखा गया है, उसको धन की हानि, यश, प्रतिष्ठा भंग होगी व उसका धीरे-धीरे उच्चाटन हो जायेगा। यदि शत्रु को वापस माफ करना हो तो दोनों नक्शे वापस खोदकर निकालें व बहते पानी में ठण्डे कर दें।

रावण का दूत—
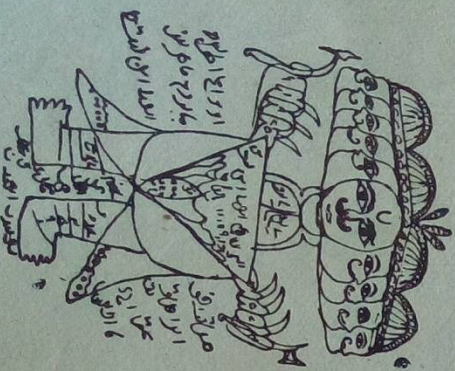
जब व्यक्ति की बीमारी त्याग, तप, कामण-टुमण व कष्ट किसी भी साधन से ठीक न होता हो, तब यह नक्शे काम में लें। यह रावण की शक्ति है। सादे कागज पर काली स्याही से इसको बनावें। फिर इस नक्शे में सात चिपटी नमक, लाल मिर्च, राई डालना। फिर यन्त्र को खड़ा ही पलेटना। पलेटकर बत्ती बना दें तथा चारों ओर रूई लपेट दें। फिर

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

बीमार के ऊपर सात बार उबारना और जोत लगाकर यन्त्र को मिट्टी के दीपक में जलावें। जब जोत बुझने लगे तो दीपक को मकान के बाहर लाकर उलटा करके फोड़ दें। उस पर थूककर, उसे जूती से रगड़ दें, सात दिन ऐसा करने पर रोगी को बराबर सुकून मिलेगा तथा वह चंगा हो जाएगा। यह प्रयोग सांयकाल के पश्चात् रात्रि के प्रथम प्रहर में करना चाहिए।

* कामण-टुमण निकालने वाला पलीता—
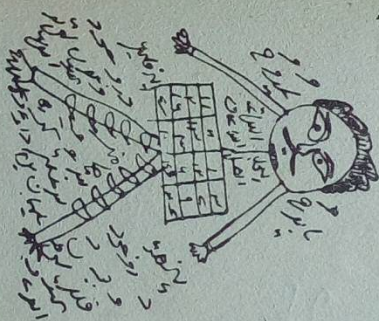
सादे कागज पर काली स्याही से यह नक्शे बनाकर, बीमार के सामने जलावें। बीमार कहता रहे—मेरी जितनी भी तकलीफ है, वह इसमें खत्म हो, कामण-टुमण, मैली-क्रिया, भूत-पलीत सब इसमें जलकर खाक हों।

यह प्रयोग सात दिन तक लगातार दिन व रात में एक-एक बार करता रहे तो रोगी को बराबर आराम पहुंचता है।

उच्चाटन-यन्त्र—

इस पलीते को काली या नीली स्याही से बनाकर बीच में अभीष्ट व्यक्ति का नाम लिखे। फिर इस यन्त्र को धूप में रखे या चूल्हे के नीचे राख में रखे या टेबिल लैम्प पर बांध दे। इस यन्त्र पर गर्मी पहुंचने पर अभीष्ट व्यक्ति का उच्चाटन होगा तथा उसका ध्यान आपकी ओर आकर्षित होगा तथा आपसे बात करेगा। साथ में मन्त्र का जप भी करे तो प्रयोग जल्दी सफल होता है। मन्त्र इस प्रकार है—ॐ हिरंग यमय-यमय उल्लू के करात (फलां को) उच्चाटय-उच्चाटय (फलां स्थान से) पुदमली ॐ फट्-फट् स्वाहा।

* अमोघ वशीकरण—

शुक्रवार के दिन दोपहर के बाद लगभग 4 बजे इन सातों यन्त्रों को किसी भी कागज पर काली स्याही से लिखना। प्रत्येक यन्त्र के ऊपर (लक्षित) स्त्री व उसकी माता का नाम लिखें तथा जिसके लिए प्रयोग किया जा रहा हो उस पुरुष व उसकी माता का नाम भी लिखें। तत्पश्चात् सातों ही यन्त्रों को अग्नि में जला देना। यह प्रयोग शुक्रवार से शुक्रवार (सात दिन) तक करें। लक्षित स्त्री वशीभूत होकर, चलकर आपके पास आयेगी।

नोट : यह यन्त्र दो प्रेमियों को मिलाने के लिए है। इसका दुरुपयोग करने वाला व्यक्ति खुदा के खौफ को भोगेगा।
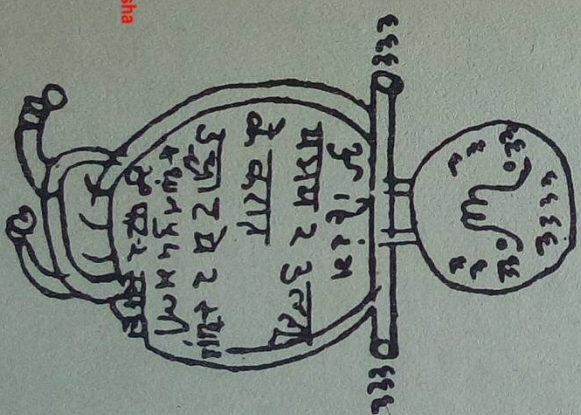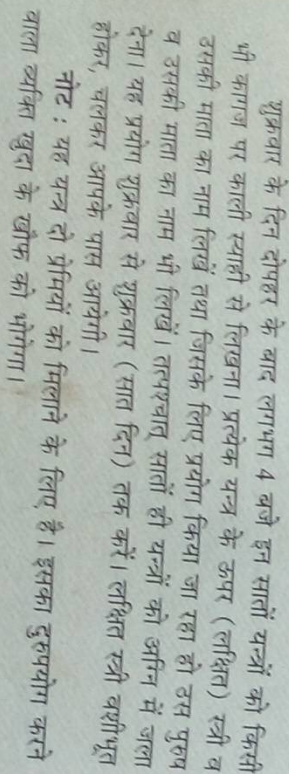
हाथ में सिक्का जलाना—

मरकरी क्लोराइड या दालचिकना (2 या 3 रत्ती) लेकर राख या मिट्टी में मिलाकर किसी से कहो कि दस पैसे का सिक्का उससे अच्छी तरह मांझ ले। फिर स्वच्छ पानी से साफ कर ले। उसके बाद सिक्के को उसके हाथ में दे दो। सिक्का धीरे-धीरे इतना गर्म होगा कि व्यक्ति हाथ से फेंक देगा। ध्यान रहे, यह प्रयोग केवल एल्युमिनियम के सिक्के व कटोरी पर ही होता है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

शत्रु की नींद उड़ाने वाला अद्भुत यंत्र

प्रस्तुत यन्त्र अपने आप में अद्भुत चमत्कारिक व शीघ्र फलदायक है। शत्रु को पीड़ा पहुंचाने, कष्ट दिलाने व उसकी नींद उड़ाने में यह अचूक फलदायक माना गया है। इसमें न तो किसी सिद्धि की जरूरत है, न साधना की, न शुद्धता की और न जप-जाप की। परन्तु अकारण किसी व्यक्ति को तकलीफ देने पर अदृश्य शक्तियां उसे माफ नहीं करतीं।

विधि—

शुक्रवार के दिन अभिलक्षित (जिसको पीड़ा पहुंचानी हो उस) व्यक्ति के पांव की जूती का पगतल (अन्दर का पतला तलिया) लावें। उस प्रस्तुत यन्त्र को अष्टगंध या लोबान अथवा काली स्याही के द्वारा कौए के पंख से लिखें। शत्रु नाम की जगह शत्रु का पूरा नाम व पता लिखें। रात्रि को सोते समय अपने पलंग के सिर वाले पाये के नीचे इस यन्त्र को दबाकर सोयें।

रात्रि के 12 बजे के पश्चात् जब भी आप चाहें उठकर अपने पांव की जूती से इस यन्त्र पर प्रहार करें। उसी समय तत्काल चमककर शत्रु की नींद उड़ जायेगी, उसको पीड़ा, परेशानी व थकावट महसूस होगी, लगातार प्रयोग करने पर शत्रु झेर-झेर होकर आपसे माफी मांगेगा।

कर्जा वसूल करने का यन्त्र—

इस यन्त्र को भोजपत्र अथवा किसी अच्छे कागज पर अष्टगंध से लिखें। शुक्रवार के दिन खस का अत्तर लगाकर रुई के साथ कान में धारण करें।

उसके पश्चात् जिसमें आपकी उधारी बाकी हो तथा वह देने में टालमटोल करता हो, उसके पास जायें। अपने इष्ट व गुरु का नाम लेकर पैसा मागें, रुपया बराबर मिलेगा।

* प्रेतनिवारिणी पुतली—

सबसे पहले सादे कागज पर काली स्याही से यह चित्र बनावें तथा उदरस्थ यन्त्र के अंकों को साफ-साफ लिखें, फिर दूसरे हर्फों को लिखें तथा पुतली के गर्दन के पास चित्रानुसार काला बिन्दु बनावें। इस पुतली को प्रेतग्रसित व्यक्ति को टकटकी लगाकर देखने को कहें। तत्पश्चात् प्रयोगकर्ता अपनी आत्मशक्ति से प्रेतग्रसित व्यक्ति को देखता हुआ कहे कि—''जो प्रेतात्मा इस व्यक्ति के ऊपर है वह इस पुतली में आ जाये।'' ऐसा बार-बार कहता रहे तथा यदि कहने पर भी प्रेत पुतली में आवेशित न हो तो प्रयोगकर्ता धमकी भरे शब्दों में कहे कि—''अगर तू इस पुतली में प्रवेश नहीं करेगा, तो तुझे जलाकर मैं खत्म कर दूंगा।'' प्रयोगकर्ता के इन वचनों को सुनकर प्रेत वास्तव में पुतली में प्रवेश कर जायेगा। प्रेत के पुतली में प्रवेश करते ही साथ वाली छोटी मानवाकृति अदृश्य हो जायेगी। मानवाकृति के अदृश्य होते ही एक कागज उलटी ओर (मानवाकृति के पृष्ठ पर) चिपका देना चाहिए।

यह क्रिया सम्पन्न होने के बाद प्रेतग्रसित व्यक्ति को कहें—''हे नमरूद! प्रेत को अपने वश में करो।'' इसके पश्चात् कागज को बीच में से मोड़कर कई तहों में बन्द कर देना चाहिए, तत्पश्चात् तह किये गये कागज को काले धागे से लपेटना चाहिए। यन्त्र को पृथ्वी में तीन हाथ गहरा गड्ढा खोदकर दबा देना चाहिए ताकि उस प्रेतात्मा से सदैव के लिए छुटकारा मिल जाये।

Shaikh Abdul Sattar,Majhikhanda,,Niali,odisha

* प्रेतनिवारण दूसरा पलीता—

सादे कागज पर नीली स्याही से इस नक्शे को बनावें। रोगी को दिखलाकर कहें कि—''जो भी प्रेतात्मा इस रोगी के शरीर में हो, वह रोगी को छोड़कर इस यन्त्र में आ जाये।'' इतना कहने के पश्चात् यन्त्र की पुड़िया बनाकर यन्त्र को आग में जला देना चाहिए ताकि प्रेतात्मा पुनः किसी व्यक्ति को तंग न कर सके।

गर्भस्थापन-औषध स्नान—

नीम, कुटकी, हरड़, बला गंगेरन, अमोघा, गेंदा, सफेद दूब, काली दूब, लक्ष्मणा, प्रियंगु, सतावर-इनका रस दाहिने हाथ से दाहिनी नासिका में टपकावें और दाहिने कान तथा दाहिने हाथ में धारण करें। इन्हीं औषधों द्वारा सिद्ध किये हुए दूध-घी का सेवन करें तथा इन्हीं से औटाये हुए जल में प्रत्येक पुष्य-नक्षत्र में स्नान करें, तो अवश्य गर्भ स्थिर हो जाता है।

मासिक-धर्म के लिए टोटका—

नीम की छाल 2 तोला, भंगरैया 2 तोला, सोंठ 6 मासे, पुराना गुड़ 2 तोला। चारों चीजें पाव भर पानी में पकावें। आध पाव पानी शेष रहने पर उतारकर शीतल कर लें और छान लें। इसके नियमित सेवन से मासिकधर्म खुल जाता है।

नीम की सात पत्तियां लेकर अदरख के रस में पीसकर पिलायें और नीम की पत्तियों को थोड़े पानी में पकाकर ठोड़ी के नीचे गुनगुना ही बांधने से मासिक धर्म खुल जाता है।

* पत्रावतार हाजरात—

हाजरात एक मुस्लिम प्रयोग है। यह कई प्रकार की होती है। यह पत्रावतार हाजरात है। इसमें इस मन्दिरनुमा गुम्बद के झरोखे में सब कुछ दिखलाई पड़ता है। रविवार के दिन चमेली के तेल से कागज पर मूलमन्त्र को बोलते हुए बनावें। फिर किसी भी कागज पर इस प्रकार की महताब बनावें। जिस बालक को हाजरात दिखानी हो उसके सिर पर हाथ रख के, सात बार मन्त्र बोलें, फिर पूछना कि साहिब पालकी बैठा आवे। कुंवारे बच्चे को बिठाना, जोगणी पीठ में रखना। इस तरह से शुक्रवार के दिन बालक को पश्चिम दिशा में बिठाना, लोबान या आशापुरी धूप जलाना, ऐसा करने पर चित्रित पत्र पर बच्चे को सब कुछ दिखेगा।

मूलमन्त्र यह है—"**ॐ नमः ॐ ह्रीं श्रीं ईल्लईल्लाहि नमः।**"

* पुत्र से पुत्री होने का टोटका—

नींबू वृक्ष की मूल, चावल के पानी से गर्भवती औरत को पिलावें तो जिसके पुत्र होता हो, उसके पुत्री होगी।

Shaikh Abdul Gafar,Majhibhanda,,Niali,odisha

इसरारे वहम तलस्मुँबराये जंगो-जदाल

अगर किसी जमात, कुटुम्ब या मित्रमंडली में सामूहिक रूप से वहम पैदा करना हो, ताकि सब एक-दूसरे के कत्ल पर आमादा हों, तो चाहिये कि मंगल जिस वक्त मेष के 1°, वृष के 7°, 11°, या 23°, मिथुन के 29°, सिंह के 13°, या 27°, तुला के 27°, या 28°, धनु के 30° या 22°, मकर के 20° या 29°, 30°, कुम्भ के 14°, या 27°, मीन के 30° पर हो अथवा चन्द्रमंगल या मंगल + शनि की युति या दृष्टि सम्बन्ध इन डिग्रियों में हो, उस दिन सूर्योदय के ललाईदार वातावरण में सुर्ख तांबे पर यह नक्श बनावें।

जिसमें चार शख्स आपस में जंगे जदाल करते हों, इनमें से एक आदमी का सिर कट गया हो और वह बेसिर खड़ा हो, दूसरे शख्स का शरीर कमर से कट गया हो और दो शख्स हथियार लेकर एक-दूसरे को मारने पर आमादा हों। तिलस्म तैयार करते समय धूप-लोबान जलावें। तिलस्म तैयार होने पर सात रात तक चन्द्रमा के सामने रखें और चन्द्रमा अस्त होते ही तिलस्म को छुपा दें ताकि दूसरे ग्रहों का इस पर प्रभाव न पड़े। सात दिन बाद इस तांबे के तिलस्म को किसी तांबे के बर्तन में डालकर उसका मुंह कली से बन्द कर दें और फिर बर्तन को जिस जगह दफन करेंगे उस जगह जब तक यह दफन रहेगा, वहां पर बराबर जंगो-जदाल, झगड़ा-फसाद जारी रहेगा। वहां रहने वाले शख्स वहम व हुरेजी से तबाह व बरबाद हो जायेंगे।

पेट के कीड़ों पर टोटका—

नीम के फल (निम्बोली) पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

तन्त्र

'तन्त्र' वस्तुतः क्या है ? इसकी विस्तृत परिभाषा के वाक्-जाल में, मैं पाठकों को उलझाना नहीं चाहता। 'तन्त्र' वास्तव में एक प्रक्रियाविशेष का नाम है। तन्त्र में न मन्त्र की आवश्यकता रहती है, न यन्त्र की। विशेष तिथि, वार, नक्षत्र, व्रत, होम, काल व वेला में, विशेष प्रकार की वस्तुओं में, एक विशेष प्रकार की शक्ति का संचार होता है, और एक दक्ष तांत्रिक ही प्रकृति की इन सूक्ष्मताओं को जानता है तथा वह इस प्रकार की वस्तुओं के संयोग से एक नई विधा, एक नई शक्ति व एक नए चमत्कार की सृष्टि करता है। मानव जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति के अनुरूप अन्य मान्त्रिक व यान्त्रिक अनुष्ठान काफी खर्चीले, दुःसाध्य व समय साध्य होते हैं जबकि तान्त्रिक क्रियाओं का प्रभाव तत्काल होता है तथा कौड़ियों के मोल की वस्तुओं के माध्यम से लाखों रुपयों का काम यों ही सहजरूप से हो जाता है। फ्रांस के जिन्स कोक्टीयस नामक व्यक्ति ने भारतीय तन्त्र व टोटकों पर अध्ययन किया और पाया कि—टोटके सच तो जरूर होते हैं परन्तु इनके परिणाम किस प्रक्रिया के आधार पर प्रकट होते हैं, इसकी खोज कर पाना मानवीय मस्तिष्क के बाहर की बात है।

'तन्त्र' में कुछ भी अपवित्र नहीं होता। अविश्वास, अश्रद्धा, घृणा और हिचकिचाहट के साथ किये गए तांत्रिक अनुष्ठान कभी सफल नहीं होते। 'तन्त्र' में दृढ़ आत्मविश्वास व गुरु की शक्ति मूल रूप से कार्य करती है। तन्त्रविद्या में क्यों व कैसे को स्थान नहीं है ? यही कारण है कि आज के अविश्वासी व शंकालु तथाकथित बुद्धिजीवी समाज में 'तन्त्र' व 'तान्त्रिक' शब्द निरन्तर उपहास के पात्र बनते जा रहे हैं। इतना सब कुछ होने पर भी 'तन्त्र' का प्रभाव प्रत्यक्ष है और यही इसकी सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण है। एक बार नोबल पुरस्कार विजेता फिजीशियन नैल्सबोर्न के मकान के बाहर घुड़नाल देखकर उसके मित्र को आश्चर्य हुआ और उसने पूछा—"क्या तुम भी अन्धविश्वास को मानने वाले व्यक्तियों में हो ?" सर नैल्सबोर्न ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया—**"मैं अन्धविश्वासी हूं या नहीं, मैं टोटकों को मानता हूं या नहीं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, परन्तु जबसे यह घुड़नाल मेरे मकान के बाहर बंधी है, मुझे राहत व आराम है।"** प्रायः बड़े-बड़े डॉक्टर लोग किसी रोग को समझ नहीं पाते परन्तु घर के बड़े-बूढ़े व सयाने लोगों के द्वारा किये गए उपायों से रोग को तुरन्त राहत मिल जाती है, तो इसके चमत्कार को मानना ही पड़ता है। मारवाड़ी व ग्रामीण भाषा में इन प्रचलित तान्त्रिक

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

प्रक्रियाओं को 'टोटका' नाम से जाना जाता है। यह ठीक है कि टोटकों में यन्त्र, मन्त्र की आवश्यकता नहीं रहती। परन्तु कुछ ऐसे टोटके भी होते हैं, जिनमें यन्त्र व मन्त्र भी अनुप्राणित होते हैं। ऐसे टोटके सबसे अधिक शक्तिशाली कहे जा सकते हैं। तन्त्रविद्या के वनस्पति-तन्त्र, पक्षीतन्त्र, रत्नतन्त्र, नक्षत्र-तन्त्र, वशीतन्त्र व मारणतन्त्र इत्यादि अनेक अवयव हैं जिसके बारे में जानकारी देना इस लघु ग्रंथ के माध्यम से सम्भव नहीं। इसके लिए एक विशद् ग्रंथ अलग से लिखा जा रहा है। यहां प्रस्तुत प्रकरण में हम बहुत ही चुने गए व सरल तान्त्रिक प्रयोगों को आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि आप इनका परीक्षण कर अवश्य लाभान्वित होंगे।

—लेखक

दस्तों व उलटी पर तन्त्र—

बच्चों को उलटी व दस्त बेहिसाब लगती हो तो रविवार को बच्चे के सिर पर से गेहूँ का आटा सात बार उवारें व एक पानी का लोटा भी सात बार उवारें। घर के बाहर कहीं भी कैसी भी हड्डी पड़ी हो उसके ऊपर वह आटा डालकर, लोटे के पानी से हड्डी के चारों ओर कार निकाल दें। अगर इससे भी फर्क न पड़े तो दिन में तीन बार यह क्रिया करें, तुरन्त फायदा होगा।

कामण नष्ट करने का तन्त्र—

यदि कोई स्त्री, पुरुष राई मन्त्रित कर छुपके से मकान-दूकान में फेंकता हो या कोई अन्य कामण-टुमण करता हो। ऐसी अवस्था में जिस व्यक्ति को आपने कामण-टुमण करते हुए देख लिया हो या जिस पर आपको शत-प्रतिशत शक हो, उससे अपने मकान के मुख्य द्वार की देहली सात बार चटवा लें तो उसके द्वारा किये गए कामण-टुमण स्वतः ही समूल नष्ट हो जाते हैं।

नजर उतारने के टोटके

नजर लगने से सुन्दर व स्वस्थ बालक एकदम बीमार हो जाते हैं, रोने लगते हैं, बड़े व्यक्ति को नजर लगने पर, वह अपचन का शिकार होता है, भूख मंद हो जाती है, गाय, भैंस का दूध कम हो जाता है। नजर लगने से सुंदर वस्तु या मूर्ति भंग हो जाती है, नजर कैसे उतारें इसकी जानकारी निम्न है—

10. जो व्यक्ति स्वप्न में अपने को गधे पर चढ़ा तेल मले हुए और वस्त्राभूषित देखता है, वह शींघ्र ही यमराज का अतिथि बनता है।

11. जिसके कण्ठ, हौंठ, जीभ और तालु हमेशा सूखते रहते हैं, छः महीने के बीच में उसकी मौत अवश्य होती है।

12. जो व्यक्ति स्वप्न में या दिन में लोहे का दण्ड धारण किये, काले कपड़े पहने, काले वर्ण वाले पुरुष का सामने दर्शन करता है, वह व्यक्ति तीन सप्ताह के बीच में मरता है।

13. बिना किसी कारण के एकाएक मोटा व्यक्ति अगर दुबला हो जाये, या दुबला व्यक्ति मोटा हो जाये, तो एक महीने में मृत्यु निश्चित है।

14. हाथ से कान का छेद बंद करने पर कान के भीतर एक तरह अस्पष्ट-सा शब्द सुनाई पड़ता है, यह स्वाभाविक नियम है। जो व्यक्ति इस प्रकार का शब्द नहीं सुनता, वह एक महीने के अन्दर मौत के मुंह में समा जाता है।

15. सरसों के तेल के दीपक के बुझने की खुशबू न आवे तो छः महीनों में मृत्यु होगी।

16. जिसके दांत और अण्डकोष को दबाने से दर्द मालूम नहीं पड़ता, वह तीन महीने में मरता है।

पुण्यार्थी व्यक्ति को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास पहले से ही हो जाता है इसके विपरीत दुरात्मा व पापी व्यक्ति की मृत्यु सड़-सड़ कर होती है। ऐसा देखा गया है कि अन्तकाल में मनुष्य की मृत्यु ही उसके पुण्य व पाप की कमाई को दर्शाती है।

यही एक वस्तु भगवान् के हाथ में है जहां पर आज का वैज्ञानिक अभी तक नहीं पहुंच पाया है। परन्तु भारत ऋषि (वैज्ञानिकों) ने ऐसे कई उपाय बताये हैं जिससे मृत्यु का पूर्वाभास हो जाता है, उसे कुछ काल तक रोका भी गया है। इतना ही नहीं कई ऋषियों ने तो बहुत समय पूर्ण संकल्पित अमुक तिथि मास व पुण्यकाल में ही प्राण त्याग करके बताये हैं।

अथर्ववेदीय संतान प्रकरण
(रतिकालीन तिथियों से)

पति व पत्नी के भावात्मक एकात्मक सम्बन्ध में, अंग-प्रत्यंग के सम्पर्क से संतान की उत्पत्ति होती है। पुत्र, कन्या और क्लीव इन तीनों रूपों में पूर्व जन्म के कर्मानुसार संतानों का जन्म होता है और मृत्यु होती है। यद्यपि मन्त्र, मणि और औषध चिकित्सा से संतान उत्पत्ति के अनेक प्रसंग मिलते हैं तथापि तन्त्रोक्त रतिकालीन

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

सम्बन्ध कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। इसके सत्य पाये जाने पर यह प्रकरण यथावत् पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

निष्ठीविता अर्थात् रौंध करती हुई गौ की तरह धीरे-धीरे चलने वाली, आलस्ययुक्त, प्रसन्न मन वाली, हृदय में जिसे गर्भाधान की इच्छा हो, ऐसी बीजग्रहण में समर्थ स्त्री की योनि में लिंग द्वारा गर्भाधान संस्कार करें। स्त्रियों के ऋतु के स्वाभाविक दिन 16 माने जाते हैं। जिनमें प्रारम्भ के 4 दिन निषिद्ध हैं। शेष दिनों में गर्भाधान करना चाहिए।

प्रथम चार रात्रियां, ग्यारहवीं रात्रि और तेरहवीं रात्रि ये छः दिन तो निन्दित हैं। शेष दस दिन शुभ माने जाते हैं।

युग्म जैसे 2-4-6-8 इत्यादि संख्या वाली रात्रियों में गर्भाधान करने से पुत्रजन्म होता है और अयुग्म जैसे 1-3-5-7 इत्यादि संख्या वाली रात्रियों में संभोग करने से कन्या का जन्म होता है। इसलिए पुत्र की इच्छा वालों को चाहिए कि रजोधर्म के पश्चात् युग्म दिनों में ही गर्भाधान करें।

यदि पुरुष का वीर्य बलवान् हुआ तो पुत्र सन्तान होगी और यदि स्त्री का रज प्रबल हुआ तो कन्या का जन्म होगा। यदि दोनों के रज वीर्य समान बली हुए तो कभी बालक कभी कन्या होती है। यदि वीर्य क्षीण या अल्प वीर्य होगा तब कन्यायें अधिक होंगी।

चौथी रात्रि में गर्भाधान से जो पुत्र होता है, वह अल्पायु वाला, गुणों से रहित, नियम एवं आचार-विचारों को न मानने वाला, दरिद्री और दुःखी रहने वाला होता है।

पांचवी रात्रि में गर्भाधान से कन्या उत्पन्न होती है। छठीं रात्रि में गर्भाधान करने से पुत्र उत्पन्न होता है, सातवीं में कन्या। परन्तु उसकी मृत्यु की संभावना अधिक रहती है अतः इसको त्याग देवें। आठवीं रात्रि में गर्भाधान करने से भाग्यवान् पुत्र उत्पन्न होता है।

नवमी रात्रि के संस्कार से सौभाग्यवती कन्या उत्पन्न होती है। दशमी रात्रि में श्रेष्ठ (पुरुष) पुत्र का जन्म होता है। ग्यारहवीं रात्रि में अधर्माचरण करने वाली कन्या होती है और बारहवीं रात्रि में पुरुषों में श्रेष्ठ पुत्र होता है। तेरहवीं रात्रि में गर्भाधान करने से मूर्ख, पापाचरण करने वाली वर्णसंकर संतान उत्पन्न करने वाली तथा दुःख एवं शोकप्रदा दुष्टा कन्या का जन्म होता है। चौदहवीं रात्रि के गर्भ से धर्मात्मा, कृतज्ञ, अपने ऊपर नियन्त्रण रखने वाला, तपस्या करने वाला एवं संसार पर अधिकार रखने वाला, पिता के समान पुत्र उत्पन्न होता है। पन्द्रहवें दिन गर्भाधान करने से राजवंशों के समान सुंदर, अधिक भाग्यशाली, अधिक सुखों को भोगने वाली तथा पतिव्रता कन्या उत्पन्न होती है। सोलहवीं रात्रि के गर्भ के विद्वान् सत्य बोलने वाला, जितेन्द्रिय एवं सबका पालन करने वाला पुत्र उत्पन्न होता है।

गर्भाधान तन्त्र—

जो स्त्री गर्भ धारण करने के योग्य हो, परन्तु गर्भ नहीं ठहरता हो, सब प्रकार के इलाज करा लेने पर भी लाभ न होता हो, तो कृपया ये टोटके काम में लें, ईश्वर ने चाहा, तो जरूर लाभ होगा।

1. रविवार को सुगंधरा की जड़ या एकवर्णा गौ के दूध के साथ पीसकर ऋतुकाल में पीने से तथा साठी का भात एवं मूंग की दाल पथ्य खाने से वंध्यादोष विनष्ट होता है।

2. दवा खाते समय स्त्री को किसी प्रकार की चिन्ता या शोक अथवा भय, अधिक परिश्रम, दिन में सोना, गर्म चीजों का भोजन, धूप, अधिक ठण्ड इन सबसे बचना चाहिए। ऐसे पथ्य से रहते हुए पति के साथ सहवास करने से वंध्या अवश्य गर्भवती होती है।

3. रजोधर्म शुद्धि के पश्चात् काली अपराजिता की जड़ को बछड़ा वाली नवीन गौ के दूध में तीन दिन पीने से वंध्या गर्भवती होती है।

4. पहले ब्याही हुई गाय जिसके साथ बछड़ा हो, ऐसे गौ के दूध के साथ नागकेसर का चूर्ण सात दिन तक पीने से तथा घी-दूध के साथ भोजन करने से वंध्या स्त्री पुत्रवती होती है।

5. नींबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीसकर घी मिलाकर पीने से पति-प्रसंग द्वारा स्त्री को दीर्घजीवी पुत्र प्राप्त होता है।

मृतवत्सा तन्त्र—

जन्म लेने के पश्चात् जिस स्त्री का पुत्र मर जाता है, उसे मृतवत्सा कहते हैं।

1. जिस रविवार को कृत्तिका नक्षत्र हो, उस दिन पीत पुष्पा नाम की जड़ी को जड़सहित लावें, उसे पानी में सात दिन पर्यन्त पीसकर पीवें तो पुत्र न मरे।

2. प्रथम मास के गर्भ में यदि अकस्मात् पीड़ा उत्पन्न हो तो गौ के दूध में पद्माख, लालचंदन व खस इन सबको बराबर से पीस लें। एक-एक तोला तीन दिन तक पीने से गर्भ नहीं गिरता अथवा मुलहठी, देवदारु, सिरस का बीज काली गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से भी गर्भ नहीं गिरता है।

3. नीलकमल की जड़, लाह का रस, काकड़ासिंगी ये सब बराबर लें, गौ के दूध में पीसकर पिलाने से दूसरे मास की गर्भ पीड़ा अच्छी होती है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

4. पीपल की छाल, काला तिल, सतावर इन सबको बराबर लें, गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से दूसरे मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है।

5. चन्दन, तगर, कूठ, कमल की जड़, कमल की केसर, काकोली और असगन्ध इन सबको ठण्डे पानी के साथ पीसकर पीने से तीसरे मास के गर्भ की पीड़ा जाती रहती है।

6. नीलकमल व कमल की जड़, गौखरू गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से चौथे महीने के गर्भ की पीड़ा जाती रहती है।

7. गदहपूर्णा, काकोली, तगर, नीलकमल, गौखरू इन सबको गौ के दूध के साथ पीने से पांचवें मास के गर्भ की पीड़ा जाती है।

8. कैथ का गूदा ठण्डे पानी में पीस और गौ का दूध मिलाकर पीने से छठे मास के गर्भ की पीड़ा जाती है।

9. कसेरू, पुष्कर, मूल, सिंघोड़ा व नीलकमल पानी में पीसकर पीने से सातवें मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है।

10. इन्द्रायन के बीज, कंकोल (अकोल) मधु के साथ पीस-छानकर खाने से नवें मास के गर्भ की पीड़ा शान्त होती है।

11. पुरानी खांड, मुनक्का, छुहारा, शहद व नीलकमल को गौ के दूध में पीने से दसवें महीने के गर्भ की व्यथा दूर होती है।

12. आंवला और मुलहठी गौ के दूध के साथ पीने से गर्भ स्तम्भन पूर्णरूपेण हो जाता है फिर गिरता नहीं।

13. कसेरू, सिंघाड़ा, नागरमोथा और रेंड़ी इन सबको समभाग ले चूर्णकर सतावर डालकर पकाये हुए गौ के दूध के साथ पीने से गर्भव्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है।

काकतन्त्र—

* कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की रात को कौवे के घोसले से गिरे हुए पंख चुन लायें। अमावस्या की रात को उल्लू के घोंसले से कुछ पंख बटोर लावें। पूर्णिमा की आधी रात को दोनों पक्षियों के परों को बबूल और नीम की सूखी लकड़ियों की आग में भस्म कर अपने पास रख लें। जब दो शत्रुओं को आपस में लड़ा देने का इरादा हो, तो शनि या मंगल के दिन उस भस्म को दोनों शत्रुओं के सिर पर थोड़ा-थोड़ा छिड़क दें। दोनों शत्रु आपस में झगड़ पड़ेंगे और लड़ते-लड़ते कमजोर पड़ जायेंगे और दब जायेंगे।

* एक हाथ में कौवे का दूसरे हाथ में उल्लू का पर ले विद्वेषण मन्त्र से

अभिमन्त्रित कर दोनों परों को एक साथ मिलाकर काले सूत में बांधकर शत्रु के घर में गाड़ दें तो पिता-पुत्र में विद्वेषण हो जाये, जब शांत करना हो तो उसे निकाल गुग्गुल का धूप देवें तो शान्त हो जाये।

* यदि कोई पुरुष कौवे और कौवी का समागम देख ले, तो छः मास में उसकी मृत्यु हो जाती है। इस दोष से बचने के लिए यदि व्यक्ति अपने मौत की झूठी खबर ससुराल भेज देता है तो उसका बचाव हो जाता है अथवा शिवजी के मन्दिर में जाकर सफेद नमक की डली से कौवे की आकृति बनाकर चुपचाप लौट आवे। पीछे मुड़कर न देखे तो दोष का निवारण हो जाता है। ये दोनों बातें अनुभूत व सत्य हैं।

चेतावनी

* कुछ बुरी औरतें किसी से अकारण ईर्ष्या व डाह रखती हैं। ऐसी दुष्ट स्त्रियां निद्रावस्था में दूसरों के बाल काट लेती हैं, साड़ी का पल्लू भी फाड़कर उसे जलाकर या तो पी जाती हैं या गाड़ देती हैं। जिससे वह स्त्री दिनोंदिन बीमार व चिन्तातुर होती हुई धीरे-धीरे मर जाती है।

* इसी प्रकार कुछ नि:सन्तान बांझ स्त्रियां दूसरी औरतों के छोटे व सुन्दर बच्चे को देखकर डाह करती हैं तथा उस बच्चे के पोतड़ा (अधोवस्त्र) को जलाकर पी जाती हैं जिससे उस बच्चे के पूरे शरीर में फोड़े हो जाते हैं तथा वह खाना-पीना छोड़कर धीरे-धीरे मर जाता है। अतः समझदार व्यक्ति को बच्चे के पोतड़े को घर में सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। अपने सिर के बाल, अपने वस्त्र व नाखूनों के बारे में बराबर ध्यान रखना चाहिए।

* अन्य पशु-पक्षी तन्त्र

* बुद्धि नष्ट करने का टोटका—

उलूक (उल्लू) तथा बन्दर की विष्टा पान में जिसको खिला दी जायेगी, उसकी बुद्धि का स्तम्भन हो जायेगा।

* स्त्रियों के मासिक-धर्म का टोटका—

कबूतर की विष्टा और शहद मिलाकर खाने से बिगड़ा हुआ मासिक-धर्म ठीक हो जाता है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

पुत्र होने का तन्त्र—

कबूतर की बीट व सुहागा लेकर, पीसकर शिश्न पर लेपकर सहवास करें तो पुत्र होता है।

शत्रु-मारण तन्त्र—

सर्प, भौंरा, काला बिच्छू एवं बन्दर के सिर का सम भाग ले चूर्ण कर, शीशी में भर लेवे। तत्पश्चात् शत्रु की शय्या या उसके वस्त्रादिकों पर डालते ही शत्रुव्रणों से पीड़ित होकर मर जावेगा। यह चूर्ण यम दण्ड के सदृश है, जिसका निवारण देवतादिक भी नहीं कर सकते, मनुष्यों की क्या गणना है।

जब शत्रु को पीड़ारहित करना हो तो नील, लालकमल एवं लालचन्दन को मुर्गी के पित्त में मिला लेप करने से पीड़ा शान्त हो जायेगी।

शत्रु का मल-मूत्र बांधने का तन्त्र—

रिपु की विष्ठा (मल) तथा बिच्छू एक हण्डिया में बन्दकर ऊपर से मिट्टी लगाकर पृथ्वी में गाड़ दें तो शत्रु का मलावरोध (मल रुकने से) मरणतुल्य कष्ट पाने लगता है और भूमि खोदकर हण्डी खोल देने से पुनः सुखी हो जाता है।

प्रबल आकर्षण का टोटका—

स्त्री के बायें पैर के नीचे की मिट्टी ला गिरगिट के खून में सान उसकी (पुतली) प्रतिमा बनावें। तत्पश्चात् प्रतिमा के वक्षस्थल पर उस स्त्री का नाम लिखें जिसका आकर्षण करना हो अर्थात् जिसे बुलाना हो। फिर उस प्रतिमा को, मूत्र करने के स्थान पर गाड़ दें तथा प्रतिदिन उस पर मूत्र करें तो हजारों मील की दूरी पर रहने वाली स्त्री क्यों न हो पर वह आकर्षित होकर चली आयेगी।

वनस्पति-तन्त्र

पक्षाघात पर टोटका—

नीम और अदरख का पत्ता—दोनों चीजों को एक साथ घी में भूनकर रोगी को खिलावे और वही घी तमाम शरीर पर लगावे।

पीलिया रोग पर टोटका—

हरे अदरख, चिरायता दोनों को समान भाग लेकर पीसकर मटर प्रमाण गोली

बना लो, प्रतिदिन सुबह एक सप्ताह तक एक-एक गोली खायें, तो आराम हो जायेगा।

वमन (कै) बन्द करने का टोटका—

नारियल की जटा को जलाकर उसकी राख में थोड़ा उजला लवण मिला दो और पानी में घोलकर पिला दो। कै बन्द हो जायेगा। आजमाई हुई दवा है।

चेचक होने पर टोटका—

5 तोला नीम के मद में 5 कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से 7 दिन में चेचक से आराम होता है।

बिच्छू के विष पर टोटके—

1. बेर के पत्तों को पानी में पीसकर लेप करने से बिच्छू का विष नाश होता है।
2. नीम के पत्ते और कड़वा तेल दोनों को मिलाकर खूब औटावें और उसी भाप से सेंकने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

उच्चाटन पर विचित्र टोटका—

मध्याह्न (दोपहर) में जहां गदहा लोटा हो, वहां की धूल पूर्व या पश्चिम मुख होकर बायें हाथ से उठा लेवें, तत्पश्चात् उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सात दिन बराबर शत्रु के घर में फेंके तो गृहस्वामी का उच्चाटन होवे।

नक्षत्र तन्त्र

काले जीरे के चूर्ण के अंजन से घोड़े अंधे हो जाते हैं। यदि उनकी आंखों को मट्ठे से धो दें, तो फिर से पहले की तरह देखने लगते हैं।

निम्न मन्त्र दस हजार बार जपने से सिद्ध होता है, उपर्युक्त कील इसी से अभिमन्त्रित करके घुड़साल में गाड़ें।

अश्व मारण मन्त्र—

ॐ अश्वं पच-पच स्वाहा। (अयुत जपात् सिद्धिः)

मछली तन्त्र—

बेर के काष्ठ की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में यदि मल्लाह के घर में गाड़ दें तो उसकी सब मछलियां नष्ट हो जायेंगी।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Nlali,odisha

धोबी तन्त्र—

चमेली (फूल) की लकड़ी की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में धोबी के घर में गाड़ने से उसके सब वस्त्र विनष्ट हो जाते हैं।

महुआ के काष्ठ की चार अंगुल की कील चित्रा नक्षत्र में तेल पेरने के स्थान पर गाड़ देने से सम्पूर्ण तेल विनष्ट हो जाता है।

बिच्छू तन्त्र—

* जिस जगह बिच्छू ने काटा हो, उसकी दूसरी तरफ के कान में नमक घोलकर, दो-तीन बूंदें टपकाने से विष उतर जाता है।

* यदि बिच्छू ज्यादा जहरीला हो तो बिच्छू को फौरन मार डालें क्योंकि डंक मारकर बिच्छू जितनी तेजी से चलता है, उतनी तेजी से जहर चढ़ता है। बिच्छू को मारने के पश्चात् व्यक्ति को नौसादर व चूना मिलाकर सुंघा देने से जहर उतर जाता है।

गर्भस्राव पर तन्त्र—

कड़वी तुम्बी को बीजसहित पानी में पीसकर गुप्तांग पर लेप करने से गर्भस्राव हो जाता है।

* गन्धक का चूर्ण पानी में घोलकर शाक के ऊपर छिड़क देने से सब शाक नष्ट हो जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

* जामुन की लकड़ी की आठ अंगुल की कील अहीर के घर जहां गायें दुही जाती हों, वहां अनुराधा नक्षत्र में गाड़ देने से गायों का दूध सूख जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

* सफेद मदार की लकड़ी की सोलह अंगुल की कील कृत्तिका नक्षत्र में मदिरा उतारने वाले के घर में गाड़ देने से मदिरा नष्ट हो जाती है। यह प्रयोग भी बिना मन्त्र का है।

* सोपारी के लकड़ी की नव अंगुल की कील शतभिषा नक्षत्र में तमोली के घर में या खेत में गाड़ देने से उसके पान नष्ट हो जाते हैं।

* आश्लेषा नक्षत्र में देवदारु की बांकी लकड़ी लाकर बकरे के मूत्र में कूट-पीसकर सुखा लें जिससे कि भुरभुरी हो जाये। फिर तो जिसका आकर्षण करना हो उसके सिर पर थोड़ा डाल दें तो उसका आकर्षण हो जाएगा।

* सफेद सरसों और शंकरजी पर चढ़ाई हुई माला और जल इन तीनों को मिलाकर मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देने से उच्चाटन होता है और

उसे खोदकर निकाल देने से पूर्ववत् सुखी होता है।

* मधु के साथ खस-चन्दन मिला तिलक लगा स्त्री के गले में हाथ डालें तो स्त्री वश में हो।

* चिता की राख, बच, कूट, रोली एवं गोरोचन सम भाग ले चूर्णकर स्त्री के शिश्न पर डालने से स्त्री वश में हो जाती है।

मेघ-स्तम्भन का टोटका—

दो ईंट लाकर दोनों ईंटों द्वारा सम्पुट करें। तत्पश्चात् चिता के कोयले से उस पर मेघ लिखकर उस सम्पुट को स्तम्भन मंत्र से अभिमंत्रित करें। फिर उसे पृथ्वी में गाड़ देवें तो मेघ का स्तम्भन हो।

गर्भपात स्राव पर तन्त्र—

रवि-पुष्य नक्षत्र में धतूरे का मूल लाएं, कुंवारी कन्या के हाथ से कते सूत को गले में बांधें तो गर्भपात हो जाता है।

रजस्वला होने पर तन्त्र—

ज्येष्ठा नक्षत्र में अरडूसे की मूल लाकर उसे धूप देकर स्त्री की कमर में बांध देने से स्त्री तीस दिन के भीतर रजस्वला हो जाती है।

उच्चाटन तन्त्र—

चार अंगुल प्रमाण मनुष्य की हड्डी लेकर पुष्य नक्षत्र में जिसके घर में गाड़ दें, उसका परिवार सहित उच्चाटन हो जाये। यह प्रयोग बिना मन्त्र के ही सिद्ध है।

संतान विनाश तन्त्र—

इसी प्रकार एक अंगुल प्रमाण सर्प की हड्डी लेकर आश्लेषा नक्षत्र में शत्रु के घर में गाड़ दें और निम्नलिखित मन्त्र का दस हजार जप करें तो शत्रु की संतान का विनाश होता है।

मन्त्र—ॐ हुं हुं फट् स्वाहा।

शत्रु-परिवार पर तन्त्र—

चार अंगुल प्रमाण घोड़े की हड्डी अश्विनी नक्षत्र में इसी मंत्र से अभिमंत्रित करके गाड़ दें तो शत्रु के परिवार का विनाश होता है।

शत्रु की नींद उड़ानेवाला तन्त्र—

नींबू की कील आर्द्रा नक्षत्र में शत्रु के शयनागार में गाड़ने से शत्रु की नींद नष्ट हो जाती है और उसका मरण होने लगता है और उसके उखाड़ लेने पर पुनः सुखी हो जाता है।

शनि एवं उस पर टोटके—

शनि काले रंग का, तीक्ष्ण, उग्र व क्रूर ग्रह है तथा यह सन्ध्या समय ज्यादा

बलवान् होता है। ज्योतिष ग्रंथों में शनि, यम, मृत्यु, काल, दुःख, दैन्य व मन्द आदि अशुभ नामों से पुकारा गया है। अंग्रेज लोग इसे शैतान, Reaper व Evil-eye के नाम से पुकारते हैं। कहते हैं, शनि की दृष्टि बड़ी खराब होती है। इसके जन्म होते ही इसकी दृष्टि अपने पिता सूर्य पर पड़ी, उससे तत्काल ही सूर्य कुष्ठ रोग से पीड़ित हुआ, उसका सारथी अरुण पंगु हुआ तथा उसके घोड़े अन्धे हो गए। जातक के जन्मराशि पर, दूसरे तथा बारहवें आने पर शनि की साढ़े साती लग जाती है। जन्मराशि पर आने पर व्यक्ति को मानसिक परेशानियां, कार्य में रुकावट, आर्थिक हानि, व्यर्थ की यात्रा, वायुप्रकोप, चर्मरोग इत्यादि का सामना करना पड़ता है। दूसरे स्थान पर होने से परिवार में किसी की मृत्यु, कौटुम्बिक कलह, पत्नी को कष्ट, अचानक धनहानि एवं ऋणग्रस्त होने की नौबत आ जाती है। बारहवें आने पर दुर्घटना, गुप्त शत्रुओं का प्रकोप, नेत्रपीड़ा, पैरों में तकलीफ, खर्च इत्यादि होता है। जन्म से चौथे व आठवें आने पर शनि की ढैया लगती है, जिससे जातक को कष्टप्रद परिस्थितियों के बीच में से होकर गुजरना पड़ता है। शनि के दूषित प्रभाव को भुक्तभोगी अच्छी तरह से जानते हैं। इसके समाधान हेतु निम्न टोटके प्रभावशाली रहते हैं।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

* शनि का साढ़ेसाती, ढैया व दशा के प्रभाव से बचने के लिए प्रति शनिवार सूर्यास्त के समय कीड़ीनगरा सींचें तो आशातीत सफलता मिले।

* काले घोड़े के नाल की अंगूठी शनि पुष्य को बनाकर पहनें, इससे बहुत राहत मिलती है तथा भाग्य की बाधा स्वतः ही दूर होकर, कार्य में सफलता मिलती है।

* शनि पुष्य के दिन पानी वाले नारियल की जटा उतारकर उसके छेद में यथासम्भव शक्कर भर दें। तत्पश्चात् सायंकाल के समय काले वस्त्र से उस नारियल को आच्छादित कर बिना टोके व बोले कीड़ीनगरा के स्थान पर जाकर नारियल को इस प्रकार गाड़ें कि अन्य पशु व पक्षी इसे न खा सकें। इस प्रकार चींटियों को लगभग एक माह की खुराक मिल जाती है तथा जातक का भला हो जाता है।

* शनि का कुप्रभाव ज्यादा खतरनाक हो तो शनि के मन्दिर जावें, तेलदान, छायादान करें, शनि के जप करावें, स्वयं बजरंग बाण का पाठ करें। शनिवार को पीपल में जल सींचकर 7 परिक्रमा देवें। जल में थोड़े से काले तिल डालें। ऐसा करने पर शनिदेव प्रसन्न होकर इच्छित फल देने वाले हो जाते हैं।

प्रश्न लग्न के आधार पर—

भूत-प्रेत दोष-परीक्षण एवं उसका निराकरण

ऊपरी हवा से ग्रसित जब कोई व्यक्ति आपके पास आवे, तब तत्काल प्रश्नकुण्डली बनाकर उस पर विचार करें। **मेष लग्न**—आने पर जातक पर जलदेवी का दोष समझें। **प्रमाण**—शरीर टूटना, कमर में शूल चले, भूख का न लगना, **निराकरण**—पीपल सींचें एक सेर खिचड़ी, एक सेर मालपुआ, एक सेर बाकला, उक्कला की सात ठिकरियों में डालकर, शरीर के उपर सात बार उवारें, फिर तीन रास्ते पर रख दें। बाधा स्वतः ही दूर हो जायेगी।
वृषभ लग्न—प्रेतदोष। **प्रमाण**—शरीर में उत्पात व शरीर विकल रहे। सांयकाल को बहुत से जंजाल दीखें, दृष्टि पीड़ा, अन्न अच्छा न लगे, एक स्थान पर बैठा रहे, अचानक उठकर जाने लगे इत्यादि। **निराकरण**—एक सेर चावल, एक सेर दही, सफेद वस्त्र ढाई गज, चांदी की सलाका कर, पश्चिम दिशा में रख दें। तत्पश्चात् मन्त्र-पूत रक्षा करके गले में बांध दें। व्यक्ति ठीक हो जायेगा। **मिथुन लग्न**—

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

क्षेत्रपाल दोष। **प्रमाण**—शरीर गर्म रहे, हड्डी व जोड़ों में दर्द, मस्तक पीड़ा, पसीने आवे, शून्यपना लगे, अंटशंट बोले, हाथ-पैर में झनझनाहट होवे। **निराकरण**—एक सेर तिलवट, सात धान, सात धान के बाकले, एक सेर बड़ा, सात पेड़ की पत्तियां, एक हाथ लाल वस्त्र इतनी वस्तुएं उवार कर भैरू मन्दिर, भैरू चबूतरा या गांव के बाहर निर्जन स्थान में रख दें, पीछे मुड़ कर न देखें। **कर्क लग्न**—शाकिनी दोष। **प्रमाण**—नेत्र पीड़ा, अकारण रूदन करे, अकारण हंसे, भूख न लगे, थोड़ा बोले, सिर में वायु रहे, पट पीड़ा रहे। **निराकरण**—लाल वस्त्र सात हाथ, रक्त चन्दन, एक सेर खिचड़ी, एक सेर पकौड़े, ठीकरी ऊपर रखकर दें। रक्षा तावीज कर गले में पहनावे, शाकिनी दोष जाये। **सिंह लग्न**—जल में पेशाब करने के कारण पित्रों का दोष, **प्रमाण**—शरीर के सभी जोड़ दुखे, रात्रि में झखे, प्यास ज्यादा लगे। **निराकरण**—चांदी की पुतली तीन तोले की, सात हाथ लाल वस्त्र, एक सेर चावल सातधान का बाकला, नारियल तीन, चौकड़ियां 2, दीपक 4 सारी वस्तुयें कपड़े में बांधकर, मस्तक के ऊपर फेरकर उतारा करना। यन्त्र कराकर गले में बंधावें। **कन्या लग्न**—आकाश देवी दोष। **प्रमाण**—आलस खूब आवे, दस्त लगे, उबासी आवे, शरीर भारी रहे, जंजाल बहुत दीखे। **निराकरण**—ढाई हाथ लाल वस्त्र, स्वर्ण एक मासा, चांदी रा चौकड़िया तीन, शरीर का एक उतारा हुआ वस्त्र, एक सेर पकौड़े, एक सेर तिलवट व खिचड़ी। इन वस्तुओं का उतारा करें। श्वासणी को भोजन करावें।
तुला लग्न—खेचरी आकाशी दोष। **प्रमाण**—भूख न लगे, नेत्रपीड़ा, अतिसार, जंजाल बहुत दीखे। **निराकरण**—साढ़े सात मासे भर की चांदी की पुतली, एक सेर चावल, शक्कर एक पाव, नारियल तीन, ये सब वस्तुएं लाल कपड़े में लपेटकर ब्राह्मण को देने से शान्ति होगी। **वृश्चिक लग्न**—क्षेत्रपाल व शाकिनी दोष। **प्रमाण**—क्रोध बहुत उपजे, शरीर गर्म रहे, लोग घूरकर देखें, अचानक हंसें। **निराकरण**—चार जोगियों को भोजन व वस्त्र आंचल में ढककर देवें। **धनु लग्न**—दादी, नानी अथवा माता का दोष। **प्रमाण**—शरीर में उत्पात, शरीर के जोड़े दुःखें, निंद्रा में बकवास करे व जंजाल दीखे, मन बेचैन रहे। **निराकरण**—श्वासिणी को भोजन करवाके दो वेष पहनावें तो शांति होये। **मकर लग्न**—खेचरी दोष व भूतदोष। **प्रमाण**—ताव चढ़े, नींद आवे, उबासी व उबका आवे। **निराकरण**—तिलवट, बाकला, उड़द के पकौड़े उक्कले की सात ठिकरियों में डाल देना। रक्षा का यन्त्र गले में बांधना। **कुम्भ लग्न**—जलदेवी का दोष। **प्रमाण**—शरीर ताप, जंजाल दीखे, शरीर की संधियां दुखें, उल्टियां होवें। **निराकरण**—१॥ मासा या २॥ मासा चांदी, ढाई हाथ लाल वस्त्र, एक सेर चावल, एक सेर तिलवट, एक सेर बाकला, ठीकरी में डालकर उतारा करें। सभी सामान वस्त्र पर रखें। **मीन लग्न**—नये पितरों का दोष। **प्रमाण**—कुछ देर हंसे, कुछ देर रोवे, शरीर आकुल-व्याकुल रहै, उबासी बहुत आवे। **निराकरण**—पीपल सींचे, अतिथि को भोजन करावे कुंवारों को भोजन करा संतुष्ट करे, दान दे पश्चात् रक्षा का मन्त्र गले में बांधे तो दोष की तत्काल निवृत्ति हो जाती है।

* किरायेदार से मकान खाली कराना—

सर्प के रीढ़ की हड्डी पुष्य नक्षत्र में लाकर 'विद्वेषण मन्त्र' से अभिमन्त्रित कर पॉउडर बनाकर घर में बिखेर दें, रात्रि को बहुत से सांप व जंजाल दीखेंगे, किरायेदार मकान छोड़कर भाग जायेगा।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

'लाल-किताब'

एवं

ग्रहों के चमत्कारी टोटके

'लाल-किताब' नामक मशहूर ग्रंथ जो कि भारतीय ज्योतिष साहित्य में एक चमत्कारिक पुस्तक के रूप में विख्यात है, अब दुर्लभ व दुष्प्राप्य हो चुका है। कुछ दिनों पहले 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में एक लेख छपा था जिसमें एक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता ने यह घोषणा की थी कि यदि यह पुस्तक उसे मिल जाये तो वह 25000 रु. नकद देने को तैयार है। लाल-किताब नामक 1172 पृष्ठों का यह ग्रन्थ मूलतः उर्दू भाषा में लिखा गया है, जिसमें ग्रहों के दुष्प्रभाव को मिटाने के लिए बहुत ही सस्ते एवं विचित्र टोटके दिये गए हैं। यद्यपि इन टोटकों की प्रक्रिया को देखकर बुद्धि जवाब दे जाती है तथापि ये टोटके हजारों व्यक्तियों द्वारा परीक्षित हैं, पूर्ण रूप से अनुभूत, व सत्य हैं। पंजाब व हरियाणा राज्य में प्रचलित इन टोटकों को आप भी आजमायें व लाभ उठावें, इस दृष्टि से इसका सार रूप में संकलन आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

ग्रहों के तिलस्म (यंत्र) एवं उनके धूप—

* जिस ग्रह के सम्बन्धित पदार्थ से तिलस्म (यंत्र) बनाया जाता है, उसकी धूपबत्ती उसी ग्रह से सम्बन्धित पदार्थों से की जाती है।

* सूर्य के अस्त होने के बाद ही उस ग्रह के उदय होने पर उस तिलस्म (यंत्र) को उसके सामने रखा जाता है और सूर्य के उदय होने के पहले ही उसे किसी वस्तु में छिपा दिया जाता है ताकि उस तिलस्म (यंत्र) पर सूर्य की किरणें न आवें।
* तिलस्म (यंत्र) की तैयारी करते वक्त जिस आशय का कार्य है, उसके अनुसार उस ग्रह व राशि की प्रवृत्ति का ध्यान रखना बहुत ही जरूरी है।
* अगर उसके असर को समाप्त या बेअसर करना हो तो उसकी प्रकृति के उलटा (विपरीत) तिलस्म (यंत्र) तैयार करें। जैसे कार्य सिद्धि के लिए अग्नि के साथ वायु का मित्र सम्बन्ध है और असर नष्ट करने के लिए अग्नि के साथ जल तत्त्व या पृथ्वी तत्त्व के काल में कार्य करें।

ग्रहों की धूप—

सूर्य— लोबान + उद + चंदन + जाफरान (केसर)
मंगल— लाल मिर्च + अफीम + लोंग + गुग्गुल
बुध— लोबान + गुग्गुल + बादाम + चमेली की जड़
गुरू— केसर + नागर मोथा + श्वेत चंदन + लाल चंदन
शुक्र— उद + लोबान
शनि— काली मिर्च + लाख + गुग्गुल
चन्द्रमा— कपूर + लोबान

तंत्र (तिलस्म) में अंशों का महत्त्व—

जो ग्रह सूर्य के साथ उसी राशि में उसी अंश में आ जाये तो उस ग्रह का प्रभाव समाप्त हो जाता है। वह उस समय मुर्दा के समान हो जाता है। ऐसे समय में उन ग्रहों से सम्बन्धित फलों का नाश करने के लिए कोई भी किया गया कार्य सफल रहता है। जैसे सूर्य के साथ चन्द्रमा एक ही डिग्री में आ जाये, एक ही अंश में आ जाये तो ऐसे समय में उच्च अधिकारी तताशि-पुरुष, समाज के प्रतिष्ठित एवं शक्तिशाली व्यक्तियों के लिए नाश करने हेतु—

* यदि सूर्य के साथ बुध हो तो समस्त बुद्धिजीवी व व्यापारी वर्ग और यदि सूर्य के साथ शुक्र हो तो स्त्री वर्ग और यदि सूर्य के साथ मंगल हो तो किसी बहुत शक्तिशाली दुष्ट व क्रूर व्यक्ति को और यदि सूर्य के साथ गुरु हो तो विद्वान पुरुष, साधु-संत, महन्त, मठाधीश और यदि सूर्य के साथ शनि हो तो भूमि, मकान व धन नाश तथा भौतिक सामग्रियों को नष्ट करने के लिए उससे उपयुक्त व श्रेष्ठ

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

समय और कोई नहीं होता। विद्वान् तांत्रिक तथा इल्म को जानने वाले ज्योतिषी ऐसे वक्त की तलाश में रहते हैं जिसके कारण उनका कार्य तत्काल सिद्ध हो जाता है।

दो ग्रहों की अंशात्मक युति एवं उनके तिलस्मी कार्य—

जब दो ग्रह एक राशि में एक अंश पर आ जावें तो नजूमी भाषा में उसे 'नजरे कुरान' कहते हैं तथा भारतीय ज्योतिषी उसको युति कहकर पुकारते हैं। ऐसी स्थिति में भिन्न-भिन्न ग्रहों का क्या प्रभाव होता है तथा उस समय किस प्रकार के कार्य करने से तांत्रिकों को सफलता मिलती है तथा तंत्रशास्त्र की नजर में उन युतियों का असर जिस प्रकार से माना गया वे इस प्रकार हैं—

ग्रह	कार्य
चंद्र+मंगल	शत्रुओं पर एवं ईर्ष्या करने वालों पर, सफलता प्राप्त करने के लिए एवं उच्च वर्ग (सरकारी अधिकारी) विशेषकर सैनिक व शासकीय अधिकारी से मुलाकात करने के लिए उत्तम रहता है।
चंद्र+बुध	धनवान व्यक्ति, उद्योगपति एवं लेखक, सम्पादक व पत्रकार से मिलने या सम्बन्ध बनाने के लिए।
चंद्र+शुक्र	प्रेम-प्रसंगों में सफलता प्राप्त करने एवं प्रेमिका को प्राप्त करने तथा शादी-ब्याह के समस्त कार्यों के लिए, विपरीत लिंगी से कार्य कराने के लिए।
चंद्र+गुरु	अध्ययन कार्य, किसी नई विद्या को सीखने एवं धन और व्यापार उन्नति के लिए।
चंद्र+शनि	शत्रुओं का नाश करने एवं उन्हें हानि पहुंचाने या उन्हें कष्ट पहुंचाने के लिए।
चंद्र+सूर्य	राजपुरुष और उच्च अधिकारी वर्ग के लोगों को हानि या उसे उच्चाटन करने के लिए।
मंगल+बुध	शत्रुता, भौतिक सामग्री को हानि पहुंचाने, तबाह-बर्बाद, हर प्रकार सम्पत्ति, संस्था व घर को तबाह-बर्बाद खराब करने के लिए।
मंगल+शुक्र	हर प्रकार के कलाकारों (फिल्मी सितारों) में डांस, ड्रामा एवं स्त्री जाति पर प्रभुत्व और सफलता प्राप्त करने के लिए।
मंगल+गुरु	युद्ध और झगड़े में या कोर्ट केस में, सफलता प्राप्त करने के लिए, शत्रु-पथ पर भी जनमत को अनुकूल बनाने के लिए।

मंगल+शनि	शत्रु-नाश एवं शत्रु-मृत्यु के लिए एवं किसी स्थान को वीरान करने (उजाड़ने) के लिए।
बुध+शुक्र	प्रेम-सम्बन्धी सफलता, विद्या प्राप्ति एवं विशेष रूप से संगीत में सफलता के लिए।
बुध+गुरु	पुरुष का पुरुष के साथ प्रेम और मित्रता सम्बन्धों में पूर्ण रूप से सहयोग के लिए एवं हर प्रकार की ज्ञानवृद्धि के लिए नया पाठ, साइन्स सीखने के लिए।
बुध+शनि	कृषि एवं मेवाएं, सब्जी एवं इसकी वृद्धि के लिए, अच्छी फसल एवं किसी वस्तु की या किसी रहस्य (चोरी या कांड) को गुप्त रखने के लिए।
शुक्र+गुरु	प्रेम-सम्बन्धी आकर्षण एवं जनसमूह को अपने अनुकूल करने के लिए।
शुक्र+शनि	स्त्री जाति को हानि, परेशानी, दुर्भाग्य के समस्त कार्य के लिए। (सिर्फ विपरीत लिंगी के लिए)
गुरु+शनि	हर प्रकार के विद्वानों के बुद्धिनाश हेतु, शास्त्रार्थ व विवाद पैदा करने हेतु एवं उनमें शत्रुता पैदा करने हेतु।

ग्रहों के मार्गी और वक्री होने पर उस समय करने वाले तिलस्मी कार्य—

1. शनि जब मार्गी हो तो उस समय शत्रुता और शत्रुनाश के लिए समस्त कार्यों में सफलता मिलती है।
2. शनि जब वक्री हो तो दो मित्रों में एवं दो प्रमियों में विद्वेषण एवं उच्चाटन के लिए सफलता मिलती है।

1. गुरु जब वक्री होता है तो भूमि, जायदाद व प्रतिष्ठा में न्यूनता व कमी लाने वाला कार्य कराता है।
2. इसके विपरीत जब-जब वह मार्गी होता है तो भूमि, जायदाद, औहदे में बढ़ोत्तरी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा व अन्य कार्यों में सफलता के कार्य करने हेतु किये गए तिलस्मों (यन्त्रों) में सफलता मिलती है।

1. मंगल जब मार्गी होता है तब यश, मान, पद, प्रतिष्ठा और किसी वस्तु का आयोजन-संयोजन, संगठन के लिए किये गए कार्यों में सफलता मिलती है।
2. इसके विपरीत इसके वक्री होने पर सभा, फौज को नष्ट करने के लिए विघठन सम्बन्धित सामूहिक कार्यों के लिए बनाये गए तिलस्मों (यन्त्रों) में सफलता मिलती है।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

1. शुक्र के मार्गी होने पर स्त्री-जाति में प्रेम-सम्बन्ध, मित्रता एवं ऐश्वर्यशाली

वस्तुओं के क्रय-विक्रय, संयोजनात्मक कार्य, पार्टी, विवाह, सगाई इत्यादि कार्यों में सफलता मिलती है।

2. इसके वक्री होने पर गर्भपात, संताननाश हेतु बनाये गए तिलस्मों (यंत्रों) में विशेषकर सफलता मिलती है।

1. बुध मार्गी होने पर यश, मान और हर प्रकार की विद्या प्राप्त करने हेतु बनाये गए तिलस्मों (यन्त्रों) में सफलता मिलती है।
2. इसके विपरीत यह वक्री होने पर किसी को ज़लील करना, अपमानित करना व नीचा दिखाने के लिए किये गए तिलस्मों (यन्त्रों) में सफलता मिलती है।

ग्रहों के मार्गी, वक्री में ठीक समय का अनुसन्धान—

1. तुला राशि के एक अंश पर किसी ग्रह के वक्री, मार्गी हो जाने पर उस समय केवल एक व्यक्ति के लिए शत्रुता या तकलीफ पहुंचाने व समाप्त करने के लिए किये गए कार्यों में सफलता मिलती है।
2. तुला राशि के दो अंशों पर किसी ग्रह के वक्री या मार्गी हो जाने पर ग्रहकाल में दुश्मन को काबू करने एवं उसको अनुकूल बनाने के लिए किये गए कार्यों में सफलता मिलती है।
3. तुला राशि के तीन अंशों पर वक्री-मार्गी हुए ग्रहकाल में ऐसे रहस्य का पता चल सकता है, जिसके बारे में जानना अत्यन्त कठिन है।
4. तुला राशि के आठ अंशों पर वक्री-मार्गी होने वाले ग्रहकाल में विपरीत लिंगी के प्रति किये गए प्रेम सम्बन्धी कार्यों व वशीकरण यंत्रों में तत्काल सफलता मिलती है।
5. तुला राशि के ग्यारह अंशों में वक्री-मार्गी हुए ग्रहकाल में विपरीत रास्ते पर गए हुए व्यक्ति को सही रास्ते पर लाने के लिए किये गए कार्यों में सफलता मिलती है।
6. तुला का शुक्र जब तेरह अंशों में वक्री अथवा मार्गी हो जाये तो किसी औरत को बदचलन करने के लिए, उसको पथ-भ्रष्ट करने के लिए किये गए प्रयासों में सफलता मिलती है।
7. तुला का शुक्र चौदह अंशों तक वक्री अथवा मार्गी हो जाये तो उस समय कोई भी औषधि, दवा अथवा लोशन जो सुन्दरता को बढ़ाने वाला हो, बनाया जाये तो उसमें आश्चर्यजनक सफलता मिलती है।
8. तुला का शुक्र जब तीस अंशों पर वक्री अथवा मार्गी हो तो उस समय किसी इमारत, भवन व बड़ी बिल्डिंग को हमेशा-हमेशा के लिए कायम रखने के लिए तथा उसकी कीर्ति को अखण्ड बनाने के लिए किये गए प्रयासों में सफलता मिलती है।

ग्रहों के चमत्कारी टोटके—

(**विशेष**—यदि किसी भी ग्रह की बाधा तेज हो व जातक को तत्काल लाभ अपेक्षित हो, तो उपर्युक्त टोटके 40-43 दिन तक लगातार करें। ये टोटके सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य में ही होने चाहिए। अधिक-से-अधिक 43 दिन में जातक को निश्चित राहत मिल जाती है। यदि परिस्थितिवश नियमितता में बाधा पड़ जाये तो कोई हानि नहीं होती। उपाय को नवीन गणना के साथ पुनः प्रारम्भ किया जा सकता है।)

सूर्य—

1. किसी जातक की कुण्डली में यदि सूर्य की स्थिति खराब हो और उसकी वजह से उसके किसी कार्य में बाधा पड़ती हो जैसे दिल को कष्ट हो, राज-दरबार, कोर्ट-कचहरी से परेशानी हो, आंखों में कष्ट हो, दिल का दौरा हो, पेट की बीमारी हो, हड्डियों व जोड़ों में दर्द हो, तो जिस राशि में सूर्य हो, उसी नाप के अनुपात से गुड़ खरीदकर, रविवार के दिन बहते पानी या नदी में डाल दें। सूर्य-बाधा शान्त हो जायेगी।

2. यदि सूर्य लग्न में हो व शनि सातवें स्थान में हो अथवा सूर्य+शनि की युति हो तो ऐसी अवस्था में सूर्य पापपीड़ित रहता है। परिणामस्वरूप जातक की छोटी आयु में ही उसके पिता की मृत्यु हो जाती है। पत्नी बीमार रहती है। ऐसा जातक कामी होता है तथा दिन में ही पत्नी के साथ सम्भोग करता है। शनि यदि आठवें स्थान में हो तो जातक की अनेक पत्नियां मर जाती हैं। यदि मंगल पंचम स्थान में हो तो जातंक के पुत्रों की अकाल मृत्यु होती है। सूर्य लग्न में हो व सातवां घर खाली हो तो जातक की 24 वर्ष की अवस्था के पहले शादी नहीं होती तथा 24 वां वर्ष जातक के लिए महान् कष्टकारी होता है। इस प्रकार के दुर्योगों से बचने के लिए जातक अपने पैतृक मकान में हैण्डपम्प लगवाये या कुआं खुदावे। हैण्डपम्प लगाने के 10 वर्ष के भीतर-भीतर सूर्य ग्रह का दुष्प्रभाव नष्ट हो जाता है तथा जातक के जीवन में खुशहाली आती है।

3. यदि सूर्य सातवें भाव में हो व शनि लग्न में हो या सूर्य को देखता हो तो ऐसे जातक के पुत्र संतान नहीं होती, आर्थिक स्थिति प्रतिकूल व घर में कलह रहती है। ऐसी स्थिति में बिना सींग की काली गाय को रोटी खिलानी चाहिए। ताम्बे के चौकोर टुकड़े जमीन में गाड़ने चाहिए। भोजन करने के पूर्व जल की आचमनी लेनी चाहिए तथा भोजन का कुछ अंश अग्नि में आहुति के रूप में डालना चाहिए तो जातक की आर्थिक व पारिवारिक स्थिति सुधरती है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

4. सूर्य सातवें भाव में हो अथवा तुला राशि में नीच का होकर सप्तम भाव

सम्बन्धी (जैसे पत्नी से अलगाव, गुप्तलाभ में नुकसान, भागीदारों में फूट, प्रेमिका से वियोग इत्यादि) खराब फल दे रहा हो, तो टोटका यह है कि रात्रि के समय आग को दूध से बुझाओ तथा सुबह व्यक्ति मुंह में मीठा डालकर ऊपर से पानी पिया करे। लाल किताब वाले की सम्मति के अनुसार सूर्य द्वारा उत्पादित दुःख की निवृत्ति होकर व्यक्ति को शर्तिया लाभ होता है।

चन्द्रमा—

1. प्रतिकूल चन्द्रग्रह की शान्ति के लिए (जैसे माता की बीमारी, मानसिक चिन्ता, फेफड़ों में रोग, धन का नाश वगैरह) रविवार की रात्रि को सफेद धातु के बर्तन में दूध (अथवा जलमिश्रित दूध) को सिर के पास रखकर सोवे। सोमवार की सुबह उठते ही वह दूध पीपल या कीकर के वृक्ष में बिना बोले हुए सींच दे।

2. अष्टम स्थान में चन्द्रमा यदि शनि के साथ हो अथवा वृश्चिक का चंद्रमा शनि के साथ हो, तो जातक के पैतृक मकान के पास कुआं जरूर होगा। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को पैतृक सम्पत्ति, खेती व स्त्री से लाभ नहीं होता। व्यक्ति चिड़चिड़ा व अविवेकशील रहता है। यदि जातक उस कुएं को बंद करा दे तो आशातीत लाभ होगा।

3. अकेला चन्द्रमा अष्टम हो तथा उसके शत्रु ग्रह (बुध वगैरहा) लग्न में हों तो व्यक्ति 34 वर्षों तक भयंकर तकलीफ उठाता है। यदि चन्द्रमा के पापत्व की वजह से व्यक्ति संतानहीन हो, टी. बी., फेफड़े व गुर्दे की बीमारी, मिरगी व कैन्सर से ग्रसित हो तो निम्न उपाय करें:

(अ) व्यक्ति अपने घर में कुएं का पानी रखे परन्तु वह पानी कब्रिस्तान या श्मशानघाट में स्थित कुएं का होना चाहिए।

(ब) घर में बड़े लोगों के पैर छुए तथा छोटे बच्चों को दूध पिलावे।

(स) चांदी का चंद्रमा बनाकर घर में उसका पूजन करे। उपर्युक्त तीनों उपाय तब तक करे, जब तक सभी प्रकार की तकलीफों से पूर्ण राहत न मिल जाये।

4. यदि चन्द्र एकादश स्थान में हो, साथ में केतु हो अथवा केतु के साथ चंद्र कहीं भी हो तो चन्द्रमा दूषित हो जाता है। ऐसी स्थिति में प्रथमतः जातक के पुत्र संतान तब तक नहीं होती जब तक दादी जीवित हो। यदि हो भी जाये तो दादी तत्काल विधवा या अन्धी हो जाती है, पुत्र की आयु कम हो जाती है। ऐसी स्थिति में यदि घर में हैण्डपम्प हो अथवा ऐसी पत्थर शिला हो जिस पर नित्य पानी गिरता हो, को हमेशा स्वच्छ रखे। बच्चे की माता अपने नेत्र व मस्तक हमेशा दुग्धमिश्रित जल से धोवे। भैरो के मन्दिर में दूध का दान करे तो केतु के कुप्रभाव से मुक्ति मिलती है।

5. यदि पुरुष में शुक्राणुओं की कमी के कारण लड़कियां-ही-लड़कियां होती हों, पुत्र न हो, तो ऐसी अवस्था में सोमवार के दिन सोने की तश्तरी या कटोरी को आग पर तपाये। जब कटोरी लाल हो जाये तो उसमें दूध छोंक दे। फिर बड़े बर्तन में दूध लेकर उसे उस समय तक गर्म करते रहें जिस समय तक आपका सम्भोग चलता रहे। बाद में उस दूध को दोनों पी लें। ऐसी प्रक्रिया ग्यारह बार करने से जातक-पुत्र सन्तान से लाभान्वित होता है।

6. यदि चन्द्र एकादश में, केतु तीसरे-हो तो सन्तानोत्पत्ति के समय जच्चा व बच्चा दोनों को खतरा बना रहता है, जलयात्रा या अन्य दीर्घयात्रा नुकसानदायक रहती है। ऐसी अवस्था में दूध (खोये या मावा) के 121 लड्डू बनाकर बच्चों को खिला दें या नदी में डाल दें, तुरन्त राहत मिलेगी।

लाल किताब की सम्मति के अनुसार दूषित चन्द्र वाले व्यक्ति को दूध नहीं बेचना चाहिए। चन्द्रमा यदि चतुर्थ भाव में अनिष्टकारी सिद्ध हो रहा हो तो व्यक्ति दूध का प्रयोग न करे। रात को दूध न पिये तथा छोटे बच्चों व बुजुर्ग लोगों को निःशुल्क दूध पिलावे।

मंगल—

1. बाधक मंगल यदि शुभ गुणों से युक्त हो तो कुछ बताशे लेकर बहती नदी में डाले। श्रेष्ठ फल देगा।
2. बाधक मंगल यदि अशुभ गुणों से युक्त हो तो कुछ रेवड़ी (तिल व शक्कर से बनी) खरीदकर बहते पानी में डाले तो मंगल का अशुभत्व नष्ट होगा।
3. मंगल का अनिष्ट फल समाप्त करने हेतु मृगचर्म का आसन नित्य प्रयोग में लावे।
4. मीठी रोटियां गरीबों में बांटे।
5. यवों को दूध में धोकर, चलते पानी में बहावे।
6. यदि जातक की कुण्डली में मंगल चौथे स्थान में हो, कुण्डली में 'मंगलीक दोष' हो, माता, सासु व दादी का स्वास्थ्य चिन्ता का विषय हो, घर में अशान्ति, आर्थिक नुकसान रहता हो, वैवाहिक चिन्ता रहती हो तो जातक सुबह उठते ही नित्य कुएं के जल से दातुन किया करे।
7. मीठे दूध, बड़ की जड़ व जमीन की मिट्टी से मिश्रित तिलक को ललाट पर लगावे, ऐसा करने से पेट की बीमारी को शीघ्र आराम मिलेगा।
8. यदि अग्निभय रहता हो तो शक्कर की बोरी छत पर डाल दें तथा छत के सबसे ऊपरी हिस्से पर कुछ शक्कर डाल दें।
9. यदि बीमारी की वजह से संतान व पत्नी की आयु का भय हो तो एक बर्तन में शहद डालकर श्मशान घाट पहुंचा दें।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

10. लम्बी बीमारी से बचने के लिए मृगचर्म अधिक-से-अधिक काम लें तथा घर के दक्षिण द्वार की ओर लोहे के नाखून लटका दें या रख दें।
11. यदि मंगल आठवें स्थान में हो, जातक शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा लम्बी बीमारी भुगत रहा हो तो मीठी रोटियां अथवा पराठे में मांस डालकर (लाल) कुत्तों को खिलाना चाहिए।
12. यदि पापी मंगल एकादश स्थान में हो, तीसरा घर खाली हो, तो जातक को पैतृक सम्पत्ति नुकसानदायक साबित होती है, कर्जदार जिन्दगी बीतती है। ऐसे जातक को घर में कुत्ता पालना लाभदायक रहता है।
13. मंगल द्वादश में हो, बुध, 3,8,9 व 12 वें हो, तो जातक को द्वादश मंगल के दुष्परिणाम अवश्य भुगतने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में दूध में शहद डालकर दान करना चाहिए। कुत्तों को मीठी रोटी तथा हनुमान के मन्दिर में बताशे चढ़ाने चाहिए।

केतु—

लाल-किताब वाले ने केतु को '**कुत्ता**' कहा है। केतु जब कुण्डली में अनिष्टकारी हो तो कुत्तों को खाना खिलाना लाभप्रद रहेगा।

1. केतु के अनिष्ट फल के कारण यदि लड़के का व्यवहार माता-पिता के प्रति ठीक न हो तो माता-पिता को चाहिए कि भैरो के मन्दिर में जाकर कम्बल का दान करें, पुत्र का व्यवहार ठीक हो जायेगा। लाल-किताब वाले की सम्मति के अनुसार तिल का दान (तिलिया लड्डू) करने से भी केतु का अशुभत्व नष्ट होता है।
2. प्रतिकूल केतु को शान्त करने के लिए अपने भोजन का कुछ हिस्सा विभिन्न रंग वाले कुत्तों को खिलाना चाहिए।
3. अष्टम केतु तीसरे स्थान में हो, मंगल या चंद्रमा आठवें में हो तो जातक बहुत परेशान रहता है तथा भाइयों से झगड़ा रहता है। ऐसी अवस्था में जातक केसर का तिलक लगावे तथा शरीर में कहीं भी सोना पहने, ताम्बे के चौकोर टुकड़े बहते पानी में डाले।
4. जब केतु की मंगल, चंद्रमा, सूर्य या बुध किसी के साथ युति हो तो वह स्त्री के लिए अशुभ होती है। दो रंगीन कम्बल मन्दिर में भेंट करने पर अशुभ की निवृत्ति होती है।

बुध—

1. बुध का अशुभत्व नष्ट करने के लिए छेद किया हुआ ताम्बे का पैसा या

प्लेट बहते पानी में डाल दें अथवा कौड़ियों को जलाकर उसकी राख को दरिया में बहा दें।

2. जब बुध व केतु लग्न सुखस्थान को छोड़कर कहीं भी बैठे हों तो अशुभ होते हैं। ऐसे जातक को जीवन के 34 वर्षों तक आर्थिक संघर्ष के मध्य में से गुजरना पड़ता है, विवाह देरी से होता है। बचाव के लिए जातक नाक में छेद करावें तथा फिटकरी से दांत साफ करें, छोटी कन्याओं को पीले हलवे का भोजन करावें, मन्दिर में केसर चढ़ावें।
3. यदि बुध तीसरे स्थान में बैठकर अशुभ फल दे रहा हो, पराक्रम में कमी, मान-भंग की आशा हो, तो मंगल की रात्रि को साबित मूंग की दाल लाकर भिगो दें। बुध की प्रातः उसे पक्षियों को चुगा दे। 43 दिन तक नियमित प्रयोग करने से व्यक्ति का प्रभुत्व-पराक्रम बढ़ता है या साबित मूंग का दान भी जातक कर सकता है।
4. बुध तीसरे हो तथा उसके शत्रु ग्रह चंद्र, केतु या शुक्र 6,7 वें स्थान में हों तो पिता की सम्पत्ति खतरे में पड़ जाती है, मौसी व मौसे का स्वास्थ्य चिन्ता का विषय हो जाता है। ऐसी स्थिति में जातक नित्य फिटकरी से दांत साफ करे, पक्षी को चुग्गा दे तथा भेड़ का दान करे। जब अनिष्टकारी बुध सप्तम स्थान में हो तो उसकी निशानी यह होगी कि अपनी बहिन तथा बाप की बहिन को कष्ट होगा। ऐसे समय में साबित मूंग का दान करना चाहिए।

बृहस्पति—

1. बृहस्पति के शुभ प्रभाव को अत्यधिक शुभ बनाने के लिए शुद्ध केसर को भोजन के काम में लेना चाहिए तथा जिह्वा व नाभि पर केसर की बिन्दी लगानी चाहिए।
2. यदि किसी स्त्री या पुरुष की कुण्डली में बृहस्पति बिगड़ा हुआ व प्रतिकूल हो तो ध्यान देना अत्यधिक अनिवार्य है क्योंकि विद्या तथा वैवाहिक सुख के लिए इसका अनुकूल होना अनिवार्य है।
3. सुखी व सम्पन्न वैवाहिक सुख के निमित्त कन्या जातक के मामले में कन्या को स्वर्ण के दो समान तौल वाले टुकड़े भेंट करने चाहिए। कन्या एक टुकड़े को बहते पानी में डाल दे तथा दूसरे को अपने पास रखे। ध्यान रहे कि यह स्वर्ण का टुकड़ा किसी भी कीमत में न बेचे। जब तक यह स्वर्ण का टुकड़ा कन्या के पास रहेगा, वह बहुत सुखी व प्रसन्न रहेगी। उसका पति उसके अनुकूल रहेगा। यदि कोई व्यक्ति स्वर्ण भेंट न करने की स्थिति में हो तो केसर व हल्दी की समान तौल वाली पुड़िया भी इस तरह काम में लाई जा सकती है।

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

4. इसी प्रकार यदि सूर्य हो तो तांबे की दो प्लेटें, चन्द्रमा हो तो मोती या चावल, मंगल हो तो मूंगा, बुध हो तो सीप, शनि हो तो लोहे का टुकड़ा या काला सुरमा प्रयोग में लाया जा सकता है।
5. यदि गुरु अष्टम स्थान में अशुभ फलकारी हो तो पीली वस्तु का मन्दिर में दान करें। पीपल के वृक्ष को सींचना भी लाभप्रद है।
6. द्वादश स्थान में गुरु व्यक्ति को धनवान बनाता है परन्तु सन्तान अभाग्यशाली होती है। ऐसी स्थिति में जातक को पीला तिलक मस्तक पर लगाना चाहिए, साधु, ब्राह्मण व पीपल की पूजा करनी चाहिए तथा नाक को हमेशा खुश्क रखना चाहिए तो धन्धा भी खूब चमकेगा व सन्तान भी सुधरेगी।

शुक्र—

1. शुक्र को अधिक शुभ फलदायी बनाने के लिए गाय, दूध व ज्वार का दान किया करें, तथा अपने भोजन का कुछ हिस्सा श्वेत व सुन्दर गाय या बैल को दिया करें।
2. शुक्र लग्न में यदि अशुभ हो तथा 7 व 10 वें स्थान में कोई ग्रह नहीं हो, तो ऐसे व्यक्ति की शादी 25 वें वर्ष में होती है तथा शादी के शीघ्र पश्चात् वह दरिद्र हो जाता है तथा पत्नी मर जाती है। ऐसी स्थिति में जातक भोजन में यव काम में ले तथा गौमूत्र का सेवन करे एवं सात अनाजों को मिश्रित करके पक्षियों को चुगावे।
3. पापी शुक्र यदि द्वितीयस्थ हो तथा गुरु 8,9 व 10 वें स्थान में हो तो जातक का वैवाहिक जीवन कलहकारी होता है। पत्नी यदि नौकरी करती हो तो उसका चरित्र खराब होता है। जातक जीवन भर दुर्भाग्यशाली व दुःखी रहता है। जातक को गुप्त रोग की सम्भावना रहती है तथा शीघ्रपतन की बीमारी रहती है। ऐसी स्थिति में मंगल तत्त्व प्रधान औषधि का सेवन जातक के लिए लाभकारी रहता है।
4. अशुभ शुक्र यदि पंचम में हो तथा सूर्य, चन्द्र या राहु-लग्न या सातवें स्थान में हो तो जातक कामी होता है। उसकी संतान उसके कहने में नहीं रहती। चोरी का भय रहता है, पत्नी की वफादारी संदेहास्पद रहती है। रुपयों की आवक रुकी रहती है। ऐसी स्थिति में गाय की सेवा करनी चाहिए। जातक को स्वयं का चरित्र स्वच्छ रखना चाहिए। जातक चाहे स्त्री हो या पुरुष उसे अपने गुप्तांगों को दही व दूध से नित्य धोना चाहिए। ऐसा करने से रुपयों की आवक खुलेगी व सौभाग्य बढ़ेगा।
5. शुक्र यदि आठवें में हो तो जातक को ताँम्बे का सिक्का या श्वेत पुष्प गन्दे

नाले में फेंकना चाहिए। मन्दिर में प्रार्थना व गाय का दान करना चाहिए। ऐसा करने पर जातक अजात शत्रु हो जाता है अन्यथा उसका चरित्र संदेहास्पद बना रहता है।

6. नवम स्थान में शुक्र जातक को धनाढ्य, उद्योगपति व कुशाग्र बुद्धि वाला बनाता है। आर्थिक उपलब्धि के लिए ऐसे जातक को चांदी के चौकोर टुकड़े नीमवृक्ष के नीचे गाड़ने चाहिए, आश्चर्यजनक लाभ मिलता है। यदि चंद्र या मंगल भी साथ हो तो जातक को मकान के नींव मुहूर्त में शहद का घट गाड़ना चाहिए। इससे शुक्र दस गुना अधिक शुभ फलदायी हो जाता है।
7. यदि नवम स्थान में शुक्र पापग्रहों के बीच हो, बुध या केतु साथ हो तो बच्चों को कष्ट रहता है। ऐसी स्थिति में अशुभ निवारण के लिए, चांदी के चौकोर टुकड़े नीमवृक्ष के तने में गाड़ने चाहिए तथा नीमवृक्ष की लकड़ी व बुरादे से ही उसे बुरना चाहिए।
8. द्वादश स्थान में अशुभ शुक्र पत्नी को पीड़ा देता है। यदि नीला या बैगनी रंग का पुष्प, शाम के समय जाकर जंगल में गाड़ दिया जाये तो शुक्र का अशुभत्व नष्ट हो जाता है।
9. शुक्र द्वादश में तथा राहु यदि 2, 6, 7 व 12 वें स्थान में हो तो जातक का जीवन 25 वर्ष की आयु तक कष्टदायक रहता है। ऐसी स्थिति में काले रंग की गाय या भैंस को घर में रखना शुभद रहता है।

शनि—

1. यदि शनि शुभद हो तो घर में लोहे के सामान का इस्तेमाल करें, भोजन में काला नमक व काली मिर्च काम में लें, नेत्रों में काजल या काला सुरमा डालें, तो बहुत अधिक लाभ होगा।
2. यदि शनि अशुभ फलदायी बन गया हो तथा साढ़े साती या ढैया जातक को चल रही हो, तो अपने भोजन का कुछ भाग कौओं को खिलाना चाहिए।
3. यदि शनि संतान के लिए बाधक हो, मिसडिलिवरी होती हो, तो अपने भोजन का कुछ हिस्सा काले कुत्ते को खिलाना चाहिए।
4. सरसों या काले तिल का तेल दान करने से शनि का पापत्व कम होता है।
5. शनि यदि लग्न में हो तथा यदि वह पापी होगा तो जातक के घर का दरवाजा पश्चिम दिशा की ओर होगा। ऐसे व्यक्ति को जीवन के 36, 42, 45 व 48 वर्ष की आयु में बड़ा संघर्ष करना पड़ता है। कब्ज की शिकायत रहती है व पढ़ाई अधूरी छूट जाती है। ऐसी स्थिति में काले सुरमे की डली लाकर जमीन में गाड़ देनी चाहिए तथा सुरमे व बड़ की जड़ को दूध में घिसकर

Shaikh Abdul Gafar Majhibhanda,,Niali,odisha

तिलक करना चाहिए। ऐसा करने पर पेट की तकलीफ दूर होती है, व्यक्ति को पढ़ाई में सफलता मिलती है, रुपयों की आवक खुलती है।

6. चौथे स्थान में यदि पापी शनि हो तो जातक को रात्रि में दूध नहीं पीना चाहिए क्योंकि वह जहर बन जायेगा।
7. चौथे स्थान में यदि शनि का फल अशुभ हो तो जातक काले सर्प को दूध पिलावे, भैंस को चारा व मजदूर वर्ग को खाना खिलावे। आमदनी को बढ़ाने के लिए कुएं में दूध डाला करे।
8. यदि अशुभ शनि पांचवें में हो व दशम स्थान खाली हो, तो जातक के संतान नहीं होती। यदि जातक 48 वर्ष की आयु में नया मकान खरीदता है तो खरीदते ही पुत्र होता है परन्तु दीर्घायु नहीं होता। इस अशुभ को नष्ट करने हेतु घर के पश्चिम दिशा की ओर गुड़, तांबा, शहद, भूरी वस्तु तथा लाल वस्तु, चावल व शक्कर के बोरे रखे।
9. यदि छठे स्थान में शनि व बृहस्पति दोनों हों तो पानी वाले नारियल को नदी में बहाना चाहिए। ऐसी स्थिति में जातक को 28 वर्ष से पहले विवाह नहीं करना चाहिए तथा 48 वर्ष की आयु के पहले मकान नहीं बनाना चाहिए। संतान-बाधा होने पर काले सर्प को दूध पिलावे व उसकी सेवा करे।
10. शनि छठे में हो तथा दूसरा स्थान खाली हो तथा जातक शनि को धन्धा करना चाहे तो मिट्टी के घड़े में सरसों का तेल भर के तालाब या नदी के तले गाढ़ना चाहिए। ध्यान रहे कि ऊपर पानी अवश्य रहे। तत्पश्चात् कृष्ण पक्ष की मध्य रात्रि को कार्य प्रारम्भ करे, जातक अथाह सम्पत्ति कमायेगा।
11. यदि सप्तम स्थान में शनि पापी हो तथा जातक शराबी हो, तो उसका विनाश कोई नहीं रोक सकता, जब तक वह शराब न छोड़ दे।
12. शनि एकादश में व शुक्र सातवें में हो तो जातक बहुत भाग्यशाली होता है। वह कोई कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व मिट्टी का घड़ा पानी से भरकर दान करे, तो बहुत शुभ फल मिलता है।

राहु—

1. राहु के शुभ फल को प्राप्त करने के लिए कुछ कोयले लेकर बहती नदी में डालने चाहिए। मूली का दान भी श्रेष्ठ फलदायी रहता है।
2. यदि राहु पूर्णतः अशुभ फलकारी हो तो जातक को तेज बुखार आता है, शत्रुओं की वृद्धि करता है। इधर-उधर भटकाता है तथा जातक का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। ऐसी स्थिति में जातक निम्न उपाय करे—

(अ) लाल रंग की मसूर की दाल या कुछ सिक्के सुबह जल्दी उठकर भंगी को दान देने चाहिए।

(ब) दुस्साध्य बीमारी की स्थिति में यव व गेहूँ के दाने जातक के वजन के बराबर लेकर नदी में बहाने चाहिए।

(स) यव के दाने मस्तक के नीचे रखकर सोना चाहिए तथा सुबह जल्दी उन दानों को पक्षियों को चुगाना चाहिए।

(द) यदि जातक मुकद्दमे में उलझा हुआ हो, लड़ाई-झगड़े चलते हों, अत्यधिक परेशानी हो, सरकार से दण्डित होने की संभावना हो तो अपने वजन के बराबर कोयले खरीदकर नदी में डालने चाहिए। इससे तुरन्त राहत मिलेगी।

3. यदि पंचम भाव में राहु हो तथा जातक को संतान व पत्नी-सम्बन्धी बाधा हो तो उसे अपनी पत्नी के साथ पुनः विवाह का उपक्रम करना चाहिए तथा पैतृक मकान में प्रवेश करते समय, मकान के चौखट पर चांदी का टुकड़ा रखना चाहिए, ऐसा करना बहुत ही शुभद रहता है।

4. राहु यदि द्वादश में हो तो जातक को अनचाहे खर्चे बने रहते हैं, झगड़ों से नुकसान, चोरी व झूठे आरोपों का भय एवं आर्थिक तंगी रहती है। ऐसी स्थिति में जातक को अपनी रसोई में जहां खाना बनता हो, वहीं बैठकर खाना खाना चाहिए तथा अपने शयनकक्ष में मंगल से सम्बन्धित वस्तुएं लगाये रखे तो राहु का अशुभत्व पूर्णतः नष्ट हो जाता है। यदि कुण्डली में राहु की स्थिति अशुभ फल देने वाली हो तो नारियल को दरिया में बहाना चाहिए ताकि अनिष्ट नष्ट हो। यदि व्यक्ति को क्षय रोग हो और दवाई से भी ठीक न होता हो तो यव (जौ) को गाय के पेशाब में धोकर, लाल कपड़े में बंद करके रखो और साथ ही गाय के पेशाब से ही दांत साफ करो तो क्षय रोग (तपेदिक) में आशातीत लाभ होता है।

ग्रहों के देवता

'लाल-किताब' के अनुसार सूर्य का देवता—विष्णु, चन्द्र का देवता—शिव, बुध का देवता—दुर्गा, बृहस्पति का देवता—ब्रह्मा, शुक्र का देवता—लक्ष्मी, शनि का देवता—शिव, राहु का देवता—सर्प व केतु का देवता—गणेश हैं। जब—जब इन ग्रहों का अनिष्ट प्रकोप हो, तब-तब इन देवताओं की पूजा-अर्चना से भी जातक को बराबर लाभ होता है।

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

दो ग्रहों का योग और उपाय—

जब दो ग्रहों का योग हो तो कष्ट के निवारण के लिए किन वस्तुओं का दान उचित है और किनका धारण करना उचित है। इस बात पर भी 'लाल-किताब' में प्रकाश डाला गया है।

1. जैसे यदि जन्म कुण्डली में गुरु और सूर्य इकट्ठे हों और आर्थिक कष्ट हो तो गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं को धारण करना चाहिए, जैसे केसर का खाना आदि अथवा शुद्ध सोने को धारण करना इत्यादि।
2. यदि सूर्य और शनि इकट्ठे हों और स्त्री का स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ हो तो स्त्री के वजन के बराबर चरी (ज्वार) का दान करें।
3. यदि सूर्य और शनि इकट्ठे हों और सूर्य के बल के कारण शनि को हानि पहुंच रही हो अर्थात् मकान आदि शनि प्रदिष्ट वस्तुओं का नाश हो रहा हो तो सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करें और यदि शनि के बलवान् होने के कारण सूर्य की वस्तुओं (जैसे सोना, गुड़, राज्य इत्यादि) की हानि हो रही हो तो शनि से सम्बन्धित वस्तुओं (लोहा, तेल, बादाम) आदि का दान करें।
4. यदि सूर्य और राहु इकट्ठे हों तो सूर्यग्रहण के समय राहु से सम्बन्धित वस्तुयें (कोयला, सरसों आदि) को नदी के पानी में बहाना सहायक होगा। तात्पर्य यह कि हानिकारक ग्रह की वस्तुओं का दान करना चाहिए।
5. यदि चन्द्रमा और राहु इकट्ठे हों तो चन्द्रग्रहण के समय राहु से सम्बन्धित वस्तुओं अथवा शनि (वह भी चन्द्र का शत्रु होने से) की वस्तुओं को चलते पानी में बहाना, चन्द्र के बलवान करने का उपाय होगा।
6. यदि मंगल और बुध इकट्ठे हों और बहिन के स्वास्थ्य आदि पर बुरा प्रभाव पड़ रहा हो तो मंगल से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे खांड, सौंफ आदि किसी सुराही में भरकर बाहर वीराने में दबा दें, यह मंगल का उपाय रहेगा।
7. जब तक विशेष रूप से गुरु का आदेश न हो, उपर्युक्त उपायों में से कोई भी उपाय रात को न किया जाये। सब उपाय दिन के समय ही करने चाहिए।

कुछ अनुभूत प्रायोगिक टोटके

पांवों को जगाने का टोटका—

आप जहां भी बैठे हों 27 का अंक अंगुली से शून्य अंग पर लिख दीजिए। पांवों की शून्यता नष्ट हो जायेगी। अनुभूत है।

चतुर्थी चन्द्र परिहार पर टोटका—

भादौं की चौथ का चन्द्र अचानक दिख जाने पर, झूठी चोरी व व्यर्थ की बदनामी आती ही है। उसके निराकरण हेतु—**सोम राजा, सोम राणी कहूँ चौथ चन्द्रमा री कांणी, मारे माथे देवे उगृताल, उण पर पड़जो झूठा जाल।** इसका 7 बार उच्चारण मन में करने पर यह दोष दूर हो जाता है। आजमाया हुआ टोटका है।

बिल्ली द्वारा रास्ता काट लेने पर टोटका—

राजा रामचंद्र री कांण, मिन्नी थारे आडी आवे आंण।

इसका मानसिक 7 बार उच्चारण करने पर इस दोष की निवृत्ति हो जाती है। वैसे बिल्ली द्वारा रास्ता काटने के बाद आगे बढ़ने पर जिस काम के लिए जा रहे हों उसमें सफलता नहीं मिलती, वहां या घर में झगड़ा हो जाता है या कोई मानसिक पीड़ा का विघ्न आता है। यह प्रसिद्ध है।

पुत्र प्राप्ति के लिए अनुभूत प्रयोग—

तुलसी विवाह के दिन 2 रत्ती की स्वर्ण की कृष्ण की मूर्ति और चांदी की लक्ष्मी की मूर्ति का तुलसी के समक्ष विवाह रचाकर वैदिक वैवाहिक मंत्रों से अभ्यातान लाजादि हवन कराकर गर्भाधान संस्कार करावें और वह डोरा जो विवाह सूत्र में बांधा है (मौली या पंचरंगा) औरत के कमर में बांधकर उसी रात्रि में दोनों संभोग करें। गर्भ ठहर जायेगा। उस दिन दोनों को व्रत भी करना आवश्यक है। तुलसी विवाह के बाद भोजन करें। यदि उस दिन पत्नी मासिकधर्म में हो, मासिकधर्म के बीते हुए 8 रोज न हुए हों, तो यह कार्य न करें। केवल पति विष्णु की मूर्ति और लक्ष्मी की मूर्ति का पूजन करके मान्यता ही माने और अगले वर्ष ऐसा करें। यह प्रयोग वर्ष में एक बार ही होता है। फिर वह विष्णु और लक्ष्मी मूर्ति व सामान

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

ब्राह्मण को दान करे, जिसने आचार्य रूप में कर्म-संस्कार व विवाह-संस्कार कराया हो। तुलसी को अपने ही आंगन में प्रतिष्ठित रखें, जब तक पुत्र न हो जाये। इस तरह का प्रयोग करके, विदेश में रहे दम्पत्ति को वह डोरा उसके मां-बाप भी भेज सकते हैं। जिस दिन वह डोरा वहां प्राप्त हो उसी दिन स्नानादि करके लक्ष्मी और विष्णु का पूजन कर औरत अपने कमर में बांध दे और पति से भोग करे। अवश्य सन्तान होती है। यह अनुभूत है और कई लोगों पर आजमाया हुआ है।

आसन्न मृत्यु दीखने पर टोटका—

(अ) असाध्य बीमारी लक्षित होने पर तथा मृत्यु समीप दीखने पर काले बैगन का साग तेल में करके, तेल में ही तली हुई एक सवाई पूड़ियां व्यक्ति पर सात बार उवारकर (न्यौछावर करके) गरीब, कोढ़ी, मंगतों को खिला दें। शनि, रवि या मंगल को यह प्रयोग करें। अनुभूत है।

(ब) काले तिल, जौ का पीसा हुआ आटा और तेल मिश्रित कर एक रोट पकावें, उसे अच्छी तरह से दोनों तरफ से सेकें, फिर उस पर तेल मिश्रित गुड़ चुपड़कर व्यक्ति पर सात बार उवारकर भैंसे को खिलावें। शनि या मंगल के दिन यह प्रयोग करें। अनुभूत है।

(स) गुलगुले सवाये लेकर सात बार उवारकर, शनि, मंगल या रविवार के दिन चीलों को चुगावें। तुरन्त राहत मिलेगी।

(द) महामृत्युञ्जय जप का संकल्प करें। द्रोव, शहद और तिल मिश्रित कर महादेव पर अभिषेक करके चढ़ावें। **ॐ नमः शिवाय** षडाक्षर मंत्र का जप करें। रोगी अच्छा हो जाये तब शेष जप ब्राह्मण द्वारा करवावें।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए टोटका—

श्रावण मास में प्रतिदिन 108 बिल्वपत्रों पर चंदन से **ॐ नमः शिवाय** लिखकर इसी मंत्रोच्चारण से महादेव पर चढ़ावें। 31 दिन का यह प्रयोग है। इससे धन-धान्य लक्ष्मी बढ़ती है, रोग व बाधा की निवृत्ति होती है, रोजगार बढ़ता है, यह अनुभूत है। नौकरी-पेशा वालों के लिए व मध्यमवर्गीय लोगों के लिए यह उपाय अक्सीर है।

दाम्पत्य-प्रेम हेतु टोटका—

(अ) पुरुष को असली श्वेत हीरे की सोने की अंगूठी और मोती पहनावें तथा पत्नी को पुखराज और मोती की अंगूठी पहनावें। चाहे जो राशि व जन्म कुण्डली में कैसे भी ग्रह हों पत्नी/ दाम्पत्य प्रेम बन जावेगा।

(ब) पति-पत्नी साथ रहें पर एक-दूसरे से न बोलते हों व झगड़ा हो, तो इसी का विपरीत प्रयोग पत्नी को हीरे और मोती के योग का और पुरुष को पुखराज और मोती पहनावे। पुष्य नक्षत्र में अभिषेक हो, पर उसी दिन बनवाना जरूरी नहीं है।

(स) पति की आयु वृद्धि के लिए व तलाक को रोकने के लिए पुष्य नक्षत्र में अभिषेक कराकर पत्नी पुखराज धारण करे।

विवाह की इच्छा पैदा करना—

पुरुष को पुखराज की अंगूठी सम रत्ती की पहनावें। साथ ही सप्तमेश का नग (रत्न) धारण करावें। वैराग्य न होगा। अगर सप्तमेश गुरु का शत्रु ग्रह हो तो पुखराज को वाम हाथ में और सप्तमेश को दाहिने हाथ में धारण करें। अगर जन्मपत्री ही न हो तो अनामिका अंगुली में पुखराज धारण करें।

वंश-वृद्धि व गुरु-दोष शान्ति के लिए टोटका—

चैत्र मास की अमावस्या से 13 अमावस्या तक व्रत करें और सफेद वस्तु (दूध या उसकी मिठाई) ब्राह्मण को श्रद्धानुसार खिलावें। कार्य-सिद्धि होने पर 15 ब्राह्मणों को भोजन करावें।

पंचक के टोटके—

(अ) ऐसी मान्यता है कि पंचक में मरने पर पांच बन्धुजनों की मृत्यु होती है। अतः किसी की मृत्यु पंचक में हो तो शेष पंचकों की संख्यानुसार दर्भ के पुतले बनाकर शव के साथ जला दें।

(ब) किसी की पंचक में कन्या हो तो शेष पंचकों की पुतलियां बनाकर झोली में उसके साथ झुलावें और नामकरण के दिन उनके भी कोई-न-कोई नाम देकर उन्हें पीपल के समीप भूमि में गाड़कर पधरा दें। क्योंकि मान्यता है कि पंचकों में कन्या होने पर 5 कन्यायें होती हैं।

कन्या के बाद पुत्र का जन्म कराना—

किसी के प्रथम कन्या हो जाये और आगे भी कन्या होने का अंदेशा या भय हो तो उसके आगे कन्या न जन्मे इसलिए कन्या के नामकरण के दिन उसका पूजन कर उसके चरणों में नमस्कार कर प्रार्थना करें और बन्धुओं को खीर-जलेबी का भोजन करावें तो कन्या के बाद पुत्र ही होवे।

Shaikh Abdul Gafur Majhikhanda,,Niali,odisha

बालक के रात को रोने पर टोटका—

अगर संतान रात को रोती हो और दिन को शान्त रहती हो तो उसे दूर करने के लिए दिन को दीपक या लालटेन जलाकर उसकी माता सड़क पर कुछ खोजती हो, ऐसा अभिनय करे। तब कोई आकर पूछे कि यह क्या करती हो? तब कहे कि—"**रात रोवणी, दिन सोवणी ने जोऊं हूं**" ऐसा तीन बार पूछे और उत्तर दे तो संतान का रात का रोना बन्द हो जाता है।

बालक उपलिजे या बादल वाया होने पर टोटका—

बालक जब उपलिजता है तो उसे दस्तें और उलटियां होती हैं। वह मां के स्तन के दूध का वमन करता रहता है। तब सात कागज की पुड़ियों में थोड़ी-थोड़ी गुलाल डालकर बांधें और सात खाली बांधें। फिर पानी भरकर एक लोटा उस बालक पर सात बार उवारकर घर के बाहर चुपचाप जाकर घर के बायीं तरफ सड़क पर पुड़िया फूंक से उड़ा दें और पानी बाहर चबूतरे पर गिरा दें। उपलना बन्द हो जायेगा।

चमक हटाने के लिए टोटका—

बालक अगर बार-बार चमक उठता हो तो चार रास्तों पर चमकदीवा रखें अर्थात् एक आटे का दिया बनाकर, चार बत्तियां रूई की उसमें डालकर चुपचाप चौरास्ते जावें। पानी के लोटे में कुंकुम डालकर बच्चे पर सात बार उवारकर साथ ले जावें और पहले दीया रखकर उसे जला दें। फिर उसके चारों तरफ गोल पानी का कुंडाला करके घर लौटें। पीछे न देखें। चमक चली जायेगी।

तिलरी दोष मिटाने हेतु टोटका—

तीन लड़कों पर अगर लड़की पैदा हो या तीन लड़कियों पर लड़का पैदा हो तो इससे घर में कोई न कोई उपद्रव, शारीरिक, मानसिक व आर्थिक क्षति होने की संभावना मानी जाती है। अतः तीन पुत्र हों तो चौथा भाई राखी बांधकर बनाया जाता है व चौथी बहिन धर्म की बनाई जाती है। इससे यह दोष मिट जाता है।

बालक को नजर न लगने देना—

बालक को नजर से बचाने के लिए उसके गाल पर काजल की टीकी लगा दी जाती है या भाल पर काजल का चंद्र बनाकर बिन्दी दे दी जाती है।

भोजन पर नजर न लगने के लिए टोटका—

थाली के नीचे पानी का त्रिकोण बनाकर उस पर भोजन की थाली रखने से नजर नहीं लगती है।

रसोई पर नजर न लगने हेतु टोटका—

बड़ा भोज किया हो तो मुख्य मिठाई के मध्य एक कोयला रख देने से रसोई पर नजर नहीं बैठती है।

भोजन खत्म न होने देना—

(अ) भोजन के लिए बनी पाक सामग्री यदि कपड़े से ढंकी रहे तो जब तक सभी निमंत्रित भोजन न कर जावे तब तक रसोई खूंटती नहीं है।

(ब) भगवान् को भोग लगाई हुई थाली अन्तिम आदमी के भोजन करने तक ठाकुरजी के सामने रखी रहे तो रसोई बीच में खत्म नहीं होती।

नक्षत्र-जन्य दोष-निवृत्ति हेतु टोटके—

मूल, जेष्ठा, मघा, आश्लेषा नक्षत्रों में जन्म होने पर 27 वें दिन 27 औषधियों व 27 प्रकार के जलों को एकत्र कर उस पानी से बालक व बालक के माता-पिता को अभिषेक कराने से नक्षत्र दोषोद्भव उत्पात की संभावना समाप्त हो जाती है।

सोने व लोहे के पाये में जन्म लेने पर शांति के लिए टोटका—

छायादान करने से शान्ति होती है। कांसे के कटोरे में तेल व द्रव्य डालकर उसमें बालक व उसके माता-पिता का मुख दिखाकर किसी देवालय में या किसी ब्राह्मण को दान करने से दोष शान्त हो जाते हैं।

बालक को जिलाने के उपाय—

अगर बालक जन्म-जन्मकर मर जाते हों, तो उसे बचाने के निम्न टोटके हैं—

(अ) बालक को जन्म नाम से न पुकारा जाये। Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

(ब) बालक का लाड-प्यार स्वयं नये कपड़े सिलाकर न करें और 5 वर्ष तक मांगकर कपड़े पहनावें।

(स) 3 या 5 वर्ष तक केस न कटावें, झड़ौला रखें।

(द) बालक के बराबर नमक तौलकर खरीद लें और नमक दान में देवें।

(य) उसी उम्र के बालकों को दूध उसकी जन्म तारीख के दिन पिलाया जावे।

(र) बालक को किसी की गोद में दे दें या उसे पराये का बच्चा कहकर प्रचार करें।

(ल) रविवार को सूर्यपूजन करके अलूणा व्रत करें, मां-बाप के दोष की शान्ति होगी।

रोजगार में वृद्धि के लिए टोटका—

(अ) शुक्र के दिन चना और गुड़ व खट्टी-मीठी गोलियां मिलाकर उन भूने हुए चने को 8 वर्ष के भीतर के बालकों में बांटें।

(ब) गुरु के दिन सूर्योदय से पहले और जब आकाश में तारे शेष हों तो बुधवार को लड्डू लाकर या बनाकर व्यक्ति पर सात बार उवारकर रख दें और घर का कोई सदस्य जल्दी उठकर उन लड्डुओं को गायों को खिलावे। गायें गोरी या पीली होनी चाहिए। पीछे मुड़कर न देखें और वापिस सोवें नहीं।

(स) शुक्रवार के दिन गरीबों को चना और गुड़ बांटें।

विद्या-प्राप्ति के उपाय—

(अ) हर रविवार को सूर्य-पूजन करे और नमकरहित भोजन करे तथा लाल वस्तु का दान करे।

(ब) नित्य महादेव-पार्वती की पूजा करे, सरस्वती का ध्यान करे तथा प्रदोष का व्रत करे।

(स) मंगल और शनि के दिन सुंदरकाण्ड का पाठ करे तथा महादेव का पूजन करे।

प्रसूति कष्ट निवारण टोटका—

किसी भी शुभ दिन को केसर, चंदन, जायफल, जावित्री, गोरोचन इन पांचों चीजों का मिश्रण कर स्याही बनाकर अनार की कलम से, कांसे की थाली में गायत्री मंत्र लिखकर उसे प्रसव-कष्ट से पीड़ित प्रसूता को दिखाया जाये, फिर पानी से धोकर वह पानी उसे पिला दिया जाये। ऐसा करने से सारे कष्ट दूर होकर सुखपूर्वक प्रसव होता है।

होगा। वह आमिल (इल्मबाज) से बात करेगा तो उससे कौल व करार करके, दिल चाहे तो उसे कैद कर दे या छोड़ दे या के जला दे और जो आमिल (इल्मबाज) मरीज के रूबरू न जा सकता हो तो यह पलीता लिखकर देवे और उसी तरह से इसको जला दे। दो-तीन रोज करने पर, दो तीन दिन के अन्दर तेल में खून मालूम होगा और जब खून मालूम होगा तो आसेब (प्रेत) का कत्ल होवेगा और दूसरा पलीता जो बिलासूरत है, तो जो जाने कि आसेब मरीज को तकलीफ और बुरी तरह से उसके सिर पर आता है तो यही नक्श जो लिखे हैं, मीठे तेल में जलावे, उसके रूबरू उम्मीद है कि बीमार सब बलाओं को उसी पलीते में देखेगा और उस पलीते को जब जलायेंगे तो सब बलाएं जल जायेंगी और मरीज अच्छा हो जायेगा। फिर अच्छा होने के बाद हाजरात करे यानि फूल खुशबूदार और मिठाई जो कुछ भी मुवस्सिर (हाजिर) हो, मरीज से मंगवाये और जगह को मिट्टी वगैरह से पाक करके और मरीज को गुसल देकर उसी जगह बिठा दे और मिठाई पर न्याज मुक्किलों की देकर बच्चों को तशरीफ करे और जो कुछ मरीज के वारिस आमिल को दे, वह मां का दूध और हलाल है और जानना चाहिए कि हाजरात में जो कुछ भी मुमकिन हो मरीज से लेकर अपने हलाज सर्फ में करे और नयाज मुव्क्किलों को जरूर दिला दे। यह पलीता आजमाया हुआ मीर साहब मजकूर का है व सत्य है।

भूत-प्रेत जलाने का तिलस्म—
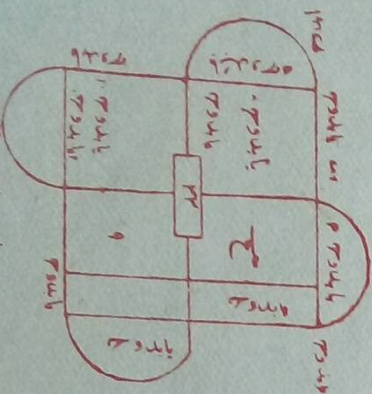
इस नक्श को लिखकर पहले मरीज के दांतों के नीचे उलटी तरफ रखें। आसेब उसी वक्त हाजिर हो आवेगा और न आवे तो सीधी तरफ रखें। आसेब (प्रेत) हाजिर होकर बातें करेगा। उससे कौल व करार लेकर छोड़ दें और जल्द इस पलीते को लिखकर मय इसस्माह मुवक्किलों को जला दें तो आसेब (प्रेत) भी जल जायेगा।

भूत-प्रेत न लगने का तिलस्म—

इस अलामत को लिखकर बच्चे की गर्दन में डालें तो वह मर्ज (भूत-प्रेत

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

आदि से ग्रसित) हर्गिज न होगा तथा हर बला व आफत से बचा रहेगा।
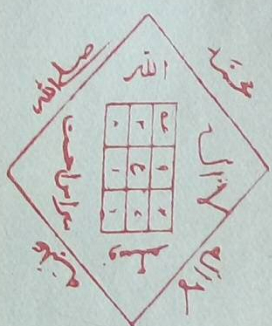
ईंट-पत्थर रोकने का तिलस्म—
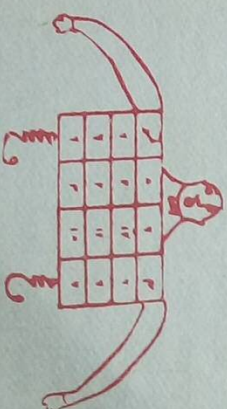
जिस व्यक्ति के मकान में पत्थर या ईंट आते हों तो यह पलीता लिखकर और मुंह उसका काबा शरीफ (पश्चिम दिशा) की तरफ करके दीवार पर लगा देवें फिर पत्थर हरगिज नहीं आवेंगे।

भूत-प्रेत, खवीस व रोग-परीक्षा का तिलस्म—
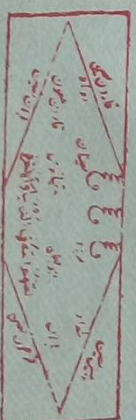
अगर ये तस्वीर मरीज आसीब (भूत-प्रेत) वाले को लिखकर दिखला दे तो आसेब का खलल है तो देखते ही रोने लगेगा, जो खबीस है तो हंसने लगेगा, जो मर्ज (कोई बीमारी) है तो चुप रहेगा।

विभिन्न रोगनिवारक टोटके

* गर्भिणी स्त्री को कमर में लाजावर्त धारण कराने से गर्भ की रक्षा होती है।
* प्रसवकाल में प्रसव-पीड़ा से मूर्छित गर्भिणी स्त्री के सिर पर पत्थरचट्टा (पथरी) के जड़ को रखने से तत्काल बिना दर्द के प्रसव करने में समर्थ हो जाती है।

* गर्भक्षय या गर्भपात की सम्भावना हो तो रविवार 'पुष्यनक्षत्र' में लायी हुई काले धतूरे की जड़ सुकुमारी छोटी कन्या के हाथ से काले डोरे सहित गर्भवती महिला की कमर में बंधवा देना चाहिए।
* आलू की जड़ को बच्चों के गले में बांधने पर बच्चों के दांत आसानी से निकल आते हैं।
* छोटे बच्चों के गिरे हुए दूध वाले दांत को चांदी में मढ़वाकर भुजा पर धारण करने से कठिन दन्तशूल और दांतों की प्रत्येक बीमारी अच्छी होने लगती है।
* गेहुयें सर्प की केचुल को नीले कपड़े की थैली में सिलकर पेट के ऊपर बांधने पर संग्रहणी रोग से आराम मिलता है।
* बिच्छू के डंक लगने पर चिरमिटे की जड़ यदि विषाक्त स्थान में स्पर्श करायी जाये तो बिच्छू का जहर उतरने लगता है।
* रांगा धातु का छल्ला बनवाकर मध्यमा अंगुली में पहनने से मेदावृद्धि या मोटापन का रोग दूर होने लगता है।
* फौलादी लोहे का छल्ला बायें और दायें दोनों हाथ की अंगुली में धारण करने से पथरी रोग क्रमशः दूर होने लगता है।
* सिर में रोग हो तो पीले कपड़े में धनिया, मुखरोग हो तो सफेद कपड़े में जीरा, हाथ, बाहु, भुजा-सम्बन्धी रोग हो तो बैगनी कपड़े में हींग, हृदय-सम्बन्धी रोग हो तो नीले कपड़े में काली मिर्च, उदर-सम्बन्धी रोग हो तो आसमानी कपड़े में तुलसी वृक्ष की जड़, कमर में कोई रोग हो तो हरे कपड़े में छोटी इलायची के दाने, वस्ति-मूत्राशय सम्बन्धी कोई रोग हो तो पीले कपड़े में हल्दी खड़ी, गुप्तेन्द्रिय रोग हो तो नारंगी कपड़े में नागकेसर, उरु जंघा में कोई रोग हो तो लाल कपड़े में लाल मिर्च, पैरों में कोई रोग हो तो सफेद कपड़े में नागफनी की जड़, घुटने या नाखून की बीमारी हो तो कत्थई कपड़े में एरण्ड के बीज, स्नायविक-विकार, श्वास यन्त्र या रक्त-सम्बन्धी विकारों में काले रंग के कपड़े में काला जीरा-स्याह जीरा, प्रत्येक रविवार को हाथ गला या कमर में धारण करके तीसरे दिन प्रत्येक मंगलवार को उतारकर चौराहे पर फेंक दिया करें।

निश्चित पुत्र प्राप्ति का अमोघ उपाय

अगर कन्यायें ही पैदा होती हों तो पुत्र-प्राप्ति के लिए 'चरण व्यूह' का पाठ करना चाहिए। वेद पुराणोक्त 'चरण-व्यूह' पाठ के श्रवण मात्र से ही पुत्र रत्न की शत-प्रतिशत प्राप्ति होती है। कलिकाल में 'चरण-व्यूह' विशेष रूप से प्रभावशाली है तथा प्रत्यक्ष चमत्कार बताता है। जब प्रसूति को चौथा या पांचवा महीना चल रहा हो, तब किसी विद्वान् ब्राह्मण अथवा पुरोहित के द्वारा इसका श्रद्धापूर्वक श्रवण

Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda,,Niali,odisha

किया जाता है। पति भी पाठ पढ़कर पत्नी को सुना सकता है। केवल अगरबत्ती, दीपक, पाठ करते समय लगाना आवश्यक है। नैवेद्य धरें तो उसे दोनों पति-पत्नी जरूर खावें। अकेली स्त्री भी इसका पाठ कर सकती है। दोनों पति-पत्नी का यहां बैठना आवश्यक नहीं है। इस क्रम में यदि पूजन करना चाहें तो विष्णु व लक्ष्मी का साथ-साथ चित्र होना चाहिए। ध्यान रहे कि सातवें महीने के बाद इसका प्रयोग निषिद्ध है।

इसके श्रवण मात्र से सन्तान तेजस्वी, पराक्रमी, मेधावी, धर्म-ध्वज व जातिकुल-रक्षक, पौरुषशाली व वंशवृद्धिनी होती है।

॥ अथ श्रीचरण व्यूहं ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

हरिः ॐ॥ अथातश्चरण-व्यूहं व्याख्यास्यामः ॥ १ ॥
तत्र यदुक्तं चातुर्वेद्यं चत्वारो वेदा विज्ञाता भवन्ति॥ २॥
तत्र ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदश्चेति॥ ३॥

॥ ऋग्वेद खण्डः ॥

तत्र ऋग्वेदस्याष्टौ स्थानानि भवन्ति॥ ४॥
(तस्मात् ब्रह्मयज्ञार्थे पारायणार्थे च ऋग्वेदस्याध्ययनं कर्तव्यम्)
1. चर्चा 2 श्रावकः 3 चर्चकः 4 श्रवणीयपारः॥ ५॥
5 क्रमपारः 6 क्रमपदः 7 क्रमजटः 8 क्रमदण्डश्चेति चतुष्पारायणम्॥ ६॥
एतेषां शाखाः पञ्चविधाः भवन्ति ॥ ७॥ आश्वलायनी, शांखायनी, शाकला, बाष्कला, माण्डूकायनाश्चेति ॥ ८॥ तेषामध्ययनं ॥ ९॥ अध्यायाश्च चतुः षष्ठिर्मण्डलानी दशैवतु॥ १०॥
(अथ पारायणे वर्ग संख्योच्यते)—
एकर्च एक वर्गश्च एकर्च नवकस्तथा।
द्वौ वर्गौक्तौ त्र्यर्चौ ज्ञेयौ, ऋक्त्रयश्च शतं स्मृतं॥
वर्गाणां परिसंख्यान्तं द्वि सहस्त्रे षडुत्तरे।
सहस्त्रमेकं सूक्तानां निर्विशङ्क विकल्पितम्॥
दशसप्त सुपठ्यन्ते संख्यान्तं वै पदक्रमम्॥
ऋचान्दश सहस्त्राणि, ऋचां पंच शतानि च।
ऋचामशीति पादश्चैतत्पारायणमुच्यते॥ ११॥

॥ यजुर्वेद खण्डः ॥

यजुर्वेदस्य षड्शीतिर्भेदाभवन्ति। तत्र चरकानां द्वादश भेदाः भवन्ति १. चरकाः, २. आह्वरकाः ३. कण्ठाः ४. प्राच्यकण्ठाः ५. कपिष्ठलकण्ठाः च ६. आरायणीयाः ७. वारायणीयाः ८. वार्तान्तवेयाः ९. श्वेताश्वतराः १०. औपमन्यवः ११. पाताण्डनीयाः १२. मैत्रायणीयाश्चेति॥ तत्र मैत्रायणीयानाम् षड्भेदाः भवन्ति। १. मानवाः २. वाराहाः ३. दुन्दुभाः ४. छागलेयाः ५. हरिद्रवेयाः श्यामायनीयाश्चेति॥ तेषामध्ययनं॥
द्वे सहस्रे शते न्यूने मंत्रे वाजसनेयके।
ऋग्गणः परिसंख्यातं ततोऽन्यानि यजूंषिच॥

अष्टौं शतानि सहस्राणि चाष्टाविंशति रन्यान्यधिकश्च पादमेतत्प्रमाणं यजुषां हि केवलं। स बालखिल्यं सशुक्रिय ब्राह्मणं च चतुर्गुणं। तत्र तैत्तरीयकानां द्विभेदाः भवन्ति। १ औखेयाः २ खाण्डिकेयाश्चेति॥ तत्र खाण्डिकेयानाम् पञ्चभेदाः भवन्ति॥ १ कालेता २ शाट्यायनी, हेरण्यकेशी ४ भारद्वाज्या ५ पस्तंवीचेति॥ तेषांमध्ययन॥ अष्टादश यजुः सहस्राण्यधीत्यशाखापारो भवति। तान्येव द्विगुणान्यधीत्य पदपारो भवति। तान्येव त्रिगुणान्यधीत्य क्रमपारो भवति। षड्गान्यधीत्य षड्ङ्गविद्भवति।

त्रिगुणां पठ्यते यत्र मंत्र ब्राह्मणयोः सह।
यजुर्वेदः स विज्ञयः शेषाः शाखान्तराः स्मृताः॥

१ शिक्षा, २ कल्पो, ३ व्याकरणं, ४ निरुक्तं, ५ छन्दो, ६ ज्योतिषमितिषड्ङ्गानि॥

छन्दः पादौतुवेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षु निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षाघ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥

तथा प्रतिपदमनुपदं छन्दो भाषा धर्मो मीमांसा न्यायस्तर्क इत्युपाङ्गानि। तत्र परिशिष्टानि भवन्ति। यूप लक्षणं, छाग लक्षणं, प्रतिज्ञाऽनुवाक संख्या, चरणव्यूह, श्राद्धकल्पशुल्बकानि, पार्षदमृग्यजूंषीष्टकापूरणं प्रवराध्यायोक्थशास्त्र क्रतुसंख्या निगमा यज्ञ पार्श्वहौत्रिकं, प्रसवोत्थानम, कूर्मलक्षणमित्यष्टादश परिशिष्टानि भवन्ति। तत्र कठानां योगाऽयेन विशेषस्तत्र प्राच्योदीच्य नैर्ऋत्य वाजसनेयानाम पञ्चदश भेदाः भवन्ति। जाबालाः, बौद्धायनाः काण्वाः, माध्यन्दिनेयाः शाफेयास्तापनीयाः कपोलाः पौण्डरवत्साः, आवटिकाः, परमावटिकाः, पाराशराः, वैणेयाः वैधेयाः अर्द्धाः बौधे, याश्चेति॥ तेषामध्ययनं सौक्तिकं प्रवचनीयाश्चेति॥

मंत्र ब्राह्मण कल्पानामङ्गानां यजुषामृचाम्।
षण्णां यः प्रविभागज्ञः सो ऽध्वर्यु कृत्स्नमुच्यते॥ १॥

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha

॥ सामवेद खण्डः ॥

सामवेदस्य किल सहस्र भेदा आसीदनध्याये ष्वधीयानास्ते शतक्रतु वज्रेणाभिहताः प्रनष्टाः। शेषान् प्रवक्ष्यामः (असुरायणीयाः, वासुरायणीया, वार्तान्तरेयाः, प्राञ्जल ऋग्वैनविद्याः, प्राचीनयोग्याः राणायनीयाश्चेति) तत्र राणायनीया नाम् नव भेदाः भवन्ति। राणायनीयाः शाट्यायनीयाः सात्यमुद्गलाः, खल्वलाः, महाखल्वलाः लाङ्गलाः कौथुमाः गौतमाः जैमिनीयाश्चेति। तेषांमध्ययनम्॥ अशीतिशतमाग्नेयं, पावमानं चतुः शतम्। ऐन्द्रं तु षड्विंशतिश्च यानि गायन्ति सामगाः॥ तान्यधीत्य चण्डात्प्रचण्डतरो भवति। शिष्टान्यधीत्य शिष्टाऽऽविंशतिको भवति। तत्र केचित्पुनर्ऋक्तंत्रं सामतंत्रं संज्ञा धातुलक्षण मिति विधीयन्ते।
अष्टौ साम सहस्राणि सामानिच चतुर्दश।
अष्टौशतानि नवति दशतिर्बालखिल्वकम्॥
स रहस्यं ससुपर्णं प्रेक्ष्यस्तत्र बालखिल्वाः।
सारण्यकानि सौरुर्याणि, ह्येतत्सामगणां स्मृतम्॥

॥ अथर्ववेद खण्ड ॥

अथर्ववेदस्य नव भेदाः भवन्ति। पैप्पलाः शौनकाः दान्ताः प्रदान्ताः औताः जाबालाः, ब्रह्मपलाशाः कुनखीवेददर्शी चारणाविद्याश्चेति॥ द्वादशैव सहस्राणि

पञ्चकल्पानि भवन्ति। कल्पे कल्पे पञ्चशतानि भवन्ति। नक्षत्रकल्पो, विधान कल्पो, विधिविधानकल्प संहिताकल्पः, शान्तिकल्पश्चेति। तत्र वेदानामुपवेदा चत्वारो भवन्ति।

ऋग्वेदस्यायुर्वेद उपवेदो, यजुर्वेदस्यधनुर्वेद उपवेदः
सामवेदस्य गान्धर्ववेदो, ऽथर्ववेदस्यार्थशास्त्रम्॥
चेत्याह भगवान्व्यासः स्कन्दोवा।

य इमें वेदा श्चत्वारस्तेषामेंकैकस्य कीदृशं रूपं वर्णा विधोच्यते। ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षः सुविभक्तग्रीवः कुञ्चितकेशश्मश्रु श्वेतवर्णो वर्णेनकीर्नितं, प्रमाणंतावत्तिष्ठन्वितस्तीः पञ्च॥

यजुर्वेद, पिंगाक्षः कृशमध्य स्थूलगल कपोलस्ताम्रवर्णः कृष्णवर्णोवा प्रादेशमात्र दीर्घत्वेन।

सामवेदो नित्य स्त्रग्वी सुप्रयतः शुचिवासाः शमीदान्तो बृहच्छरीरः शमीदण्डी कातरनयन आदित्यवर्णो वर्णेन नवरत्निमात्रो।

अथर्ववेदस्तीक्ष्णः प्रचण्डः कामरूपी, विश्वात्मा, विश्वकर्ता, क्षुद्रकर्मा स्वशाखाध्यायी प्राज्ञश्च महानीलोत्पल वर्णोवर्णेनदशरत्निमात्रो।

ऋग्वेदस्योत्रयस गोत्रं सोमदैवत्यं गायत्री छन्दो,

सामवेदस्य भारद्वाजसगोत्रं रुद्रदैवत्य जगतीछन्दो
अथर्ववेदस्य वैतानसगोत्रं ब्रह्मदैवत्यं अनुस्टुप्छन्दः ॥

॥ अथ फलस्तुति खण्डः ॥

य इदं वेदानां नामरूप गोत्र प्रमाणं छन्दो दैवतं वर्ण वर्णयति, अविद्यो लभते विद्यां, जातिस्मरोऽथ जायते। जन्मनि जन्मनि वेदपारंगो भवति। अव्रती व्रती भवति। अब्रह्मचारी भवति। ॐ नमः शौनकाय, नमः शौनकाय।

य इदं चरणव्यूहं गर्भिणीं श्रावयेत्स्त्रियम्।
पुमांसं जायते पुत्रमृषिभिर्वेद पारगम्।
य इदं चरण व्यूहं श्राद्धकाले पठेद्विजः।
अक्षय्यं तद्भवेच्छ्राद्धं, पितृंश्चैवापतिष्ठते।
य इदं चरण व्यूहं पठेत्सपंक्ति पावनः।
तारयेत्प्रभृतीन्पुत्रा न्पुरुषान्सप्त-सप्त च।
य इदं चरण व्यूहं पठेत्पर्वसु पर्वसु।
विधूतपाप्मा स स्वर्गी ब्रह्मभूयाय गच्छति।
रतिर्धृतिशिशिवाश्यामाः चत्वारो वेदपत्निकाः।
ज्ञातव्यायज्ञकालेषु ईशानादि व्यवस्थिताः।
लक्षं तु चतुरोवेदाः लक्षं भारत में वच।
लक्षं व्याकरण प्रोक्तं, चतुर्ल्लक्षं तु ज्यौतिषं।
चतुर्ल्लक्षं तु ज्योतिषं॥

स्व. दौलतरामजी द्विवेदी (वेदिया)
|
स्व. रामनाथ जी द्विवेदी (वेदिया)
|
स्व. मूलचन्दजी द्विवेदी (वेदिया)
|
स्व. लक्ष्मीनाराणजी द्विवेदी (वेदिया)
|
स्व. जयनारायणजी द्विवेदी (वेदिथा)

स्व. लाभशंकर द्विवेदी	भोजराज द्विवेदी	लेखराज द्विवेदी
श्यामसुन्दर	रमेश द्विवेदी	घनश्याम

लेखक वंशवृक्ष

Shaikh Abdul Gafar,Majhikhanda,,Niali,odisha